GREAT LIVES GREAT DEEDS

हार्दिक शु[illegible]

मैसर्स डूंगरमल सत्य नारायण

७६, जमुनालाल बजाज स्ट्रीट

कलकत्ता–७००००७

मैसर्स प्रकाश चन्द किशनलाल

२३२४, गली हींगा बेग, तिलक बाजार

दिल्ली–११०००६

सम्पर्क सूत्र : कार्यालय २६११४२०, २५१३५०६
निवास : ७१२१६६७

मुख्यालय	अन्य शाखायें
७६ जमुनालाल बजाज स्ट्रीट	(अ) जी टी रोड, विकम्बरपुर
कलकत्ता ७००००७	गाजियाबाद (यू पी)
सम्पर्क सूत्र	(ब) कचन रोड उल्लू बाडी
३८८६४८ (कार्यालय)	गोहाटी (आसाम)
६०४५२६ (निवास)	सम्पर्क सूत्र ३२१२८
६०२६७६ (निवास)	

गोहाटी एव सिलीगुड़ी चाय निलामी क्रता सदस्य

श्रमणोपासक

(पाक्षिक)
पंजी संख्या आर एन ७३८८७/६३
वर्ष-३० अंक-१७

१० दिसम्बर १९९२

युवाचार्य विशेषांक

सम्पादक
जुगराज सेठिया
डॉ शान्ता भानावत

आगम-वाणी

जहा से सयंभूरमणे,
उदही अक्खओदए ।
नाणारयणपडिपुण्णे,
एवं हवई बहुस्सुए ।।

जिस प्रकार अक्षय जल निधि स्वयम्भूरमण समुद्र नानाविध रत्नो से परिपूर्ण होता है, उसी प्रकार बहुश्रुत भी (अक्षय सम्यग्ज्ञान रूपी जलनिधि अर्थात नानाविध ज्ञानादि रत्नो से परिपूर्ण) होता है ।

—उत्तराध्ययन ११/३०

अनुक्रमणिका

द्वितीय खण्ड

—युवाचार्य समारोह—

जिज्ञासाए समाधान एव साक्षात्कार

तृतीय खण्ड

—शुभकामना सदेश, बधाई—

काव्य वाटिका

सदेश

चतुर्थ खण्ड

नोट:—यह आवश्यक नही कि लेखकों के विचारों से संघ अथवा सम्पादक की सहमति हो ।

धन्यवाद एवं आभार

जिनशासन प्रद्योतक, समीक्षण ध्यान योगी, समता विभूति परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर की महती अनुकम्पा से बीकानेर क्षेत्र मे धर्मध्यान का जैसा अपूर्व वातावरण बना हुआ था उसकी चरम परिणति युवाचार्य चादर प्रदान महोत्सव के रूप मे जिनशासन के भूत, वर्तमान और भविष्य की स्वर्णिम योजक कड़ी बनकर हमारे समक्ष उपस्थित हुयी।

परम पूज्य शासन नायक के बीकानेर पदार्पण के साथ ही १६ फरवरी ९२ को २१ मुमुक्षु आत्माओ के भव्य भागवती दीक्षा समारोह के साथ प्रारम्भ हुए पवित्र धार्मिक अनुष्ठानों की यशस्वी यात्रा पर हमे गर्व है। दीक्षा के पावन प्रसग से एकत्र साधु साध्वी मडल और प्रेरित जनसमुदाय की सामूहिक दया के ऐतिहासिक कार्यक्रम के पर्यवसान पर परम पूज्य गुरुदेव द्वारा युवाचार्य की घोषणा और सत्वर पश्चात् ही सारस्वत धरा बीकानेर के राजमहलों के प्रागण में प्रखर प्रवक्ता तरूण तपस्वी शास्त्रज्ञ विद्वद्वर्य श्री रामलाल जी म सा को चादर प्रदान समारोह ने जिनशासन के इतिहास में एक गौरवशाली स्वर्णिम पृष्ठ रचा है।

इस अलौकिक क्षण की महनीय घटनाओ को शास्त्रीय, सन्दर्भों और युग सन्दर्भों के साथ सयोजित करके जन-जन के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए श्रमणोपासक का यह "युवाचार्य विशेषाक" प्रकाशित करने का निश्चय किया गया और वह निश्चय आकार लेकर आज आपके हाथों में समर्पित है। युवाचार्य पद के साथ जुडे बहुआयामी दायित्वो के सैद्धान्तिक, शास्त्रीय व्यावहारिक पक्षों पर लेख-सस्मरण आदि समन्वित सामग्री से यह अंक सग्रहणीय बन पड़ा है। पूर्ण प्रयत्न किया गया है कि आगमिक दृष्टि से यह सर्वांगपूर्ण बन सके। युवाचार्य श्री रामलालजी महाराज के सरल जीवन की अन्तरंग झाकी, आचार्य प्रवर द्वारा स्थविर प्रमुखों की घोषणा और उनकी

शास्त्रीय भूमिका को प्रस्तुत करने का भी यथाशक्य प्रयास किया गया है। विद्वान् संत-सती मडल का प्रशस्त आशीर्वाद सदैव सुलभ रहा, जिनसे सम्पादक मंडल को जिज्ञासा समाधान का सुअवसर मिला। हम उन पूज्य संत चरणों में वन्दना अर्पित करते हैं।

सम्पादन कार्य में डॉ श्री नरेन्द्र जी भानावत, जानकी नारायण श्रीमाली व उदय नागोरी की समर्थ लेखनी एवं प्रतिभा का स्पर्श इस विशेषांक को मिला है।

विद्वान् लेखकों व सम्पादक मडल के अनथक श्रम के प्रति हार्दिक आभार। श्री जैन आर्ट प्रेस के व्यवस्था प्रभारी श्री राजेन्द्र रामपुरिया तथा उनके सहयोगी कर्मचारियो व कम्पोजिटरो ने अहर्निश कार्य किया, तदथ वे प्रशसा के पात्र है। कार्यालय सचिव श्री नानालालजी पीतलिया और उनके सहयोगीजनों के दक्ष प्रयासो हेतु साधुवाद। संक्षेप मे इस विशेषांक को मूर्त रूप देने मे प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष सलग्न संभागियो के प्रति मैं आभारी हू।

अक के प्रकाशन में अपरिहार्य कारणों से हुए विलम्ब के लिए पाठको से क्षमाप्रार्थी हूँ।

जिनशासन की गौरव व गरिमा के अभिवर्धक युवाचार्य चादर प्रदान समारोह के उपलक्ष्य में प्रकाशित यह अंक आपके हाथो मे समर्पित करते हुए सघ स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है। आशा है यह विशेषाक मार्गदर्शक, उपयोगी व प्रेरक सिद्ध होगा।

—चम्पालाल डागा
मत्री
श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ
समता भवन, बीकानेर

झलकियां

पुनरावर्तन

महान् क्रियोद्धारक पूज्य आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी म सा ने सं १६०७ माघ शुक्ला पचमी को धर्मनगरी बीकानेर मे पूज्य आचार्य श्री शिवलाल जी म सा को युवाचार्य पद से विभूषित किया था। १४३ वर्षों के बाद उसी बीकानेर में समता विभूति आचार्य श्री नानेश ने मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा को युवाचार्य पद प्रदान कर इतिहास के दुर्लभ प्रसग का पुनरावर्तन कर दिया। दुर्लभ क्षणों को, दुर्लभ प्रसग को प्राप्त कर यहा की जनता धन्य धन्य हो उठी।

हर्ष–हर्ष

युवाचार्य पद सम्बन्धी आचार्य प्रवर का सदेश जब विद्वद्वर्य श्री शाति मुनिजी म सा ने पढ़कर सुनाया तो सभा हर्ष–हर्ष के अतुल निनादो से गूज उठी। इस गूज से सेठिया धार्मिक भवन काफी देर तक अनुगुजित रहा।

ज्वलन्त उदाहरण

अत्यल्प समय मे श्री साधुमार्गी जैन सघ, श्री समता युवा सघ, श्री समता बालक बालिका मडल एव श्री महिला मडल ने विद्युत गति से युवाचार्य महोत्सव की व्यापक तैयारिया सुन्दर समीचीन एव भव्य रूप से सम्पन्न कर एकता अनुशासन तथा समर्पण का ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत किया जो प्रत्येक सघ के लिए अनुकरणीय है।

कर्त्तव्य पालन

अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए समता भवन, रामपुरिया मार्ग स्थित केन्द्रीय कार्यालय ने तत्परता के साथ युवाचार्य पद महोत्सव की खबर देश भर मे फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

व्युत्पन्नमति मेधा

सघ सरक्षक, पाच स्थविर प्रमुख एव तीन शासन प्रभावकों की नियुक्ति कर आचार्य श्री ने अपनी व्युत्पन्नमति मेधा का परिचय तो दिया ही सघ रूप कल्पवृक्ष की जडो को और अधिक गहराई तक पहुचाने का महत्तम कार्य किया जिससे सकल सघ मे हर्ष की लहर परिव्याप्त हो गई।

समवशरण की स्मृति

३५ साधु--१४२ साध्वियां एव सहस्रो श्रावक-श्राविकाओ की विशाल उपस्थिति में युवाचार्य पद प्रधान का अद्भुत/अपूर्व/ऐतिहासिक प्रसग दृश्य महावीर के समवशरण की स्मृति दिलाने वाला था ।

समर्थन

श्वेत, निर्मल, शुभ्र, धवल, त्याग, तप, सयम एव उच्चाचार की प्रतीक युवाचार्य चादर को प्रथम सन्त वृन्द एव बाद में महासती वृन्द ने शासन सेवामे अनवरत जुटे हुए अपने पावन हाथो से स्पर्शित कर प्रबल समर्थन दिया । भगवान महावीर के निग्रन्थों की सर्वोच्च समता वहा साकार हो गयी

सगम

बीकानेर राज प्रांगण में महाराजा श्री नरेन्द्र सिंहजी की विद्यमानता मे आयोजित युवाचार्य चादर महोत्सव को देखकर ३० वर्ष पूर्व उदयपुर राज प्रांगण मे महाराणा श्री भगवत सिंहजी की विद्यमानता में आयोजित युवाचार्य चादर महोत्सव का दृश्य जनता के मस्तिष्क मे उभर आया । अद्भुत अनोखा सहज सगम देखकर जन-मन प्रमुदित हो उठा ।

सकल्प

चादर का श्वेत रग, समता का केशर मडित रंग केशरिया वलिदान का एव इसके तार एकता के प्रतीक हैं ऐसी भावाभिव्यक्ति करते हुए युवाचार्य श्री ने आचार्य श्री के स्वप्न समता समाज रचना को साकार करने का सकल्प व्यक्त किया ।

गुरुणां आज्ञाऽविचारणिया

देश भर से आये विभिन्न सघो के प्रतिनिधियों श्रद्धालुओं ने 'गुरु नाना' के प्रति असीम आस्था व्यक्त करते हुए गुरु आदेश को सिर आंखों उठाया । शासन समर्पित श्रावक-श्राविकाओ ने 'गुरुणा आज्ञाऽविचारणिया' उक्ति को चरितार्थ कर के इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठो में नया अध्याय संयुक्त कर दिया । यह नूतन अध्याय भावी पीढ़ी को सदा-२ दिशा बोध प्रदान करता रहेगा । ※

तरुण तपस्वी, शास्त्रज्ञ, पडित रत्न मुनि श्री रामलालजी म. युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित चारो ओर हर्ष की लहर : अभिवन्दन एव शुभ कामनाए

भारतीय आध्यात्मिक परम्परा मे श्रमण सस्कृति का विशेष महत्त्व है। इस सस्कृति ने आत्म-जागृति, पुरुषार्थ पराक्रम, तप-त्याग, सयम-सदाचार पर सर्वाधिक बल दिया है। इस सस्कृति के विकास में तीर्थंकरो की वाणी को अपने आचार-विचार मे जीवन्त रूप देने वाले आचार्यो, सन्त-सतियो एव श्रावक श्राविकाओ की उल्लेखनीय भूमिका रही है। इस सस्कृति के महत्त्वपूर्ण अग के रूप मे जैन धर्म भारतीय समाज मे आज तक अविच्छिन्न रूप से चला आ रहा है। अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर ने साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रूप जिस तीर्थ की स्थापना की, वह "चतुर्विध सघ" रूप से जाना जाता है। सघ की इस परम्परा ने जैन धर्म को बराबर जीवन्त बनाये रखा है।

श्रमण भगवान् महावीर के बाद तीर्थंकर-परम्परा समाप्त हो गई और सुधर्मा स्वामी उनके प्रथम पट्टधर आचार्य हुए। इस दृष्टि से वर्तमान मे जो आचार्य-परम्परा चली आ रही है, वह आचार्य सुधर्मा-स्वामी से ही सम्बन्धित है। विगत ढाई हजार वर्षों मे जैन श्रमण-परम्परा मे कई उतार चढाव आये, गण-गच्छ-सघ-भेद हुए, पर यह परम्परा अवरुद्ध नही हुई। दिगम्बर और श्वेताम्बर दो प्रमुख परम्पराओ के रूप मे जैन धर्म आज भी जन-जीवन मे अपना प्रभाव बनाये हुए है।

जैन परम्परा मे स्थानकवासी परम्परा का अपना विशेष महत्त्व है। इस परम्परा में ज्ञानसम्मत क्रिया, तप-सयम और गुणाराधना पर जोर दिया गया है। आत्म-गुणो के विकास से सबधित विविध धर्मा-नुष्ठान इस परम्परा की विशेषताए हैं। इस परम्परा में साधुमार्गी जैन संघ अपने विशुद्ध साध्वाचार एव कठोर संयमी जीवन के लिए

विश्रुत है । वर्तमान मे समता विभूति, समीक्षण ध्यानयोगी, प्रतिबोधक आचार्य श्री नानालालजी म सा इस संघ के आचार्य महावीर स्वामी की शासन-परम्परा में आप ८१ वें तथा साधु । की आचार्य हुकमीचन्दजी म सा की सम्प्रदाय के आप आठवें आचार्य है

आचार्य हुक्मीचन्दजी म ने सयमीय-साधना की गहराई में उतर कर निर्ग्रन्थ संस्कृति में व्याप्त सयम-शैथिल्य को दूर करने का ऐतिहासिक प्रयत्न किया । आपने २१ वर्ष तक बेले-बेले की तप-साधना की और प्रतिदिन दो हजार शक्रस्तव एव दो हजार गाथाओ का परावर्तन नियमित रूप से करते हुए स्वाध्याय एव ध्यान के क्षेत्र मे अनूठा आदर्श प्रस्तुत किया । आप विशिष्ट क्रियोद्धारक आचार्य थे । अत आपके नाम पर सम्प्रदाय का नाम पड़ा । आपके बाद इस परम्परा में जो आचार्य हुए, वे हैं—आचार्य श्री शिवलाल जी म सा, आचार्य श्री उदयसागर जी म सा, आचार्य श्री चौथमल जी म सा, आचार्य श्री श्रीलाल जी म सा, आचार्य श्री जवाहरलाल जी म सा, आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा और वर्तमान आचार्य श्री नानालाल जी म सा ।

आचार्य का धर्मशासन परम्परा मे विशेष महत्त्व होता है । पच परमेष्ठि महामन्त्र मे आचार्य को तीसरा स्थान दिया गया है । अरिहन्त और सिद्ध देव हैं तो आचार्य, उपाध्याय और साधु गुरु हैं । आचार्य स्वय "आचार" का पालन करते हैं और दूसरो से आचार का पालन करवाते हैं । इस दृष्टि से सघ, समाज और जीवन मे सदाचरण की महक फैलाने मे आचार्य की प्रभावी भूमिका रहती है । आचार्य अपने जीवन और नेतृत्व से सबका मार्ग प्रशस्त करते हैं, भूले-भटकों को सही राह बताते हैं और सयम मे विचलन आने पर अपने उपदेश से सबको सयम स्थिर करते हैं । शास्त्रीय दृष्टि से आचार्य छत्तीस गुणों के धारक होते हैं । वे पाच महाव्रतो का पालन करते हैं, पाच इन्द्रियो को जीतते हैं, पाच समिति और तीन गुप्ति की परिपालना करते हैं, चार कषायो को टालते हैं, पाच आचार का पालन करते हैं और नौ बाड सहित शुद्ध ब्रह्मचर्य की आराधना करते हैं ।

आचार्य श्री नानालाल जी म सा साधुमार्गी जैन चतुर्विध सघ के महान् तेजस्वी और प्रभावक आचार्य हैं । ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य रूप पच आचार की परिपालना करते हुए आपने सघ को इस ओर गतिशील किया है । ज्ञानाचार के क्षेत्र में आपने स्वयं आगम साहित्य का दोहन कर अपने प्रवचनो में धर्मतत्त्व की सम

सामयिक जीवनपरक प्रभावी व्याख्या की है । "जिणधम्मो" आपकी ज्ञान-साधना का नवनीत है । आपने अपने साधु-साध्वियो को संस्कृत प्राकृत एव तत्वज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर अध्ययन और स्वाध्याय की विशेष प्रेरणा दी है । यही नही, समाज मे ज्ञान का विशेष प्रचार-प्रसार हो, इस दृष्टि से आप सदैव अपने प्रवचनों मे प्रेरणा देते रहते हैं । श्री गणेश जैन ज्ञान भण्डार रतलाम, सुरेन्द्र कुमार साड शिक्षा सोसायटी, आगम-अहिंसा समता प्राकृत संस्थान उदयपुर आपकी प्रेरणा के ही प्रतिफल हैं ।

दर्शनाचार के क्षेत्र मे आपने अनेक लोगो को धर्म-श्रद्धा मे स्थिर किया है और विश्व-शाति तथा आत्म कल्याण की दिशा मे समता-दर्शन का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक रूप प्रस्तुत किया है । चारित्राचार के क्षेत्र मे आपने जहा एक ओर २८९ मुमुक्षु भाई-बहिनो को अब तक दीक्षित कर वीतराग पथ का पथिक बनाया है, वहा हजारो लोगो को धर्मोपदेश देकर व्यसनमुक्त सस्कारी जीवन जीने की प्रेरणा दी है । धमपाल प्रवृत्ति इस दिशा मे जीवन निर्माण मे एक रचनात्मक कार्यक्रम है । तपाचार के क्षेत्र में आपने बाह्य तप के साथ साथ आभ्यतर तप पर विशेष बल दिया है । समीक्षण-ध्यान के रूप मे आपने वर्तमान युग के भौतिक दबावो और तनावो से मुक्त होने तथा क्रोध, मान, माया, लोभादि कषायों पर विजय प्राप्त करने के अभ्यास का सुन्दर समीक्षण-प्रयोग प्रस्तुत किया है । वीर्याचार के क्षेत्र मे व्यक्ति के पुरुषार्थ और आत्म-चैतन्य को जगाने की आप सदैव प्रेरणा देते रहते हैं, जिसके फलस्वरूप स्वधर्म वात्सल्य, जीवदया एव सर्वजन कल्याणकारी अनेक प्रवृत्तियो मे कई भाई-बहिन व सस्थाए सक्रिय हैं । संक्षेप मे कहा जा सकता है कि आचाय श्री नानेश सघनायक के रूप मे चतुर्विध संघ को सही नेतृत्व देने एव पचाचार की परिपालना कराने में एक आदर्श नेतृत्व हैं ।

काल एक अखण्ड प्रवाह है । आचार्यो की परम्परा अविच्छिन्न रूप से चली आ रही है और आगे भी चलती रहेगी । धर्म सघ अखण्ड और अविचल बना रहे, इस दृष्टि से आचार्य अपने उत्तराधिकारी के रूप मे युवाचार्य मनोनीत करते रहे हैं । आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी म सा ने वि स १९०७ मे बीकानेर मे मुनिश्री शिवलाल जी म को, आचार्य श्री उदयसागर जी म ने मुनिश्री चौथमल जी म को वि स १९५४ मे मार्गशीर्ष शुक्ला त्रयोदशी को, आचार्य श्री चौथमल जी म

तपस्या होती है। श्रमण निर्ग्रन्थ का जीवन जगत् के समस्त प्राणियों का तुलना मे बेजोड होता है, अद्वितीय होता है। अत प्रत्येक साधु-साध्वी को अपने लक्ष्यपूर्ण निर्ग्रन्थता के प्रति सदा जागृत/सजग रहना चाहिए। उन्हें अपने लक्ष्य का सदा अनुचिंतन करते रहना चाहिए कि हमने निर्ग्रन्थ श्रमण धर्म धारण किया है। हम इसका परिपूर्ण रूप से पालन करते रहे। बाह्य परिग्रह धन धान्य, माता पिता, पुत्र पुत्रियों आदि प्राप्त व प्राप्त होने वाले एव इनसे सम्बन्धित आतरिक परिग्रह मोह, ममत्व, अहंत्व आदि का त्याग कर जगत् साक्षी से आत्मभाव पूर्वक साधु साध्वी जीवन स्वीकार किया है अतः "जाए सद्धाए निक्खंतो तमेव अणुपालिज्जा" के अनुसार सदा सर्वदा हमारा वर्तन हो।

जो श्रमण समाचारी है उसका सजगता से परिपालन करते हुए अनुशास्ता की आज्ञाराधन पूर्वक अपनी आत्म साधना मे लीन रहना चाहिये। उन्हे चाहिए कि सहअस्तित्व, सहिष्णुता, समता को जीवन का आधार बनाकर पारस्परिक वात्सल्य भाव रखते हुए पचाचार का पालन करने मे सतत् जागरूक रहे। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक साधु-साध्वी को निर्ग्रन्थता के प्रति सर्वात्मना समर्पित होना चाहिये

श्रावक वर्ग का दायित्व

भव्य भवन की छत को टिकाये रखने के लिए कई स्तम्भ होते हैं। उन स्तम्भों मे से अमुक स्तम्भ की सम्प्रमुखता है अन्य गौण है, यह नही माना जाता बल्कि सभी स्तम्भो का अपने २ स्थान पर महत्व स्वत सिद्ध है। इसी प्रकार चतुर्विध सघ रूप भव्य भवन के श्रमण-श्रमणी श्रावक-श्राविका रूप स्तम्भ हैं। चतुर्विध सघ मे जहां श्रमण-श्रमणी को महत्व प्राप्त है उसी प्रकार श्रावक-श्राविका का स्थान भी गौरवमय रहा हुआ है। वीतराग भगवतो ने श्रावक श्राविकाओ को साधु-साध्वी के लिए अम्मा पिया, माता पिता की उपमा से उपमित किया है। जैसे माता पिता बालक की सुरक्षा करते हैं उसी प्रकार श्रावक-श्राविका वग भी साधु साध्वी के जीवन की सुरक्षा करते हैं ऐसे शासन सेवी सघनिष्ठ श्रावक-श्राविकाओं को भी सघ व शासन के प्रति रहे हुए अपने कर्त्तव्यो का जागरुकता से पालन करना चाहिये

प्रसग वश उनके कतिपय दायित्वो का सूचन किया जाना उचित लग रहा है ।

० साधु-साध्वियो की निग्रन्थता बरकरार रहे उसमे किसी तरह का दोष नहीं लगे इसकी अपनी तरफ से पूरी सजगता रखी जाय ।

० त्यागी आत्माओ के समक्ष व धार्मिक अनुष्ठानो के समय सांसारिक बातें न हो ।

० किसी व्यक्ति विशेष के प्रसग को लेकर अपनी आस्था को चलायमान नही होने देना क्योंकि कभी-२ सुनी हुई या देखी हुई बात भी भ्रामक या गलत हो सकती है । यदि सच्ची प्रतीत भी हो तो यही चिन्तन करना चाहिए कि व्यक्ति गलत हो सकता है पर जिनेश्वर देवो का सिद्धान्त गलत नहीं हो सकता ।

० सघ के किसी सदस्य या व्यवस्था विषयक कभी कोई अन्यथा बात देखने या सुनने मे आवे तो उसकी इधर उधर चर्चा नहीं करते हुए शासन सेवा की भावना से उस बात को सघ नायक/अनुशास्ता तक पहुचा देना चाहिए ।

० संघ के सदस्यो के पास अलग-२ क्षमताए होती है कोई स्नातक/अधिस्नातक आदि शिक्षित प्रबुद्ध व बुद्धिजीवी होते हैं । उनके पास बौद्धिक क्षमता होती है । किसी के पास समय होता तो किसी के पास शारीरिक क्षमता होती है । इसी तरह किसी में वाचिक व किसी-२ में अन्य अनेक प्रकार की क्षमताए होती हैं ।

० उन्हें अपनी-२ क्षमता के अनुसार अपनी शक्ति/शक्तियो का समविभागीकरण कर बच्चो, युवाओ व बहिनो आदि के लिए धार्मिक शिक्षण व्यवस्था, स्वधर्मी वात्सल्यता स्वाध्याय प्रवृत्ति, जरूरतमद स्वधर्मियो की अपेक्षित सेवा, अहिंसा प्रचार, ज्ञान प्रचार असहाय पीडित मानवता की सेवा, स्वधर्मियों की उन्नति के उपाय आदि विभिन्न रचनात्मक क्षेत्रो मे अपनी क्षमता व शक्ति का सदुपयोग कर धर्म की प्रभावना करना ।

० प्रभु महावीर के शासन का अनूठा प्रताप है, जिससे अच्छे २

पर प्रदानो की सन्तानें भौतिकता के इस युग में भी भौतिक सुख-सुविधाओ से मुख मोडकर संयमी जीवन अंगीकार कर रही हैं। ऐसे संयम साधको के प्रति श्रावक श्राविका वर्ग का जो दायित्व है उसका भली भांति निर्वहन करने के प्रति सजग रहना ।

० वर्तमान में साध्वियो की सुरक्षा एक गम्भीर विषय बना हुआ है उनके परिजन संघ के विश्वास पर आज्ञा प्रदान करते हैं। उनके विश्वास को अखंड रखने की दृष्टि से तथा शासन सेवा की भावना से प्रत्येक व्यक्ति को अपना दायित्व समझ कर उनकी रक्षा सुरक्षा के प्रति विशेष रूप से जागृत रहना ।

० धार्मिक क्षेत्र मे बढ़ रही फोटो आदि प्रवृत्तियो के विषय में मैं समय-समय पर निषेध करता रहा हूं उन भावो को ध्यान में रखते हुए, बनर आदि के द्वारा स्वागत की जो परम्परा बनती जा रही है उस पर गम्भीरता से चिंतन करना चाहिये । त्यागियो का स्वागत बेनर आदि से नही अपितु तप त्याग से किया जाना चाहिये ।

० धार्मिक अनुष्ठान सामायिक, पौषध, संवर, व्याख्यान, आराधना प्रतिक्रमण, ज्ञान चर्चा आदि मे तत्परता पूर्वक भाग लेना । हास्य कवि सम्मेलन, लोक रजन सास्कृतिक कार्यक्रम आदि आत्मसाधना के अनुकूल नही होने से ऐसे कार्यक्रमों का वर्जन करना आदि उक्त प्रकार से श्रावक श्राविका वर्ग अपनी क्षमता व शक्ति अनुसार शासन/संघ की भव्य सेवा कर सकते हैं ।

० आधुनिकता का तूफान जोर पर है । यह तूफान कभी-कभी साधु साध्वियो को भी विचलित करने वाला बन सकता है। ऐसी स्थिति में श्रावक-श्राविकाओ का कर्त्तव्य है कि वे गम्भीरता, सतर्कता एवं विवेक का परिचय दें । अर्थात् विचलित होने वालो को अत्यन्त विनम्र शब्दो मे एकान्त मे संघ हित से प्रेरित हो निवेदन करें ।

"धन्य है आप मुनिराज को, आप महासतीजी को 'आप ने' आभ्यन्तर एव बाह्य परिग्रह का परित्याग, वीतरागता प्राप्ति के महान् उद्देश्य से किया है । यह आपका संयमी जीवन मोक्ष के लिए है । संयमी जीवन का मूल उद्देश्य जिनाज्ञा के अनुरूप साधना/आराधना

है/निर्ग्रन्थता/श्रमणत्व के मूल स्वरूप को सुरक्षित रखते हुए आप जितना भी जनकल्याण का काय कर सकें-इतना करें, आप महान् हैं आपकी महत्ता इसी रूप मे कायम रहे, यही हमारी भावना है । इसी हेतु सकेत रूप मे यह निवेदन किया है । हमारी गलती हो तो क्षमा करें।"

श्रावक वर्ग को भी अपने कर्त्तव्य को समझकर स्वप्रेरणा से तदनुरूप कार्य करना चाहिए । इसमे संयत वर्ग को कुछ कहने की आवश्यकता ही नही पडे ।

चतुर्विध सघ की सेवा स्वय की सेवा—

चतुर्विध सघ की यथायोग्य सेवा वास्तव मे प्रकारान्तर से अपनी स्वय की सेवा है । चतुर्विध सघ एव सघ का सदस्य ये दोनो एक दृष्टि से भिन्न नही है, तीर्थत्व रूप मे भावात्मक दृष्टि से एक ही हैं । अत चतुर्विध सघ की यथायोग्य सेवा करते हुए यह नही सोचना कि मैं किसी अन्य का उपकार कर रहा हूँ । बल्कि सेवा करने वालो को यह सोचना चाहिए कि मैं अपने आप पर ही उपकार कर रहा हू। जैसे आख में तिनका गिरा दर्द हुआ, बैचेनी हुई तो झट से हाथ उसकी मदद मे पहुचता है और तिनके को निकाल देता है । क्या इस क्रिया मे हाथ ने कोई परोपकार किया ? नही, हाथ भी उसी शरीर का अग है, हिस्सा है और आख भी । इसी तरह मैं और मेरा सघ एकात्म भाव से अलग नहीं हैं । ऐसा मानकर सघ के प्रत्येक सदस्य को अपने कर्त्तव्य कम पर दृढ़ रहना चाहिए ।

पवित्र रूप से प्रवाहित रहे—

जिनेश्वर देवो द्वारा प्ररूपित, प्रवर्तित निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति का पवित्र रूप से प्रवाहित रहना अनन्त-अनन्त जीवों के लिए सुख एव साता का हेतु है । वीतराग मार्ग का अनुयायी उन सभी जीवो के सुख को चाहता है । इस दृष्टि से इस पवित्र परम्परा को प्राणवान् रखने हेतु प्रत्येक सदस्य को सदा सतर्क रहना आवश्यक है क्योंकि जब जब श्रावक-श्राविका वर्ग ने अपने कर्त्तव्यो की उपेक्षा की सत-सती वर्ग अपनी निग्र थता से विचलित हुए, तब-तब वीतराग माग मे विकृतियो ने प्रवेश पाया। फलस्वरूप क्रान्ति के स्वर फूटे। सं १९९० का अज-

व कर रहा हू । सघ की वतमान स्थिति ग्राप सबके समक्ष है । इसमें जो कुछ भी विकास के कार्य हो पाये हैं वे स्व पू गुरुदेव के आशीर्वाद से व मेरे सहयोगी इन साधु साध्वियो व ग्राप लोगों के समपण व सहकार से हो पाये हैं । सघ का और अधिक विकास हो इसके लिए भी मैं चितन मनन करता रहता हू । संघ की व्यवस्था सुदृढ़तापूवक सुचारु, समीचीन तथा गतिशील रहे इस भावना से प्रेरित हो चितन मनन पूर्वक आत्म साक्षी से संघ के समग्र अधिकारो के साथ शास्त्रज्ञ तरुण तपस्वी मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा को युवाचाय पद प्रदान किया है ।

अत। विनयपूर्वक युवाचार्य श्री रामलालजी म सा की आज्ञा राधना करना चतुर्विध संघ का धम है । सघ का प्रत्येक सदस्य उनकी आज्ञा को मेरी ग्राज्ञा समझे ।

इस प्रसंग पर मैं मेरे ग्रनन्य आत्मीय सहयोगी-संघ संरक्षक, स्थविर प्रमुख, शासन प्रभावक, विद्वान, कवि, लेखक, समीक्षक, प्रखर वक्ता, विद्याभिलाषी, सेवाभावी, तपस्वी, आदि विविध गुणालकृत सभी सत रत्नो व शासन प्रभाविका, विदुषी, शासन समर्पिता सभी श्रमणी रत्नो को यह भलावण भी देना चाहता हू कि उन्होंने अब तक प्रत्येक अनुकूल या प्रतिकूल स्थिति में मेरे साथ जसा हार्दिक सहकार रखा है वैसा ही हार्दिक सहयोग वे युवाचार्य श्री को प्रदान करते हुए शासन शोभा मे श्री वृद्धि करें ।

साथ ही जहां श्रावक वग में श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ, समता युवा संघ, महिला समिति, बालक बालिका मंडल आदि के माध्यम से शासन सेवा करने वाले सदस्य गणों के साथ साथ निग्रन्थ श्रमण सस्कृति के प्रति ग्रास्था रखने वाले वे चाहे किसी भी रूप में क्यो न हो उन सभी सदस्यो को भी मैं यह संकेत देना चाहता हू कि वे भी यथाशक्ति यथायोग्य अपना सहयोग युवाचार्य श्री को प्रदान करते हुए तीर्थंकर देवो की इस पवित्र संस्कृति को ग्रखड रखने में तत्पर रहें । यह कार्य किसी व्यक्ति विशेष का नहीं अपितु तीर्थंकर देवों के समग्र अनुयायियो का है ।

इन्हीं सद्भावनाओ के प्रकाश में प्रत्येक भव्य जन अपनी को आलोकित करते हुए ग्रपने जीवन को भव्य बनावे ।

युवाचार्य श्री निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति के अनुसार जनभावनाओं का आदर करते हुए कल्पवृक्ष तुल्य इस विराट संघ के बहुमुखी विकास द्वारा आत्म श्रेयस् को प्राप्त हो यही अपेक्षा है।

इति शुभभूयात्

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश का उपलब्ध साहित्य

	प्रवचन साहित्य	मूल्य
१	अन्तर्दर्शन	१४ ००
२	ऐसे जीए	२३ ००
३	जलते जाये जीवन दीप	६ ००
४	दुःख और सुख	११ ००
५	परदे के उस पार	१५ ००
६	समता निर्झर	२० ००
७	सच्चा सौन्दर्य	१० ००
८	सर्व मगल सर्वदा	१५ ००
९	जीवन धर्म	७ ५०
१०	अमृत सरोवर	७ ५०
११	मंगल वाणी	६ ००
	कथा साहित्य	
१२	अखण्ड सौभाग्य	१२ ००
१३	कुमकुम के पगलिये	१५ ००
१४	लक्ष वेध	११ ००
१५	नल दमयन्ती प्रथम व द्वितीय प्रत्येक	६ ००
	ध्यान साहित्य	
१६	समीक्षण ध्यान—एक [illegible]नोविज्ञान	३५ ००
१७	ध्या[illegible] [illegible]	४ ००
१८	[illegible]	२५ ००
१९	[illegible]	१० ००
२०	[illegible]	१० ००
[illegible]	[illegible]	१० ००
[illegible]	[illegible]	१५ ००

पर्यावरण प्रदूषण मुक्ति

- हरे वृक्षो मे जान है। उनको कटवाना, उनके फल, फूल पत्तियो को उखाडना हिंसा है। हिंसा कभी धर्म नही होती। अपने प्राणो की जब हम रक्षा करना चाहते हैं तो क्या उन प्राणियों का रक्षण करना हमारा दायित्व नही है ?
- अन्न व प्राणा जल वै प्राणा —अन्न ही प्राण है, जल ही प्राण है। इसलिये अन्न और जल का सदुपयोग करना हमारा पुनीत कर्त्तव्य है, उनको बर्बाद करना अथवा उनका दुरुपयोग करना, धार्मिक एवं नैतिक अपराध है। इन अपराधों से बचना और बचाना प्रत्येक इन्सान का प्राथमिक धर्म है।
- वायुमण्डल प्रदूषित होगा तो मन भी प्रदूषित हो जायेगा। क्योकि मन पर वायुमण्डल का गहरा प्रभाव अकित होता है और साधना के लिये मानसिक शुद्धि आवश्यक है। अत वायुमण्डल को दूषित करने वाले तत्वो से बचना साधना की मौलिकता का रक्षण करना है।

महामन्त्र नमस्कार जाप

- परमात्मा से भेंट करने का सीधा, सरल मार्ग प्रभु भजन है।
- नमस्कार महामन्त्र सभी दुख दुविधाओ को मिटाकर सुख सुविधाए प्रदान करता है।
- नमस्कार महामन्त्र के प्रति अविचल श्रद्धा रखने वाला नर से नारायण, जीव से शिव, भक्त से भगवान और आत्मा से परमात्मा बन जाता है।
- जाप से हृदय मे अपूर्व शांति एवं असाधारण सुख प्राप्त होता है।

—आचार्य श्री नानेश

युवाचार्य विशेषांक
विचार-
दर्शन
प्रथम-खण्ड
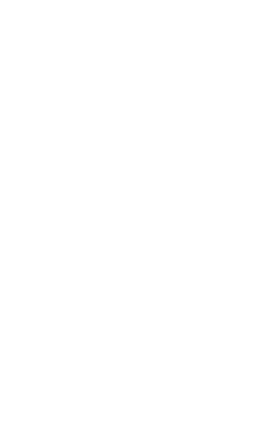
संघ सेवा

● श्रीमद् जवाहराचार्य

सघ की एकता के पवित्र कार्य मे विघ्न डालना एवं संघ मे अनेकता उत्पन्न करना सबसे बडा पाप बताया है और सभी पाप इस पाप से छोटे हैं। चतुर्थ व्रत खडित होने पर नवीन दीक्षा देकर साधु को शुद्ध किया जा सकता है, लेकिन सघ की शाति और एकता भंग करके अशांति और अनैक्य फैलाने वाला–सघ को छिन्न-भिन्न करने वाला दशवें प्रायश्चित का अधिकारी माना गया है। इससे यह स्पष्ट है कि सघ को छिन्न भिन्न करना घोर पाप का कारण है। जो लोग अपना बडप्पन कायम करने के लिए दुराग्रह करके संघ मे विग्रह उत्पन्न करते हैं, वे घोर पाप करते हैं। अगर आप सघ की शांति और एकता के लिए सच्चे हृदय से प्राथना करेंगे तो आपका हृदय निष्पाप बनेगा ही, साथ ही सघ मे अशाति फैलाने वालो के हृदय का पाप भी धुल जायेगा। सघ मे एकता होने से सघ की सब बुराई नष्ट हो जाती है।

शासन से प्रेम के कारण आप पर जो उत्तरदायित्व आता है उसका दिग्दशन मैंने कराया है, पर साधुओ पर आने वाला उत्तरदा-यित्व भी है। साधुओ से आपका सम्पक होता है आप उनके प्रति आदर भाव रखते हैं। आप उन्हें अपना मार्गदर्शक मानते हैं। अतएव साधुओ का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वे आपको वास्तविक कल्याण का माग बताए, आपको धम, व्रत और सयम से भेंट कराए। त्याग में ही सच्चा सुख है, अतएव उस सुख की प्राप्ति के लिए आपको त्याग का उपदेश दें।

इस प्रकार साधु संघ और श्रावक सघ का पारस्परिक स्नेह सम्बन्ध स्थिर रहने से ही धर्म की जागृति रह सकती है। दोनो को अपने-२ कत्तव्य के प्रति सजग और दृढ रहना चाहिये। एक दूसरे को पथ से विचलित होते देख कर तत्काल उचित प्रतिकार करें तभी भग-वान का शासन सुशोभित रहेगा। श्रावक संघ अगर साधु का वेष देखकर उसकी उच्च पद-मर्यादा का विचार करके साधु को पथ भ्रष्ट होते समय भी दृढता पूर्वक नही रोकता और साधु संघ श्रावको के सासारिक वैभव से प्रभावित होकर या अन्य किसी कारण, धर्म को लज्जित करने वाले श्रावक के काय देखकर भी उसे कत्तव्य का बोध

नही कराता तो दोनो ही अपने कर्त्तव्य से भ्रष्ट हो जाते हैं।

साधु इस सघ रूपी अग के मस्तक है। मस्तक का काम अच्छी-२ बातें बताना है, साधु भी यही करते हैं। साध्विया अगर अपने कर्त्तव्य पालन में तत्पर और दृढ़ हो तो सघ अग की भुजाए हैं। श्रावक उदर के स्थान पर है। उदर आहारादि अपने भीतर रख कर मस्तक, भुजा आदि समस्त अवयवो का पोषण करता है। इसी प्रकार श्रावक साधुओ साध्वियो का भी पालन करता है। और स्वयं अपना भी। पेट स्वस्थ और विकार हीन होगा तो ही मस्तक और भुजा आदि अवयव शक्तिशाली या काय क्षम हो सकते हैं। इस प्रकार भगवान् महावीर के सघ रूपी अग म श्रावक पेट और श्राविका जघा है।

वेदान्त मे ईश्वर के विराट रूप की चार वर्णों मे कल्पना की गई है। ईश्वर के उस विराट रूप मे ब्राह्मण को मस्तक, क्षत्रिय को भुजा, वश्य को उदर और शुद्र को पर रूप मे कल्पित किया है। किन्तु भगवान महावीर के संघ मे यथाथ चार अंग है। जब तक सब अवयव एक दूसरे के सहायक न बनें तब तक काम नही चलता। आज संघ तो महान है, पर उसमे सग नही दिखाई देता। सग का तात्पर्य है जघा का पेट को, पेट का भुजा को, भुजा का मस्तक को, मस्तक का भुजा, पेट एव जघा को, भुजा का पेट मस्तक और जघा को, पेट का मस्तक और जघा को और जघा का मस्तक, भुजा और पेट को सहायता देना। चारो अगो का सगठन होना चाहिये। मस्तक मे ज्ञान हो, भुजा मे बल हो, पेट मे पाचन शक्ति हो और जघा मे गतिशीलता हो तो अभ्युदय मे क्या कसर रह जायेगी? अगर संघ शरीर के संगठन के लिए सर्वस्व का भी त्याग करना पडे तो भी यह त्याग कोई बडी बात नही होनी चाहिये। सघ के सगठन के लिए अपने प्राणो का उत्सग करने मे भी पश्चात्पद नही होना चाहिये। सघ इतना महान् है कि उसके सगठन के हेतु आवश्यकता पडने पर पद और अहंकार का मोह न रखते हुए इन सब का त्याग कर देना श्रेयस्कर है। आज यदि सघ सु-सगठित हो जाए, शरीर की भांति प्रत्येक अवयव एक दूसरे का सहायक बन जाए, समस्त शरीर का श्रेय ही अवयव का मुख्य लक्ष्य हो जाए तो साधुता की वृद्धि हो, संघ शक्ति का विकास हो तथा धर्म एव समाज

की विशिष्ट उन्नति हो । इस पवित्र एव महान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मैं तो अपनी पद मर्यादा को भी त्याग देने को तैयार हू । सघ की सेवा मे पारस्परिक अनैक्य को कदापि बाधक नही बनाना चाहिये ।

मैं सघ का ऋणी हू सघ का मुझ पर क्या ऋण है, यह बात मैं, साहित्य मे पडितराज कहलाने वाले जगन्नाथ कवि की उक्ति मे कहना चाहता हू ।

मुक्ता मृणाल पल्ली भवता नीपिता,
यन्यूनिनि यत्रन लिनानि निषेवितानि ।
रे राजहस ! वद तस्य सरोवरस्य,
कृत्येन केन भवितासि कृतोपकार ॥

यह अन्योक्ति अलकार है कि एक सरोवर पर राजहस बैठा था । एक कवि उसके पास होकर निकला । राजहस को देखकर कवि ने कहा—हे राजहस मैं यहा रहकर तेरी क्रिया देखता-रहता हू । तू कमल का पराग निकालकर खाया करता है और पराग से सुगन्धित हुए जल का पान करता रहता है । तू इधर से उधर फुदक कर, कमलिनी के कोमल-कोमल पल्लवो पर विहार किया करता है । तू यह सब तो करता, मगर मैं पूछता हू कि इस सरोवर का तुझ पर ऋण है, उससे मुक्त होने के लिये तू क्या करेगा ? तुम किस प्रतिदान से इस ऋण से उऋण होओगे ?

कवि राजहस को सम्बोधित करके कहता है—मैं तुम्हे एक काम बताता हू । अगर तुम वह काम करोगे तब तो ठीक है अन्यथा धिक्कार के पात्र बन जाओगे । वह काम क्या है ? तुम्हारी चोच मे दूध और पानी को अलग २ कर देने का गुण विद्यमान है । अगर इस गुण को तुम बनाये रहे तो यह सरोवर प्रसन्न होगा, और कहेगा-वाह! मेरा बच्चा ऐसा ही होना चाहिये । इसके विपरीत अगर तुमने इस गुण मे बट्टा लगाया तो सरोवर के ऋणी भी रह जाओगे और ससार मे हसी के पात्र भी बनोगे ।

यह अन्योक्ति अलकार है अर्थात किसी दूसरे को सम्बोधन करके दूसरे से कहना है । इस उक्ति को मैं अपने ऊपर ही घटाता हू । यह सघ मानसरोवर है । मैंने सघ का अन्न खाया है । सघ ने मेरी खूब सेवा भक्ति की है । संघ की सेवा का आश्रय पाकर मुझे

किसी प्रकार का कष्ट नही पहुचता, बल्कि संघ द्वारा मैं अधिकाधिक सम्मानित होता जाता हू। यह सब कुछ तो हुआ मगर गुरु महाराज मुझसे पूछते हैं—तुम कौनसा काम करोगे जिससे इस ऋण से मुक्त हो सको?

साधु आपसे आहार लेते हैं। क्या आहार का यह ऋण साधुओ पर नहीं चढ़ता? आप भले ही उसे ऋण न समझें और उसका बदला लेने की भावना न रखें, तथापि नीति निष्ठ और धर्म प्रिय ऋणी की भाति इस ऋण का बदला तो चुकाना ही चाहिए। जो साधु सच्चा है, वह अपने ऊपर सघ का बोध अवश्य ही अनुभव करेगा। मैं अपने ऊपर सघ का ऋण मानता हू, इसलिये प्रश्न यह है कि मैं सघ के ऋण से किस प्रकार मुक्त हो सकता हू?

एक आचार्य की हैसियत से सत्यासत्य का विवेक रखते हुए निर्णय करना मेरा कर्त्तव्य है। सत्य निर्णय से अगर मेरी पोल खुलती है तो खुले, दूसरे मुझ पर क्रुद्ध होते हो तो हो जायें, किसी प्रकार का खतरा मुझ पर आता हो तो आ जाये, फिर भी सत्य निर्णय देना मेरा कर्त्तव्य है। यदि मैंने सत्य असत्य का निर्णय किया तो मैं संघ के ऋण से मुक्त हो सकूगा। विपरीत आचरण करने से सघ का ऋण भी मुझ पर लदा रहेगा और मैं संसार में धिक्कार का पात्र बन जाऊ।

ठाणांग-सूत्र में कहा गया है कि निष्पक्ष होकर विवेक पूर्वक संघ में शांति रखने वाला महानिर्जरा का पात्र होता है। संघ का आचार्य होने पर भी अगर मैं निष्पक्ष न बन सका, मैं अपने कर्त्तव्य का भली-भांति पालन न कर सका तो सघ का ऋणी बने रहने के साथ ही कमल प्रभाचार्य के समान मेरी भी गति होगी। कमल प्रभा-चार्य ने तीर्थंकर गोत्र बाधने की सामग्री इकट्ठी करली थी। उनके आने पर लोगों ने सोचा था कि अब समस्त चैत्यालयो का उद्धार हो जायेगा। किन्तु कमल प्रभाचार्य ने साफ कह दिया कि भगवान के नाम पर फूल की पखुरी भी चढ़ाना सावद्य है। चैत्यालय आदि भगवान की आज्ञा के काम नहीं है। ऐसे निष्पक्ष और साहसी कमल प्रभाचार्य थे, मगर एक विपरीत स्थापना* के कारण सावद्य आचार्य कहलाने लगे।

इसी सम्बन्ध मे मैं आपसे एक बात और कहना चाहता हू।

* साध्वी के चरण छूने की स्थापना

जैसे राजहंस के लिए सरोवर है, उसी प्रकार क्या आपके लिये भारतवर्ष नहीं है ? क्या आपने भारत का अन्न नहीं खाया है ? पानी नही पिया है ? आपने भारत में श्वास नहीं लिया है ? क्या यह शरीर भारत के अन्न जल से नही बना ?

आपने इसी भारत-भूमि पर जन्म ग्रहण किया है । इसी भूमि पर आपने शैशव-क्रीड़ा की है । इसी भूमि के प्रताप से आपके शरीर का निर्माण हुआ है । हंस ने मानसरोवर से जो कुछ प्राप्त किया है उससे कही बहुत अधिक ऋण आपके ऊपर जन्म भूमि का है । इस ऋण को आप किस प्रकार चुकायेंगे ।

आपका यह शरीर भारत मे बना है या किसी विदेश मे ?

—भारत में । फिर आपने भारत को क्या बदला चुकाया है ? विलायती वस्त्र पहनकर, विलायती सेंट लगाकर, बिस्कुट खाकर, चाय पीकर, वेशभूषा धारण करके और विलायती भावना को अपना कर ही क्या आप अपनी जन्म भूमि का ऋण चुकाना चाहते हैं ? ऐसा करके आप कृतकृत्यता का अनुभव करते हैं ?

कल एक समाचार पत्र मे मैंने वह संदेश पढ़ा था जो गांधी जी ने अमेरिका मे दिया था ।

एक वे भारतीय हैं जो पक्षपात के वश होकर अथवा भय के कारण ऐसे दबे हुए हैं कि जानते हुए भी सत्य नही कहते । इसके विपरीत दूसरे वे हैं जो भारत की ओर से अमेरिका को निर्भय, निसंकोच होकर इस प्रकार का सदेश दे सकते हैं । आप भगवान महावीर के श्रावक हैं । आपसे जगत न्याय की आशा करता है । मगर आप समुचित न्याय नही दे सकते या उस न्याय की मान्यता को अंगीकार नहीं कर सकते तो फिर ऐसा कौन करेगा ?

मैं संघ के सम्बन्ध मे आपसे कह रहा था । अगर आप संघ की विजय करवाना चाहते हैं तो सगठन करो । वतमान युग इतिहास मे एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है । यह ऐसा युग है, जिसका भविष्य के साथ गहरा सम्बन्ध रहेगा । अतएव सगठित होकर अपनी शक्ति केन्द्रित करो और वीर संघ को शक्तिशाली बनाओ । संघ सेवा का बहुत बड़ा माहात्म्य है । यह कोई साधारण कार्य नही है । संघ की

(शेष पृष्ठ ६ पर)

संघ संगठन के साधन

श्रीमद् जवाहराचार्य

जिन शासन की भाति बुद्ध शासन मे भी सघयोजना के सबध मे सुन्दर विचार किया गया है। सघ योजना मे यह विचार बहुत उपयोगी है। अतएव यहा कुछ विचारो का उल्लेख कर देना उचित होगा।

सघ सगठन—

सुखो बुद्धानमुप्पादो, सुखा सद्धम्मदेसना।
सुखा सघस्स सामग्गी, सम्मग्गानं तपो सुख ।।

अर्थात —बुद्धो का जन्म सुखकर है। सद्धम की देशना सुख कारक है। सग की सामग्री सगठन सुखकारक है और सगठित होकर रहने वाले भिक्षुओ का तप सुखकारक है।

सघ सगठन की उपयोगिता और उसके लाभ—

'एकधम्मो भिक्खवे ! लोके उपज्जमानो उपज्जति बहुजन-हिताय बहुजनसुखाय, बहुनो जनस्स अत्थाय, सुखाय, देवमनुस्सानं। कतमो एकधम्मो ? सघस्स सामग्गी। सघे खो पन भिक्खवे ! समग्गे न चेव अञ्ञमञ्ञे भण्डनानि होन्ति, न च अञ्ञमञ्ञं परिभासा होन्ति, न च अञ्ञमञ्ञ परिक्खेवा होति, न च अञ्ञमञ्ज परिच्चजना होन्ति, तत्थ अप्पसन्ना चे व पसीदन्ति पसनानञ्च भीयोभावो होतीत्ति।'

अर्थात्—हे भिक्षुओ ! लोक मे एक धम ऐसा है, जिसे सिद्ध करने से बहुत लोगो का कल्याण, बहुत लोगो का सुख तथा देव और मनुष्य सहित बहुत लोगो का कल्याण, सुख और इच्छित अथ सिद्ध होता है।

'वह धम कौन सा है ?'

'संघ का सगठन।'

भिक्षुओ ! सघ का संगठन होने से परस्पर क्लेश कलह नहीं होता, परस्पर अपशब्द गाली गलौच-का व्यवहार नही होता, परस्पर आक्षेप विक्षेप नहीं होता, परस्पर परित्तजना नही होती, इस प्रकार सघ

का संगठन होने से अप्रसन्न भी प्रसन्न हो जाते हैं (हिलमिल कर रहने लगते हैं) और जो प्रसन्न हैं उनमें खूब सद्भाव उत्पन्न होता है ।

संघ संगठन-साधक की सिद्धि—

सुखा संघस्स सामग्गी, समग्गानञ्च अनुग्गहो ।
समग्गरतो धम्मट्ठो, योगक्खेमा न धंसति ।।
संघ समग्गं करित्वान, कप्पं सग्गम्हि मोदति ।

अर्थात्—संघ की सामग्री संगठन सुखकारक है । संगठन में रहने वालों की सहायता करने वाला, धर्म में स्थिर रहने वाला और संगठन साधने वाला भिक्षु योग क्षेम से च्युत नहीं होता और संघ का संगठन करके वह भिक्षु अल्प काल पर्यन्त स्वर्ग सुख भोगता है ।

संघभेद का दुष्परिणाम—

एक धम्मो भिक्खवे ! लोके उप्पज्जमानो उप्पज्जति बहुजन-हिताय, बहुजनसुखाय, बहुनो जनस्स अनत्थाय, अहिताय, दुक्खाय देवमनुस्सानं, कतमो एक धम्मो ? संघभेदो । संघे खो पन भिक्खवे ! भिन्ने अञ्ञमञ्ञं भण्डनानि चेव होन्ति, अञ्ञमञ्ञ परिभासा च होन्ति, अञ्ञमञ्ञ परिक्खेपा च होन्ति, अञ्ञमञ्ञ परिच्चजना च होन्ति, तत्थ अप्पसन्ना चेव न प्पसीदन्ति, पसन्नानञ्च एकच्चान अञ्ञथत्त होन्तीति ।

अर्थात्— भिक्षुओ ! लोक में एक धर्म ऐसा है जिसे उत्पन्न करने से बहुत लोगों का अकल्याण बहुत लोगों का असुख और देव मनुष्य सहित बहुत लोगों को अनर्थ, अकल्याण और दुःख उत्पन्न होता है ।

'वह कौनसा धर्म है ?'

'संघभेद'

भिक्षुओ ! संघ में फूट डालने से आपस में कलह होता है, आपस में गाली गलोच होता है, आपस में मिथ्या आक्षेप होते हैं । आपस में परित्यजना होती है । आपस में अप्रसन्न हुए लोग हिलते मिलते नहीं है और मिलेजुले लोगों में भी अन्यथा भाव असद्भाव पैदा होता है ।

संघभेदक की दुर्गति—

आपायिको नेरयिको, कप्पट्ठो संघभेदको ।
वग्गारामो अधम्मट्ठो योगक्खेमतो धंसति ।।

सघ समग्ग भित्वान कप्प निरयम्हि पञ्चतीति ।

अर्थात्—सघ मे फूट डालने वाला अधर्मी, भल्प वप पयन्त नरक मे निवास करता है, निर्वाण से विमुख होता है और संघ में फूट पैदा करके अल्पकाल तक नरक मे पचता है ।

सघ सगठन के साधन—

छहिमे भिक्खू धम्मा साराणीया पियकरणागरुकरणा सगहाय, अविवादाय, समग्गिया एकीभावाय सवत्तन्ति । कतमे छ ?

(१) इध भिक्खवे ! भिक्खुनो मेत्त कायकम्म रहो च ।
(२) इध भिक्खवे ! भिक्खुनो मेत्त वचीकम्मं रहो च ।
(३) इध भिक्खवे ! भिक्खुनो मेत्त मनोकम्म रहो च ।

(४) भिक्खवे ! भिक्खू ये ते लाभा धम्मिका धम्मलद्धा अन्तमसो पत्तपरियापन्नमत्त ऽयि तथा रूपेहि लाभेहि अप्पटिविभत्तभोगी होति सीलवन्तेहि सब्रह्मचारीहि साधारणभोगी ।

(५) भिक्खवे ! भिक्खू यानि यानि सीलानि अखण्डानि अच्छिद्दानि असबलानि अकम्मासानि भुजिस्सानि विञ्ञुप्पसथानि अपरामट्ठानि समाधिसवत्तनिकानि सीलेसु सीलसमनागतो विहरति सब्रह्मचारीहि आवी चेव रहो च ।

(६) भिक्खव ! भिक्खू याऽय दिट्ठि अरिया निय्यानिका निय्याति तक्करस्स सम्मादुक्खक्खयाय तथारूपाय दिट्ठियादिट्ठिसमन्नागतो विहरति सब्रह्मचारीहि आवी चेव रहो च ।

अर्थात्—यह छ वस्तुए स्मरणीय, प्रेम बढ़ाने वाली और आदर बढ़ाने वाली है और यह संग्रह, अविवाद, सामग्री (एकता) और एकीकरण मे कारण हैं—

(१) प्रत्यक्ष और परोक्ष मे मैत्रीमय कायकर्म ।
(२) प्रत्यक्ष और परोक्ष मे मैत्रीमय वाचा कम ।
(३) प्रत्यक्ष और परोक्ष में मैत्रीमय मन कम ।

(४) धर्मानुसार मिली हुई वस्तुओ का सार्धमिका मे बटवारा करके उनके साथ आप उपभोग करना ।

(५) प्रत्यक्ष और परोक्ष मे अपना शीलाचार, अखण्ड, अछिद्र, अशबल, अकलुषित, भूजिष्य (स्वतन्त्र), सुज्ञप्रशस्त, अपरामृष्ट और समाधि संवतनिव रखना, और ।

(६) प्रत्यक्ष तथा परोक्ष मे जिस दृष्टि के द्वारा, सम्यक् प्रकार से दु ख का नाश होता है, उस माय निर्यानिक दृष्टि से सम्पन्न होकर व्यवहार करना ।

महात्मा बुद्ध ने संघ की व्यवस्था के लिए जिन साधनो का उपदेश दिया है, वे किसी भी सघ के लिए उपयोगी हो सकते है। हमारा संघ भी उनसे लाभ उठा सकता है। सघधर्म का पालन करने के लिए इन नियमों की ओर अवश्य ध्यान रखना चाहिए ।

(शेष पृष्ठ ५ का)

उत्कृष्ट सेवा करने से तीर्थंकर गोत्र का बन्ध हो सकता है। अगर आप संघ की सेवा करेंगे तो आपका ही कल्याण होगा ।

दिनांक १६ ६-३१ को महावीर भवन दिल्ली मे दिये गये प्रवचन से । —श्री रतनलाल जैन द्वारा सकलित ।

कामनाओ पर विजय प्राप्त करें

स्वभाव से ही मानव अनेक कामनाए करता रहता है । वे कामनाए पूण होने पर उसे संतुष्टी हो जाय, यह बात नहीं है। कामनाए पुन-पुन जागृत होती रहती है । जो कामनाए तीव्र इच्छा शक्ति से जागृत होती है उनकी यदि कदाचित् पूर्ति नही होती है तो उस समय मानव के मानस तन्त्र का असन्तुलित हो जाना अधिकतर सम्भावित है । बहुत कम व्यक्ति उस परिस्थिति मे अपने आपको संभाल पाते हैं । कामनाओ से प्रताडित वह मानस कुछ कर सकता है ? उसका अनुमान भी लगा पाना कठिन हो जाता है । अत कामनाओ को जागृत करने की बजाय उस पर विजय प्राप्त करना चाहिए । इस सन्दभ मे गीण का यह वचन स्मरणीय है—

"न जातु काम कामाना उपभोगेन शाम्यति"

—युवाचार्य श्रीराम

पंच परमेष्ठी पद और आचार्य तथा युवाचार्य

● डॉ महेन्द्र सागर प्रचंडिया

आत्मा और परमात्मा पर आधारित विश्व मे दो प्रमुख धार्मिक मान्यताए प्रचलित हैं। जो धार्मिक मान्यता परमात्मा को सृष्टि का कर्त्ता हर्त्ता स्वीकारती है वह कहलाती है परमात्मावादी। परमात्मावादी ही ईश्वरवादी कहलाती हैं। दूसरे प्रकार की मान्यता वह है जो आत्मा को स्वीकारती है और सृष्टि का कर्त्ता हर्त्ता परमात्मा को नही मानती, वह कहलाती हैं आत्मवादी। आत्मवादियों के लिए ईश्वर या परमात्मा कोई अजनबी नही, वह वस्तुत आत्मा की निर्मल अवस्था ही है। कर्म युक्त जीव है आत्मा और कर्म-मुक्त जीव है परमात्मा। कर्म-क्षय करने के लिए जो साधना पद्धतिया प्रचलित हैं उनमे पच परमेष्ठी परम्परा अर्वाचीन नही है और वह आत्मवादी परम्परा का पोषण करती है। यहां पंच परमेष्ठी पद और आचार्य तथा युवाचार्य विषयक अनुशीलन करना हमारा मूल अभिप्रेत है।

अरिहत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु नामक पाच पद मिलकर पचपरमेष्ठी के रूप को स्वरूप प्रदान करते हैं। ये आत्म विकास के पांच पडाव हैं। ये पद अथवा पडाव कोई परमेश्वर अथवा व्यक्ति विशेष नही हैं। अपितु सभी आत्मा के विकास चरण हैं। साधु चरण आत्म-विकासी सोपान का पहला पडाव है। साधुचर्या सधने की प्राथमिक अवस्था है। संयम एवं तप साधना पूर्वक जागतिक जीवन से आध्यात्मिक जीवन की ओर उन्मुख होने का सफल सकल्प है।

साधुचर्या मे मोह को जानने और पहिचानने का प्रयास किया जाता है। मोह मेरूदण्ड है जागतिक जीवन-चक्र का। इससे क्रोध, मान और माया के द्वार बिना दस्तक दिए स्वत खुल जाते हैं। राग और द्वेष सजग हो जाते हैं। साधु उस घर को छोड देता है। वह घर से बेघर हो जाता है। घरेलू चिपकन छूट जाती है। उसकी नजर मे कचन का कोई मूल्य नही है, वह अन्तरग से अकिंचन हो जाता है। वह अनन्त दर्शन, ज्ञान और चारित्र को बडी सावधानी से परखता है, पाता है। वह शुद्ध आत्म स्वरूप की साधना करता है।

साधुचर्या धर्म की प्रयोगशाला है। धर्म का स्वरूप उसकी दैनिक चर्या मे चरितार्थ होता है। उसका जीवन धर्म का पर्याय हो जाता है। साधु के तीन रूप होते है—साधु, उपाध्याय और आचाय।

जब साधु आगम के अनुशीलन मे प्रवृत्त होता है तभी उसका दूसरा चरण, साधना सोपान के द्वितीय पद पर आरोहण करता है। साधु आगमवेत्ता होने पर उपाध्याय की सज्ञा प्राप्त करता है। उसमे चौदह विद्या स्थानो के व्याख्याता की सामथ्य का उदय होता है। उपाध्याय परमेष्ठी समस्त साधुओ तथा सभी मोक्षाभिलाषियो, शील-वान साधकों को उपदेश देते है, शिक्षित करते हैं।

साधु का तीसरा महत्त्वपूर्ण चरण है—आचार्य पद। आचार्य पूरे धम शासन की रक्षा करते हैं। वे कहीं भी हों, पर उनकी आत्म शक्ति का प्रभाव सवत्र पड़ता है। क्योकि सब साधुओ के सघ मे ऐसे साधु को आचाय पद पर प्रतिष्ठित किया जाता है, जो सामान्य साधुओ से अधिक प्रतिभावान हो, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी हो, सुदशन हो, विरक्त, धीर-वीर गम्भीर, दयालु, उदार, मृदुभाषी, शास्त्री तथा लोक-व्यवहार में पटु होना आचार्य के प्रमुख लक्षण हैं। इनका पवित्र सानिध्य पाकर साधक सन्मार्गी हो सकता है।

सारा साधु समाज उन्हीं के निर्देशन मे स्व पर कल्याण मे सक्रिय रहता है। सादृश्य मूलक पद्धति मे कहें तो कहा जा सकता है कि शासन रूपी वृक्ष के लिए आचाय तने के समान हैं। वे अपनी सभी डालियो, पत्तों, फूलो तथा सभी फलों के शासन को सभालते हैं।

साहू समाज का सर्वोच्च पद है-आचार्य। आचार्य का आचरण जागृति से निष्पन्न होता है। जिस प्रकार एक दिए से अन्य अनेक दीप जलाए जाते हैं, सैकडो दीप जल जाते हैं, फिर भी जो मूल मे दीप जला है वह कभी निजला नही होता। यही उसकी आध्यात्मिक सम्पदा की महिमा है।

आचाय एक महत्त्वपूर्ण शब्द है। इस पद पर पहुचने पर साहू छत्तीस गुण संयुक्त मधुरभाषी तथा सरल स्वभावी होते हैं। वे भव्य जीवो को कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं। उनका कोई पक्ष नही होता, वे सदा निष्पक्ष होते हैं, समभावी होते हैं। जगत के सभी प्राणियो के साथ समानता का व्यवहार करते हैं।

आचार्य पद बड़ा व्यापक होता है। इस पद को विषयानुसार अनेक रूपों में विभाजित किया गया है। गृहस्थाचार्य, प्रतिष्ठाचार्य, दीक्षाचार्य, बालाचार्य, एलाचार्य तथा नियपिकाचार्य आदि अधिक उल्लेखनीय हैं। दिगम्बर समुदाय में आचार्यों के इन भेद रूपों के साथ श्वेताम्बर समुदाय में बालाचार्य और एलाचार्य के मिले-जुले दायित्व का निर्वाह करने के लिए युवाचार्य का प्रवर्तन किया गया है। दर असल ये सारी संज्ञाएं आचार्य के सहायक की भूमिका का निर्वाह करती हैं। विगत वर्षों में एक आचार्य ने एक नया पद उत्पन्न कर दिया—उपाचार्य। अब विचारणीय बात यह है कि पंच परमेष्ठी पदों में इन नए पदों के लिए कोई स्थान है या नहीं। लगता यह है कि यह उपासकों के समाज ने संगठन और सुव्यवस्था बनाए रखने के लिए व्यक्ति की सूझ और समझ का परिणाम है। उपाचार्य अथवा युवाचार्य आज प्रथम मानीटर और द्वितीय मानीटर की नांई आचार्य पद के पूर्व की अवस्था विशेष हैं, जिन्हें आचार्य के दायित्व का निर्वाह करने-कराने के लिए पूर्व अभ्यास करने हेतु अवसर प्राप्त होता है।

मुझे लगता है कि ये सारे पद मूल में दर्शन, ज्ञान और चारित्र की भूमिका पर खड़े होते हैं। साधक जैसे जैसे अपनी साधना से आत्मिक आलोक जगाता जाता है। वह स्वतः ही पदोन्नत होता जाता है। इस सर्वोदयी मार्ग पर किसी के हस्तक्षेप अथवा स्तुति-संस्तुति की अपेक्षा नहीं होती। श्रद्धा पूर्वक जब ज्ञान सुधी साधक के चारित्र में अवतरित होता है, जागता है, तभी उसकी आत्मा का विकासात्मक उदय प्रतिभाषित हो उठता है।

साहू—साधु के तीन रूप—साधु, उपाध्याय और आचार्य—अरिहंत पद के प्राप्त्यर्थ आवश्यक पड़ाव—चरण हैं। उपाध्याय और आचार्य वस्तुतः व्यवस्था परक दायित्व भी रखते हैं। साधु इन सब बातों से मुक्त रहता है। अपनी साधना सातत्य से वह सीधा अरिहंत पद भी पा सकता है और अरिहंत पद के लिए उसे चार घातिया कर्मों को क्षय करना आवश्यक होता है। तभी उसमें केवल ज्ञान का उदय होता है। चार अघातिया कर्मों को और क्षय कर लेने पर वह अंतिम पड़ाव चरण सिद्धपद प्राप्त कर लेता है। बंध से निर्बन्ध हो जाता है। जो पांच कल्याणक पूर्वक अरिहंत पद प्राप्त करते हैं वे

वस्तुत कहलाते हैं तीर्थंकर । तीर्थंकर-अरिहंत लोक-वासियों को धार्मिक देशनाएं दिया करते हैं और स्व पर कल्याण करते हुए वमु कर्मो का विनाश कर सिद्ध पद प्राप्त कर मुक्त हो जाते हैं ।

इस प्रकार आत्मा के आध्यात्मिक विकास के ये पांच पडाव अथवा चरण प्रत्येक प्राणी के कल्याणार्थ प्रेरणा देते हैं, मार्ग को प्रशस्त करते हैं अत सर्वदा और सर्वथा ये पाचो पद नमस्कार करने योग्य पूजनीय हैं ।

—मंगल कलश ३९४, सर्वोदय नगर,
आगरा रोड, अलीगढ़-१

श्रमणोपासक · चार कोटिया

चत्तारि समणोवासगा—
अद्दागसमाणे, पडागसमाणे ।
खाणुसमाणे, खरकटसमाणे ।

श्रमणोपासक की चार कोटिया हैं—
दर्पण के समान-स्वच्छ हृदय ।
पताका के समान-अस्थिर हृदय ।
स्थाणु के समान-मिथ्याग्रही ।
तीक्ष्ण कंटक के समान-कटुभाषी ।

—स्थानाग सूत्र ४/३

साधना पथ

ससारगड्डपडिलो णाणादवलबितु समारूहति ।
मोक्खतड जध पुरिसो, वल्लिवितारोण विसमाओ ॥

जिस प्रकार विषम गत मे पडा हुआ व्यक्ति लता आदि को पकडकर ऊपर आता है, उसी प्रकार ससारगत मे पडा हुआ व्यक्ति ज्ञान आदि का अवलबन लेकर मोक्ष रूपी किनारे पर आ जाता है ।

—निशीथभाष्य ४६५

आचार्य मन्त्रपद और ध्यान-साधना

△ श्री रमेश मुनि शास्त्री
[उपाध्याय श्री पुष्कर मुनिजी के विद्वान शिष्य]

अध्यात्म-जागरण और अध्यात्म-यात्रा के लिए जिस मन्त्र का चयन नितान्त अपेक्षित है, वह मन्त्र 'नमस्कार महामन्त्र' है। यह मन्त्र इतना शक्तिशाली एवं परम तेजस्वी है कि उसके द्वारा आध्यात्मिक उपलब्धियों के साथ साथ ऐहिक उपलब्धियां भी प्राप्त होती हैं। इस विशिष्ट मन्त्र की साधना के द्वारा अध्यात्म का समग्र मार्ग प्रकाशमान् हो जाता है, हमारी यात्रा निर्विघ्नरूपेण सम्पन्न होती है, हमें निर्मल-चेतना का अनुभव हो सकता है, विशुद्ध चेतना की उच्चतम-भूमिका में हमारा आरोहण हो सकता है।

नमस्कार महामन्त्र वस्तुतः अगाध अपार महासागर है। इसमें कितनी ही डुबकियां लें, कितना ही अवगाहन करते रहें, इसका आर पार पाना कठिन अवश्य है। इसकी गहराई को मापना सम्भव नहीं है। इसकी जो गहराई है, वह श्रुत-सागर की गहराई है। इस—महासागर को इसीलिए महामन्त्र कहा जाता है। यह आत्मा का जागरण करता है, इससे अधोमुखी बुद्धि ऊर्ध्वमुखी होती है। वास्तविकता यह है कि प्रस्तुत महामन्त्र कामनापूर्ति का महामन्त्र नहीं है, यह वह मन्त्र है जो हमारी अनन्त कामनाओं को सदा के लिये समाप्त कर देता है। इस मन्त्र के माध्यम से चैतन्य का जागरण, आत्मा का जागरण आत्मा के सघन आवरणों का सर्वथा विलय और आत्मा के ज्योतिर्मय-स्वरूप का उद्घाटन होता है।

नमस्कार महामन्त्र के पांचों पदों से परम आत्माएं सम्बन्धित हैं, जुड़ी हुई हैं। इसके साथ सामान्य शक्ति जुड़ी हुई नहीं है, पांच महत्तम शक्तियां इसके साथ जुड़ी हुई हैं। पांच परम आत्माओं में एक आत्मा आचार्य है। आचार की निर्मल गंगा में नित्य निरन्तर अवगाहन करने वाले और ऐसे नन्दनवन में रहने वाले, जिनके परिपार्श्व में

मधुर सौरभ विकीर्ण होता है। वे परम आत्मा का जागरण करने वाले आचार्य इसके साथ जुड़े हुए हैं। विराट् विश्व की यह परम पवित्र आत्मा किसी सम्प्रदाय की नहीं, किसी जाति विशेष की नहीं, किसी धर्म विशेष की नहीं, सबकी है और वह सबके साथ जुड़ी हुई है।

निज-स्वरूप की अनन्त अनुभूति तब तक सम्भव नहीं है, जब तक राग और द्वेष का क्षय नहीं होता। जब तक हमारा अन्तर्मन राग द्वेष के रंग से रंगा हुआ होता है, हमारी अन्तश्चेतना रंगीन होती है, तब तक आत्मानुभूति नहीं हो सकती। राग द्वेष का अन्तर्भाव कषाय में हो जाता है। कषाय के प्रधान रूप से दो संवाहक हैं—प्रथम 'ममकार' है, द्वितीय 'अहंकार' है। अहंकार और ममकार इन दोनों का जब तक सर्वथा प्रकारेण विलय नहीं हो जाता है तब तक हमारी सान्तता समाप्त नहीं हो सकती। जब तक सान्तता समाप्त नहीं हो जाती तब तक अनन्त की अनुभूति कदापि सम्भव नहीं है।

'णमो आयरियाणं' इस मन्त्र पद के माध्यम से राग द्वेष का क्षय होता है। इसे हम स्पष्ट-भाषा में प्रगट करें। 'णमो' यह नमन है, सर्वात्मना समर्पण है। अपने समूचे व्यक्तित्व का सहज रूपेण समर्पण है। इसके द्वारा अहंकार का विलय हो जाता है। जहां श्रद्धा-स्निग्ध हृदय से नमन होता है वहां अहंकार का सद्भाव सम्भव नहीं है। अहंकार सर्वथा रूप से निःशेष हो जाता है। जहां आचार्य है, वहां ममकार का सर्वतोभावेन अभाव है। ममकार पदार्थ के प्रति स्थापित होता है। आचार्य चेतना का उज्ज्वल-स्वरूप है, आचार्य आत्मा का पिण्ड है। ममकार चेतना के प्रति नहीं हो सकता। ममकार पदार्थ से जुड़ा हुआ है। जहां आचार्य चेतना का अनुभव जाग जाता है, एक क्षण के लिये भी चेतना की निर्मल-ज्योति का साक्षात्कार हो जाता है, वहां ममकार का विलय स्वतः हो जाता है। पदार्थ के प्रति जो आकर्षण है, वह छूट जाता है।

'नमो आयरियाणं' यह अहंकार और ममकार के महारोग को सर्वथा विलीन करने वाला अमोघ-औषध है। यह एक मन्त्र पद है। इसका मनोयोग के साथ जप किया जाता है। मन्त्र का अर्थ है—गुप्त भाषा। 'मन्त्र' शब्द की निष्पत्ति 'मत्र्' धातु से हुई है। इसका वाच्य अर्थ है—गुप्त रूप से अनुभव करना, गुप्तरूपेण बोलना। यही रहस्य

वाद है, यही गुप्तवाद है। जब तक रहस्य को हृदयंगम नही किया जाता है, तब तक मन्त्र का अर्थ भी समझ मे नही आ सकता। जब तक मन्त्र की रहस्यात्मकता आत्मगत नहीं होती, तब तक मन्त्र के माध्यम से अहंकार और ममकार इन दोनो का विलय नहीं किया जा सकता।

'नमो आयरियाण' यह सप्ताक्षरी मन्त्र है। इसका एक एक अक्षर अपना अक्षुण्ण अस्तित्व और अतुल महत्त्व रखता है। इसका केवल उच्चारण करना ही पर्याप्त नहीं है। केवल जाप अथवा ध्वनि ही पर्याप्त नही है। यह सत्य है कि इसका स्थूल जाप विशेष रूप से लाभ-प्रद नही होता। जब तक जाप ध्यान में परिणत नही हो जाता, वह जाप ध्यान मे नही बदल जाता, तब तक उसके माध्यम से वह उपलब्ध नही होगा जो निश्चित रूपेण होना चाहिए। तब तक मन्त्र का अचिन्त्य-चमत्कार प्रगट मे नही आएगा।

हमे जप को ध्यान की सर्वोच्च भूमिका पर प्रतिष्ठित करना है। जप और ध्यान के विभेद को मूलत समाप्त करना है। यह केवल जप ही नही है। यह शब्दगत ध्यान है, शब्द के आलम्बन से किया जाने वाला ध्यान है। इसी सन्दर्भ मे यह तथ्य प्रगट है कि ध्यान के वर्गीकृत रूप दो हैं—भेद-प्रधान ध्यान और अभेद प्रधान ध्यान। जहां भेद ध्यान की प्रधानता है वहा ध्यान करने वाले साधक का शब्द के साथ सम्बन्ध स्थापित होता है। ध्यान-कर्ता व्यक्ति "नमो आयरियाण" शब्द का उच्चारण करता है तो वक्ता का, ध्वनित होने वाले शब्द के साथ यह सम्बन्ध स्थापित हो जाता है कि अमुक व्यक्ति ने 'नमो आयरियाण' यह शब्दोच्चारण किया है किन्तु इन दोनों मे तादात्म्य स्थापित नहीं हो सका। दोनो का भेद समाप्त नही हो सका। व्यक्ति और शब्द ये दोनों अलग-अलग रह जाते हैं। इन दोनों के मध्य दूरी बनी रहती है। जब यह भेद—यात्रा करता हुआ अभेद तक पहुच जाता है तब शब्द का समापन हो जाता है। ध्यान करने वाले साधक का सम्बन्ध उस शब्द के अर्थ से जुड़ता जाता है। 'नमो आययारिण' का अर्थ और ध्यान करने वाले साधक मे एकीभाव सहज रूपेण स्थापित हो जाता है। इन दोनो मे तादात्म्य भी स्थापित हो जाता है। 'नमो आयरियाण' का ध्यान करने वाला और आचाय एक हो जाते

हैं, दो नही रहते हैं। आचार्य की जो दूरी है, वह समाप्त हो जाती है। हमारा आचाय उसमे सर्वथा रूप से लीन हो जाता है, और उसका प्रगटीकरण हो जाता है।

हमें इस निगूढ़ प्रक्रिया को स्पष्टत समझना है कि शब्द से अशब्द तक कैसे पहुंचा जा सकता है ? इस रहस्यात्मक प्रक्रिया को समझे बिना निर्विकल्प की स्थिति तक पहुचने का हमारा स्वप्न साकार नहीं हो सकता। स्वप्न की अपूर्णता बनी रहेगी। जब 'नमो आयरियाणं' यह स्थूल उच्चारण छूट जाता है और मानसिक उच्चारण बन जाता है, मन मे पहुंच जाता है अन्य को श्रुतिगोचर नहीं होता है, उच्चारण के जितने भी स्थान हैं, उनमे कोई प्रकम्पन नही होता, उनमे कोई छेदन भी नही हो पाता। केवल मन की धारणा के आधार से 'नमो आयरियाण' यह पुन-पुन प्रगट होता रहता है। यह सजल्प है। इसी का अपर नाम अतजल्प है। उच्चारण से छुटकारा मिल गया। जल्प छूट गया। मौन की स्थिति बन गई। अन्तर्वाणी बन गई। किन्तु अन्तस्तल में वह चक्राकार रूप में गतिशील है। जल्प मे शब्द और अर्थ इन दोनों का भेद स्पष्ट रूप से होता है। शब्द अर्थ से अलग है, और अर्थ शब्द से अलग है। हम जब अन्तजल्प मे पहुच जाते हैं, वहा शब्द और अर्थ इन दोनों मे भेद भी हो जाता है, और अभेद भी हो जाता है। वहा न पूर्णत भेद है और न पूणत अभेद है। किन्तु भेदाभेदात्मक स्थिति निर्मित हो जाती है। उस स्थिति मे शब्द और अर्थ के मध्य में जो दूरी है, वह कम हो जाती है, मिट जाती है। अन्तजल्प की स्थिति में जो शब्द उच्चरित होता है, वह वहा पर घटित होने लग जाता है। 'नमो आयरियाण' का ध्यान करने वाले व्यक्ति का अर्थ के साथ एकीभाव जुड गया, तादात्म्य हो गया। उस एकीभाव की स्थिति मे ध्याता और ध्येय दो नही होते हैं। वह ध्याता व्यक्ति स्वयं ध्येय के रूप मे बदल जाता है। ध्येय पूर्ण रूपेण समाहित हो जाता है। सर्वथा रूप से अभेद की स्थिति उपलब्ध हो जाती है। कोई भी भेद अपना अस्तित्व नही रखता है। जब वाक् की समाप्ति हो जाती है, तब उस स्थिति में अभेद स्थापित हो जाता है। इसी स्थिति मे मन्त्र का साक्षात्कार भी हो जाता है।

निष्कर्ष यह है कि अभेद की स्थिति का उद्भव होना ही

मन्त्र का साक्षात्कार है। यही मन्त्र का जागरण है, और यही मन्त्र का चैतन्य स्वरूप उद्घाटित है। इस स्थिति में 'नमो आयरियाणं' जल्प से छूट कर अन्तर्जल्प मे पहुचा जाता है। वाक् की स्थिति से छूट कर मानसिक–अवस्था मे चला जाता है। उस विशिष्ट स्थिति में 'नमो आयरियाण' का साक्षात्कार होता है और फिर उसके माध्यम से जो घटित होना चाहिये, वह सब घटित हो जाता है, कुछ भी अघटित नहीं रहता है। वास्तविकता यह है कि अभेद की स्थिति में 'नमो आयरियाणं' की अचिन्त्य–शक्ति जागृत हो जाती है और आन्तरिक ज्योति का जागरण हो जाता है। हमारा शब्द ज्योति मे बदल जाता है। शब्द के साथ साथ अर्थ की घटना घट जाती है। हम उक्त मन्त्र पद की अनन्त शक्ति से परिचित हुए। हमने इसकी शब्द शक्ति को जाना, वर्णों से निर्मित पद को सम्यक् रूप से समझा। वर्णों का समीचीन रूप से समायोजन किया। ध्वनि के सूक्ष्मतम उच्चारण को समझा, उसके साथ अपना अचल सकल्प जोड दिया। गहरी श्रद्धा को उसमें नियोजित किया तो 'नमो आयरियाणं' के ये सात अक्षर विराट् बन जाएँगे।

सारपूर्ण भाषा मे यही कहा जा सकता है कि 'नमो आयरियाण' उक्त मन्त्रपद का ध्यान करने पर हमारी वृत्तिया प्रशान्त बन जाती हैं, और वे प्रशान्तपूर्ण वृत्तियां पवित्रता की दिशा मे सक्रिय बन जाती हैं। मन पर जो मल स्थित है, उसको पिघलने के लिये कुछ न कुछ ताप अनिवार्य होता है, अपरिहार्य होता है, उसे पिघालने के लिये ध्यान ही एकमात्र अमोघ साधन है। जब ध्यान तप का ताप प्राप्त होता है, तब सश्लिष्ट परमाणु अपना स्थान छोड देते हैं। यही विशुद्धि है और यही निर्मलता है। इस तप की प्रभावकारिणी प्रक्रिया मे, मलिन परमाणुओ को सर्वथा उत्तप्त कर पिघालने की प्रक्रिया मे 'नमो आयरियाण' मन्त्रपद की ध्यान साधना का निरुपम-योगदान है, जिससे हमारी चेतना का ऊर्ध्वारोहण प्रारम्भ हो जाता है।

अतुल उत्साह – दृढ मनोबल

साधना के सम्यग् भाव हेतु अतुल उत्साह की आवश्यकता है और वह उत्साह प्राप्त होता है दृढ मनोबल से। —युवाचार्य श्रीराम

आचार्य पद का महत्व : युवाचार्य का दायित्व

△ श्री कन्हैयालाल लोढा

जैन धम मे नमस्कार मत्र का बडा महत्व है । नमस्कार मत्र में पाच पद हैं । इनमे आचार्य पद का स्थान उपाध्याय, साधु एव वीतराग से भी ऊचा है, कारण कि वीतराग केवलज्ञानी को जैनधर्म की अनेक सप्रदायें साधुपद में ही स्थान देती हैं । आचार्य पद का इतना महत्व होने का कारण यह है कि आचार्य को चतुर्विध सघ का सचालन मार्ग दर्शन करना व उन पर अनुशासन रखना होता है । व्यवहार जगत मे जो स्थान सम्राट् का होता है साधना जगत में वही स्थान आचार्य का होता है । जैसे सम्राट् का कर्त्तव्य है अपनी प्रजा को दुष्टो, दुर्जनो, दुश्मनो से बचाना, उसकी कमियो को दूर कर समृद्ध बनाना, इसी प्रकार आचार्य का कत्तव्य है साधको को विषय कषाय आदि विकारो से बचाना, शिथिलाचार को दूर कर शुद्धाचार का पालन कराना ।

श्री राममुनिजी को युवाचार्य पद प्रदान किया गया है । वर्तमान मे युवाचाय पद बहुत दायित्व का पद है । काटो का ताज सिर पर धारण करना है । कारण कि आज स्थानकवासी सम्प्रदाय मे पीछे के दरवाजे से वे सब बुराइया घुस गई हैं जो लोकाशाह के समय जैन धर्म फैली हुई थी यथा चैतन्य पूजा के स्थान पर जडपूजा, भगवद्-पूजा के स्थान पर आचार्य व गुरु पूजा, गुण पूजा के स्थान पर व्यक्ति पूजा, धम के स्थान पर धन पूजा, योग के स्थान पर भोग, का बोलबाला हो चला है । चुनाव में धमनीति का स्थान राजनीति कूटनीति छद्मनीति ने, तथा सम्यग्दर्शन का स्थान व्यक्तित्व प्रदर्शन ने ले लिया है । धम स्थानो मे उपदेश तो अपरिग्रह का दिया जाता है परन्तु पूजा-प्रतिष्ठा परिग्रहधारी की ही देखी जाती है, निर्धन सयमी, सदाचारी को कोई नहीं पूछता है, सर्वत्र महत्व धन-वैभव व प्रदर्शन का हो गया है, ज्ञान, दर्शन, चारित्र गौण हो गये हैं । अत जो शुद्धि करण का कार्य लोकाशाह ने किया वही शुद्ध करण का काय आज के आचाय-युवाचार्य को भी करना है । आज को पीढी जो धम के विमुख हो गई है, उसका प्रमुख कारण उपर्युक्त विकृतियां ही हैं । स्थानकवासी संप्र-

धाय मे भाई विकृतियो को दूर करने के लिए अनेक क्रिया उद्धारक आचाय हुए। आज के आचाय युवाचाय को भी क्रिया उद्धारक हान ही होगा अन्यथा वतमान का शिथिलाचार बढ़कर अनाचार, दुराचा रूप धारण कर लेगा।

आज धर्म के 'आचार' की शुद्धिकरण की जितनी आवश्यकता है उतनी ही आवश्यकता सैद्धांतिक पक्ष के शुद्धिकरण की भी है। जिस प्रकार जैनाचाय श्री जवाहरलालजो म सा ने महारभ अल्पारभ दया, दान, अनुकम्पा, आदि सैद्धान्तिक पक्ष की विकृत व्याख्याओं के स्थान पर युक्तियुक्त समीचीन व्याख्याए प्रस्तुत की, उसी प्रकार सैद्धान्तिक पक्ष पर पुन विचार करना आवश्यक है। वर्तमान सैद्धान्तिक व्याख्याओ पर मध्य कालीन सामन्तशाही युग का प्रभाव है वतमान मे धम का जो विवेचन किया जा रहा है उसमें धम का फल भविष्य में, अगले जन्म मे, स्वर्ग के भोग मिलने, सपत्ति, शक्ति, सत्ता सन्तति प्राप्ति के रूप मे किया जा रहा है जिससे ऐसा लगता मानो धर्म भी कर्म है जो बधता है और अबाधा काल पूरा होने प उदय मे आकर फल देता है। इस प्रकार वर्तमान में धम को क का रूप दे दिया गया है जो आगम विरुद्ध है जबकि यथाथता यह कि जिसका फल वर्तमान मे न मिलकर भविष्य मे, अगले जन्म मे, कालान्तर में मिलता है और समय पाकर नष्ट हो जाता है, व कर्म है। जबकि धर्म का फल तत्काल मिलता है और अक्षुण्ण बना रहता है तथा जिस प्रकार ज्वर आदि शारीरिक विकार दूर होने प तत्काल शांति मिलती है, ताप मिटता है स्वस्थता तथा प्रसन्नता बढ़ती है इससे भी असंख्य गुनी अधिक राग, द्वष, मोह रूप आत्मिक विकार दूर होने या घटने रूप धर्म से शांति, स्वस्थता, एवं प्रसन्नता मिलत है।

यदि ऐसा नहीं होता है तो धम के नाम पर धोखा है शांति, स्वस्थता, प्रसन्नता मानव मात्र को इष्ट है जिसकी उपलब्धि निर्विकार हुए बिना कभी भी संभव नहीं है। निर्विकार होना विकार में कमी होना ही स्वभाव की उपलब्धि करना है, यही धम है। ऐसा धर्म मानव मात्र को अभीष्ट है। आज जो धम का विरोध हो रहा है, वह उस तथा कथित धर्म का हो रहा है जो मात्र कर्म-काण्ड,

जिसमे निर्विकारता व स्वभाव की उपलब्धि रूप प्राण का नितान्त अभाव है । ऐसे निष्प्राण धर्म का इस वैज्ञानिक युग मे अधिक काल टिक सकना संभव नही है । इस वैज्ञानिक युग में वही धर्म टिक सकेगा जो स्वर्ग, नर्क, परलोक से सम्बन्धित मान्यताओ पर आधारित न होकर, स्वभाव रूप हो । निज स्वभाव का ज्ञान सभी को है, अत स्वय सिद्ध होता है, उसमें तर्क को अवकाश नही होता है, वह सभी के लिए मान्य होता है । स्वभाव सदा समान रहता है अर्थात् समता रूप होता है, उसमे विषमता की लेशमात्र भी गंध नही होती विषमता विकार की और समता स्वस्थता की द्योतक है । जहा विषमता है वहा अधर्म है, जहां समता है वही धर्म है । आज सारे विश्व को इसी समता धर्म की आवश्यकता है ।

युवाचार्य श्री राममुनिजी को समता दर्शन आचार्य श्री नानालालजी से विरासत मे मिला है । समता दर्शन सभी के जीवन का दर्शन है । विषमता सभी समस्याओ, संघर्षों, दुखो की जड है । समता दर्शन मे ही द्वन्द्व, दबाव, तनाव, युद्ध, संघर्ष, भेदभाव आदि मानव जाति की समस्त समस्याओ का समाधान है । इसका किसी सम्प्रदाय, दर्शन विशेष से सम्बन्ध नही है । आज आवश्यकता है समता दर्शन को कर्म काण्ड से बचाकर मानव समाज एव मानव जीवन के वैयक्तिक, आध्यात्मिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, वैचारिक, बौद्धिक मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक आदि समस्त क्षेत्रो मे समत्व को प्रस्थापित व प्रतिष्ठित करना । समता दर्शन मे ही मानव की समस्त समस्याओ का समाधान है, सर्वांगीण विकास सभव है । समता दर्शन मानव जाति का, युग का दर्शन है । आशा है, युवाचार्य श्री राममुनि जी समता दर्शन को विश्व व्यापी रूप देकर मानव जाति का महान् उपकार, कल्याण करेंगे ।

—अधिष्ठाता, जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान,
ए ६, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-१७

एकाग्रता

मानसिक समता का प्रभाव शरीर तन्त्र पर अवश्य पडता है । मन यदि एकाग्र है तो शरीर-माया से एकाग्रता सहज सिद्ध हो सकती है ।

—युवाचार्य श्री राम

चतुर्विध संघ का महत्त्व और युवाचार्य का दायित्व

△ श्री चांदमल कर्णावट

सघ की महिमा सर्वविदित है। उसमें धर्मसघ की महिमा तो अतिविशिष्ट है। धर्मसघ व्यक्ति और समाज के धार्मिक, आध्यात्मिक और नैतिक जीवन के निर्माण मे विशेष प्रभावकारी होता है। यह धर्म अध्यात्म के रक्षण एव उत्थान का दृढ आधार है।

चतुर्विध सघ धर्मतीर्थ है

सघ की अत्यधिक महिमा होने से साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका रूप धर्मसघ को तीर्थ माना गया है। इन चारो को चार तीर्थ बताया गया है। 'तीर्थ' का अर्थ है 'जिसका आश्रय लेकर तिरा जाय, आत्म कल्याण साधा जाय।' साधु साध्वी आदि चारो तीर्थों का जीवन और आचरण स्वय के उत्थान और कल्याण मे समर्थ होने से परकल्याण में भी सहायभूत होता है। ये चारो तीर्थ स्वय पवित्र हैं, महान् हैं, अत ये अन्यो के जीवन उत्थान मे भी सहायक होते हैं। ये चारों तीर्थ ज्ञान क्रिया से सम्पन्न होते हैं। ये जगम या चलते फिरते तीर्थ अन्यो के लिए प्रेरणास्रोत होते हैं। इनकी पावन प्रेरणा से जनसमुदाय सन्मार्ग मे अग्रसर होता है।

'श्री नदीसूत्र' के प्रारम्भ मे स्थविरावली के अन्तर्गत सघ स्तुति की गई है। गाथा ४ से १९ तक संघ को अनेक उपमाओ से उपमित किया गया है। सघ की तुलना नगर, चक्र, रथ, कमल, चन्द्र, सूर्य, और समुद्र सुमेरु से भी गई है। तप, सयम, शील, सदाचार आदि गुणों से युक्त होने के कारण सघ महान् है, कल्याणकारी और आनद-कारी है।

शास्त्रकार ने सघ का महत्त्व निम्न प्रकार बताया है—गुण रूप घरो से गहन श्रुतरत्नों से भरी हुई और सम्यग्दर्शन रूप विशुद्ध रथ्या (मार्ग) वाला और अखण्ड चारित्र रूप प्राकार (कोटवाला) है। सघ रूप नगर का कल्याण हो। (नदीसूत्र स्थविरावली गाथा ४)

'संयम रूप नाभि (मध्यभाग) और तप रूप आरा वाले, सम्यक्त्व

परिकर (ऊपरी भाग) वाले ऐसे शत्रुरहित सघ रूप चक्र को नमस्कार।' (वही गाथा ५)

'शील रूप पताका से उन्नत, तप और नियम रूप घोडो से युक्त और पाच प्रकार के स्वाध्याय रूप मागलिक शब्द वाले सघ रूप रथ का कल्याण हो।' (वही गाथा ६)

'कर्मरूप (कीचड) और जलसमूह से निकले हुए शास्त्र रूप रत्नमय लम्बायमान नाल वाले, अहिंसादि ५ महाव्रत रूप दृढ कर्णिका वाले, क्षमा आर्जव आदि उत्तरगुणरूप केसरवाले, श्रावकजनरूप भौरो से घिरे हुए, तीर्थंकर रूप तेज से विकसित, साधु समूह रूप हजार पत्र-वाले सघ रूप कमल का कल्याण हो।' (वही गाथा ७-८)

शास्त्रकार के इन शब्दो में सघ की महिमा स्वत स्पष्ट है। शास्त्रकार ने स्वय सघ को नमन करते हुए उसके कल्याण की कामना की है और संघ के पावन पवित्र स्वरूप का निरुपण किया है।

तीर्थंकर भगवान स्वय चतुर्विध सघ तीर्थ के सस्थापक

केवलज्ञान प्राप्ति के बाद तीर्थंकर भगवान स्वय उपदेश देकर साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका रूप धर्मतीर्थ की स्थापना करते हैं। इन चारो तीर्थों की स्थापना करने से वे तीर्थंकर कहलाते हैं। चौबीस तीर्थंकरा के स्तुति पाठ 'चतुर्विंशतिस्तव' के प्रारम्भ मे 'धम्मतित्थयरे' शब्द में तीर्थंकर भगवान को धर्मतीर्थ (सघ) की स्थापना करने वाला बताया गया है। इसी प्रकार 'शक्रस्तव' या नमोत्थुण' पाठ के प्रारम्भ में भी अरिहंत भगवान या तीर्थंकर प्रभु को 'तित्थयराणं' कहकर धर्म-तीर्थ रूप-चतुर्विध संघ की स्थापना करने वाला कहा गया है।

चतुर्विध सघ रूप धर्मतीर्थ की स्थापना करके तीर्थंकर भगवान ससार के लिए आत्मकल्याण और आत्मोत्थान का मार्ग प्रशस्त करते हैं। तीर्थंकर भगवान के उत्तम प्रवचनो के साथ इन चारो तीर्थों से तीर्थंकर भगवान के प्रवचन सुनकर प्राणी दुखो से मुक्त होकर शाश्वत-सुखो के अधिकारी बनते हैं।

सघादेश का सम्मान और पालन

संघ का आदेश कितना सम्मान योग्य और पालनीय होता है, इसका उदाहरण महान् आचार्य श्री भद्रबाहु स्वामी के जीवन से प्रकट है। आचार्य भद्रबाहु एकात मे सदा महाप्राण ध्यान-साधना में संलग्न

थे। संघ को उनकी आवश्यकता हुई और सघ ने उनका आह्वान किया। अन्ततोगत्वा अपनी साधना छोड़कर भी उन्हें संघ-सेवा हेतु उपस्थित होना पड़ा। उनके द्वारा संघादेश का सम्मान और पालन किया गया।

युवाचार्य का दायित्व

युवाचाय सघ के भावी आचार्य होते हैं। केवल सघ या अन्यों के प्रति ही उनका उत्तरदायित्व नहीं होता। स्वय के प्रति भी उनका दायित्व होता है जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

सघ के प्रति दायित्व

भावी आचार्य के रूप मे ज्ञानाचारादि ५ आचारों का स्वयं परिपालन उनका प्रथम और प्रमुख दायित्व है। *आचाय के लिए कहा* भी गया है कि आचाय वे हैं जो ज्ञानाचार आदि ५ आचारो का स्वय पालन करते हैं और दूसरों से करवाते हैं। युवाचाय का स्वयं के प्रति यह प्रमुख दायित्व है कि वे ५ आचारो व उनके भेदोपभेदा का परिज्ञान एव परिपालन दृढ़ता से आत्मनिष्ठा से करें। तभी वे अन्यो से पालन करवाने मे सक्षम हो सकेंगे।

युवाचार्य सर्वप्रथम मुनि हैं, साधु हैं अत साधु जीवन के सभी आचारों का सम्पूण समाचारी का पालन तो उनके लिए अनिवाय है ही। यह भी आवश्यक है कि वे आचार्य के समस्त गुणो (३६) का पूर्ण पालन करते हुए वे शुद्धतापूर्वक दृढ़ता से संयम का पालन करें। सघ द्वारा आचार्य के अनुशासन का पालन तभी सम्भव होगा, जब आचार्य का या युवाचार्य का अपना जीवन आत्म-अनुशासित होगा, जब वे तीर्थंकर भगवान की आज्ञाओं को समझते हुए उनके धर्म अनुशासन का पालन करेंगे।

सघ एव अन्यों के प्रति दायित्व

संघ के प्रति युवाचार्य का महान् दायित्व होता है। युवाचार्य संघ के भावी आचार्य हैं अतः आवश्यक है कि वे आचार्य के सानिध्य मे रहते हुए सघ को, संघ के स्वरूप को, संघ की समस्याओं तथा उनके सचालन को भली भांति समझें। सघ-सचालन में, उसकी व्यवस्था में साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका चारों तीर्थों का योग होता है। उसे भली प्रकार समझते हुए उनके सहयोग को प्राप्त कर वे सघ को आत्मोत्थान एव आत्मकल्याण के माग में अग्रसर करें।

संघ का नायकत्व

युवाचार्य भावी आचाय के रूप मे सघ के नायक होगे। उन्हें सघ को नेतृत्व देना है। धार्मिक आध्यात्मिक माग मे संघ का पथ प्रदर्शन करना है। विभिन्न समस्याए जो धर्म एव अध्यात्म के माग में बाधक हैं, उनका मर्यादा मे रहते हुए धर्मभावना से निवारण करना है। सघ के सभी अगों मे, सभी सदस्यो मे परस्पर स्नेह एव सौहार्द बना रहे, यह महत्प्रयास करना है क्योंकि धमशासन स्नेह और सौहार्द का शासन है। धर्म रूप उद्यान भी तभी हरा-भरा रहेगा, पल्लवित और पुष्पित होगा, जब उसे अनुकूल हवा पानी रूप धार्मिक गुणो का वातावरण प्राप्त होगा।

यह आवश्यक है कि युवाचार्य भूतकाल की आदरणीय परंपराओ का निर्वाह करते हुए संघ को प्रगतिशील भविष्य की ओर अग्रसर करें। यह युवाचार्य का सघ के प्रति महत्त्वपूण दायित्व है।

संघ पर अनुशासन थोपना उचित नही होगा। सघ को धर्मानुशासन की गरिमा समझाकर उनके मानस को एतदथ तैयार करना आवश्यक है। प्रभु महावीर के पास भी जब साधक उपस्थित होता व्रतधारण, दीक्षा ग्रहण आदि के लिए अनुमति चाहता तो वे सदा यही कहा करते—'अहासुह देवाणुप्पिया मा पडिबध करेह'। देवानुप्रिय, जैसा तुम्हे सुख हो, वसा करो, परन्तु धम कार्य मे विलम्ब मत करो।

युवाचाय से सघ की अपेक्षाए

सघ अपने युवाचाय से कई अपेक्षाएं रख सकता है जैसे सघ का प्रेम और स्नेह का सचालन, चारो तीर्थो की समस्याओ को सुनना, समझना और उनका समुचित सतोषप्रद समाधान करना और ज्ञान दशन चारित्र के माग में अग्रसर होने के अवसर प्रदान करना। युवाचाय का दायित्व होगा कि वे सघ को ज्ञान दशन चारित्र के माग मे अग्रसर करें और उनकी समस्याओ को भली भाति समझकर उनका सन्तोपजनक समाधान करें।

युवाचार्य सघ के पुरुष, महिला, बालक, बालिकाओं, युवक, युवतियो सभी को धर्म से जोडें। इस पर गम्भीरता से विचार कर वे उसे कायरूप मे परिणत करें।

युवाचार्य या भावी आचार्य वतमान आचार्य के निर्देशानुसार

अपने कार्य को विकेन्द्रित करें। सुयोग्य मुनिराजो, महासतियो आदि का सहयोग लें। विकेन्द्रीकरण से उन्हें सघ का सहयोग मिलेगा और उनका काय भी सरल होगा। इससे सघ प्रगति पथ पर अग्रसर होगा और अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगा।

सघ के महत्त्व का रक्षण एव अभिवृद्धि

संघ का भी दायित्व है कि युवाचार्य के अनुशासन का अन्तःकरण से पालन करते हुए तप सयमशील सदाचार मे अग्रसर हो। सघ में सदा स्वाध्याय का नदीघोष होता रहे और सघ का प्रत्येक सदस्य ज्ञान क्रिया के माग मे आगे बढे और श्रुत चारित्र धर्म का विकास हो। सघ के छोटे बडे स्त्री पुरुष सभी सदस्यो को धर्म से जोडने में अपने दायित्व का पालन करें।

इस प्रकार सघ के दायित्व पालन से युवाचाय का धर्मशासन सफल होगा, संघ मे प्रेम और स्नेह का प्रसार होगा जिससे सघ समुन्नत होगा और सभी तीर्थों की साधना सुगमता से अग्रसर हो सकेगी।

—३५ अहिंसापुरी, फतहपुरा, उदयपुर–३१३००१

जीवन रहस्य का ज्ञान : शान्त भाव का अवलम्बन

नदी के नही चाहते हुए भी उसमे तूफानी ऊफान आ जात है किन्तु जो नदी गम्भीर होती है, गहरी होती है। वह प्रलय का रूप धारण नही करती। वह उस तूफान को अपने भीतर समाहित कर लेती है। इसी तरह जीवन के रहस्य को जानने वाला अपने आवेग को/तूफानो को बाहर झलकनें नहीं देता और न ही बाह्य क्षेत्र मे प्रलय ही मचाता है बल्कि अपने अन्तर में ही वह उन आवेगो/तूफानो को समाहित कर स्वयं शात भाव का अवलम्बन लेता है और समाज जीवन को अकम्प व उदात्त बनाए रखता है।

—युवाचार्य श्रीराम

वर्तमान सन्दर्भ में आचार्य और आचार की भूमिका

△ डॉ नरेन्द्र भानावत

वर्तमान युग तर्क और बुद्धि प्रधान युग है। इसमे आचार की अपेक्षा विचार पर अधिक बल है। परिणाम स्वरूप मस्तिष्क सम्बन्धी ज्ञान के विस्तार के लिए अनेकानेक सगठन, शिक्षा केन्द्र और अनुसधान शालाए हैं। इन सबके सम्मिलित प्रयास और प्रभाव से जगत के अनेक रहस्य उद्‌घाटित हुए हैं और जागतिक ज्ञान का विस्फोट हुआ है। इससे अनेक अधविश्वास दूर हुए हैं, मिथ्या मान्यताए नष्ट हुई हैं और भूत, भविष्य मे विचरने भटकने वाला मानव वर्तमान के धरातल पर खडा हुआ है। उसके मन मे इसी धरती को स्वर्ग बनाने का नया विश्वास जगा है और वह आधुनिक चेतना से सम्पन्न, समृद्ध हुआ है।

पर चिन्ता का विषय यह है कि तर्क और बुद्धि की प्रधानता के कारण उसका आत्म विश्वास, आस्था और आचार का पक्ष डगमगा उठा है। कोरे ज्ञान ने तर्क को पैना और प्रभावी बनाया है पर "करनी" के अभाव मे वह शुष्क और विघटनकारी बन कर रह गया है। ज्ञान के साथ कर्म का, तप और चरित्र का बल न होने से त्याग के स्थान पर भोग, सवेदना के स्थान पर उत्तेजना, सगठन के स्थान पर विघटन, भराव के स्थान पर बिखराव, सहयोग के स्थान पर सघर्ष की कई समस्याए-खडी हो गई हैं। ज्ञान शास्त्र न बनकर शस्त्र बन गया है। सक्षेप मे कहा जा सकता है कि आधुनिक युग मे विचार के क्षेत्र से आचार निष्कासित कर दिया गया है। अध्ययन तो है पर स्वाध्याय नहीं, अध्यापक और प्राचार्य तो हैं पर उपाध्याय और आचार्य नही हैं।

उक्त भयावह स्थिति मे भारतीय सस्कृति में और विशेषकर जैन श्रमण परम्परा में आचार्य और आचार की जो व्यवस्था दी गई है, वह अधिक उपयोगी, सामयिक और मार्गदर्शक है।

जैन परम्परा में "णमोकार महामत्र" का विशेष स्थान है। यह विश्व का सर्वहितकारी, सर्वमागलिक महामत्र है। इसमे किसी व्यक्ति विशेष को नमन न करके गुण निष्पन्न आत्माओ को नमन किया

गया है । इन आत्माओ को पचपरमेष्ठि कहा गया है। ये है—अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु । इनमे से प्रथम दो देव रूप हैं। अरिहंत वे हैं जिन्होंने चार घाती कर्मों—ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय को नष्ट कर अपनी आत्म शक्तियों का पूर्ण विकास कर लिया है । जो देह मे रहते हुए भी विदेह अवस्था को प्राप्त हैं । जो जीवन मुक्त हैं । सिद्ध वे हैं जिन्होंने अष्ट कर्मों को क्षय कर निर्वाण प्राप्त कर लिया है, सिद्धि प्राप्त करली है । जो संसार से मुक्त हो गये हैं । शेष तीन आचार्य, उपाध्याय और साधु गुरु पद हैं । ये तीनो साधु-संत, महात्मा, ऋषि हैं । तीनो साध्वाचार का पूर्ण पालन करते है । आचार्य संघ का नायक है । उस पर संघ-संचालन का सम्पूर्ण दायित्व है । उपाध्याय ज्ञान क्षेत्र का प्रमुख है । साधु संत है, जो अपनी साधना मे रत रहता है । तीनो गुरु हैं पर आचार्य का पद दायित्वपूर्ण पद है इसलिए वह विशिष्ट है । वर्तमान में तीर्थकरों के न होने से आचार्य उनका प्रतिनिधि है । वह धर्म संघ का संचालक है । तीर्थंकरो द्वारा बताये गये धर्म का, आचार का, वह स्वयं पालन करता है और दूसरो से-साधुओ से, गृहस्थो से आचार का पालन करवाता है ।

शास्त्रानुसार आचार्य के पाच आचार कहे गये हैं—ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार । ये पच आचार ऐसे आचार हैं जो आत्म कल्याण व लोक कल्याण के लिए आवश्यक रूप से करणीय हैं । ध्यान देने की बात यह है कि यहा ज्ञान को भी आचार के अन्तर्गत रखा गया है । इसका गूढार्थ यह है कि ज्ञान तब तक जीवन के लिए साधक और समाज के लिए उपयोगी नही बनता जब तक कि वह आचार मे परिणत नही होता ।

ज्ञानाचार के पालन का अर्थ है पारम्परिक रूप से चली आ रही आगम ज्ञानधारा को सुरक्षित रखना, विवाद की स्थिति मे सूत्रो के अर्थ को स्थिर करना, जीवन और [illegible] में विनय और विवेकपूर्ण अनुशासन बनाये रखना [illegible] और [illegible] संरक्षण, संवर्धन आदि के लिए [illegible] नियमित स्वाध्याय चिन्तन, मनन, [illegible] करना और इसके लिए दूसरो [illegible]

ज्ञानाचार के सम्यक् परिपालन से जीवन-मूल्य और सांस्कृतिक आदर्श सुरक्षित रहते हैं। समाज और राष्ट्र की एकता बनी रहती है। क्रान्तदृष्टा ऋषि मुनियो की ज्ञान रूप मे जो विरासत हमे मिली है उससे पीढी दर पीढ़ी हम लाभान्वित होते रहे, यह ज्ञानाचार की परिपालना से ही सम्भव है।

पर यह दुख की बात है कि आज पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित शिक्षण पद्धति और भौतिकता प्रधान बौद्धिक चिन्तन के कारण ज्ञानाचार की पारम्परिक पालना बाधित होती जा रही है। ज्ञान के नाम पर किताबी ज्ञान, मनन चिन्तन के नाम पर प्रवचन पटुता, स्वाध्याय के नाम पर अध्ययन कौशल प्रमुख बन गया है। वाचना-पृच्छना की प्रधानता के कारण अनुप्रेक्षा और धर्मकथा (धर्मधारणा) बहिष्कृत सी हो गई है परिणामस्वरूप मौलिकता का ह्रास हो गया है, विनय-विवेक की कमी हो गई है।

ज्ञान का अहम् प्रबल हो उठा है। प्रतिस्पर्धा बढ गई है। विकथा का बाजार गरम हो गया है। शास्त्रीय परम्परा से कटाव होने लगा है। ज्ञान का मुख्य कार्य है—आत्म जागृति, सजगता का विकास। पर आज जागृति अपने प्रति कम होकर दूसरो को उपदेश देने की प्रवृत्ति तक बढ गई है। इस कारण प्राय देखने मे आता है कि आज तथाकथित ज्ञानी अधिक उपद्रवी, विद्रोही, कुंठित, निराश और आस्थाहीन हो गये हैं। ज्ञान के साथ सावधानी की बजाय चालाकी अधिक जुड गई है। आचार का स्थान प्रचार-प्रसार ने ले लिया है। आवश्यकता है ज्ञान आचार बनकर जीवन मे उतरे।

आचार्य दर्शनाचार का स्वय पालन करते हैं और दूसरो से करवाते हैं। सामान्यत दर्शन जीव, जगत और ब्रह्म के सम्बन्ध मे विभिन्न धारणाओ और तर्क-वितर्कों का नाम है जो जटिल और शुष्क माना जाता है। तथाकथित दार्शनिक बाल की खाल निकालने मे पटु होते हैं पर यहा दर्शन का आचार रूप मे अर्थ है—आत्म साक्षात्कार, आत्म दर्शन। यह तभी सम्भव है जब मस्तिष्क के आगे हृदय का विचार हो, अपनी आत्मा के प्रति श्रद्धा और विश्वास का बल हो। शरीर और आत्मा की भिन्नता का बोध होने पर जो अनुभूति सवेदना के स्तर पर होती है वही सच्चा दर्शन है। दर्शनाचार का पालनकर्ता

स्थान पर घृणा, क्रोध, प्रतिशोध, अवज्ञा, कृतघ्नता आदि के संस्कार फल-फूट उठे हैं। हमारा यह दायित्व है कि हम चरित्रनिष्ठ और संस्कारशील बनकर ज्ञान दर्शन के उपयोग को सार्थक करें। आचार की इस सन्दर्भ मे विशेष भूमिका है।

तपाचार—तपोमय साधना का प्रतीक है। तप के द्वारा पूर्व संचित कर्मो को नष्ट कर आत्म शक्तियो का विकास किया जाता है। जैन दर्शन में तप को बाह्य और आभ्यन्तर दो रूपो में विभक्त किया गया है। जिनका प्रभाव शरीर पर परिलक्षित होता है, वे बाह्य तप हैं। भूखा रहना, कम खाना, न्याय नीतिपूर्वक स्वावलम्बी जीवन बिताना, सादा सात्विक आहार ग्रहण करते हुए स्वाद विजय का अभ्यास करना, कष्ट-सहिष्णु बनना बाह्य तप है। बहिर्मुखी वृत्तियो को अन्तर्मुखी बनाना आभ्यन्तर तप की ओर बढ़ना है। आभ्यन्तर तपों में मुख्य है—अपनी की हुई भूलो के लिए प्रायश्चित करना, अहम्-विसर्जन के लिए विनयभाव लाना, राग को गलाने के लिए दूसरो की सेवा करना, सद्शास्त्रो का आत्म चिन्तनपूर्वक अध्ययन करना, शुभ विचारों में रमण करते हुए आत्मस्थ होना और शरीर की ममता का त्याग करना।

तपाचार की पालना से सहनशीलता—तितिक्षा भाव का विकास होता है। तप से विषय-विकार दूर होते हैं और आत्मा का निर्मल भाव प्रकट होता है। तप ज्योति है। उससे आत्मस्वरूप का साक्षात्कार होता है।

आज की उपभोक्तावादी संस्कृति मे इन्द्रियों को तृप्त करने की ओर प्राय लक्ष्य बनी रहती है। आवश्यकता अधिक बढे और नई-नई कामनाए उत्पन्न हो। उनकी पूर्ति के लिए नये-नये आविष्कार हों, इस दुष्चक्र मे आज का ज्ञान विज्ञान और अनुसंधान लगा हुआ है। कामनाओं के निरन्तर बढते रहने से भोग की भूख कभी शांत नहीं होती। कामना की पूर्ति न होने से तनाव और व्याकुलता बनी रहती है जिससे मन रोगग्रस्त हो जाता है। तन के रोग की तो स्थूल चिकित्सा है, औषधि है पर मन के रोग की चिकित्सा कहीं बाहर नहीं है। वह तो अपने भीतर ही है। वह चिकित्सा तप है, मानसिक शुद्धि है। तप के माध्यम से ही कामनाओ पर नियंत्रण किया जा सकता है।

इन्द्रियो पर विजय प्राप्त की जा सकती है, ज्ञान, दर्शन, चरित्र का सम्यक् रूप से पालन तभी सम्भव है जब व्यक्ति तपनिष्ठ हो । तप के अभाव में प्राप्त ज्ञानदर्शन केवल ताप पैदा करता है, उससे प्रकाश नही मिलता। आचार्य का यह दायित्व है कि वह जीवन और समाज मे सच्चे तपाचार को प्रतिष्ठित करे ।

आज समाज मे तप के नाम पर बडी-बडी तपस्याएं होती हैं। भूखा रहना सामान्य बात नही, इससे शरीर के प्रति रही हुई आसक्ति कम होती है पर तपस्या का लक्ष्य कषायो पर विजय प्राप्त करना है। यदि तपस्या का उद्देश्य इस लोक मे प्रशसा और परलोक मे सुख-भोग प्राप्त करना है तो वह सच्ची तपस्या नही है । मान सम्मान, पूजा-प्रतिष्ठा और धन-सम्पत्ति प्राप्त करने के लक्ष्य से की जाने वाली तपस्या तप न होकर लेन-देन है । इससे बचा जाना चाहिए । आदर्श तपस्या वह है जिसमे बाह्य और आभ्यन्तर तपो का सामजस्य हो । बाह्य तप क्रांति लाते हैं तो आभ्यन्तर तप शान्ति प्रदान करते हैं। क्राति और शाति के सुन्दर मेल से जीवन स्वस्थ और समाज उन्नत बनता है ।

वीर्याचार—का अर्थ है—ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप की परिपालना में अपने शौय और पुरुषार्थ को जागृत करना । वीर्य का अर्थ है—शक्ति । यह शक्ति बाहरी नहीं, भीतरी प्राण शक्ति है । इसके अभाव मे कोई भी काय-सिद्धि नहीं हो सकती है। वीर्याचार की पालना व्यक्ति को स्वाधीन और स्वावलम्बी बनाती है । वीर्याचार के पालन का अर्थ है—अपने सयम की रक्षा, अपने प्राण की रक्षा, अपनी ऊर्जा की रक्षा । इनकी रक्षा करके व्यक्ति पूर्ण स्वाधीन बन सकता है । इस आचार का पालक कभी भी दूसरो पर अवलम्बित नही रहता है। उसका सुख दुख किसी बाहरी वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति पर निभर नहीं रहता है । वह अपने स्वभाव मे स्थित रहता है । 'पर' से सुख की आशा नहीं करता है। वह अपने शील, सयम से, आत्म-चिन्तन से दोषो का त्याग करता हुआ निर्मल, निद्वन्द्व होता जाता है। अपनी साधना में वह सदैव तत्पर और जागरूक रहता है ।

आज का सबसे बडा संकट यह है कि व्यक्ति का अपना केन्द्र, स्वभाव दुर्बल व अस्थिर है । आस्था का खूटा डोलायमान है केन्द्र की उपेक्षा कर व्यक्ति परिधि मे चक्कर काटता रहता है । उसकी

प्रज्ञा-स्थिर नही है। मन विक्षिप्त और चचल है। परिणामस्वरूप दौड-धूप, आपाधापी, छीना-झपटी करके भी उसे कुछ प्राप्त नहीं होता है। जीवन को वह सघर्ष मे ही खो देता है। उससे मक्खन नहीं निकलता है। केवल झाग हाथ लगते हैं। शक्ति का सदुपयोग वह रचनात्मक कार्यों मे नही कर पाता। बनाव-शृगार मे ही शक्ति का अपव्यय हो जाता है। वीर्याचार का परिपालन शक्ति के साथ शील को जोडता है, सत्ता के साथ स्नेह को जोडता है। जीवन म एक सकारात्मक दृष्टि विकसित करता है। युवापीढी मे वीर्याचार की परिपालना विवेकपूर्वक हो, यह आज के युग की आवश्यकता है। उसका वीर्य अधोमुखी न होकर ऊर्ध्वमुखी हो, वह कामकेन्द्रित न होकर धर्मकेन्द्रित बने। तभी जीवन की सार्थकता है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि वर्तमान सन्दर्भ मे आचार और आचार की प्रासगिकता पहले की अपेक्षा अधिक बढ़ी है। आज ज्ञान के साथ चरित्र और दर्शन के साथ विश्वास को जोडने की आवश्यकता है। चरित्र और विश्वास तभी मजबूत होंगे जब उनके साथ तप का बल और वीर्य की शक्ति हो। सक्षेप मे ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार की परिपालना से सजगता, सहृदयता, सस्कारशीलता, शुद्धता, और स्वाधीनता का भाव विकसित होगा। वर्तमान त्रासदी के निस्तारण के लिए इनकी परिपालना आवश्यक ही नही अपरिहार्य है। कहना न होगा कि इस सदर्भ मे आचार्य और आचार की भूमिका अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है। आचार्य श्री नानेश के मार्गदर्शन व नेतृत्व मे युवाचार्य श्री राम मुनि निश्चित ही इस भूमिका का प्रभावी ढंग से निर्वाह करेंगे। इसी मगल कामना के साथ कोटि वन्दन अभिनन्दन।

—अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर-४

सोना और सुहागा

युवकों के उत्साह में बुजुर्गों का मार्गदर्शन तथा अनुभव मिल जाय तो प्रत्येक कार्य "सोना मे सुगन्ध" वाली कहावत चरितार्थ करता है और यह सब सम्भव है आत्मीयता के आधार पर।

युवाचार्य श्रीराम

जिनशासन में संघ-व्यवस्था

श्री जशकरण डागा

जैन धर्म मे 'जिन' और 'जिनशासन' का बडा महत्त्व है। 'जिन' अर्थात् रागद्वेष के विजेता सर्वज्ञ अरिहन्त देव। ऐसे जिन सर्वज्ञ भगवन्तो द्वारा भव्य जीवो के कल्याणार्थ प्ररूपित व प्रस्थापित जो मोक्ष मार्ग है, वही जिन शासन है। यह जिनशासन बडा निराला और सर्वोत्तम है। निराला इसलिए कि इस जिनशासन मे जनादेश की नही, जिनादेश की पालना सर्वोपरि है। इसमें जनवाणी से अधिक जिनवाणी को तथा जनतत्र से अधिक जिनतत्र को महत्त्व दिया गया है। इस जिनशासन मे मतार्थियो और दुराग्रहियो को विराधक तथा आत्मार्थियो और मुमुक्षओ को जो भगवत की आज्ञानुसार प्रवृत्ति करते हैं, आराधक कहा गया है। इस जिनशासन को सर्वोत्तम इस लिए कहा गया है कि यह रत्नत्रय रूप,[1] त्रिवेणी से सदाकाल मण्डित और अखण्डित मोक्ष मार्ग है, पतित पावन रूप है। अनत २ प्राणी इस से भूतकाल मे तिरे हैं, वर्तमान मे तिर रहे हैं और भविष्य मे भी अनत-२ प्राणी तिरेंगे। ऐसे परमोत्तम, परम मगल रूप जिन शासन का धर्म सघ साधु-साध्वी, श्रावक श्राविका चतुर्विध रूप है, भव्य जीवों के लिए आदर्श तीर्थ रूप हैं। स्वय प्रभु महावीर ने इस धर्म सघ को तीर्थ कहा है।[2] प्रभु ने धर्म सघ को तीर्थ कहने का कारण स्पष्ट करते हुए कहा है—"चतुर्विध सघ, ज्ञान, दर्शन व चारित्र का आधार है, जो प्राणीमात्र को, अज्ञान व मिथ्यात्व से तिरा देता है, एव ससार से पार पहुचाता है।[3] आगमकारो ने भी नदी सूत्र के आरम्भ धर्म सघ को आठ उपमाए देकर उसकी महती भक्ति-पूर्वक स्तुति की है यथा—

"नगर रह चक्क-पउमे, चदे, सूरे, समुद्द मेरुम्मि।
जो उपमिज्जइ सयय, त सघ गुणायर वदे ॥१६॥"

अर्थात् नगर, रथ, चक्र, पद्म, चन्द्र, सूर्य, समुद्र, और मेरू की जिसे उपमा दी जाती है, ऐसे ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप सम्पन्न

१ सम्यग्ज्ञान दर्शन चारित्र रूप।
२ भागवती सू श २०, उ ८, सू ६८१।
३ विशेषावश्यक भाष्य गा १०३३ से १०४७।

गुणाकर सघ की मैं सतत स्तुति करता हू। इस धम सघ के दो प्रकार हैं—श्रावक सघ व श्रमण सघ। इन सबमे मुनि प्रधान हैं। मुनियो मे स्थविर प्रधान हैं। स्थविरों मे आचार्य प्रधान हैं और आचार्यों पर भी जिन आज्ञा रूप जिनागम का अनुशासन है। इस प्रकार जिनाज्ञा सर्वोपरि है। ऐसा है जिनशासन और उसका धम सघ। यह धम सघ भव्य जीवों को तिराने मे सक्षम होने से तीर्थ रूप है।

इस धर्म संघ में मात्र जैन धर्म के ही नही, वरन् समग्र लोक के सयमी महापुरुषो को भी पूज्य भाव से सम्मिलित किया है, जो सघ के महामत्र 'नवकार' से सुस्पष्ट है। जहां इस महामत्र के द्वारा सभी सयमी महापुरुषों को पच परमेष्ठी रूप में पाच पदो मे विभाजित कर, उन्हे आराध्य रूप मे वदनीय एवं परमपूजनीय घोषित किया है, वही दूसरी ओर धर्म सघ व्यवस्था सुचारु और सुव्यवस्थित रहे और जिनशासन सदाकाल जयवत रहे, इस हेतु धम सघ में प्रधान श्रमण सघ के कर्णधारो को भी, सात प्रकार के वर्गों में अलग २ पद दिया देकर सघ गच्छव गण की व्यवस्था की देख रेख एव जिनशासन के कुशल सचालन का काय भार, उन्हें उनका दायित्व निर्धारित करते हुए सौंपा गया है, जो इस प्रकार है—[1]

(१) (i) आचार्य-यह सघ के नायक होते हैं। इन्हे प्रतिबोध, दीक्षा व शास्त्रज्ञान के मुख्य प्रदाता कहा गया है। योग्यता-चतुर्विध सघ के कुशल सचालन में समर्थ होते हैं। आठ सम्पदाओ-आचार, श्रुतादि से सम्पन्न होते हैं। चार अनुयोग (चरण, करण धर्म कथा व द्रव्यानुयोग) के ज्ञाता तथा छत्तीस गुणो (यथा चार कषाय, पंच महाव्रत पालक, पचेन्द्रिय विजेता, चार कषाय निवारक, नव बाड़ सहित शुद्ध ब्रह्मचय एव पाच समिति तीन गुप्ति के पालक) से युक्त होते हैं।

> "पंचिदिय सवरणो, तह नव विह बमचेर गुत्ति धरो।
> चउविहकसाय मुक्को, इह अठारस्स गुणहि संजुत्ता॥

---

१ ठाणांग ३, उ ३, सूत्र १७७ की टीका के आधार से।

पच महव्वय जुत्तो, पच विहायार पालण समत्थो ।
पच समीय ती गुत्तो, इह छत्तीस गुणेहिं गुरु मज्झ ॥"

यह आचार्य भी पाच प्रकार के होते हैं ।[1] यथा—

(अ) प्रव्राजकाचार्य—सामायिक व्रत छेदोपस्थानीय चारित्र आदि का आरोपण करने वाले ।

(ब) दिगाचार्य—सचित्र, अचित्त, मिश्र, वस्तु की आगमोक्त अनुमति देने वाले ।

(स) उद्देशाचार्य—सर्व प्रथम श्रुत का कथन करने वाले या मूल पाठ सिखाने वाले ।

(द) समुद्देशानुज्ञाचार्य—वाचना देने वाले, गुरु न होने पर श्रुत को स्थिर परिचित करने की अनुमति देने वाले ।

(इ) आम्नायार्थ वाचकाचार्य—उत्सर्ग, अपवाद रूप आम्नाय अथ के कथन करने वाले ।

(ii) उपाचार्य—यह आचार्य की अनुपस्थिति मे या उनके निर्देशानुसार उनका कार्य देखते व सचालन करते हैं। योग्यता-आचाय के गुणो के धारक होते हैं ।

(iii) युवाचार्य—आचार्य एव उपाचार्य के पश्चात् सघ सचालन का उत्तरदायित्व इन पर होता है । योग्यता—यह भी आचार्य के गुणों के धारक होते है । इनका चयन प्राय आचार्य स्वय सर्व परिस्थितियो का विचार कर करते हैं ।

(२) उपाध्याय—इन पर सघ मे सूत्र ज्ञान के प्रचार का विशेष दायित्व होता है । स्वय आगम ज्ञान-अभ्यास करते हैं व अन्य को कराते हैं । योग्यता—ग्यारह अ ग, बारह उपांग, चरण सत्तरी व करण सत्तरी के ज्ञाता होने से इन्हे पच्चीस गुणो के धारक कहा जाता है । कहा है—

"बारसंगो जिणक्खाओ, सज्झाओ कहि उ/वहे ।
त उवसंति जम्हाओ उवज्झाया, तेण वुच्चति ॥"

अर्थात् जो सर्वज्ञ भाषित और परपरा से गणधरादि द्वारा उपदिष्ट बारह अ गों को शिष्यो को पढाते हैं, वे उपाध्याय कहाते

[1] धम संग्रह अधिकार ३ श्लो ४६ की टीका से ।

हैं। पच्चीस गुणो मे चरण सत्तरी से अभिप्राय है, सदाकाल आचरित करने के नियम तथा करण सत्तरी से अभिप्राय है, प्रयोजन उपस्थित होने पर जिन नियमो का पालन किया जावे। दोनो के सत्तर २ भेद इस प्रकार हैं—[1]

चरण सत्तरी के ७० भेद—पांच महाव्रत, दस श्रमण धर्म, सतरह सयम, दस प्रकार का वैयावच्च, नव ब्रह्मचर्य गुप्ति, रत्नत्रय, बारह तप, व चार कषाय-निग्रह।

करण सत्तरी के ७० भेद—चार पिण्ड विशुद्धि, पांच समिति, बारह भावना, बारह पडिमा, पांच इन्द्रिय निरोध, पच्चीस प्रतिलेखना, तीन गुप्ति तथा द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के भेद से चार प्रकार का अभिग्रह।

आचार्य उपाध्याय की विशेषताए (अतिशय)[2]—संघ/गच्छ में अन्य साधुओ की अपेक्षा इनमे पाच अतिशय होते हैं यथा—

(अ) उत्सर्ग रूप से सभी साधु स्थानक मे प्रवेश से पूर्व पैरों को स्वयं पूजते हैं, किन्तु आचार्य, उपाध्याय के पैरो का प्रमार्जन व प्रस्फोटन दूसरे साधु करते हैं।

(ब) आचार्य, उपाध्याय धर्म स्थानक मे लघुनीत् बडीनीत परठाते हुए या पैर मे लगी अशुचि को हटाते हुए साधु के आचार का अतिक्रमण नही करते।

(स) आचार्य, उपाध्याय इच्छा हो तो दूसरे साधुओ की वैयावृत्य करते हैं इच्छा न हो तो नही भी करते हैं।

(द) आचार्य, उपाध्याय धर्म स्थानक मे एक या दो रात्रि तक अकेले रहते हुए भी साध्वाचार का अतिक्रमण नही करते।

(य) आचार्य, उपाध्याय, धर्मस्थानक से बाहर एक या दो रात्रि तक अकेले रहते हुए भी साध्वाचार का अतिक्रमण नहीं करते।

(३) (i) प्रवर्तक—आचार्य के आदेशानुसार वैयावच्च आदि में साधु साध्वियो को ठीक तरह से प्रवृत्त करने वाले होते हैं। कहा है-

---

१. प्रवचन-सारोद्धार द्वार ६६-६७ गाथा ५५२-८६ व धर्म संग्रह अधिकार ३ पृ १३०।

२ ठाणांग ५, उ २, सू ४३८

"तव संजम जोगेसु, जो जोगोतत्थ त पयहेइ ।
असहुं च नियत्तेई गणत त्तिल्लो पवतीउ ।।"

अर्थात् तप, सयम और शुभ योग मे जो जिसके योग्य हो, उसे उसी मे प्रवृत्त करने वाला, अयोग्य या कष्ट सहन की सामर्थ्य से हीन को, निवृत्त करने वाला, तथा सदैव गण की हित चिन्ता में लगा हुआ साधु प्रवर्त्तक कहा जाता है ।

योग्यता—आचाराग, दशवैकालिक आदि सूत्रो का व चरण सत्तरी, करण सत्तरी (जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है) के ज्ञान का विशिष्ट ज्ञाता होता है ।

(ii) उपप्रवर्तक—प्रवर्त्तक के कार्यो मे सहयोग करने वाला तथा उनकी अनुपस्थिति मे उनके कार्यों की देख-रेख करने वाला ।
योग्यता—यह भी प्रवर्तक के समान सूत्रों व चरण सत्तरी-कारण सत्तरी के विशिष्ट ज्ञाता होते हैं ।

(४) स्थविर—सयम मे शिथिल हुए या खेदित हुए साधु-साध्वियो को जो सयम मे स्थिर करे तथा खेदित होने के कारणो का निवारण करे, उसे स्थविर कहते हैं । कहा है—

"थिर करणा पुण थेरा, पवत्ति वारिएसु अत्थेसु ।
जो जत्थ सीयइ जई, सत बलो त थिर कुणइ ।।"

अर्थात् जो प्रवर्तक द्वारा बताए धर्म कार्यों, साधु-साध्वियों को स्थिर करे, वह स्थविर कहा जाता है । जो साधु-साध्वी जिस कार्य मे शिथिल या दु खो होते हैं, स्थविर उसके कारणो को निवारण कर उसे फिर स्थिर कर देता है । स्थविर साधु पर्याय मे ज्येष्ठ होते हैं । ये तीन प्रकार के होते हैं ।[1] यथा—

(i) दीक्षा (प्रव्रज्या) स्थविर—दीक्षा पर्याय में ज्येष्ठ/कम से कम बीस वर्ष की दीक्षा हो ।

(ii) वय (अवस्था) स्थविर—वय पर्याय मे ज्येष्ठ/कम से कम साठ वर्ष की आयु हो ।

(iii) श्रुत (ज्ञान) स्थविर—ज्ञान पर्याय मे ज्येष्ठ/कम से कम ठाणाग व समवायाग के ज्ञाता हो ।

---

१ अतगड सूत्र वर्ग १, अ १ की टीका मे ।

स्थविर का अर्थ सन्मार्ग मे स्थिर करना भी कहा है और इसके दस भेद बताए हैं[1] यथा—

(१) ग्राम स्थविर—(गाव की व्यवस्था करने वाला मुखिया) (२) नगर स्थविर, (३) राष्ट्र स्थविर—(राष्ट्र का माननीय प्रभावशाली नेता, (४) प्रशास्तृ स्थविर—(धर्मोपदेश देने वाला) (५) कुल स्थविर—(कुल की व्यवस्था करने वाला (६) गण स्थविर (७) संघ स्थविर (८) जाति स्थविर—(वय स्थविर) (६) श्रुत स्थविर तथा (१०) पर्याय (दीक्षा) स्थविर। ये दस भेद लौकिक एव लोकोत्तर देश एव धर्म दोनो की व्यवस्था की अपेक्षा से हैं।

(५) गणि—एक गच्छ (साधु-साध्वियो के एक समूह) के स्वामी को गणि कहते हैं। वह उस समूह पर समय अपना शासन रखता है तथा आचार्य की आज्ञा से अलग विचरण कर जगह-२ धर्म प्रचार करता है।

योग्यता—गच्छ की देख रेख व सचालन मे समर्थ होता है और आठ सम्पदाओ का धारक होता है।[2]

(६) गणधर—आचार्य की आज्ञा मे रहते हुए गुरु के निर्देशानुसार कुछ साधु-साध्वियो को लेकर अलग विचरे, उसे गणधर कहते हैं। गणधर अपने अधीनो की दिनचर्या का तथा अन्य समाचारी का पूरा ध्यान रखते हैं। कहा है—

"पिय धम्मे दढ़ धम्मे, सविग्गो उज्जुओ अ तेयंसी।
संगहु वग्गह कुसलो, सुत्तत्थ विऊ गणा हिवई॥"

अर्थात् जिसे धर्म प्रिय है, जो धर्म में दृढ़ है, जो संवेग वाला, सरल, तेजस्वी है। संत-सतियो के लिए वस्त्र-पात्रादि के संग्रह मर्यादा में तथा अनुचित क्रिया-कलापों के लिए उपग्रह अर्थात् रोक टोक करने मे कुशल है और सूत्रार्थ का विज्ञाता है वही गणाधिपति गणधर होता है।

---

१ ठाणाग १०, उ ३, सूत्र ७६१।

२ आठ सम्पदा-आचार, श्रुत, शरीर, वचन, वाचना, मति, प्रयोगमति व संग्रह परिज्ञा (दशाश्रुतस्कंध दशा ४ व ठाणांग ८, उ ३, सू ६०१)।

यद्यपि 'गणधर' शब्द तीर्थंकरो के प्रधान शिष्यो के लिए प्रचलित है, तथापि सात पदवियो मे गणधर का अर्थ उपयुक्त प्रकार से कथा गया है ।

योग्यता—जो गण संचालन मे कुशल व समर्थ हो ।

(७) गणावच्छेदक—जो गण के एक भाग को लेकर गच्छ की रक्षार्थ आहार-पानी आदि की सारी व्यवस्था व कार्यों का विचार कर सही मार्गदर्शन देते हुए अलग विचरता है । कहा है—

"उद्धवणा पहावण खेत्तोवहि मग्गणासु अविसाई ।
सुत्थ तदुभय विऊ, गण वच्छो एरिसो होई ।।"

अर्थात् दूर विहार करने वाले, शीघ्र चलने वाले तथा क्षेत्र और दूसरी उपाधियो को खोजने मे जो घबराने वाला न हो, सूत्र, अर्थ और तदुभय रूप आगमों का विज्ञाता गणावच्छेदक होता है ।

योग्यता—आगमो का विज्ञाता व गण के सचालन मे कुशल व समर्थ हो ।

सघ की व्यवस्था का मुख्य भार आचार्य एव तदनन्तर उपाध्याय पर होता है । जिस सघ मे आचार्य के अतिरिक्त अन्य पदो पर कोई न हो तो उन सभी अन्य पदो का कार्य भी स्वय आचाय देखते व सम्हालते हैं । आचार्य द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव व सघ का काय आदि देखकर उपाध्याय, प्रवर्तक आदि पदो पर योग्य सतो की नियुक्ति करते हैं और कभी नही भी करते हैं । आचार्य, उपाध्याय, सघ में सुव्यवस्थाथ दूसरे संतों को अपने अनुकूल व नियमानुसार चलाने तथा योग्य ज्ञान एव शिष्यो के सग्रह हेतु सात बातो का ध्यान रखते हैं जो इस प्रकार हैं—[1]

(१) आज्ञा (काय सचालन का विधान) तथा धारणा (गतिविधि रोकने का विधान) का सम्यग् प्रयोग करना चाहिए । अनुचित प्रयोग से सघ मे कलह होने व व्यवस्था-टूटने-की सभावना हो जाती है ।

देशान्तर मे रहा गीताथ साधु अपने अतिचारों को गीताथ आचाय से निवेदन करने के लिए जो कुछ अगीताथ साधु को गूढार्थ

१ ठाणाग ५, उ १, सूत्र ३९९ तथा ठाणाग ७, उ ३, सू ५४४

पदो मे कहे, उसे भी आज्ञा कहते हैं तथा जो प्रायश्चित विशेष ।
निश्चय व विधान आचार्य द्वारा किया जाता है, उसे धारणा कहते ।

(२) सघ मे रत्नाधिक की वन्दना वगरह का सम्यग् प्रका करावें । दीक्षा के बाद ज्ञान, दर्शन व चारित्र मे बडा साधु छोटे सा द्वारा वन्दनीय समझा जाता है । वन्दना व्यवहार की सम्यक पाल न होने पर सघ व्यवस्था टूट सकती है व परस्पर सौहाद्रता में अन्त आ सकता है ।

(३) योग्यता जान कर तदनुसार शिष्या को आगमों वाचन करावे । यथासामान्यतः तीन वर्ष की दीक्षा वालो को आच रांग, चार वष की दीक्षा वालो को सूत्रकृतांग की वाचना दे इत्यादि । बीस वष की दीक्षा हो जाने पर सभी सूत्रो की वाचना जा सकती है । किन्तु साधु को इतने वर्षों के बाद अमुक २ सूत्र अ मय पढ़ाये जावें, यह नियम नही है । यह नियम योग्य एवं पात्र लिए है । किसी विशिष्ट बुद्धिमान व योग्य को यथावसर वाच निर्धारित समय से पूर्व भी दी जा सकती है ।

(४) बीमार, तपस्वी तथा विद्याध्ययन करने वाले संतों वैयावच्च का समुचित प्रबन्ध करना चाहिए ।

(५) दूसरे साधुओ से परामश ले सघ कार्य किए ज चाहिए । शिष्यो से दैनिक कृत्य के लिए भी पूछते रहना चाहिए ।

(६) सयम के आवश्यक उपकरण जो सतो के पास न उनकी प्राप्ति के लिए सम्यक् प्रकार व्यवस्था करनी चाहिए ।

(७) सयम हेतु पूर्व मे प्राप्त उपकरणों की रक्षा का ध्य रखना चाहिए । उन्हें ऐसे स्थान पर न रखें, जहा वे खराब हो जायं, टूट फूट जायें या चोर वगैरह ले जायें ।

श्रमणाचार व समाचारी की पालना—आचार्य, उपाध्याय आदि का यह दायित्व भी होता है कि वे इसका ध्यान रखें कि उनके संघ मे रहे साधु-साध्वियो द्वारा श्रमणाचार का पालन यथाविधि किया जाता है जिससे जिनशासन एवं सघ की महिमा गरिमा अक्षुण्ण रहे। इस हेतु उन्हे अधीनस्थ साधुओ के सत्तावीस गुणों से सम्पन्न तथा दस प्रकार की समाचारी की पालना का भी ध्यान रखना होता है । सत्ता-

ीस गुण इस प्रकार है[1]—(१-५) पच महाव्रत पालक (६-१०) पाच इन्द्रिय विजेता (११-१४) चार कषाय निवारक (संज्वलन छोड) (१५ १८) भाव, करण (उपकरण प्रतिलेखना) व योग से सच्चे (१८) क्षमावत (१९) वैराग्यवत (२०-२२) मन, वचन व काया से समता धारक (२३-२५) ज्ञान दशन व चारित्र से सम्पन्न (२६-२७) वेदनीय (शीत ताप आदि की) व मरणातिक वेदना को समभाव से सहन करे। दस प्रकार की समाचारी इस प्रकार है[2]—

(१) इच्छाकार—इच्छा (आज्ञा) से कार्य करें। (२) मिथ्याकार—विपरीत आचरण हो गया हो तो 'मिच्छामि दुक्कड' पश्चात्ताप करता हुआ कहे। (३) तथाकार—गुरु से सूत्रादि के बारे मे पूछने पर जब गुरु उत्तर दे तो 'तहति' (जैसा आप कहते हैं वही ठीक है) कहे। (४) आवश्यिका—धम स्थानक से बाहर जाते 'आवस्सिया' कहे (५) नैषेधिकी—बाहर से वापिस धर्म स्थानक मे प्रवेश करते 'निसीहिया' कहे। (६) आपृच्छना—किसी कार्य के करने से पूर्व गुरु से पूछे (७) प्रतिपृच्छा—गुरु द्वारा पूर्व मे निषिद्ध कार्य को करना आवश्यक हो, तो पुन उसको जरूरी बताते हुए करने के लिए पूछना। (८) छदना—पूर्व मे लाए आहार के लिए अन्य साधुओ को आमत्रण देना। (९) निमन्त्रणा—आहार लाने हेतु अन्य साधुओ को निमत्रण देना या पूछना। (१०) उप सम्पद—ज्ञानादि प्राप्त करने के लिए स्व-गच्छ छोड किसी विशेष ज्ञानी गुरु का आश्रय लेना।

जो श्रमणाचार का पालन नही करते वे अवदनीय होते हैं, तथा ऐसे साधु साध्वियो को आचार्य उचित समझे तो योग्य प्रायश्चित देकर शुद्धाचारी बनाते हैं अन्यथा उन्हें सघ से बहिष्कृत कर देते हैं। ऐसे अवदनीय साधु पाच प्रकार के होते हैं[3]—

(१) पासत्था—(पार्श्वस्थ) जो ज्ञान, दशन, चारित्र, तप और प्रवचन मे सम्यग् उद्यम व उपयोग वाला नही है अर्थात् वह

१ समवायाग २७
२ भगवती श २५ उ ७ सू ८०१ व ठाणाग १० उ ३ सू ७४९
३ हरि भा वन्दनाध्य नि गा ११०७-८ व प्रवचन सारोद्धार द्वा २, पूव भाग, गाथा १०३ से १२३

श्रमणचर्यानुसार अपनाता नहीं है।

(२) ओसन्न-(अवसन्न)—जो समाचारी में प्रमाद कर यथा विधि न पाले।

(३) कुशील—कुत्सित अर्थात् निन्दनीय, शील अर्थात् आचार। जो निन्दनीय आचार वाला हो। रत्नत्रय की विराधना करने वाला हो।

(४) ससक्त—मूल तथा उत्तर गुणो मे दोष लगाने वाला।

(५) यथाच्छन्द—सूत्र विपरीत प्ररूपणा व आचरण करने वाला, चिडचिडे स्वभाव वाला, विगय आदि मे आसक्त तथा तीन गौरव से गर्वोन्मत्त।

गणापक्रमण—आचार्य, उपाध्याय, स्थविर या गच्छ में से बडे साधु से आज्ञा लेकर, जिनशासन व सघ के हित में कारण विशेष से ही एक गण या सघ को छोड दूसरे गण या संघ मे जाना कल्पता है इसे या सूत्रानुसार एकल विहारी होने को गणापक्रमण कहते हैं। इस गणापक्रमण के लिए तीर्थंकरो ने सात कारण बताए हैं[1]। यथा—

(१) सूत्र और अर्थ रूप श्रुत का ऐसा ज्ञान जो अपने गण में नही है, उसे प्राप्त करने हेतु आज्ञा लेकर दूसरे गण मे जाना।

(२) श्रुत एव चारित्र के जिन भेदो की पालना करना है, उनकी व्यवस्था अपने गण में न होने से उनके पालनार्थ आज्ञा लेकर दूसरे गण मे जाना।

(३) सभी धर्मों में सदेह होने से उसे निवारणार्थ दूसरे गण में, आज्ञा लेकर जाना।

(४) कुछ धर्मों मे सदेह होने से उसे निवारणार्थ दूसरे गण मे, आज्ञा लेकर जाना।

(५) सब धर्मों का ज्ञान देने योग्य अपने गण मे कोई पात्र न होने से दूसरे गण मे आज्ञा लेकर जाना।

(६) कुछ धर्मों का ज्ञान देने योग्य अपने गण मे कोई पात्र न होने से, दूसरे गण मे आज्ञा लेकर जाना।

(७) गण से बाहर निकलकर जिनकल्प आदि रूप एकल

---

१ ठाणांग ७, उ ३, सू ५४१

विहार प्रतिमा अङ्गीकार करने हेतु आज्ञा लेकर अपने गण से बाहर जाना ।

वर्तमान मे सघो मे सुधारों की आवश्यकता—धर्म सघ की उन्नति हेतु कर्णधारो को अपने दायित्वो के अलावा अभी निम्न बिन्दुओ पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है—

(१) धर्म से विमुख हो रही युवा पीढी को धर्म मे आस्थावान करना ।

(२) जैनो में मास, मदिरा सेवन, रात्रि भोजन तथा सामूहिक भोजों मे जमीकद का प्रयोग रूकवाना ।

(३) जैन धर्म को कलकित करने वाली दहेज प्रथा का उन्मूलन कराना ।

(४) विभिन्न सम्प्रदायो में सौहार्द एव सगठन का वातावरण बनाना ।

(५) व्यक्ति पूजा के स्थान पर गुण पूजा को बढावा देना ।

(६) सघ मे रहे दीन, दु खी, अनाथ, अपग, असहाय, विधवा एव विद्यार्थियो के अभावो का निवारण कराना ।

(७) विशुद्ध ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप जो जिनशासन का मूलाधार है, उसका प्रचार-प्रसार करना तथा शिथिलाचार को रोकना ।

(८) बढ़ती हिंसा एव अनैतिकता को रोकना ।

उपसहार—जिनशासन की आदर्श सघ व्यवस्था मे आगार धर्म पालकों का भी बडा महत्त्व है । श्रावक वर्ग भी धर्म सघ का अविभाज्य अग है और श्रमण संघ की नीव श्रावक सघ है । श्रावक-श्राविका को आगम मे 'अम्मा पिया' 'धम्मा पिया' जैसे पावन विशेषणो से उल्लेखित किया है । चतुर्विध तीर्थ रूप धर्म सघ मे श्रावक-श्राविका को भी तीर्थ घोषित किया है । अत श्रावक वर्ग को भी अपने कर्त्तव्यो के प्रति सजग एव सक्रिय हो धर्म संघ की सुव्यवस्था एव जिनशासन की उन्नति के कार्यो मे श्रमण वर्ग के साथ पूरा सहयोग करना चाहिए । श्रमण वर्ग तो अपनी मर्यादा मे रहकर ही संघ व्यवस्था के कार्य कर सकता है किन्तु श्रावक वर्ग श्रमण प्रमुखों से समुचित मार्गदर्शन लेकर उनके निर्देशानुसार गृहस्थोचित संघ कार्य करे तो जिन-

(शेष पृष्ठ ५० पर)

दिगम्बर परम्परा में संघ व्यवस्था

● डॉ उदयचद जैन

भारतीय सस्कृति के विविध पक्ष हैं। उनमें श्रमण सस्कृति और वैदिक सस्कृति दोनो का ही क्रम प्राचीन है। दोनों ही की अपनी अपनी विचार धाराए हैं, परम्परा भी है और दोनो का ही स्थान महान् माना जाता है। उन सस्कृतियो के जीवन्त प्राण हमारे तीर्थ हैं, आगम हैं, वेद हैं, उपनिषद हैं, त्रिपिटक आदि जसे सूत्र ग्रथ भी हैं। उन्ही का अनुसरण करने वाले चलते-फिरते तीर्थ हमारे साधु सत हैं। उनका अपना अपना स्थान है। उनकी अपनी अपनी विशेषताए भी हैं। यहा श्रमण सस्कृति के जीवन्त एव चलते-फिरते तीर्थ का क्या स्वरूप, गुण एव महत्त्व इत्यादि का सामान्य परिचय शौरसेनी आगम साहित्य की दृष्टि को रखकर प्रस्तुत किया जा रहा है।

'सघ' आधुनिक दृष्टि से या प्राचीन दृष्टि से गुणो के समूह, समुदाय आदि के अर्थ को व्यक्त करता है। जब यही शब्द 'श्रमण-संघ' इस वाक्य रचना को प्राप्त कर लेता है तब वह विशाल रूप को प्राप्त हो जाता है। 'दंसण णाण चरित्ते संघायतो हवे संघो' अर्थात् दर्शन, ज्ञान और चरित्र का एकात्मक रूप संघ है। जहा तीनों के धारक, चितक, उपासक, आराधक एव मार्गानुगामी हैं वही सघ बन जाता है। संघ रत्नत्रय है, सघ समय है, सघ आत्मा है, सघ परमात्मा है, सघ प्रकाश है, सघ तत्व दृष्टि है इत्यादि जो कुछ भी चिन्तन किया जाता है या जिसके द्वारा चिन्तन किया जाता है वह सभी सघ है। सघ साधु रूप है। इसलिए भी यह विचार किया है कि किस सघ का कौन सा साधु? मूलत दिगम्बर या श्वेताम्बर के श्रमणो के कुछ भेद सामान्य हैं। यहा दिगम्बर संघ के प्रमुख आचार्य आदि की व्यवस्था का परिचय दिया जा रहा है।

१ आचार्य—'सदा आचारविद्दण्हू आयरियं या आयारमायारवंतो आयरियो' अर्थात जो आचार (समाचार में) में विशेषज्ञ हैं, या जो आचार का सदैव आचरण करते हैं, वे सभी आचार्य होते हैं। मुनि संघ के नायक हैं। वे अन्तरग, बहिरंग परिग्रह से रहित

परम पद स्थित हैं। पचाचार से पवित्र हैं। आचार्य कुन्दकुन्द' वट्ट केर एव शिवार्य जैसे चिन्तनशील मनीषियो ने आचार्य कौन, इस पर गभीरता से प्रकाश डाला है। 'नियमसार' मे आचार्य को गुण गम्भीर भी कहा है। धवलादि महाग्रन्थो में 'सुत्तत्वविसारद' कहकर आचार्य को ज्ञानाभ्यासी ही नहीं अपितु आगमविज्ञ भी कहा है।

आचार्य ३६ गुणो से युक्त सदैव ज्ञान, ध्यान एव तप मे लीन रहते हैं। शिवाय ने इसका विस्तार से वर्णन किया है। आचार्य कुन्दकुन्द नें 'वोध पाहुड' मे इनके गुणो का निर्देश किया है। 'भगवती आराधना' मे आचारवान, आधारवान व्यवहारवान आयावायदर्शी, अपरिस्रावी, निर्यापक, प्रसिद्ध, कीर्त्ति सम्पन्न आदि गुणो की चर्चा की है। आज भी आधुनिक युग में आचारवान्, आधारवान् आदि गुणो को पूर्ववत् महत्व दिया जाता है।

आचाय आचरण योग्य ज्ञान, दर्शन, चरित्र, तप और वल सम्पन्न तो है ही, इसके अतिरिक्त श्रमण सघ के सरक्षक भी वह होते हैं। वह अन्त समय निकट जानकर समाधिमरण की क्रिया को स्वय धारण कर अपने उत्तराधिकारी का चयन अत्यधिक विवेकपूर्वक करता है। आचार की अखडता बनाने के लिए सर्वसघ, चतुर्विध सघ को ही सर्वोपरि मानता है।

आचार्य पद योग्य वही साधक, चिन्तनशील श्रमण होता है जो ज्ञान, ध्यान और तप मे प्रवीण, वय से वलिष्ट, संघ सचालन मे सक्षम हो। क्रूर, हीन, कुरूप, विकृत, अभिमानी, विद्याविहीन, आत्म-प्रशसक आदि से युक्त साधक इस पद का अधिकारी नही होता है।

आचार्य के कई पद भी हैं। गृहस्थाचार्य, प्रतिष्ठाचार्य, बाला-चार्य, एलाचाय निर्यापकाचार्य आदि कई आचार्य के पद हैं। 'भगवती आराधना' मे इसकी विस्तार से चर्चा की गई है।

२ उपाध्याय—जो स्वय अध्ययन-मनन-चिन्तनशील होते हैं और दूसरो को भी अपने इन गुणो से अलंकृत करते हैं। सघ मे स्थित साधुओ को परमागम का ज्ञानाभ्यास कराते हैं। 'रयणत्तय-सजुत्ता' रत्नत्रय से युक्त सम्यक्त्व के नि काक्षित आदि अष्ट गुणो से सुशोभित उपाध्याय होते हैं। बारह अग एवं चौदह पूर्व ग्रन्थो के अभ्यास से, स्वाध्याय से एव पठन-पाठन से निरन्तर ही अपने ज्ञान मे वृद्धि करते

रहते हैं। 'तिलोयपण्णत्ति' में उपाध्याय को भव्यजनो का उद्योत करने वाला एव श्रेष्ठ बुद्धि का दायक कहा है। नेमिचन्द्र ने रत्नत्रय से समन्वित धर्म/वस्तु तत्व का विवेचन करने वाला कहा है। समग्र चिंतन को आधार बनाकर यही कहा सकता है कि उपाध्याय प्रश्नों का समाधक, सुवक्ता, सिद्धान्त शास्त्र प्रवीण, सूत्र एवं सिद्धान्त के रहस्य का उद्घाटक, शब्द, अर्थ की गहराई मे प्रवेश करने वाला गुणो में अग्रणी होता है "उपेत्याधीयतेऽस्मात् साधव सूत्रमित्युपाध्याय" या 'श्रुताभिधानमधीयते स उपाध्याय । येषां तप श्री रत्नधासरीत विवेचका चेतसा तत्वबुद्धि । सरस्वती तिष्ठति वक्त्रपद्मे पुनन्तु ते अध्यापक पु गवा व ।' आचार्य कुन्दकुन्द ने उपाध्याय को अध्यापक कहा है।

उपाध्याय अज्ञानरूपी अन्धकार मे भटकने वाले जीवो को प्रकाश देने वाले हैं। उत्तम मति युक्त हैं, जिनकी सीमा का पार पाना अत्यधिक कठिन है।

३ साधु—आचार्य, उपाध्याय भी साधु हैं, नवदीक्षित भी साधु है। प्रवतक, स्थविर, गणधर, गणनायक, नायक, तत्वज्ञ, विदग्ध गीतार्थज्ञ, चारित्रज्ञ, ज्ञानज्ञ, तपस्वी, शैक्ष्य, ग्लान, गण, कुल संघ ऋषि, यति, मुनि, अनगार, मनोज्ञ आदि चारित्र के धारक साधु हैं। साधु ज्ञान, ध्यान, तप मे लीन आत्म की ओर अग्रसर रहते हैं। जिनकल्पी-स्थविरकल्पी, पुलाक, वकुश, कुशील, निर्ग्रन्थ, स्नातक गुण-स्थान की दृष्टि से साधु हैं। साधुओ मे सयम, श्रुत, प्रतिसेवना, तीर्थ, लिंग, लेश्या, उपपाद, स्थान इन आठ अनुयोगो की भी विशेषता पाई जाती है। द्रव्यलिंग और भावलिंग की अपेक्षा से भी साधु का विवेचन प्राप्त होता है।

विविध प्रकार के संघ भी पाए जाते हैं। इस समय दिगम्बर परम्परा मे जो भी सत हैं वे सभी कुन्दकुन्द के अनुयायी एवं शान्ति सागर की परम्परा का अनुसरण करने वाले प्राय हैं। थोडा बहुत भेद श्रमण की पारिभाषिक दृष्टि से भी किया जाता है। आचार्य, उपाध्याय, साधु तो श्रमण हैं ही। क्षुल्लक, ऐलक, भट्टारक, ब्रह्मचारी, प्रतिमाधारी श्रावक, आर्यिका, क्षुल्लिका एवं आर्यिका, ब्रह्मचारिणी श्रमण संघ के स्तम्भ हैं।

४ ऐलक—जो ग्यारहवी प्रतिमा से युक्त, कौपीन वस्त्रधारी, डी, मूछ आदि का केशो का लोच करने वाला, पिच्छि-कमण्डलु-रक एव मुनि सघ मे रहने वाला ऐलक होता है । पात्र-पाणी मे आहार लेता है और धर्मोपदेश भी करता है । तथा बारह तप का पालन करने वाला अतिचारो का भी निवारण करता है । 'भगवती', मूलाचार में इसकी विस्तृत चर्चा है । 'लाटी संहिता' मे इसके स्वरूप पाद आदि पर प्रकाश डाला गया है ।

५ क्षुल्लक—श्रावक की ग्यारह प्रतिमाओ/भूमिकाओ मे उत्कृष्ट साधु की तरह चर्या करने वाला क्षुल्लक होता है । क्षुल्लक कौपीन और एक चद्दर का धारी, पिच्छि-कमण्डलुधारी, पाणिपात्री या भाजनपात्री एक समय आहार चर्या साधुवत् जो करता है वह क्षुल्लक होता है । 'वसुनदि श्रावकाचार' मे इसकी विस्तार से चर्चा की गई है । 'लाटी-सहिता' 'मूलाचार' 'भगवती आराधना' मे भी क्षुल्लक का स्वरूप दिया गया है ।

६ क्षुल्लिका—साधुवत् चर्या करने वाली, श्राविका की उत्कृष्ट भूमिका से युक्त, मुनिसंघ का एक अग आर्यिका के संघ के साथ चलने वाली क्षुल्लिका क्षुल्लक के नियमो का पालन करती है ।

७ आर्यिका—

अज्झयणे परियट्टे सवणे कहणे तहाणुवेहाए ।
तव-विणय-सजमेसु य अविरहिदुवओग जुत्ताओ ॥

जो शास्त्र पढ़ने, अध्ययन करने, शास्त्र उपदेश देने, सुनने, अनुप्रेक्षा पूर्वक चिंतन करने में प्रवीण, सयम तप, विनय मे रत सदैव ज्ञानाभ्यास आर्यिकाओ की प्रथम भूमिका हैं । वे साधुवत् चर्या एवं व्रतो का पालन आदि भी करती हैं ।

८ भट्टारक—पूर्व में भट्टारक निष्परिग्रही एकान्तवासी थे । फिर समय के अनुसार भट्टारक साधु की चर्या, व्रतो का पालन करते हुए भी 'मठ' मे स्थित होने लगे । नग्न मुद्रा का परित्याग कर पिच्छि-कमण्डलु एव वस्त्रधारी हो गए । ज्ञान उपदेश देते, श्रावको के शिथि-लाचार को रोकते, धार्मिक आयोजन आदि को भी करवाने लगे । पूजा, प्रतिष्ठा, मत्र-तत्र आदि के प्रयोग के कारण वे समाज मे प्रति ष्ठित हो गए । वे साहित्य-सृजन, संरक्षण, स्थापत्य कला को जीवित रखते हुए धम प्रभावना को बढ़ाते हैं ।

दिगम्बर सघ व्यवस्था अपने आप मे कई घम सोपानों से चलती हुई विविध रूपो को धारण किए हुए हैं। परन्तु सभी श्रमण एक ही लक्ष्य रखते हैं। ज्ञान, ध्यान, तप को महत्व देते हैं। आत्म ज्ञान ही इनका सर्वोपरि लक्ष्य होता है। आचार्य, उपाध्याय, साधु क्षुल्लक, ऐलक, क्षुल्लिका, आर्यिका, श्रावक श्राविका आदि श्रुत प्रभाव के द्वारा आत्म ज्ञान को बढाते हैं। श्रावक-श्राविका गृहस्थ होते हुए भी अणुव्रत, गुणव्रत, शिक्षाव्रत की सीमा का ध्यान रखते हुए शास्त्र रूचि, शास्त्र श्रवण, शास्त्र-पठन, मुनियो की वैय्यावृत्ति/सेवा, आहार आदि की क्रियाओ का ध्यान रखते हैं। इन सभी का एक ही उद्देश्य है—घम की प्रभावना।

—पिऊ कु ज, अरविन्दनगर, उदयपुर (राज) ३१३००१

(शेष पृष्ठ ४५ का)

शासन की कीर्ति मे चार चाद लग सकते हैं। वर्तमान मे जिनशासन मे आए शिथिलाचार, सूत्र-विपरीत प्रचार-प्रसार, बढ़ता सम्प्रदायवाद, व्यक्ति पूजा, मिथ्यात्व पोषक व राग-द्वेष वधक दुष्प्रवृत्तियो आदि को श्रावक सघ सगठित हो (यथायोग्य आचार्यों आदि से मार्गदशन लेकर) उन्हें रोक सकता है। विशुद्ध वीतराग धम की प्रभावना एव आराधना करा सकता है।

अन्त मे चतुर्विध सघ के सभी पदाधिकारियो एव भ महावीर के अनुयायियों से निवेदन है कि वे सघ हित मे जिनशासन के हित मे अपने कत्तव्यों को निष्ठापूवक पालना करें तो निश्चय ही जैन धम और जैन सघ का भविष्य समुज्जवल होगा। "जैन जयति शासनम्।"

—डागा सदन, सघ पुरा, टोंक

अमित उत्साह

अच्छे कार्यों के प्रति सदा उत्साह रखना चाहिये। उत्साह के साथ-साथ विवक्षित कार्य के प्रति उतना समर्पित भी रहना चाहिये। जिस कार्य मे हम सफलता प्राप्त करना चाहते हैं उस कार्य के लिए मनसा-वाचा कमणा सक्रिय हो जाना चाहिये।

—युवाचार्य श्री राम

समता और समीक्षण ध्यान से राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान : आचार्य श्री नानेश

● भेंटकर्त्ता–गोविन्द नारायण श्रीमाली

समता विभूति आचार्य श्री नानेश समीक्षण ध्यान के माध्यम से तनाव शैथिल्य और समाज जीवन मे शान्ति व समरसता का अमृत प्रवाहित करने का भागीरथ प्रयास कर रहे हैं। जिनशासन प्रद्योतक आचार्य-प्रवर ने अपनी लगभग तीन दशक की विहार यात्रा में भारत के ग्राम ग्राम, नगर-नगर मे भ्रमण कर समाज व राष्ट्र से स्वयं को एकात्म कर लिया है। आपकी वाणी मे प्रखर सत्य के दर्शन होते हैं। यहा कतिपय राष्ट्रीय समस्याओ पर आचार्य-प्रवर के विचार प्रस्तुत हैं। प्रस्तुतिकरण मे पूर्ण सावधानी रखी है, पर फिर भी कोई त्रुटि रही हो तो क्षमाप्रार्थी हू।)

प्रश्न देश की वर्तमान स्थिति के बारे मे आप क्या सोचते हैं ?

आचार्य श्री जी–जब तक लक्ष्य स्पष्ट नही होगा, यह धाधलेबाजी चलती रहेगी। आजादी के लिए सघर्ष के समय देश में कैसा अपूर्ण आत्म संयम था और आज वह नही है क्योंकि व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के समक्ष अपने आदर्श स्पष्ट नहीं है। आज हमारा लक्ष्य होना चाहिए समता। समतामय समाज रचना मे राष्ट्रीय समस्याओ का समाधान निहित है। समता दर्शन और व्यवहार के ७ घोषित सूत्रो मे एक है लक्ष्य परिवर्तन। लक्ष्य स्पष्ट हो जाने पर वातावरण बदलता है और सम्पूर्ण परिवेश स्वत सभी समस्याओ का शनै-शनै निदान प्रस्तुत करता है।

प्रश्न : देश मे बढ़ती साम्प्रदायिकता के आप क्या कारण समझते हैं ? समाधान क्या हो सकता है ?

आचार्य श्री जी–साम्प्रदायिकता का जो अर्थ आजकल लिया जा रहा है, धार्मिक दृष्टि से उसका वैसा अर्थ नही है। वास्तव मे तो

धम को सही रूप से जानने एव मानने वाले पुरुषो के जो ... हैं, उनका आदान प्रदान जिस समूह मे होता है, वह समूह ... के नाम से पुकारा जा सकता है । ऐसा सम्प्रदाय सम्यक रूप से विचारो का आदान-प्रदान कर स्व पर कल्याण का माग प्रशस्त करने वाला होता है । ऐसा धर्म सम्प्रदाय संग्रह-विग्रह, क्लेश आदि से अलग रहकर 'सर्वजन हिताय-सर्वजन सुखाय' वायुमण्डल का निर्माण करता है । ऐसे सम्प्रदाय का समूह विशुद्ध स्थिति मे चलता है ।

इस सहज अथ से भिन्न जो विकृत समूह सम्प्रदाय कहलाते हुए भी अस्तित्व मे है, वे ससार के समाने विविध प्रकार भेद उत्पन्न कर रहे हैं । पूर्व निर्मित एतद् विषयक ग्रन्थियो एवं वतमान मे भौतिक सत्ता एवं भौतिक सस्कृति की आसक्ति के कारण तथा अधिकार की भूख से अहंता और ममत्व की पकड मे जो व्यक्ति आ चुके हैं, वे उस प्रकार की कूट-राजनतिक विचारधाराओं से युक्त विविध प्रकार के संगठन बनाकर जनसमुदाय के बीच जाते हैं और उन्हे लुभावने नारे देकर आकर्षित करते हैं । कुछ धम के नाम पर उपरोक्त बातो को सम्पन्न करने के लिए जनता को प्रभावित करते हैं । इस प्रकार अनेक मत पथ और समूह बन जाते हैं । ऐसे समूहो को भी सम्प्रदाय की संज्ञा दी जाती है ।

ऐसे सम्प्रदायो से व्यक्ति, परिवार समाज-राष्ट्र आदि में खिचाव विग्रह-तनाव और शस्त्र आदि की होड लगी हुई है ।

इसका समाधान दूषित मनोग्रथियों का विमोचन होने से और सम्प्रदाय का संस्कारात्मक सही रूप समझकर तदनुसार आचरण करने से हो सकता है । ग्रथि विमोचन हेतु समीक्षण ध्यान पद्धति के उपयोग से व्यक्ति और समाज जीवन में तनाव शैथिल्य और सात्विक वातावरण बनाया जा सकता है ।

प्रश्न आतंकवाद-पजाब व अन्य का कारण क्या है और इसका क्या समाधान है ?

आचार्य श्री जी–इनका कारण भोग लिप्सा है । साथ ही अधिकारो की आतरिक लालसा, सामाजिक विषम वातावरण तथा असामाजिक तत्वो के शोरगुल इत्यादि अनेक कारणों से उत्पन्न होने

(शेष पृष्ठ ५४ पर देखें)

आचार्य श्री नानेश की विलक्षण देन : समीक्षण ध्यान

● जानकी नारायण श्रीमाली

आचाय श्री नानेश का उदयपुर वर्षावास समाप्ति पर था। कुछ प्रबुद्ध श्रावको ने आचाय प्रवर से निवेदन किया कि आप बहुधा प्रवचन मे समीक्षण ध्यान की चर्चा किया करते हैं। हमे इसके व्यवहार का दिशा बोध प्रदान करने की कृपा करें। इस पर आचाय प्रवर ने अन्तर स्नेहपूवक अपनी साधना के अमृत को अपनी आत्मस्पर्शी अनुभूतियो को समाज के जिज्ञासुओ हेतु अभिव्यजित किया और भौतिकता से यह समाज को आध्यात्मिक अन्तरावलोकन का सुअवसर मिला।

समीक्षण ध्यान आत्मदशन की साधना है 'आत्मान विद्धि'। चितवृत्तियो का निरोध करते हुए मन साधना से इसका प्रारम्भ किया जाना चाहिए। बहिर्मुखी चित्तवृत्तियो को नियमित करते हुए अ`तर्मुखी बनना अपने अ`तरग में प्रवेश करना इस ध्यान की प्रथम सीढी है। इसके लिए तीव्रतम सकल्प, स्थान एव वातावरण की शुद्धता और समय की नियमितता होना उपयोगी है।

यथासभव ब्राह्म मुहूर्त में विधिपूवक वदन के पश्चात आत्म समीक्षण की अन्तरयात्रापूवक साधक चित्त का सृजन होता है। विनय-विवेक के साथ त्याग भाव की ओजस्विता से संयुक्त साधक मन की समस्त वृत्तियो को नियन्त्रित करते हुए विश्वमैत्री की उच्च भावना का आह्वान करता है। इस प्रकार प्रारम्भ हुई उसकी आत्म साधना शनै शनै अपने प्रभाव क्षेत्र का विस्तार कर विश्वात्म साधना के पथ को प्रशस्त करती है।

समीक्षण शब्द का अर्थ क्या है ? इसका अथ है—सम्यक् प्रकार से अथवा समतापूर्वक देखना, निरीक्षण करना। सम (धन) ईक्षण इन दो शब्दों के योग से समीक्षण शब्द बनता है। सम का अथ है समता अथवा सम्यक और ईक्षण का अथ है—देखना। अत समीक्षण का अथ हुआ अपनी ही वृत्तियो को सम्यग्रीत्या समभाव पूवक निश्चित रूप से देखना। इस प्रकार समीक्षण ध्यान एव अ`त

प्रज्ञा चक्षु है । यह एक व्यवहार दर्शन है, क्योंकि समाज के परिवेश मे रहते हुए साधक मनोवृत्तियो का समायोजन करता है । इससे आदर्श स्थैर्य प्राप्त होता है और सहज योग सिद्ध होता है, जिससे प्रत्यक्ष साधना का प्रभाव दैनंदिन जीवन मे भी प्रस्फुटित होता है । इससे अह और मम का विसर्जन हो प्राणी मात्र से एकात्म स्थापित होता है । एकाग्रता और आत्म शक्ति का सचय होता है । श्वास प्रश्वास के द्वारा समीक्षण भी सधता है ।

परम श्रद्धेय समीक्षण ध्यान योगी आचार्य श्री नानेश की पावन सन्निधि मे साधक इस ध्यान साधना का अभ्यास करते हुए निरतर आत्म और परमात्म कल्याण मे रत है । गुरुदेव की सानिध्य मे बोरीवली-बम्बई में आयोजित समीक्षण ध्यान साधना शिविर स्वयं मे अनूठा था । श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ द्वारा रतलाम के दिलीप नगर छात्रावास परिसर मे समीक्षण ध्यान के स्थाई केन्द्र की स्थापना की गई है ।

समीक्षण से सदविचार और समता के भाव जागृत होते हैं और ये भाव ही विश्व कल्याण के हेतु हैं । आइए समीक्षण ध्यान साधना से अपनी चेतना को जागृत करें और अलौकिक सत् चित् आनंद घन स्वरूप मे प्रतिष्ठित होवें ।

—सचिव, राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति
अकादमी, बीकानेर

(शेष पृष्ठ ५२ का)

वाले चरम तनाव से मस्तिष्क मे आतंकवाद की ग्रंथियां निर्मित हो जाती हैं । इन ग्रंथियो का सही तरीके से विमोचन जब तक नहीं हो जाता, तब तक ये तांडव नृत्य (आतंकवाद) कभी अधिक, कभी कम मात्रा में चलता रहेगा ।

इसका समाधान वही ग्रंथि विमोचन है ।

ब्रह्मपुरी चौक, बीकानेर

आत्म-साधना में अनुशासन का महत्त्व

आचार्य शरद्चन्द्र के समान

जिस प्रकार चन्द्रमा अपने परिवार के मध्य शोभायमान होता है उसी प्रकार श्रमण श्रमणी और श्रावक-श्राविकारूप चतुर्विध सघ में आचाय महाराज शोभायमान होते हैं। उन आचार्यों के बारे मे कहा गया है—

पंचिन्दियसवरणो तह नवविह बंभचेर गुत्तिधरो।
चउविह कसायमुक्को इअ अठारस गुणेहिं सजुत्तो॥
पच महव्वयजुत्तो पच विहायार पालण समत्थो।
पच समिओ ति गुत्ती छत्तीस गुणो गुरु मज्झ॥

जिनमें ये ३६ गुण होते हैं उन्हें आचाय माना गया है। उनके ३६ गुण हैं—वे पाचो इन्द्रियो को वश मे रखते हैं, नव वाडो सहित ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, पाचो महाव्रतो और पाचो प्रकार के आचारो का पालन करते हैं, चारो कषायो (क्रोध, मान, माया, लोभ) से मुक्त होते हैं और पाचो समितियो तथा तीनो गुप्तियो का पालन करने वाले होते हैं।

ऐसे आचाय ही सक्षम होते हैं और वे ही अपने सघ को ठीक रख सकते हैं। इसके विपरीत जो आचाय गुणो से हीन हों, स्वार्थी हो, अथवा अज्ञानी हो, वे कभी भी सघ की उन्नति नही कर सकते।

आचार्य निष्पक्ष न्यायाधीश जैसे

वे आचार्य निष्पक्ष न्यायाधीश के समान होते हैं। जिस प्रकार न्याय के आसन पर बैठकर न्यायाधीश यह नहीं देखता कि अपराधी मेरा पुत्र है, सम्बन्धी है, मित्र है या कोई स्वजन है, वह तो कानून के अनुसार निष्पक्ष होकर निणय कर देता है, उसी प्रकार आचार्य महाराज भी किसी के साथ पक्षपात नही करते, आगम के नियमो के अनुसार ही सघ की व्यवस्था करते हैं, उनकी दृष्टि मे सभी समान होते हैं।

सोजत मे अबाचन्द्रजी हाकिम बनकर आये। वहा उनके गिनायत भी ज्यादा थे। तो उन लोगों ने सोचा कि अब धन कमाने

का अवसर आ गया। अपनी गिनायत का हाकिम है तो अपने पौ बारह हो गये।

एक-दो बार उनसे बातें की तो उन्होंने सुन लीं, लेकिन फिर सबसे स्पष्ट शब्दों में कहा—देखो भाई! प्रेमचन्द्र से कहो या श्रौर से कहो, बराबर है। आप यह न समझें कि मैं आपकी गिनायत का आदमी हूं। सम्बन्धी हूं। मैं तो निष्पक्ष व्यक्ति हूं। कानून के अनुसार काम करूंगा।

यह सुनकर सभी अपना-सा मुंह लेकर रह गए।

इसी प्रकार आचार्य भगवान भी निष्पक्ष होते हैं। वे यह न विचारते कि अमुक शिष्य इतना गुणी है, तपस्वी है; यदि वह भी भूल करता है तो उसे भी आगम के अनुसार प्रायश्चित्त देते हैं। यद्यपि वे गुणों का आदर करते हैं पर गलती का दण्ड भी देते हैं। ऐसा नहीं है कि वे उनकी भूल को नजरअन्दाज कर जायें। उन्हें दण्ड न दें।

आचार्य-पद गौरव-परीक्षण के बाद

आचार्य का पद बड़ा ही गौरवपूर्ण है। यह पद हर किसी को नहीं दिया जा सकता। पहले जब आचार्य बनाते थे तो पहले उनका परीक्षण करते थे कि अमुक साधु इस पद के योग्य है भी या नहीं, अथवा यह इस भार को वहन कर भी सकता है या नहीं? जब परीक्षण से वह योग्य प्रमाणित हो जाता था तब उसे आचार्य पद देते थे।

उस युग के साधकों को भी आज की तरह पद की भूख नहीं थी। वे कभी यह नहीं कहते थे कि हम आचार्य बनें। अरे! बनने की इच्छा क्यों करते हो, गुण धारण करो। यह मत कहो कि हमने सूर्य मन्त्र साध लिया है तो हमको आचार्य बना दो। इन मन्त्रों में क्या रखा है? जब तक गुण धारण नहीं किये जायेंगे तब तक ये मन्त्र भी काम नहीं देंगे। फिर इन मन्त्रों से न तो संघ व्यवस्था में ही कोई सहायता मिलती है और न आत्मा की आध्यात्मिक उन्नति ही होती है। आत्मोन्नति का मार्ग है पांचों इन्द्रियों को वश में रखना, उन्हें संवर के काम में लगाना। ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार—इन पांचों आचारों में वह सम्पूर्ण होते हैं। उनका निरतिचार रूप से पालन करते हैं। इनके ज्ञानाचार, दर्शनाचार,

चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार मे कोई कमी नही होती और यदि कमी होती है तो वे आचार्य बनने के योग्य नहीं होते। अपने विधिपूर्वक आचार पालन से ही वे भी सघ को अपनी आज्ञा में चलाते हैं। वे आज्ञापालन करवाने मे कितने दृढ होते हैं, यह पूज्यश्री जवाहरलालजी के जीवन की घटना से ज्ञात हो जाता है—

पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज के प्रमुख शिष्य थे घासीलालजी महाराज। वे ग्यारह भाषाओं के प्रकाड विद्वान थे और साध्वाचार भी भली भाति पालन करते थे। स० १९९० मे आचाय ने उन्हें आज्ञा दी कि सम्मेलन में आओ। घासीलालजी ने दो बार आज्ञा का उल्लघन कर दिया। आपस में ही गुरु शिष्य के मतभेद खडे होने से आचाय श्री ने उन्हें सघ से पृथक कर दिया। यह मोह नही किया कि इतना विद्वान शिष्य है तो उसकी भूल को क्षमा कर दिया जाय।

आज तो कहते हैं कि जैसे भी शिष्य हैं, समझौता करना ही पडता है। लेकिन इस समझौते का परिणाम क्या होता है? सघ अनुशासन मे शिथिलता आ जाती है। कूडा-कचरा इकट्ठा हो जाता है और धीरे धीरे इकट्ठा होने पर ऊखडडी बनानी पडती है।

आज्ञाभग चोरी है

मान लीजिए आपके छोटे बच्चे ने जेब से दस-बीस पैसे का सिक्का निकाल लिया या दुकान के गल्ले से उठा लिया, उस समय आप उसे समझाए नही, ताडना न दें, बच्चा समझकर छोड दें, उसकी इस गल्ती को नजरअन्दाज कर दें तो क्या भविष्य मे आपको पछताना नहीं पडगा? अवश्य पछताना पडेगा।

इसी तरह सघ में आचार्य श्री की आज्ञा का भग करना भी चोरी है। चोरिया पाच प्रकार की बताई हैं—(१) राजा की चोरी, (२) सघ की चोरी, (३) आचाय की चोरी, (४) सार्थवाह की चोरी, (५) गाथापति की चोरी। इसमे से आचार्य की चोरी यही है कि उनकी आज्ञा का भग कर देना। यदि आज्ञाभग कर देने वाला साधु किसी दिन आचार्य बन गया तो फिर वह अन्य साधुओं से अपनी आज्ञा का पालन कैसे करा सकेगा। क्योकि कहा गया है—जैसा बुवै, वैसा लुवे।

ऐसी दशा में संघ का अनुशासन कैसे रहेगा, और कैसे वह संगठित रहेगा। सभी अपनी अपनी मर्जी चलायेंगे तो हास्यास्पद स्थिति न बन जायेगी। इसीलिए अनुशासन आवश्यक है और आज्ञा भंग को चोरी की सज़ा दी गई है।

अनुशासन आवश्यक

अनुशासन का महत्त्व सर्वविदित है। इसकी सभी क्षेत्रों में आवश्यकता है जाति शिक्षा, समाज, राजनीति— सभी क्षेत्रों में अनुशासन रखना जरूरी है। ढिलाई सभी जगह हानिकारक होती है।

पहले जाति के मुखिया भी जरा-सी भूल होने पर कठोर दण्ड देते थे, स्वयं कठोरतापूर्वक नियमों का पालन करते थे और दूसरे लोगों से भी करवाते थे। जब तक यह कठोरता रही तब तक काम ठीक ढंग से चला, जाति प्रथा ने देश को लाभ ही पहुंचाया, समाज को संगठित रखा और जब से नियम पालन में ढिलाई आई तब से जाति प्रथा में अनेक बुराइयां उत्पन्न हो गई और आज तो प्रत्येक विद्वान यही कहता है कि जाति-प्रथा देश के लिए बहुत हानिकारक है, इसका समूल नाश होना चाहिए।

सज्जनो! बुराई के प्रवेश का कारण क्या है? अनुशासन में कमी, नियम पालन में ढिलाई। यदि ऐसी बुराई धर्म संघ में भी प्रवेश कर जाये तो वह भी दूषित हो जाता है, उसमें भी दुर्गुण प्रवेश कर जाते हैं।

जमाली भगवान महावीर का भाणेज जमाई था। वह उत्कृष्ट करणी करने वाला भी था। लेकिन उसकी श्रद्धा में अन्तर पड गया। तब भगवान ने पहले तो उसे समझाया, फिर भी वह न माना तो संघ से पृथक कर दिया।

कल्पना करिए उस समय संघ में कितना अनुशासन था।

वह तो खैर, भगवान के समय की बात थी। उस समय तो भगवान स्वयं धरा को अपने चरण-कमलों से पवित्र कर रहे थे, किन्तु उनके निर्वाण के बाद भी धर्मसंघ का अनुशासन ऐसा ही कठोर रहा।

आचार्य सिद्धसेन का नाम तो आप जानते ही हैं। उन्होंने कल्याणमंदिर जैसा भक्तिपूर्ण और चमत्कारी तथा प्रभावशाली स्तोत्र

बनाया । वे इतने विद्वान और प्रबल तार्किक थे कि उनकी समानता करने वाला उस युग में कोई नहीं था । उन्हें 'दिवाकर' की उपाधि प्राप्त थी । वे आचार्य वृद्धवादी से शंका समाधान करके प्रभावित होकर जैन श्रमण बन गये थे ।

उस समय जितने भी आगम थे, वे अर्धमागधी भाषा मे थे और ये संस्कृत भाषा के धुरंधर विद्वान थे । इन्होंने सोचा कि अर्धमागधी भाषा के जानकार कम हैं और संस्कृत को जानने वाले अधिक हैं तो इन पर संस्कृत भाषा मे टीका होनी चाहिए ।

पहले-पहल, उन्होने नवकार मंत्र पर अठारह हजार श्लोक प्रमाण बडी सुन्दर और सारगर्भित टीका लिखी । उसमे प्रथम ही नवकार मंत्र को संस्कृत में इस प्रकार लिखा—

अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नम

अपनी टीका जब उन्होंने आचार्यश्री को दिखाई तो उन्होंने पढकर देखी । टीका अच्छी थी । पर आचार्यश्री ने पूछा – यह टीका किसकी आज्ञा से लिखी है ? क्या संघ की या मेरी अनुमति ली थी ?

"किसी की भी अनुमति नही ली ।" सिद्धसेन ने विनम्र शब्दों में कहा ।

आचार्य ने टीका एक ओर रखते हुए कहा—सिद्धसेन ! यह तुमने शासन की सेवा नही, बगावत की है । तुम संघ से बाहर निकल जाओ ।

यद्यपि आज बहुत से लोग उपरोक्त मंत्र का जाप करते हैं, ठीक समझते हैं, किन्तु आचार्यश्री को ठीक नही जचा । इसका कारण यह है कि आगमों की कुंजी अर्धमागधी भाषा मे ही निहित है । उस भाषा के ज्ञान बिना आगमों के भाव को नहीं जाना जा सकता । फिर दूसरी भाषा मे उस भाषा के भावो को प्रगट करना असम्भव है । तीसरी बात यह है कि आगम भगवान के श्रीमुख की वाणी हैं और गणधरो ने उसे सूत्रबद्ध किया है । और नवकार मन्त्र तो चौदह पूर्वो का सार है । उसके एक एक अक्षर, काना, मात्रा मे असख्य-असख्य रहस्य भरे हुए हैं, अनत शक्ति के बीज छिपे हुए हैं, इसी एक मन्त्र के जाप से जीव मुक्ति तक प्राप्त कर लेता है । उसे क्या संस्कृत भाषा में सम्पूर्ण रहस्य तथा शक्ति के साथ उतारना सम्भव है ? कभी नहीं ।

इसीलिए आचार्यश्री ने सिद्धसेन की उस टीका को पसन्द नहीं किया और भगवद्वाणी का अपलाप मानकर इन्हें संघ से पृथक् कर दिया।

इतने विद्वान होकर भी सिद्धसेन ने यह नहीं सोचा कि आचार्य ने मुझे कठोर दण्ड दिया है। यही सोचा कि मेरी ही गलती है, मुझे उनकी आज्ञा में चलना चाहिए था, उनकी अनुमति लेनी चाहिए थी, वे पश्चात्ताप करने लगे, प्रायश्चित्त लेने को तैयार हो गये।

लेकिन आज का युग होता तो क्या शिष्य इतनी बात सुन लेता? तुरन्त कह देता—रहने दो अपनी दुकान! मैं नई दुकान खोल लूंगा, नया सम्प्रदाय स्थापित कर लूंगा। किन्तु ऐसे लोग ठोकरें ही खाते हैं, न वे अपना कल्याण कर पाते हैं, और न किसी दूसरे के कल्याण में सहायक ही बन पाते हैं।

सिद्धसेन मुनि ने आचार्यश्री के समक्ष अपनी भूल स्वीकार की।

आखिर संघ आचार्यश्री के समक्ष उपस्थित हुआ और कहा कि—सिद्धसेन मुनि बहुत विद्वान हैं। ये अपनी भूल स्वीकार करते हैं तो इन पर कृपादृष्टि करिये और संघ में वापिस ले लीजिये।

आचार्यश्री ने कहा—मैंने संघ के गौरव की रक्षा के लिए ही इन्हें संघ से पृथक् किया है। फिर भी संघ यह समझता है कि इन्हें वापिस ले लेना चाहिए तो ले सकता है।

संघ ने विनम्र स्वर में कहा—वापिस तो आचार्यदेव आप ही ले सकते हैं। संघ तो सिर्फ आपसे प्रार्थना कर सकता है।

आचार्यश्री बोले—संघ तो मेरे ऊपर है।

संघ ने कहा—एक दृष्टि से ऊपर है तो एक दृष्टि से नीचे भी है। आज्ञा तो गुरुदेव आपकी ही मान्य है।

तो आचार्य ने कुछ दण्ड देकर सिद्धसेन को संघ में मिलाने की अनुमति प्रदान कर दी।

देखिये, संघ और आचार्य एक-दूसरे को कितना मान दे रहे हैं, और अपनी विनम्रता प्रगट कर रहे हैं। जहां ऐसी स्थिति होती है, वहीं अनुशासन रह सकता है।

यदि बड़ों ने कोई आज्ञा दी और हम आंखों में रंग ले आये तो हमारा कोई महत्त्व नहीं रहा। आज्ञा का विनयपूर्वक पालन करना

चाहिए। यदि सघ की उन्नति का कोई काम करना चाहते हैं तो पहले सघपति से विनयपूर्वक प्राथना करके उनसे आज्ञा ले लेनी चाहिए।

काठियावाड़ मे संघपति हैं। सघपति की आज्ञा के बिना कोई साधु उस क्षेत्र में आ जाय तो व्याख्यान आदि नही देता है।

एक उदाहरण दे रहा हू—

सवत् १९९० मे अजमेर सम्मेलन में काठियावाड के महान विद्वान सत शतावधानी रत्नचन्द्रजी स्वामी आये थे। उनके बारे मे ऐसा हुआ कि पहले तो सघपति ने उन्हें आज्ञा दे दी कि चले जाओ और फिर इकार कर दिया। जब वे नही आये और दुलभजी भाई ने आकर बताया कि वे नही आयेंगे तो हम लोग सुरेन्द्रनगर पहुचे। वहा सघपति को बुलाकर कहा कि शतावधानी महाराज रत्नचन्द्र जी को आपने क्यो रोक लिया है? उन्हें तो आना चाहिए। यदि ऐसे अवसर पर नहीं आयेंगे तो फिर कब आयेंगे? यदि ऐसे विद्या के भण्डार नहीं आयेंगे तो न आपके सघ की ख्याति बढ़ेगी और न सम्प्रदाय की ही।

यह सुनकर सघपति की आंखो मे आसू आ गये और वे बोले— रत्नचन्द्र हमारा अनमोल रत्न है। उसे हम बाहर नही भेज सकते।

खैर, किसी तरह सघपति की आज्ञा लेकर हम शतावधानी महाराज रत्नचन्द्रजी को लेकर आये।

शतावधानीजी महाराज की आयु ६० वप की हो चुकी थी, लकवा भी जागृत हो चुका था, फिर भी उनमे प्रमाद बिल्कुल नहीं था। वे शकुन भी लेते थे।

सम्मेलन मे पजाब से आत्मारामजी महाराज भी आये थे। दोनो में शाति इतनी थी कि कहने की जरूरत नहीं।

सम्मेलन में सम्मिलित सभी साधुओ को शतावधानीजी महाराज की विद्वत्ता के सामने झुकना पड़ा।

इस उदाहरण को देने का मेरा अभिप्राय यही है कि अनुशासन से ही शिष्य और सघ की उन्नति होती है। जो साधु जितना अनुशासन का पालन करने वाला होता है, वह अपने ज्ञान चारित्र मे उतनी ही अधिक उन्नति कर सकता है। अनुशासन से ही सघ का गौरव बढ़ता है।

अग्रेज विद्वान ने लिखा है—

Discipline is the first and last for one and every,

—अनुशासन प्रत्येक और सभी मनुष्यों के लिए सब कुछ है।

गुणो की पूजा

शतावधानीजी महाराज रत्नचन्द्रजी गुणों के भण्डार थे। एक बार उनका चातुर्मास जयपुर मे हुआ। वहां केदारनाथजी ज्योतिषाचार्य थे। उनके यहां राधावेध का काम चलता था। वहा आपने उनसे ज्योतिष पढ़ना शुरू किया।

जयपुर का दीवान उस समय मिर्जा इस्माइल था। वहा उनके अवधान का मौका आया। टाउन हाल मे प्रदर्शन हुआ। यहां दादूपंथिया और दिगम्बरियो के बडे बडे विद्वान थे। पांच हजार जनता उपस्थित थी। लोग व्यंगपूर्वक सोच रहे कि यह ढूंढिया क्या चमत्कार दिखा सकता है।

व्याख्यान चल रहा था और लोग बीच बीच मे प्रश्न पूछते जा रहे थे। नोट करने वाले उन प्रश्नों को नोट करते जा रहे थे। व्याख्यान के दौरान ही रत्नचन्द्रजी महाराज उनका अवधान करते रहे थे। व्याख्यान समाप्त होने पर उन्होंने क्रमपूर्वक सभी प्रश्नों के उत्तर दे दिये। दिगम्बर और दादू पंथी विद्वानो ने शार्दूल और शिखरिणी छन्दों में अपनी समस्यायें रखीं, उनका भी समाधान सही ढंग से कर दिया, पाद पूर्ति कर दी।

यह देखकर सभी विद्वानो का गर्व खण्डित हो गया। यह सर्वोपरि सिद्धान्त शास्त्री २१६ भाषाओं के जानकार थे। प्रोग्राम समाप्त होने पर उन्होंने सिर झुकाया और मार्तण्ड की उपाधि दी।

सारांश यह कि उपाधि मांगने से नहीं मिलती, गुणो से स्वतः ही मिलती है। ससार में सर्वत्र गुणों की पूजा होती है।

कहा भी है—

गुणाः सर्वत्र पूज्यन्ते

गुणो की सर्वत्र पूजा है, शरीर की नही। नाम से नहीं काम से पूजा होती है। जो अच्छा काम करेगा, उसकी प्रशंसा ससार में अपने आप ही होगी। —मिश्री विचार वाटिका से साभार

युवाचार्य विशेषांक

द्वितीय खण्ड

युवाचार्य समारोह

चाह लेकर जब नाना ने दलितो को गले लगाने का आह्वान किया वे बन गए धर्मपाल प्रतिबोधक/सहस्रो जनों के अज्ञान अधकार को मिटाकर उन्हें धर्म का पथ प्रदर्शित कर, श्रेष्ठ जीवन मूल्यो से उनका साक्षात्कार करा आचार्य-देव ने निकट भूत के ज्ञात इतिहास में एक अकल्पनीय अध्याय जोड दिया। यह भी सहज में। फिर प्रका- धर्मपाल प्रणेता बन कर भी वैसे ही निरभिमानी वही—'नाना'।

आचार्य-प्रवर के पावन जीवन और उनकी शास्त्र सम्म वाणी से आकृष्ट हो शत शत युवाहृदय भौतिक सुख-सुविधाओं की चकाचौंध को तृण की भांति त्याग कर जिनशासन के प्रति समर्पित होने लगे। देश के कोने कोने से धर्मश्रद्धालु युवक और युवतिय आचार्य चरण मे समर्पित होने को आने लगे। दीक्षाओं की धू मच गई। श्रमण-श्रमणी और श्रावक श्राविका रूप चतुर्विध सघ जि शासन को प्रदीप्त करने लगा। आचार्य देव के प्रति सहस्रो श्रद्धा हृदय अपनी श्रद्धा को स्वर देने के लिए मचलने लगे और तब स्वर मुखरित हुआ जिन शासन प्रद्योतक—किन्तु मध्याह्न के सूर्य भांति आलोक बिखेरता, पोषण करता आचार्य-प्रवर का व्यक्तित्व उपाधियों से दूर आत्मध्यान में लीन था।

ध्यान के प्रति, साधना के प्रति आचार्य देव अधिकाधि समर्पित होते चले गए। "ज्यो-ज्यो बूडे श्याम रंग, त्यो-त्यो उज्ज होई" कैसी विचित्र बात ! ज्यों-ज्यों काले रंग मे डुबाओ, त्यों-त्यों सफ रंग और निखार पाता है। यह पहेली आचार्य प्रवर के व्यक्तित्व अवलोकन से सुलझती है। ज्यो-ज्यो समाज उन्हें सम्मानित क आकृष्ट करने लगा, ज्यों-ज्यों उपाधियो से आसक्ति बढाने लगा, ज ज्यों हजारो कठो से 'जय गुरु नाना' गू जने लगा, त्यों-त्यो बहिमु बनने की जगह आचार्य प्रवर अन्तर्मुखी बनते चले गए। साधना विरलता सघनता मे बदल गई और पुन समाज जीवन को मिला काल्जयी, युगबोध—समीक्षण ध्यान। नाच उठा जन-मन हर्ष से, हर्ष तिरेक से और अपने आराध्य के प्रति सम्बोधन गू जा-समीक्षण ध्य योगी।

ऐसी महाविभूति समता दर्शन प्रणेता, धर्मपाल प्रतिबोध जिन शासन प्रद्योतक समीक्षण ध्यान योगी आचार्य श्री नानेश

जागरण करते हुए सवत् २०४६ के चातुर्मास हेतु कानोड पधारे। कानोड की शस्य श्यामला, शिक्षा और विद्यावारिधि भूमि पर सफल चातुर्मास सम्पन्न कर आप भारत-गौरव मेवाड की वीरभूमि के ग्रामीण अचलो मे विहार करते हुए जब वम्बोरा पधार रहे थे तो सहसा स्वास्थ्य प्रतिकूल हुआ। कालचक्र की भाति अहर्निश समाज और राष्ट्र तथा प्राणी मात्र की कल्याण कामना हेतु परिश्रमरण करने वाले इस महान् परिव्राजक की सुदृढ काया भी विश्राम मागने लगी। शरीर का भी अपना धर्म होता है। शरीर मे क्लान्ती, थकान के लक्षण प्रादुर्भूत हुए। परम पूज्य गुरुदेव, निरन्तर ५० वर्षों से पादविहारी आचार्य प्रवर को उनके आज्ञानुवर्ती शिष्य वृन्द डोली मे उठाकर उदयपुर लाए। तडित गति से शासन नायक की अस्वस्थता का समाचार देश भर मे प्रसारित हो गया। दल के दल सुश्रावक-सुश्राविका गण और वरेण्य समाज प्रमुख गुरुदेव की स्वास्थ्य पृच्छा हेतु उदयपुर उपस्थित हुए। मेवाड के धर्मप्रेमी चिन्तित हो दर्शनार्थ उपस्थित हुए। प्रमुख व कुशल चिकित्सको ने सभी प्रकार की जाच करके निष्कर्ष निकाला कि आपश्री के स्वास्थ्य लाभ के लिए पर्याप्त विश्राम लेना आवश्यक है। इतना अहर्निश श्रम स्वास्थ्य के लिए उचित नहीं।

चतुर्विध सघ का भी एक स्वर से निवेदन रहा कि आपश्री को विश्राम लेना चाहिये किन्तु पूज्य गुरुदेव का एक ही प्रत्युत्तर रहा कि शरीर तो नश्वर धर्मा है। अत जिसका नाश अवश्यभावी है, उसके सरक्षण सवधन के लिए मैं सघ हित रूप अपने दायित्व व कर्त्तव्य को उपेक्षित नहीं कर सकता। गुरुदेव शीघ्र ही अपनी दिनचर्या मे यथापूर्व व्यस्त हो गए। समाज की चिन्ता का समाधान नहीं हुआ, वह गहराती गई।

कर्मठ सेवाभावी धायमातृपद विभूषित, शासन प्रभावक श्री इन्द्रचन्दजी म सा ने गुरुभ्राता के नाते विशेष आग्रह पूर्वक निवेदन करवाया कि आपश्री जी अपने शारीरिक स्वास्थ्य को देखते हुए अपने कार्यभार को हल्का करलें। साधु-साध्वी समुदाय मे से भी कई का इसी रूप मे निवेदन आने लगा। श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के वरिष्ठ पदाधिकारियों और सदस्यों मे भी यही चिन्ता व्याप्त थी कि आचार्य श्री जी के स्वास्थ्य को देखते हुए भावी उत्तराधिकारी घोषित हो जाना

चाहिये। समवेत स्वरो मे आचार्य प्रवर तक संघ और समाज की ह
विचार-सरणि पहुंचाई गई। पूज्य गुरुदेव को समाज की चिन्ता से
अवगत कराया गया किन्तु सदा प्रशान्त आचार्य प्रवर का यही उत्त
रहा कि आप सबको किसी प्रकार की चिन्ता करने की आवश्यकता
नहीं। यथासमय यथायोग्य सोचा जा सकता है।

प्रमुख श्रावकों की यह भी भावना थी कि हम पृथक् पृथक्
सन्त-सती समुदाय से साक्षात्कार कर उनके एतद् विषयक अभिप्राय को
जानने की कोशिश करें किन्तु इसके प्रत्युत्तर में भी आपश्री ने फरमाया
कि इस विषय मे मैं जिस समय आवश्यक समझूंगा, उस समय यथा
योग्य संकेत दिया जा सकता है।

इस प्रकार घटनाक्रम चल ही रहा था। इससे पूर्व और
पश्चात् भी सुज्ञ श्रावक आचार्य प्रवर के कार्य भार को लेकर चिंति
थे और समय समय पर गुरुदेव से विनंति करने और उन्हें अपने सर्व
भावेन समर्थन का विश्वास दिलाते रहते थे। इस प्रकार की उल्लेख
नीय घटना रतलाम मे दि ७ ५ १९८८ को आयोजित संघ प्रमुख
की बैठक थी। जिसमें संघ हितैषी श्रावक सर्व श्री गणपतराज
बोहरा, गुमानमलजी चोरडिया, दीपचन्दजी भूरा, पी सी चोर
धनराजजी बेताला, पीरदानजी पारख, कालूरामजी छाजेड, मगनलाल
मेहता सहित मैं (चम्पालाल डागा) भी उपस्थित था।

इस विचार गोष्ठी मे सर्व सम्मति से निम्न प्रस्ताव पारि
किया गया—

"इस बैठक मे उपस्थित सभी श्रावक एकमत से आचार्य
श्री म सा को यह आश्वासन देना उपयुक्त समझते हैं कि शासन
गरिमा अखंडता और शासन के हित मे आचार्य श्री जी द्वारा
जो जो भी निर्णय लिया जायेगा, वह हम सबको शिरोधार्य रहेगा
न केवल हमारी ओर से अपितु अन्य सभी प्रमुख श्रावकों की ओर
से भी हम आपको आश्वस्त करना चाहते हैं कि आपश्री एवं शासन
प्रति हमारी अटूट श्रद्धा और विश्वास है। हम आपश्री से अनुरो
करते हैं कि आप हमारी शासन निष्ठा के प्रति पूर्ण रूप से आश्वस
रहें।"

इस प्रकार के प्रस्तावों से गुरुदेव को किसी निश्चय पर प

चने के लिए निवेदन किया जाता था और उन्हे सघ के सम्पूर्ण समर्थन का दृढ़ विश्वास दिलाया जाता था किन्तु गुरुदेव हर बार योग्य समय पर योग्य निर्णय का सकेत प्रदान करते रहे ।

इस प्रकार गुरुदेव द्वारा प्रत्येक प्रसंग पर सघ को विश्वास दिलाया गया कि यथा समय योग्य निर्णय लिया जावेगा । आपश्री जी के ऐसे स्पष्ट एव सहज कथनो के समक्ष श्री संघ नत मस्तक हुआ और आश्वस्त भी । अग्रिम चातुर्मास हेतु आचार्य प्रवर चित्तौडगढ़ पधारे और खातर महल मे विश्व प्रसिद्ध वीरभूमि मे सं २०४७ के इस यशस्वी चौमासे मे आश्विन शुक्ला द्वितीया को अनायास अकस्मात आचार्य श्री जी ने चतुर्विध संघ के नाम से एक उद्घोषणा प्रसारित कर सेवाभावी, तरुण तपस्वी, शास्त्रज्ञ मुनिप्रवर श्री रामलालजी म सा को चातुर्मासिकादि विनतिया सुनने, उन पर विचार एव व्यवस्था देने तथा किसी संघ की कोई आंतरिक समस्या हो तो उसे सुनकर यथायोग्य मार्ग दर्शन देने आदि का कार्यभार सौंपा । इस घोषणा से सर्वत्र हर्ष मिश्रित आश्चर्य परिव्याप्त हो गया ।

परम पूज्य आचार्य श्री जी की अविकल घोषणा इसी खण्ड मे अन्यत्र प्रकाशित हैं ।

इस अधिकार प्रदान घोषणा को सहसा श्रवण कर, इस प्रसग की अकस्मात उपस्थिति से चतुर्विध सघ विस्मित और स्तब्ध रह गया । यहा तक कि शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, विद्वान मुनि श्री रामलालजी म सा को भी इस प्रसंग की यत्किंचित भी जानकारी नहीं थी । वे १०५ बुखार की स्थिति में अस्वस्थ थे । उन्हे जब व्याख्यान के पश्चात् पंडित रत्न श्री शांतिमुनिजी म सा ने बधाई दी, तभी उन्हें सारा प्रसग ज्ञात हुआ । भाव विह्वल स्वरो मे वे केवल इतना कह पाए कि आप यह क्या फरमा रहे हैं ? इतना कहते कहते गला अवरूद्ध सा हो गया । आचार्य श्री जी म सा के समक्ष भी वे अपने विचार व्यक्त करना चाहते थे किन्तु अस्वस्थता के कारण व्यक्त करने मे असमर्थ रहे । अपने भावो को रोकना भी सभव नहीं हो रहा था, अत लिपिबद्ध कर आचार्य प्रवर के चरणो मे निवेदन करने लगे कि—भगवन् ! आप

श्री जी के निर्देशानुसार मैं यथाशक्ति कार्य कर ही रहा हूं फिर इस प्रकार की घोषणा ---- ।

आचार्य प्रवर ने कहा कि तुम अपना आरोग्य लाभ करो और यथा निर्देश कार्य करते जाओ । अत्यन्त अशक्त होने और प्रतिकूल स्वास्थ्य के कारण मुनिप्रवर अधिक कुछ कह नहीं पाए ।

आचार्य श्री जी ने इस प्रकार अपनी अन्तर साधना से, आत्म साक्षी पूर्वक यथा समय जो निर्णय लिया, उसका भव्य स्वागत हुआ। अनेक संत सती, श्रावक श्राविका, संघ वरिष्ठो और बुद्धिजीवियों आदि ने पूज्य आचार्य-प्रवर के इस संघ हितैषी समयोचित कदम की सराहना करते हुए, अपनी-अपनी शुभकामनाएं प्रकट की ।

आचार्य श्री जी ने अपनी ऐतिहासिक घोषणा से एक ओर अपना कार्यभार कुछ हल्का किया साथ ही दूसरी ओर संघ के भावी उत्तराधिकारी की दृष्टि से जनमानस में होने वाली चर्चा-विचर्चा, क्रिया प्रतिक्रिया की ओर भी आचार्य प्रवर की दृष्टि सजग व पैनी बनी रही । चतुर्विध संघ के सदस्यो की पृथक पृथक अभिव्यक्तियों को प्रत्यक्ष व परोक्ष दोनो रूपों में आचार्य श्री श्रवण करते रहे । साथ ही इस विषय में जन जीवन मे उभरे प्रश्नो-जिज्ञासाओ का यथायोग्य समाधान भी प्रदान करते रहे ।

चित्तौड से गुरुदेव का विहार हुआ और आपश्री आगामी चातुर्मास हेतु पीपलिया-कलां पधारे । मुक्त वायु मंडल में चातुर्मास सानन्द सम्पन्न हुआ और इस काल मे स्वास्थ्य में आशातीत समाधि भाव बना रहा जिससे सभी निश्चितता का अनुभव करने लगे। पीपलियाकला चौमासे के समय ही आगामी दीक्षाओं के लिए गुरुदेव ने बीकानेर संघ को स्वीकृति प्रदान करदी थी । अत चातुर्मास समाप्ति के पश्चात् गुरुदेव का अभीष्ट दिशा मे विहार हुआ ।

इस सारे काल मे जागरुक संघ सदस्य चतुर्विध संघ की भावी व्यवस्था के विषय मे चिन्तनशील बने रहे । जब तक श्री कालूरामजी छाजेड़ जीवित रहे, वे भी युवाचार्य घोषणा के लिए प्रयत्नशील रहे। उनका आजीवन प्रयास रहा कि आचार्य श्री यह घोषणा समय रहते करें ।

श्री सरदारमलजी आंकरिया के सतत आग्रह पर और विषय

की गंभीरता को अनुभव करते हुए संघ अध्यक्ष श्री भंवरलालजी बैद से मैंने अनेक बार विचार-विनिमय किया और फिर एक निर्णायक विचार की बैठक आमन्त्रित करने का निश्चय किया गया। संघ मंत्री के रूप मे मेरी पहल और आमन्त्रण को बहुमान देते हुए आमन्त्रित प्रायः समस्त संघ प्रमुख दिनांक ५-१-९२ को नोखा मे संघ के पूर्व मंत्री श्री धनराजजी बेताला के निवास स्थान पर पधारे और गहन विचार विमर्श के बाद गुरुदेव को सर्व सम्मति से एक निवेदन प्रस्तुत करने का निश्चय किया गया। निवेदन पत्र युवाचार्य-घोषणा की की दिशा मे अपना विशिष्ट स्थान रखता है, इसलिए भविष्य के संदर्भ के विचार से मैं इस पत्र को अविकल प्रस्तुत कर रहा हूं—

श्री महावीराय नमः

५ जनवरी १९९२

आज दिनांक ५ जनवरी १९९२ को श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ व शासन के हितैषी कार्यकर्त्ता आपस मे विचार विमर्श कर आचार्य प्रवर के चरणो मे विनम्र निवेदन करते हैं—

सभी उपस्थित महानुभावो ने आपस में काफी विचार विमर्श किया कि वर्तमान मे उत्तराधिकारी के विषय मे कई तरह की ऊहापोह की स्थिति परिलक्षित हो रही है। उसे समाहित करने के लिए आचार्य प्रवर अपनी प्रज्ञा से जैसा भी उपयुक्त समझें यथोचित्त निर्णय करावें। आप द्वारा लिया गया सम्यक् निर्णय सभी के लिए सर्वतोभावेण शिरोधार्य होगा।

१ भंवरलाल बैद,
२ गणपतराज बोहरा
३ गुमानमल चोरडिया,
४ दीपचन्द भूरा
५ सरदारमल कांकरिया,
६ धनराज बेताला
७ मोहनलाल श्री श्रीमाल,
८ बशीलाल पोखरना
९ जीवनसिंह कोठारी,
१० वीरेन्द्रसिंह लोढ़ा
११ सागरमल चपलोत,
१२ उम्मेदमल गान्धी
१३ मीठालाल लोढ़ा,
१४ धनराज कोठारी
१५ मोहनलाल मूथा,
१६ भंवरलाल कोठारी
१७ पीरदान पारख,
१८ चम्पालाल डागा।

इस निवेदन पत्र पर हस्ताक्षर करने वाले सभी संघ हितैषियों ने उसी दिन दोपहर बाद अलाय ग्राम मे उपस्थित होकर यह पत्र गुरुदेव की सेवामे भेंट किया। गुरुदेव ने पत्र पढ़ा और समागत प्रमुखों की विनती भी सुनी किन्तु सदैव की भांति अपनी गुरु-गभीर वाणी मे यही कहा कि यह विषय मेरी अन्तरात्मा के विचार करने का है। सो यथायोग्य विचार चल रहा है और योग्य समय पर योग्य निर्देश दिए जा सकते हैं। संघ हितैषीजन अपने कर्त्तव्य का निवहन कर प्रसन्न थे और गुरुदेव अपनी ध्यानावस्था में आत्मावलोकन मे व्यस्त।

अलाय ग्राम से गुरुदेव का नोखा मंडी की ओर विहार हुआ किन्तु नोखामंडी आते-आते गुरुदेव पुन अस्वस्थ हो गए। उनकी अस्वस्थता गंभीर थी और इससे चतुर्विध संघ चिन्ताग्रस्त हो गया। करुणा-सिन्धु, वात्सल्य वारिधि पूज्य आचार्य-प्रवर को संतों ने डोली में उठाकर बीकानेर पदार्पण कराया और बीकानेर के सुप्रसिद्ध प्रिंस बिजय सिंह मेमोरियल चिकित्सालय मे स्वास्थ्य परीक्षण हेतु आपका विराजना हुआ। स्वास्थ्य लाभ के बाद आपश्री विहार कर सेठिया ऊन प्रेस पधारे और दो रात्रि विश्राम के बाद आपश्री का भव्य और साध्योचित गरिमा से महिमा मंडित नगर प्रवेश हुआ। गुरुदेव विहार करके सेठिया धर्मस्थानक पधारे, जिससे सर्वत्र अपार हर्ष और आनन्द छा गया।

सेठिया धर्म स्थानक में विराजते समय आपका अपने गुरु भ्राता श्री इन्द्रचन्दजी म सा. से विचार-विनिमय हुआ। अलग-अलग संतों की संघ हितैषी भावनाएं सुनकर और प्रमुख संतो से परामर्श कर आप आत्मसाक्षी पूर्वक श्रीसंघ की भविष्य संबंधी व्यवस्था पर चिन्तन करने लगे। संघ प्रमुखों का भी आवागमन, विचार विनिमय निरन्तर बना हुआ था।

संयोग से बीकानेर में संत और सतीवृन्द की भारी संख्या में उपस्थिति थी और चतुर्विध संघ मे अपार उत्साह था। इन्हीं परिस्थितियों में आपश्री ने फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी सं २०४८ सोमवार तदनुसार दि २ मार्च १९९२ को अचानक निर्णय लिया। वह दिन था सूर्योदय होते ही सभी संत सती वर्ग को आचार्य प्रवर का निर्देश प्राप्त हुआ कि प्रार्थना के समय सभी सेठिया धर्मस्थानक पहुँचें। विशे

को कुछ भी पता नही था कि क्या कुछ होने जा रहा है। सत-सती वर्ग की हलचल से बीकानेर के सुज्ञ समाज में चेतना जगी और देखते-देखते बीकानेर, गगाशहर-भीनासर आदि से स्वधर्मी बन्धु सेठिया धर्मस्थानक पहुच गए। जो सहज जिज्ञासा से पहुच गए वे सभी उस परम सौभाग्य के भागी बने जो युवाचार्य पद प्रदान की प्रथम घोषणा के रूप मे परम पूज्य आचाय प्रवर के सन्देश से नि सृत हुआ था।

परम पूज्य आचाय प्रवर ने अपने उत्तराधिकारी को समग्र अधिकारो सहित युवाचाय के रूप मे श्री राममुनिजी को अभिषिक्त करने की घोषणा आपने सन्देश के माध्यम से की और इसके साथ ही युवाचाय पद प्रदान की चिरप्रतीक्षित घोषणा के अपार हर्ष सागर में चतुर्विध संघ हिलोरें लेने लगा। विचार से व व्यवहार तक की एक युगीन यात्रा अपनी मजिल पर पहुची।

—मत्री श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, बीकानेर

निराशा परिहार · आशा का सचार

व्यक्ति को जीवन मे कभी निराश-हताश-उदास नही होना चाहिए। निराशा हताशा जीवन को तहस नहस कर देती है। निराश व्यक्ति जीवन की ऊचाईया प्राप्त नहीं कर सकता। जीवन को समग्रता को प्राप्त करना है तो निराशा को सदा के लिए तिलाजली देना आवश्यक है। साथ ही जीवन में आशा का सचार होना भी अनिवार्य है।

—युवाचाय श्री राम

जाउ अस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी।

जा निरस्साविणि नावा, सा उ पारस्सगामिणी॥

छिद्रो वाली नौका पार नही पहुच सकती, किन्तु जिस नौका में छिद्र नहीं है वही पार पहुच सकती है। असंयम छिद्र है, उन छिद्रों को रोकना सयम है अर्थात् सयमी आत्मा ही संसार सागर को पार कर सकती है।

—उत्तराध्ययन सूत्र २३/७१

श्री अ भा. साधुमार्गी जैन संघ

एक विकास यात्रा

△ चम्पालाल डागा

समता विभूति आचार्य श्री नानेश के युवाचार्य पद आरोहण दिवस आश्विन शुक्ला २ संवत् २०१९ को उदयपुर मे श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की स्थापना हुई और तभी से संघ शासन नायक के पावन उपदेशो को क्रियान्वित करने के लिए सम्यक् ज्ञान, दर्शन व चरित्र की अभिवृद्धि करते हुए समाजोन्नति के कार्य में संलग्न है।

सघ साहित्य प्रकाशन, श्रमणोपासक पाक्षिक पत्र प्रकाशन शिक्षण साहित्य पुरस्कार, जीव दया, स्वधर्मी सहयोग, स्वास्थ्य सेवा श्री समता प्रचार सघ एव धर्मपाल प्रवृत्ति संचालन आदि अपनी बहु आयामी प्रवृत्तियो द्वारा समाज सेवा हेतु समर्पित है और परम पूज्य गुरुदेव के उपदेशों को आचार मे ढालने के लिए अहिनश तत्पर है।

सघ स्वर्गीय प्रदीप कुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार और स्व चम्पालाल सांड स्मृति साहित्य पुरस्कार मे क्रमशः ११०००, व ५१०० रुपए प्रतिवर्ष प्रदान करता है। धार्मिक शालाओं को अनुदान व प्रतिभावान छात्रो को छात्रवृत्ति प्रदान करता है। छात्रा हेतु उदयपुर में श्री गणेश जैन छात्रावास तथा रतलाम में श्री प्रेमराज गणपतराज बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास दिलीप नगर एव श्री गणेश जैन ज्ञान भण्डार का सचालन करता है। मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय उदयपुर मे जैनोलोजी एवं प्राकृत शिक्षण विभाग संघ सहयोग से स्थापित व सचालित है। उदयपुर मे ही श्री आगम अहिंसा समता व प्राकृत शोध सस्थान के माध्यम से शोध व प्रकाशन कार्य को गति दी जा रही है। श्री सु शिक्षा सोसायटी नोखा द्वारा सती व वैरागी भाई बहिनों को धार्मिक शिक्षण प्रदान करता है। संघ का अखिल भारतीय श्री साधुमार्गी धार्मिक परीक्षा बोर्ड है व धार्मिक शिविर समिति है। संघ श्री रिखबचन्द मेद के संयोजन मे शाकाहार क्रांति के लिए प्रयासरत है। सघ का अखिल भारतीय कार्यालय बीकानेर में है व जैन आर्ट प्रेस व श्रमणोपासक मुख्यालय है।

इस प्रकार सघ का विशालकाय अखिल भारतीय स्वरूप है और अखिल भारतीय स्तर पर महिला समिति, युवा सघ और बालक-बालिका मडली के माध्यम से सभी क्षेत्रो मे चेतना और सगठन का कार्य कर रहा है। सघ के नव निर्वाचित सघ अध्यक्ष श्री रिधकरणजी सिपाणी और वतमान सहमत्री श्री राजमल जी चोरडिया द्वारा प्रस्तुत महत्वाकाक्षी समता जन कल्याण योजना द्वारा सघ जरूरतमन्दो की सेवा योजना को अभिनव आयाम देने हेतु सकल्पित है।

वतमान सघ अध्यक्ष श्री भवरलाल जी वैद कलकत्ता द्वारा संघ की सक्रियता हेतु क्षेत्रीय समितियो के संगठन का सराहनीय कार्य किया गया है। स्थानीय श्री सघो और शाखा सयोजको के सहयोग से सघ प्रगति पथ पर आरूढ है।

युवाचार्य चादर प्रदान महोत्सव के सुअवसर पर सकल सघ की हार्दिक शुभकामना।

—मत्री, श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ समता भवन, बीकानेर

समस्याओ से घबराना : कायरता को बुलाना

समस्याओ से घबराना यह व्यक्ति की कमजोरी-कायरता का द्योतक है। समस्याओ से झूझना यह जीवन्त जीवन का सूचन है। समस्याए आपदाए जो आती हैं वे नया ज्ञान देने के लिए आती हैं। ऐसा मानकर मानव को धैर्यता पूर्वक समस्याओ का सार निकाल कर उन्हें निस्सार कर देनी चाहिए।

जिस मानव के जीवन मे समस्याओ का आपदाओ का तूफान नही आया यह उनसे प्राप्त होने वाली शिक्षा, अनुभव से प्राय वचित रह जाता है। अत समस्या को भी जीवन का एक अग मानना चाहिए। —युवाचार्य श्री राम

एकात्मता

शरीर के किसी एक भाग मे काटा चुभ जाय तो सारे शरीर में वेदना होती है, उसी प्रकार समाज के किसी एक भाग को चोट पहुंचे तो सामाजिक प्राणी को अवश्य दुख दर्द होगा।

—युवाचार्य श्री राम

जिनशासन प्रद्योतक, समीक्षरण ध्यानयोगी, समता विभूति, धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य श्री नानालाल जी म सा द्वारा शास्त्रज्ञ, विद्वद्वर्य, तरुण तपस्वी मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा युवाचार्य घोषित

बीकानेर दि २-३-९२ आज स्थानीय श्री सेठिया जैन धार्मिक भवन मे प्रात प्रार्थना के समय जिनशासन प्रद्योतक आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा द्वारा अपने उत्तराधिकारी के रूप मे शास्त्रज्ञ, विद्वद्वर्य, मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा को युवाचार्य घोषित किया । युवाचार्य पद की इस महत्वपूर्ण घोषणा के समाचार विद्युत गति से पूरे नगर मे फैल गए और देखते ही देखते प्रार्थना स्थल प्रवचन स्थल मे परिणत हो गया । दल के दल श्रावक-श्राविका 'जय गुरु नाना' के घोष मे वातावरण को गु जाते हुए सेठिया धार्मिक भवन में इस पावन घोषणा और आयोजन के साक्षी बनने हेतु एकत्र होने लगे । बीकानेर के समीपस्थ गगाशहर, भीनासर, उदयरामसर व देशनोक आदि से श्रद्धालु गुरुदेव की अमृत वर्षिणी वाणी से इस पावन घोषणा को सुनने के लिए पहुंच गए । चतुर्विध सघ उपस्थित हो गया और समवसरण जैसा दृश्य उपस्थित हो गया ।

गुरुदेव उच्च आसन पर विराजमान थे और उनके चारों ओर उनके आज्ञानुवर्ती संत-वृन्द शोभित हो रहे थे । दक्षिण पार्श्व मे धवलवेशधारी साध्वी समूह और उनसे आगे श्राविका वर्ग दम साधे अपने शासन नायक के प्रदीप्त मुखमडल को निहार रहे थे । आचार्य श्री के सम्मुख और बाएं पार्श्व मे ऊपर-नीचे सर्वत्र चतुर्विध संघ के श्रद्धालु सदस्य समुत्सुक भाव से विराज रहे थे । सभी के चेहरो पर हर्ष हिलोरें ले रहा था । सर्वत्र अपार आनन्द छाया हुआ था ।

आचार्य प्रवर का उद्बोधन—इसी हर्ष और आनन्द के वातावरण मे शासन नायक आचार्य प्रवर ने अपने सन्देश की भूमिका के रूप मे संक्षिप्त उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि—

मेरा स्वास्थ्य पिछले दिनों से ही कुछ अस्वस्थ सा चल रहा है । नोखा मडी पहुंचते पहुंचते अस्वस्थता और अधिक बढ़ गई । अपने इस स्वास्थ्य को देखते हुए मैं चतुर्विध सघ के समक्ष मेरी अन्तर

भावना प्रस्तुत करना चाह रहा था और इसी कारण से गत २-३ दिन से आप सबके समक्ष प्रवचन सभा में भी उपस्थित नही हो पाया। उपस्थित न होते हुए भी, भीतर बैठा-बैठा भी मैं आपके संघ का ही काय कर रहा था अर्थात् चिन्तन कर रहा था। इसी गहन चिन्तन-मथन के परिणाम स्वरूप मैं चतुर्विध सघ को एक सन्देश दे रहा हू। सन्देश देने की दृष्टि से ही मैंने सतो के साथ-साथ साध्वीवृन्द को भी बुला लिया है। आप सभी इस बात से परिचित हैं कि मेरी अन्तर-वृत्ति का झुकाव ध्यान और योग साधना की ओर है। इसलिए मैं योग और ध्यान के प्रति अधिक समय देना चाहता हू।

अत अपने कार्य भार को हल्का करने की दृष्टि से शास्त्रज्ञ मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा को युवाचार्य का पद भार सौप रहा हू। इस युवाचार्य की घोषणा के सन्दर्भ मे मैं चतुर्विध सघ को जो सन्देश देना चाहता हू, वह सन्देश विद्वद्वर्य श्री शाति मुनिजी म सा आपको पढकर सुना देंगे।

आचाय प्रवर के मुखारविन्द से यह घोषणा होते ही उत्साही युवक श्री सुशील जी बच्छावत की पहल पर सम्पूर्ण सभा हर्ष-हर्ष, जय जय के घोष से गू ज उठी।

सन्देश

हर्ष हिलोर के कुछ शान्त होने पर विद्वद्वय श्री शान्ति मुनि जी म सा ने शासन नायक आचार्य श्री नानेश का सन्देश चतुर्विध सघ के समक्ष ओजस्वी स्वरो में पढकर सुनाया। [गुरुदेव का सन्देश अविकल रूप से इसी अक मे अन्यत्र प्रकाशित है।]

सन्देश को श्रवण कर सभा हर्ष से झूम उठी और युवाचार्य श्री के जय-जयकार से भवन गू ज उठा।

इसी समय विद्वान श्री गौतम मुनिजी ने अपने भावो को व्यक्त करते हुए कहा कि "राम गुण गाया है, मोटा पद पाया है, आप सहारा है। उन्होने प्रमोद भाव से युवाचार्य श्री राम मुनिजी म सा पर बनाया हुआ एक भक्ति गीत भी सुनाया, जिसके बोल थे- "श्री राम मुनि गुणवान, बडे पुनवान, बाल ब्रह्मचारी, ये उच्च क्रिया के धारी" विद्वान श्री धर्मेश मुनिजी म सा भी सहज ही बोल उठे "इ शि उ चो, श्री जग तारा, उदित हुआ है भानु प्यारा।"

अलौकिक व्यक्तित्व श्री शांति मुनिजी ने अपने हृदयोद्गार प्रकट करते हुए कहा कि—आचार्य प्रवर जिस प्रकार गहन चिन्तन और अनुचिन्तन करते हैं, वैसा करना हमारे लिए संभव नहीं होता। वे जिस प्रकार निष्कर्ष पर पहुंच जाते हैं, वह अलौकिक है। आचार्य-प्रवर का व्यक्तित्व अलौकिक है। उनके समक्ष विचार विमर्श, तर्क-वितर्क, चर्चा विचारणा सभी होता है पर वे अपने सहज सौम्य व्यक्तित्व से सभी को तरल नरम बना देते हैं।

आचार्य श्री जी ने मुनि प्रवर श्री राम मुनिजी को युवाचार्य बनाया है। मैं स्वयं अपनी ओर से और सभी मुनि मण्डल की ओर से आचार्य प्रवर को आश्वस्त करता हू कि हम आपके सन्देश-आदेश के अनुशीलन की भावना रखते हैं।

मैं श्री राम मुनिजी को बधाई देता हू। यह पद फूलों की शैय्या नहीं, काटों का ताज है। सबको निभाके, साथ लेकर चलना पड़ता है। आप हम सब साधक वर्ग, श्रमणी वर्ग को मधुर नेतृत्व प्रदान करें। जो नेतृत्व पूज्य गुरुदेव से मिला है, वैसा ही आपसे मिले, यही अपेक्षा है। आपकी दृष्टि निष्पक्ष बनी रहे और आप यशस्वी बनें, यही शुभकामना है।

समता रस विद्वद्वर्य श्री प्रेम मुनिजी म सा ने अपने भाव प्रकट करते हुए कहा कि मैं हमारे मनोनीत युवाचार्य श्री रामलालजी म सा का अभिनन्दन करते हुए बोल रहा हू। अब तक की परम्परा से समाज में समता रस घुला है। इस पवित्र संगठन को किसी भी स्थिति में मोच नहीं आने वाली है। हमारे समक्ष ऐतिहासिक, अक्षुण्ण निर्णय सामने आया है। आप सबको बधाई है। श्री राम मुनिजी म सा को जो दायित्व मिला है, उसको निभाने में हम सब सहयोग करेंगे। गुरुदेव के आदेशों पर चलेंगे और संगठन में गौरव को अक्षुण्ण रखेंगे।

आदेश सर्वोपरि स्थविर प्रमुख विद्वद्वय प्रखर व्याख्याता श्री विजय मुनिजी म सा ने कहा कि आचार्य देव के संदेश, आदेश, निर्देश का मैं अन्तहृदय से स्वागत करता हू, हम अब तक आपके आदेश पर चलते रहे हैं। और चलेंगे! पूज्य भगवन् की निर्मल आत्मा से जो सदेश मिला उसकी परिपालना में हम कोई ननु नच

नही करेंगे । मैं तो यही चाहता हू कि पूज्य आचाय गुरुदेव स्वस्थ रहे, युगों युगो तक आपका वरद हस्त हम पर बना रहे । साथ ही युवाचार्य श्री का क्या स्वागत करू वे स्वय स्वागत रूप बन चुके हैं। इसी भावना के साथ एक बार पुन आचाय भगवन् को आश्वस्त करता हू कि आपका आदेश सदा सर्वोपरि रहेगा ।

निरंतर विकास स्थविर प्रमुख विद्वद्वय श्री ज्ञानचन्द जी म सा ने फरमाया कि वीतराग देव प्रभु महावीर की परम्परा निराबाध रूप से गतिशील है । इसको अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए एव गतिशीलता के लिए आचार्य देव ने अपनी विलक्षण प्रतिभा से जो निर्णय लिया वह इस परम्परा मे ऐतिहासिक कडी के रूप में उभर कर सामने आयेगा ऐसा विश्वास करता हू । साधना के पथ पर आचार्य भगवन् ने जो विकास किया है वह अद्भुत है । इस शासन को गति प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण निर्णय भी आचाय भगवन् ने चतुर्विध संघ को दे दिया है । समयाभाव से मैं यही कहूगा कि शासन प्रभाव निरन्तर बढ़ता रहे वह बढ़ता ही चला जाय । चतुर्विध सघ के समक्ष मुनि प्रवर युवाचाय के रूप मे उभर कर आये हैं । मैं शासन देव से मगल कामना करता हू कि इनके निर्देशन में सघ का निरन्तर विकास होता रहे । जैन क्षितिज के शिखर पर शासन चमकता रहे । आगमिक धरातल पर पूर्वाचार्यों की परम्परा को ध्यान में रखते हुए समर्पणा पूर्वक आगे बढते चले जाय । आचाय प्रवर की विलक्षण प्रतिभा के समक्ष हम सब नतमस्तक हैं । युवाचाय श्री समन्वय व समता मूलक सिद्धान्तो को ध्यान मे रखकर निरन्तर आगे बढते रहे, बधाई के साथ यही शुभकामना ।

आदेश शिरोधार्य स्थविर प्रमुख विद्वद्वर्य श्री पार्श्व मुनिजी म सा ने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा कि आचाय भगवन् ने चतुर्विध सघ के लिए जो सदेश प्रसारित किया वह आचार्य भगवन् की विलक्षण बुद्धि का ही प्रमाण है । आचार्य भगवन् ने जो कुछ आदेश दिया आज्ञा प्रदान की वह चतुर्विध सघ के लिए शिरोधाय है । मेरा स्वास्थ्य कुछ दिनो से अनुकूल नहीं है। इसलिए अधिक नही बोल पा रहा हूं फिर भी जैसी आज्ञा प्राप्त हुई उसके अनुरूप कुछ बोलने की कोशिश की । आचार्य भगवन् के निर्देश का परिपालन करता रहूगा यह आश्

वासन देते हुए युवाचाय श्री को वधाई के साथ विराम लेता हूं।

साध्वी वृन्द से भी अनेक महासती जी म सा ने अपने भाव प्रकट किए। प्रमीला श्री जी म सा ने पद्य मे अपने भावों को अभि व्यक्त किया और शा प्र श्री सरदार कवर जी म सा ने कहा कि आज हम सबकी भावना पूरी हुई। मैं वधाई देती हू। श्री ज्ञानकंवर जी म सा ने वधाई देते हुए कहा कि आचाय प्रवर ने अपने दिव्य ज्ञान से शासन हित मे यह निणय किया है। आपके हृदय में सती वर्ग के लिए वही स्थान रहे, जो आचाय श्री का रहा है यह निवेदन है।

विदुषी श्री चदन बालाजी म सा ने कहा कि आज का प्रसग आश्चर्य चकित कर रहा है। गुरुदेव ने अपनी प्रज्ञा और दीघ दृष्टि से जो देखा-परखा, वही आज हमारे सामने प्रकट किया है। विश्वास है इससे वसा ही संघ गौरव बना रहेगा और हम उसी प्रकार सीना फुलाकर चल सकेंगे। हमें आशा ही नहीं थी कि आप इतना शीघ्र पद सौंप देंगे। आपका निर्णय शिरोधाय है।

शासन प्रभाविका श्री पानकंवर जी म सा, श्री आदश प्रभा जी म सा, श्री ललित प्रभा जी म सा (नोखा वाले) ने भी अपने भाव प्रकट किए।

विदुषी, शासन प्रभाविका श्री भंवर कवर जी म सा एव श्री चैपकवर जी म सा ने भी हार्दिक वधाई दी।

आणाए धम्मो युवाचार्य विद्वद्वय शास्त्रज्ञ, मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा ने कहा कि "आणाए धम्मो" आज्ञा ही धम है। अत मैं पूज्य गुरुदेव की आज्ञा पालन करना अपना परम कर्तव्य मान रहा हू।

धम प्रेमी बन्धुओ! जब यह विषय मेरे सामने आया मैंने अपनी ओर से श्रद्धेय शा प्र संघ सरक्षक श्री इन्द्रचन्द जी म सा व अन्य मुनि भगवन्तों से बारम्बार इस उत्तरदायित्व से मुक्त रखाने का अनुरोध किया। किन्तु इस विषय में श्रद्धेय इन्द्रचन्द जी म सा व अन्य मुनि भगवन्तो ने सहयोग देने के बजाय पूज्य गुरुदेव की आज्ञा में धर्म की बात ही कही। मैंने पूज्य गुरुदेव से भी निवेदन, विनम्र निवेदन किया—"भगवन् मुक्त रखो इस उत्तरदायित्व के भार से।"

परन्तु आचार्य देव यही फरमाते रहे कि "देखो क्या होता है।" यह कार्यक्रम इतना शीघ्र होने वाला है इसकी रात तक भनक भी नही थी।

आज आप सब हर्ष मना रहे हैं किन्तु मेरी दशा तो मैं ही जानता हू। इस विराट् संघ के उत्तरदायित्व को संभालने में मैं स्वय को सक्षम अनुभव नही कर रहा हू। आचाय भगवन् का वरद् हस्त व आशीर्वाद ही वह शक्ति प्रदान करेगा जिसके द्वारा आचाय भगवन द्वारा सौंपा गया चतुर्विध संघ की सेवा का काय सम्पादित हो सकता है।

स्थविर प्रमुख मुनि भगवन्तों, अन्य साथी मुनिवरो व महासतिया जी म सा ने भी अपनी-अपनी भावनाए व्यक्त की है और मुझे बधाई दी है। यह बधाई की बात मैं समझ नहीं पा रहा हू। बधाई जहा खुशिया हो वहा दी जा सकती है इस रूप मे बधाई का पात्र तो चतुर्विध संघ हो सकता है।

मैं तो इस पसग से इतना ही कहना चाहूगा कि आचार्य भगवन् के आशीर्वाद व आप सभी के सक्रिय सहयोग से पूज्य गुरुदेव की भावना के अनुरूप मैं सेवा कार्य सम्पादित कर सकू। इसी भावना के साथ विराम।

युवाचार्य श्री के सारगर्भित प्रेरक उद्बोधन के पश्चात् सभा सचालक श्री सुशील जी बच्छावत ने पूज्य गुरुदेव को बधाई देते हुए कहा कि हे आचाय प्रवर! आपको श्री साधुमार्गी जैन बीकानेर श्रावक सघ एव श्री समता युवा सघ बीकानेर हार्दिक बधाई देते हैं। श्री बच्छावत ने यह बधाई अंग्रेजी मे बोलकर तथा इतने मुक्त भाव से दी कि आचाय प्रवर सहित सभी सभासद मधुर हास्य मे निमग्न हो गए। इतने मे श्री सुशील जी ने गभीर होकर भावमय मुद्रा मे सभा मे संगीत के मधुर बोल बिखेर दिये। चादर को लक्ष्य करके श्री बच्छावत ने कहा—

गुरु जवाहर, गणेश ने ओढ़ी, नानेश ने निर्मल कीनी
राम मुनि को ऐसी ओढ़ाई, दुनिया दग रह गई
चदरिया झीनी रे झीनी-मोरे राम
राम नाम रस भीनी, चदरिया झीनी रे झीनी

प्रमोद के इसी वातावरण मे बीकानेर सघ की ओर से श्री

भंवरलालजीकोठारी ने आचार्य श्रीजी के उज्ज्वल भविष्य की मगलकामना की । श्री दीपचन्द जी भूरा ने चादर प्रदान करने का मगल प्रसंग देश नोक सघ को देने की प्रार्थना की । श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ के मत्री श्री चम्पालाल जी डागा ने भी इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए युवाचाय घोषित करने के निर्णय का समर्थन और अनुमोदन करते हुए चादर प्रदान महोत्सव का लाभ देशनोक सघ को प्रदान करने का निवेदन किया । श्री डागा ने अपना लिखित वक्तव्य भी प्रस्तुत किया जो इसी अक में अन्यत्र प्रकाशित है ।

इस पावन प्रसग पर चर्चा के दौरान शासन प्रभावक, कर्मठ सेवाभावी, धायमातृ पदालंकृत श्री इन्द्रचन्द जी म सा ने कहा कि मैं अपने स्वास्थ्य के कारण से विहार नहीं कर पाता और वर्षों से मेरी आचार्य-प्रवर के दशन की तीव्र भावना थी । मैं बार-बार निवेदन कर रहा था और परम कृपालु गुरुदेव ने मेरी प्रार्थना पर ध्यान दे बीकानेर की ओर चरण बढ़ाए । मेरे मन में हर्ष छाने लगा किन्तु तभी नोखा मडी से आप श्री की अस्वस्थता के समाचार आए, हर्ष की जगह विषाद आने लगा किन्तु आप श्री की पुनवानी से मुझे पुनः दशन का सौभाग्य मिला । दीक्षाओं के प्रसंग से मेरी भावना अपने सभी भाइयों और बहिनों के दशन की थी । अत चतुर्विध सघ को सन्देश भेजे । साधु-साध्वी देश भर से चलकर बीकानेर में एकत्र हुए। परम आनन्द व्याप्त हो गया । साथ ही आज जैसा दुलभ सुयोग भी उपस्थित हुआ । इन सबके लिए मैं परम पूज्य गुरुदेव की कृपा का आभारी हूँ । गुरुदेव के शासन की जाहो ज्लाली नित्य प्रवधमान होगी, यह अटल विश्वास है । आज जो घोषणा हुई है, उससे सघ एकता और भी मजबूत होगी । यही आशा और कामना है ।

इसी आशा और कामना के अनुरूप आज दिन भर सेठिया धम स्थानक मे हर्ष व बधाई का वातावरण छाया रहा ।

दिनांक २-३ ९२ को प्रात प्रार्थना के तत्पश्चात् युवाचाय पद पर विद्वान्, तपस्वी मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा को आरूढ़ कराने की घोषणा के अवसर पर अपार हर्ष के साथ साधु साध्वी और संघ प्रमुखों तथा गुणायकों ने अपने विचार व्यक्त किए थे किन्तु सभी उपस्थित प्रमुखजन अपने विचार व्यक्त नहीं कर पाए थे,

अत दि ३-३-९२ को पुन श्रद्धाभिव्यक्ति का क्रम जारी रहा ।

श्री सेठिया धर्मस्थान में प्रात ९ बजे से ही चतुर्विध सघ के श्रद्धालु अपना-अपना स्थान ग्रहण करने लगे थे और संघ नायक जिन-शासन प्रद्योतक आचाय प्रवर के शुभागमन के साथ ही हर्ष की लहर सर्वत्र प्रसरित हो उठी । शुभ्रवसना, सत्वगुण प्रधाना महासतीवृन्द ने गुरुदेव के पधारने के साथ ही समवेत स्वरो मे व दना के निम्न बोल मुखरित किए—झिलमिल ज्योत्सना मे जो करते स्नान हैं—

महासती वृन्द के इन श्रद्धा-भक्ति पूण मधुर स्वरों मे शत-शत श्राविका कंठो ने सहभागी बन वातावरण को श्रद्धा और समर्पण के भावो से ओत-प्रोत कर दिया ।

महासती श्री अनुपमा श्री म सा ने भी अपने हृदयोदगारो को निम्न प्रकार प्रकट किया—

नाना दीपो को जलाने वाले हो, तुम जीवो को तराने वाले हो
वदामि, नमम स्वामी करती, तुम दु खो को मिटाने वाले हो
अभिनन्दन की ये मगल घडिया, ये मगल अपण
देख अनुपम छटा निराली, मैं मगल गीत गु जाती हू

तभी चार महासती जी ने सह गीत के माध्यम से निम्न प्रकार अपने भाव व्यक्त किए—

छाई रे छाई बीकानेर में हर्ष की लहर मनभावनी
पूज्य प्रवर की पावन प्रज्ञा, लहरी रे होकर प्रज्ञा
श्रीसघ की गोदी में एक लाल अनुपम भेंट किया
राम बना अभिराम आज ये तेज किरण मनभावनी

नवदीक्षिता महासती श्री कुमुद श्री म सा ने कहा—

श्रद्धा की तुच्छ भेंट ले, तेरे द्वार पर आई
कृपापात्र हो मान, मधुर मेहर की नजर कर देना

महासती जी ने आगे कहा कि भौतिक जगत मे देखने को मिलता है कि हम जिस वस्तु की अभिलाषा करते हैं, जब वह प्राप्त होती है तो खुशी कम हो जाती है पर अध्यात्म जगत मे विपरीत नजारा देखने का मिलता है । आचाय-प्रवर कोहिनूर हीरे के पारखी हैं । आप श्री की गहरी समझ से हम कृतकृत्य हुए हैं । आप श्री ने अपने उत्तरा-धिकारी के रूप मे मुनि प्रवर श्री राममुनि जी म सा की घोषणा

करके चतुर्विध संघ पर महती अनुकम्पा की है। आपकी ऐसी ही कृपा श्रीसंघ पर बनी रहे, इसी कामना के साथ मैं आचार्य प्रवर की घोषणा का हार्दिक अभिनन्दन करती हू।

मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा ने अपने जीवन को अलंकृत बनाया है। आपने निर्मल विचार, चारित्र और बुद्धि से अपने जीवन को समृद्ध बनाया है। मैं आप श्री का अभिनन्दन करती हू। इस महान् कार्य हेतु संघ संरक्षक श्री इन्द्रचन्दजी म सा के प्रति हम सब आभारी हैं। बीकानेर संघ सौभाग्यशाली है कि उसे ऐसा परम सौभाग्य सहज ही प्राप्त हुआ है।

महासती श्री विद्यावती जी म सा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि परम पूज्य आचार्य प्रवर की महान् पुण्यवानी के प्रतिफल आज श्रीसंघ के समक्ष प्रकट हो रहे हैं, हम सबको दिखाई दे रहे हैं। हमारा संघ एक सावयव की भांति है और आचार्य इस जीवित, प्राणवान सावयव के शीर्ष पर स्थित सिर हैं, दो हाथ संत-सती वर्ग और दो पैर श्रावक श्राविका वर्ग हैं। अरिहन्त केवलज्ञानी होते हैं पर आचार्य श्रुतज्ञानी होते हैं। हमें अपने आचार्य प्रवर पर गर्व है।

मैंने तो सन् १९८० में आचार्य श्री का 'नाना' नाम मात्र प्रार्थना के माध्यम से सुना था और दर्शन से जो अनन्त प्रेरणा मिली तो दर्शन के मात्र ३-४ माह पश्चात् ही श्रमणी दीक्षा के पथ पर आरूढ़ होने की भावना जाग उठी। दीक्षा के १० वर्ष पश्चात् भी शासन नायक की पावन सन्निधि में चौमासे का सौभाग्य प्राप्त न हो सका। महासती श्री केशरकंवर जी म सा अभी नोखा विराज रही हैं। उन्हें भी आपश्री के दर्शन १५ वर्ष के अन्तराल से गत दिनों नोखा में ही प्राप्त हुए पर सेवा का अवसर न मिल सका। वर्षावास में सेवा का अवसर प्रदान करने की कृपा करें। भावपूर्ण, भाव विह्वल स्वरों में महासती जी ने अर्ज की—

हो गुरुवर गुणधारी, मेरी अरजी सुन लेना
सदा दे पावस की, हमें पावन कर देना

नवदीक्षिता श्री स्थित प्रभाजी म सा ने अपने विचार रखे—

बहारों को सितारों को नजारों को नाज है तुझ पर
हवाओं को घटाओं को फिजाओं को नाज है तुझ पर

श्री शृ गार के वीर अमूल्य रत्न चुना है तूने
अमन को चमन को गगन को नाज है तुझ पर

धर्मप्रेमियो ! कल अरुणोदय की वेला मे हम यहा आए तो हर दिल खुशियो से झूम रहा था । साधुमार्ग की परम पवित्र परम्परा मे अन्तर को आनन्दित करने वाला यह प्रसंग हम सभी के समक्ष उपस्थित हुआ । गुरुदेव ने अपने सम्पूर्ण साधनाकाल मे और अपने संयमित जीवन की अतर्यात्रा में आज की घोषणा द्वारा एक विशिष्ट अवसर चतुर्विध सघ को प्रदान किया है । गुरुदेव ने एक अनुपम व्यक्तित्व हमारे सामने रखा है, जो हमारे जीवन को उन्नत करेंगे । देशनोक के भूरा परिवार मे जन्मे श्री राम मुनिजी म सा मेरे परिवार व ग्राम के हैं भ्रातागण के नाते भी मैं उनकी आभारी हू । भ्राता स्वरूप से मैं रक्षा बन्धन के माध्यम से दावानल रूपी ससार से पार कराने के लिए प्रबल सहयोग प्रदान करने की भी युवाचाय श्री जी से प्रार्थना करती हू ।

कायक्रम के कुशल सयोजक श्री सुशील बच्छावत ने भी गीत का एक पद प्रस्तुत किया—

राम गुण गाया है, मोटा पद पाया है
आप सहारा है, नाना गुरु प्यारा है
शृ गार के लाला हो, शासन प्रतिपाला हो
अष्टम पाट प्यारा है, नाना गुरु हमारा है

इसके बाद युवाचार्य श्री राम मुनिजी म सा की ससारपक्षीय बहिन श्रीमती कमला देवी साड ने भजन के माध्यम से अपने अन्तरहृदय के भाव प्रकट किए—नगरी-नगरी द्वारे द्वारे, महिमा है नानेश की
आज जगत मे खुशिया छाई, राममुनि महाराज की
होड लगी गुणगान की

श्री राममुनिजी म सा की ससारपक्षीय भतीजी वैराग्यवती सुश्री सुमन भूरा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कल जब आप श्री के युवाचार्य बनने का समाचार मिला तो ऐसे कुल मे जन्म लेने को मन मे महान् गौरव हुआ । अपार खुशी हुई ।

सौम्य भाव के दीपक, अपूर्व जगाए
अन्तरपथ के यात्री मुनिवर मन भाए

आज योग्य गुरु ने योग्य शिष्य को उत्तराधिकारी अभिव्यक्त किया है।

बीकानेर संघ के सहमंत्री श्री नयमलजी सिंगी ने कहा कि जिस संघ पर इन्द्र की कृपा हो, पारस, प्रेम, शांति हो, विजय, बलभद्र हो ज्ञान की गंगा बहे,वहां कोई कमी आ ही नहीं सकती। पेप, पान, केशर कस्तूरी, चन्दन की महक फैलती है, उस चतुर्विध संघ की बगिया का दायित्व आज गुरुदेव ने युवाचार्य श्री को सौंपा है। आप श्री सौंपे हुए दायित्व को निभावें, यही कामना हैं। गुरुदेव से निवेदन है कि चादर महोत्सव भी इसी चतुर्विध संघ के समक्ष बीकानेर में होना चाहिये।

श्रीमती कुसुम देवी सेठिया ने भी आचार्य प्रवर से विनती की आपश्री ने विलक्षण, विचक्षण शक्ति के बल पर संघ इतिहास मे एक महत्त्वपूर्ण कडी जोडी है, अब आपश्री चादर महोत्सव और पावस का अवसर भी बीकानेर संघ को प्रदान करने की कृपा करें।

उदासर श्रीसंघ ने भी विनती की कि चादर महोत्सव का आयोजन उदासर में करने की कृपा करें। आपश्री के आगमन की प्रतीक्षा मे 'गिणते गिणते घिस गई, म्हारी आंगलिया री रेख' अब आप उदासर पधारने की कृपा करें।

गंगाशहर-भीनासर संघ के अध्यक्ष श्री बालचन्द जी सेठिया ने गुरुदेव के प्रति आभार व्यक्त करते हुए विनती की कि चादर दिवस और वर्षावास का अवसर प्रदान करने की कृपा करें।

देश भर में हर्ष श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ के मंत्री श्री चम्पालाल जी डागा ने उपस्थित चतुर्विध संघ को सूचित किया कि आचार्य प्रवर की घोषणा का समाचार द्रुत गति से सारे देश में फल गया और देश भर से पुनः प्राप्त सन्देशो मे आपकी घोषणा को सहर्ष स्वीकार किया गया है। श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष श्री गवरलाल जी बैद और संघ प्रमुख श्री सोहनलाल जी सिपाणी, पूर्व अध्यक्ष श्री गुमानमल जी चोरड़िया सहित सभी संघ प्रमुखो से प्राप्त सन्देशों में आपश्री के निर्णय पर अतिप्रसन्नता व्यक्त की गई है।

अब चादर दिवस पर सभी लाभ लेने की भावना रखते हैं। आपश्री जहां चाहें, वहीं के लिए घोषणा करें, पर शीघ्र स्थान की घोषणा हो, यह सभी चाहते हैं। वैसे में गंगाशहर भीनासर चादर

दिवस करने का निवेदन भी आपश्री की सेवा में प्रस्तुत करना चाहता हू ।

इसके बाद मत्री श्री डागा जी ने अखिल भारतीय सघ की ओर से अपना प्रभावशाली लिखित वक्तव्य पढकर सुनाया । [श्री डागा जी का अविकल अभिकथन इसी अंक मे अन्यत्र प्रकाशित है ।]

गीत—इसी समय छत्तीसगढ़ की वैरागिन बहिनो ललिता, सगीता और सरिता ने भावविभोर कर देने वाला गीत गाया—"धर्म-ध्यान धारी हैं, युवाचार्य वर, गुरु कृपा की मधुर महर"

नींव का पत्थर—सफलता का शिखर—विद्वद्वर्य स्थविर प्रमुखमुनि श्री प्रेमचन्दजी म सा ने अपना पावन उद्बोधन व्यक्त करते हुए कहा कि मैं पूर्व वक्ताओ के द्वारा व्यक्त किये गये विचारो पर बहुत समय से चिंतन कर रहा हू । आचार्य प्रवर की घोषणा के सम्बन्ध मे प्रतिक्रिया स्वरूप अधिसंख्य जनो ने जो विचार व्यक्त किये हैं उनमे युवाचार्य श्री के अभिनन्दन और बधाई के भाव प्राथमिकता लिये हुए हैं । जबकि इस अवसर पर हमे व युवाचार्य श्री को अपने दायित्वों के प्रति विशेष चिंतनशील बनना चाहिये । वास्तव मे आचार्य प्रवर की इस घोषणा ने यह प्रमाणित कर दिखाया कि चतुर्विध सघ ने एक महान लक्ष्य की सिद्धि कर ली है । बात लगभग आज से ३० वर्ष पुरानी है जब उदयपुर मे स्व श्रीमद् गणेशाचार्य ने अपने उत्तराधिकारी युवाचार्य की घोषणा करके, वर्तमान आचार्य प्रवर के सशक्त कधो पर गुरुत्तर उत्तरदायित्व सौंपा था । तब की और आज की परिस्थितियो की जरा तुलना कीजिए । उस समय यह सम्प्रदाय एक उजडे हुए उद्यान की तरह था । श्रमण सघ के उपाचार्य पद का परित्याग कर स्व आचार्य प्रवर ने अति साहस के साथ एक विरोधी वातावरण को स्वीकार किया था । चारो ओर विरोध एवं निराशा के स्वर मुखरित थे । वैचारिक अधिष्ठान पर शुद्धाचार के प्रति अचल अविचल श्रद्धाधारी स्व श्रीमद् गणेशाचार्य के उत्तराधिकारी आचार्य श्री नानेश को प्रतिप्रतिकूल परिस्थितियां उपहार स्वरूप वसीयत मे मिली थी पाच सात वृद्ध सन्त, दो गुरु भाई तथा अत्यल्प सति वृन्द ! लोग कहा करते थे कि इने गिने ढाई सन्त से ये नानालालजी क्या जिन शासन की प्रभावना करेंगे ।

वस्तुत इस स्थिति को शून्यवत् कहा जाय तो भी कोई अतिशयोक्ति नही होगी इस स्थिति का लाभ उठाने के लिए मालव, मेवाड में अनेक अराजक तत्त्व सक्रिय हुए। हर हालत मे क्रांति के इस बीज को अकुरित, पल्लवित पुष्पित और फलीभूत न होने दिया जाय, इस प्रकार के दूषित सकल्पो की अज्ञान-अधकार मयी घोर तमिस्रा को चीरकर आचार्य श्री नानेश ने अपने बचपन मे "गोवर्द्धन" नाम को सार्थक कर दिखाया। जैसे—कर्मयोगी श्री कृष्ण को समुद्र विजय ने समुद्र के किनारे निज वन मे राज्य उत्तराधिकार समर्पित किय थे। जहा कोई गाव नगर महल या झोंपड़िया रथ और हाथी घोड़े नहीं थे। यहा तक कि श्री कृष्ण को पहनाने के लिए रत्न जटित स्वर्ण मुकुट भी उपलब्ध नही था ऐसी स्थिति मे यदुवशियो ने उस निर्जन वन से मोर के पखों को एकत्रित कर उन पंखो से निर्मित मुकुट पहनाकर राज्याभिषेक किया अर्थात् श्री कृष्ण ने जो कुछ प्राप्त किया वह अपने पराक्रम से अर्जित था।

इसी प्रकार वर्तमान युगीन-गोवर्द्धन श्री कृष्ण आचार्य श्री नानेश ने जो कुछ भी अर्जित किया है वह अपने बल पराक्रम से। आचार्य श्री नानेश ने उजडे हुए इस उद्यान को एक सरसब्ज बाग चमन नन्दनवन के रूप मे रूपान्तरित कर अपनी अद्वितीय क्षमता का परिचय दिया है। अपने स्व गुरु श्रीमद् गणेशाचार्य से जो शात क्राति की मशाल आपको वसीयत स्वरूप प्राप्त हुई थी उसे सुदूरवर्ती ग्राम नगरो मे फैलाकर जन भ्रातियो का निराकरण करते हुए जिनेश्वर देवो के शाश्वत साधुता के मूल्यो को सुप्रतिष्ठित किया और समता का सुपथ दिखाया है।

मुझे स्मरण है कि जब मैं वैरागी था तब सघ निर्माण में श्रावक श्राविका वर्ग की भी एक उल्लेखनीय भूमिका रही। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के प्रति श्रावक श्राविका वर्ग का अत्यधिक समर्पण भाव रहा है मुझे स्मरण है कि श्री सुन्दरलालजी तातेड उड़ीसा से प्रवास में टाट गाव आये थे। उस समय की इनकी धर्मशीलता कर्मठता और विराटता का विचार करता हू तो मुझे लगता कि वे अपने आप में विरल थी। इन सब के माध्यम से भी एक गौरवशाली इतिहास का सृजन हुआ जिसे भुलाया नहीं जा सकता।

जब आचार्य श्री नानेश नये नये ही आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए थे तब लोग यह कहते थे कि "वर्तमान आचार्य श्री मे तीन आचार्यों की झलक दिखाई देती है।" स्व जिन शासक प्रभावक आचार्य श्री श्रीलालजी म सा जैसी सयम निष्ठा, ज्योतिधर युगदृष्टा आचार्य श्री जवाहरलालजी म सा जैसी प्रखर प्रभावकता और स्व श्रीमद् गणेशाचार्य जैसी–क्रांति शुद्धाचार प्रियता। जन समूह इन रूपा मे आचार्य श्री नानेश के दर्शन कर अपने आपको कृतार्थता एव धन्य-शीलता का अनुभव कर रहा था। इस जन जीवन की धारणा से आगे बढ़कर आचार्य श्री समता दर्शन का सृजन कर समता विभूति के रूप मे प्रसिद्ध हुए। और आपने अपनी क्षमता को प्रयोगात्मक रूप देते हुए मालव प्रान्त मे दुर्व्यसन मुक्ति अभियान के अन्तर्गत अछूतोद्धार के कार्य को हाथो मे लिया। हजारो हजार (बलाई परिवारो को) अनुसूचित जन जाति के लोगो को धर्मपाल सज्ञा प्रदान कर धर्मपाल प्रतिबोधक का विरुद प्राप्त किया। तत् पश्चात् शताधिक दीक्षाए प्रदान कर जिन शासन प्रद्योतक के रूप मे प्रख्यात हुए। फिर मानसिक तनाव ग्रस्त जन समूह पर करूणा से आप्लावित हो समीक्षण ध्यान की अनुभूत प्रक्रिया का विधिवत् सूत्रपात कर "समीक्षण ध्यान योगी" का एक सु दर आकार गहण किया है।

वर्तमान आचार्य श्री नानेश मे पूज्य श्री श्रीलालजी म सा जैसा ध्रुव निश्चय जवाहराचार्य जैसी सृजन भावना और स्व श्रीमद् गणेशाचार्य जैसी सजगता का अद्भुत सयोग है। मैं स्मरण कर रहा हू कि आचार्य श्री नानेश सर्वप्रथम जब मालव प्रान्त में विचरण कर रहे थे तब इन्हे विघ्न संतोषी लोग रतलाम–मालव मे आना ही भुला देना चाहते थे, कहते थे कि—नानालालजी के साथ ऐसा षड्यन्त्र करना कि वे रतलाम या मालव मे आना ही भूल जाय। कितनी अप्रतिम थी इन आचार्य श्री की सहिष्णुता, सयम निष्ठा और अविचल धैर्य शीलता, आप कल्पना कीजिये कि इस प्रकार के उजडे उद्यान को सर-सब्ज बनाने में आचार्य श्री को कितना परिश्रम करना पडा होगा ?

आज आचार्य श्री नानेश ने अपने उत्तराधिकारी के रूप मे युवाचार्य श्री रामलालजी म सा को अपने अथक श्रम सिंचित एक रमणीय नन्दनवन तुल्य सरसब्ज बाग सौपा है, जिसमें अनेक प्रतिभा

सम्पन्न, सेवा समर्पित, घोर तपस्वी विविध गुणालंकृत विद्वान, कवि, लेखक, समीक्षक एवं प्रखर वक्ताओ के रूप मे श्रमण श्रमणियों का एक विशाल समुदाय नाना प्रकार के पुष्पो और फलो के रूप में अपनी सयम सुरभि विकीर्ण करते हुए जिन शासन की प्रभावना में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है। ऐसा सुरम्य नन्दनवन सा उद्यान हमारे युवाचाय श्री को पूज्य आचाय भगवन् से विरासत में मिला है जिसे और अधिक सिंचन देकर विकसित करना युवाचाय श्री की अपनी प्रतिभा पर निभर करता है—

इस सम्प्रदाय में जब जब भी युवाचार्य चयन के प्रसग निर्मित हुए तब तब इस सघ को विघटन एव संघर्षों का सामना करना पड़ा है निर्माण के पूर्व कुछ खोना इस सघ की अब तक की नियति रही है। किन्तु आचाय श्री नानेश ने इस विघटन बिखराव की स्थिति को जरा भी हवा नहीं दी, बल्कि सारे सघ को एक सूत्र में आबद्ध कर स्थविर प्रमुखो का सुरक्षा कवच बनाकर सघ के लिए समुज्ज्वल भविष्य की ओर आगे बढ़ते रहने का माग प्रशस्थ किया है। यह आचाय श्री नानेश की दूरगामी निर्णायक क्षमता एव विलक्षणता का उपहार युवाचाय श्री को अभूतपूव वसीयत है।

हमारे युवाचार्य श्री भाग्यशाली हैं, जिन्हे आचाय श्री नानेश जैसे अनुभवी शिल्पी के द्वारा निर्मित अनेक सजीव प्रतिमाए जिन शासन की जाहोजलालो के लिए उपलब्ध है। अब आवश्यकता है कि युवाचाय श्री इन सभी प्रतिमाओं को उचित रंग दे, समुचित मनमन्दिर में प्रतिष्ठित करने की नियोजकता सिद्ध कर दिखलाए।

साधुमाग परम्परा के प्रवर्तन एवं विकास में आचाय श्री हुक्मीचन्दजी म सा से लेकर आज तक युवाचार्य घोषणा की बड़ी महत्त्वपूण भूमिका रही है। युवाचाय अपने व्यक्तित्व से संघ की नींव का पत्थर बनता है तथा यही आगे चलकर अपने कृतित्व से शिखर कलश का स्थान ग्रहण करता है।

चित्तौड में हमारे युवाचार्य श्री को अधिकार प्रदान कर मुनि प्रवर के रूप में प्रस्तुत किया गया था यह था—युवाचाय का गर्भाधान, इसके पश्चात् कल (२ मार्च १९९२) युवाचार्य पद की घोषणा कर इन्हें जन्म दे दिया है अब युवाचाय की चादर ओढ़ाकर

सूरज पूजा का रूप देना बाकी है। बीकानेर सघ का जो आग्रह है वह आपके अपने गौरव के अनुरूप है। आपका आग्रह आग्रह ही रहे, आत्याग्रह न बने। आचार्य श्री की अन्तरात्मा की साक्षी से जो कुछ भी हो वह हम सबके हित मे होगा।

ढेर सारे दायित्वो के निर्वाह का गुरुत्तर बोझ युवाचार्य श्री पर डालते हुए मैं जिन शासन देव से एवं आचाय भगवन् से निवेदन करूगा कि वे हमारे युवाचार्य श्री को आशीर्वाद के रूप मे वह शक्ति प्रदान करें जिससे हमारे युवाचार्य आपश्री जी की तरह आत्मीय स्नेह सद्भाव एव विश्वास-अर्जित करते हुए मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से इस चतुर्विध सघ का कुशलता पूर्वक सचालन और संवर्द्धन करते रहे। इन अर्थो मे युवाचाय श्री के प्रति ढेर सारी बधाईया एव अभिनन्दन समर्पित करता हू।

गोद मे बालक—घोषित युवाचाय श्री राममुनिजी म सा ने कहा कि कल जब आचार्य-प्रवर ने मुझे यह दायित्व देने का सकेत किया तो सहसा मैं स्वय को एक गुरुत्तर उत्तरदायित्व के भार तले दबता अनुभव कर रहा था पर जब गुरुदेव ने कहा कि चतुर्विध सघ की गोदी मे मैं यह बालक सौंप रहा हू तो सारा भार हल्का हो गया। गोदी के बालक को कभी किसी बात की चिन्ता होती ही नहीं। गुरुदेव द्वारा व्यक्त भावनाओ से मुझे बहुत आधार एव अवलबन मिला। यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है।

परमपूज्य गुरुदेव के दांत मे दर्द था जो कल निकाला गया है, अत बोलने का प्रसग आज नहीं बन पाया। मगल पाथेय नहीं मिला उनका दर्शन ही मगलमय है। सभी समता रस का पान करें। अध्यात्मिक उत्क्रांति हेतु कटिबद्ध हो और उसे आगे बढावें।

आज नोखा से पारख परिवार शोक निवारण हेतु सघ लेकर आया है। नश्वर काया के प्रति व्यामोह न रखते हुए आध्यात्मिक तत्व को समझना चाहिये। यह ससार धर्मशाला है, यहा आवागमन चलता रहता है। अत हमे अपने चैतन्य आत्मा और सम्यक् दृष्टि भाव के प्रति सजग रहना चाहिये।

इसके पश्चात् मगलपाठ पूवक आज का पुण्य प्रसंग सोत्साह सुसम्पन्न हुआ।

मरु भूमि, सारस्वत नगरी, भारत के सीमा प्रहरी ऐतिहासिक बीकानेर नगरी के भव्य-दुर्ग जूनागढ के राजप्रासादो में गौरव मंडित चादर प्रदान समारोह

(समता विभूति आचार्य श्री नानेश द्वारा तरुण तपस्वी, मुनिप्रवर श्री रामलालजी म सा को युवाचार्य की चादर प्रदान)

जूनागढ़, बीकानेर दिनांक ७-३ ९२ थार की मरु भूमि बीकानेर, मानव सभ्यता के उषा काल की साक्षी सारस्वत सभ्यता के हृदयस्थल बीकानेर, शौर्य, त्याग बलिदान और विद्या की अनन्त आराधना का केन्द्र बीकानेर आज हर्ष से पुलकित है। आज कच्छ के रण से थार पारकर और सिंधु तीर के समृद्ध नगरो तक वणिज करने के लिए अनथक, अनवरत प्रवासी यात्री दलो के, सार्थवाहो के विद्या और व्यापार नगर बीकानेर का युगयुगीन इतिहास देश के कोने-कोने से बीकानेर की ओर उमड रहे श्रेष्ठी दलों के स्पर्श की पुलक और स्पन्दन से युक्त होकर हर्षित हो रहा था।

प्रभु महावीर के दया धर्म का कर्म क्षेत्र बीकानेर का विस्तीर्ण भूभाग जो आज भी पल्लू की विश्व विश्रुत जैन सरस्वती समृद्ध है और जहा आज भी जैन धर्म के त्रिरत्नों की अभग आराधना प्रगत है, आज अरिहंत प्रभु के शासन के ८१ वें पट्टधर की समतामयी अमियवाणी से भावी ८२ वें पट्टधर की घोषणा और चादर प्रदान के पावन समारोह का साक्षी बनने हेतु समुत्सुक है। जिस बीकानेर को स्मरणातीत काल से जैन सन्तो के, आचार्यों के पावन उपदेशों का अमृत निर्झर सदा सुलभ रहा और जहा सन्तों और सुश्रावकों की ज्ञान आराधना का अमृत कलश ग्रंथालयो में प्राप्त दुर्लभ ग्रंथ म आज भी जन जीवन को मधुस्नान कराने, अवगाहन करने और अनुशीलन करने पर जीवन के शाश्वत सत्या का साक्षात् कराने हेतु सुरक्षित है, उस बीकानेर की भूमि का कण-कण, उस भूमि के बाह्य और अन्त सलिला जल प्रवाहो का बिन्दु बिन्दु आज सहस्त्रो नेत्रों से एक नवयुग के सूर्य का दर्शन कर प्रत्यक्ष द्रष्टा बनने के क्षण की अधीर प्रतीक्षा में था।

जिस बीकानेर क्षेत्र के आचार समृद्ध श्रेष्ठियो ने अपनी अपराजेय जीवन शैली से राष्ट्रीय समृद्धि की अभिवृद्धि मे मौन-मूक और समर्पित योगदान दिया और सार्वजनिक हित के प्रत्येक कार्य में उदात्त अर्थ प्रदान हेतु अग्रणी रहकर जिन्होंने नगर-श्रेष्ठ आदि अन्तर हृदय से उद्‌भूत विरुदों को सार्थक किया और प्रदेशो मे अपने अप्रतिम कौशल से तथा सत्य निष्ठ व्यवहार की अडिग आस्था से धनोपार्जन के कीर्तिमानों की स्थापना कर अनन्त यश अर्जित किया, वे श्रेष्ठि आज पलक-पावडे बिछाए सम्पूर्ण भारत से आने वाले अपने स्वधर्मी बान्धवो, श्रेष्ठियो के स्वागत हेतु अपने धन को पानी की तरह बहाकर, स्वय विनीत भाव से करबद्ध सेवा में उपस्थित रहकर बीकानेर की अतिथि सेवी परम्पराओ मे आज एक नया स्वर्णिम अध्याय जोडने को सकल्पबद्ध व तत्पर हैं।

बीकानेर की सहिष्णु प्रकृति और सर्वधर्म समभाव की गौरवमयी परम्परा को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए, आज के ऐतिहासिक क्षण को अपना समर्थन प्रदान करने के लिए और आज के युवाचार्य अभिषेक समारोह के प्रति अपनी सात्विक श्रद्धा को अभिव्यक्त करने आज यहां का आबाल वृद्ध नागरिक वर्ग, सभी धर्मो का प्रतिनिधिवर्ग चादर दिवस समारोह मे उपस्थित होने को मचल रहा था।

ऐसे अपार हर्ष, अमित प्रमोद और अनन्त उत्साह के वातावरण में बीकानेर के कोने-कोने से जनमेदिनी बीकानेर के ऐतिहासिक दुर्ग जूनागढ के विशाल द्वारों से होकर समारोह स्थल पर प्रात ७ बजे से ही एकत्र होने लगी थी। बीकानेर के परम पराक्रमी और महान् विद्वान छठे महाराजा रायसिहजी द्वारा निर्मित जूनागढ अपने निर्माण से लेकर अद्यावधि अपराजेय रहा। ऐसी शुभ घडी, शुभ सकल्प और शुभ भावना के साथ इस गढ की नीव रखी गई कि यह सदैव वीरों-शूरों का आदरकर्ता और विद्वानो-गुणीजनो का आश्रयदाता बन कर गर्वोन्नत मस्तक से कालप्रवाह का द्रष्टा बना रहा और इसी के प्रांगण में आज समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी, जिन शासन प्रद्योतक, चारित्र चूडामणि, बाल ब्रह्मचारी आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा अपने उत्तराधिकारी को चादर प्रदान करके गौरवशाली इतिहास की साक्षी

मे भावी इतिहास की गरिमामय रचना का आधार-सूत्र स्थापित करते जा रहे हैं ।

भारतीय संस्कृति और संस्कृत के अनुपम रक्षक और संवर्धक महाराजा अनूपसिंह और लोकहित मे असभव को सभव कर दिखाने वाले प्रजावत्सल महाराजा श्री गगासिहजी की राजधानी बीकानेर के जूनागढ में आज आध्यात्मिक उत्तराधिकार सौंपने की महान् अभिक्रिया से इस धरती के इतिहास मे एक सुवासित पृष्ठ जुडने जा रहा था और इसलिए मानो समारोह स्थल के तीन तरफ स्थित राजप्रासादों के कलात्मक गवाक्षो से एक युगबोध झाक-झाककर देख रहा और हर्षित हो रहा है ।

महाराजा रायसिहजी द्वारा निर्मित इस गढ़ मे बीकानेर राज परिवार की ओर से स्वय श्री हणुवन्तसिहजी राठौड न्यासी, महाराजा रायसिहजी ट्रस्ट, आगन्तुको के स्वागत मे उपस्थित हैं और उनके दिशा निर्देश मे राजपरिवार से सबद्ध जन समारोह की व्यवस्थाओं में सहकार कर रहे हैं ।

श्री साधुमार्गी जैन बीकानेर श्रावक सघ, बीकानेर श्री समता युवा सघ बीकानेर और श्री साधुमार्गी जैन महिला समिति के कार्यकर्त्ता समारोह की सुव्यवस्थाओ हेतु प्राण-पण से समर्पित होकर कार्य कर रहे हैं । श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ के प्रमुख पदाधिकारी भी सेवा और व्यवस्था कार्यों में उत्फुल्ल मन से जुटे हुए हैं ।

इस प्रकार सर्वविध सहयोग और प्रसन्नता के क्षणो के बीच चादर प्रदान समारोह का मुहूर्त निकट आने लगा । ज्यों-ज्यो भगवान भुवन भास्कर क्षितिज से ऊपर अनन्त आकाश की ऊचाइयो को स्पर्श करते लगे, त्यो-त्यो दल के दल श्रद्धालु स्त्री पुरुष कार्यक्रम स्थल की ओर तेजी से बढ़ने लगे और जिस प्रकार दशो दिशाओं से उमड-उमड़ कर बहता हुआ जल प्रवाह सागर की गोद मे समाहित हो जाता है, वैसे ही सभी ओर से जन-जन जूनागढ़ की विशाल प्राचीरो में समाहित होकर प्रथमत तिरोहित और फिर समारोह स्थल पर प्रकट होने लगा ।

राजप्रासादों की त्रिवेणी के बीच विस्तीर्ण मैदान पर यह आयोजन किया गया था । तीन ओर भव्य महलो की शीतल छाया

तथा चौथी ओर अक्षय जल भडारो के बीच स्थित इस आयताकार मैदान का महान् पुण्योग आज उदित हुआ कि इसके भीतर समाजाने के लिए आज लघुभारत उत्सुक हो रहा है ।

जूनागढ के महलो मे स्वयं शासन नायक आचार्य श्री नानेश और उनके आज्ञानुवर्त्ती शिष्य वृन्द दिनाक ७ ३-९२ को प्रात ही पधारे थे और वे अपनी दैनिक चर्या मे व्यस्त थे । दूसरी ओर नगर के विभिन्न स्थानो से श्वेत परिधानो से आवृत्त साधु-साध्वियो के समूह समारोह स्थल पर पहुच रहे थे । आचार्य श्री नानेश और उनके आज्ञानुवर्त्ती साधु-साध्वी वृन्द हेतु नीले आकाश के तले ही विराजमान होने की व्यवस्था थी किन्तु श्रावक-श्राविका और अतिथि वर्ग हेतु भव्य और विस्तीर्ण वितान ताना गया और बठने की उत्तम व्यवस्था की गयी । इस प्रकार धीरे-धीरे चतुर्विध सघ जूनागढ मे आ जुटा और धार्मिक क्रिया कलाप प्रारम्भ हुए ।

सर्वप्रथम स्थविर प्रमुख, विद्वद्वर्य श्री शातिमुनिजी म सा ने नदी सूत्र शास्त्र वाचन किया, जिसे हजारो की जनमेदिनी न श्रद्धावनत होकर श्रवण कर स्वयं को पवित्र किया । सुदीर्घ शास्त्रवाचन का क्रम चल ही रहा था कि शासन नायक आचार्य श्री नानेश राजप्रासाद की सीढ़ियो पर दिखाई दिए और वातावरण 'प्रभु महावीर की जय' तथा 'जय गुरु नाना' के जयघोषो से गूज उठा ।

धीर-गभीर कदमो से आचार्य प्रवर पधारे और उन्होने एक ऊंचे पट्ट पर आसन ग्रहण किया । उनके दोनो ओर पाचो स्थविर प्रमुख—श्री शातिमुनिजी म सा, श्री प्रेममुनिजी म सा, श्री पारसमुनिजी म सा श्री विजयमुनिजी म सा एव श्री ज्ञानमुनिजी म सा अपने तप और साधना के तेज से प्रदीप्त विराजमान थे । इन पाचो स्थविर प्रमुखों के पास ही शासन प्रभावक मुनिप्रवर श्री धर्मेशमुनिजी म सा. घोर तपस्वी श्री अमरमुनिजी म सा विराजमान थे और इसके बाद गुरुदेव के वाम पार्श्व मे प्रसन्नमन साधुवृन्द विराजमान थे । आचार्य श्री जी के दक्षिण पार्श्व के विस्तीर्ण भूभाग मे शासन प्रभाविका, परम विदुषी, तपस्विनी, तरुण तपस्विनी और नवदीक्षिता सती मडल का विशाल समूह विराजमान था ।

जिन शासन प्रद्योतक आचार्य श्री नानेश के श्री चरणो मे वाम भाग

की ओर युवाचार्य मुनिप्रवर श्री रामलालजी म सा स्थिरचित्त, सौम मुखाकृति और शासन के प्रति अनन्य समपण के उदात्त सकल्पों परिपूर्ण विराजमान थे।

आचार्य श्री नानेश की यह विपुल सम्पत्ति, यह ज्ञान राशि दर्शन राशि, चारित्र राशि सत-सती वग की महान् सम्पदा जन-जन के मन मे अनन्त श्रद्धा का उत्कर्ष कर रही थी। ऐसे सात्विक वातावरण मे भव्य पृष्ठ भूमि मे चतुर्विध सघ धम श्रद्धा से ओत प्रोत विराजमान था और समवसरण सा दृश्य दिखाई दे रहा था।

परम पूज्य गुरुदेव के शुभागमन से थोडा सा पहले बीकानेर रियासत के महाराजा श्री नरेन्द्रसिहजी अपने कुल पुरोहित पं श्री शिव रतनजी श्रीमाली के साथ समारोह स्थल पर पधारे। महाराजा साहब की युवाचार्य समारोह समिति के संयोजक और बीकानेर नगर विकास न्यास के अध्यक्ष श्री भवरलालजी कोठारी ने अगवानी की और श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष श्री भवरलालजी बद पूर्व अध्यक्ष श्री दीपचन्दजी भूरा, सघमंत्री श्री चम्पालालजी डागा आदि प्रमुखो ने आत्मीय स्वागत किया और उन्हें गुरुदेव के सम्मुख विशेष आसन पर आसीन कराया। बीकानेर सघ के सहमंत्री श्री नथमलजी सिगी ने महाराजा साहब के प्रशस्त वक्षस्थल पर विशेष अतिथि का बैज लगाया।

स्थविर प्रमुख पडितरत्न श्री शातिमुनिजी के शास्त्रवाचन के साथ ही युवाचार्य चादर प्रदान की आगमसम्मत विधि प्रारंभ हो चुकी थी और जैसे ही विद्वद्वय मुनि श्री ने शास्त्र वाचन पूर्ण किया परम पूज्य गुरुदेव ने उपस्थित चतुर्विध सघ का सिंहावलोकन किया, जिसे दख जन समूह हर्ष पूर्वक जय जयकारो से गगन गु जाने लगा। महासती वृन्द ने सस्वर सहगीत गाकर वातावरण को आध्यात्मिक रस से अभिषिक्त कर दिया।

इसी समय समारोह के कुशल मच सचालक श्री सुशीलकुमार बच्छावत ने "जुग जुग जीओ ऐ नाना, चादर महोत्सव आया, जन जन में हर्ष छाया" गीत के मुखडे को गाया और फिर प्रथम वक्ता के रूप में श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ के पूव मंत्री तथा चादर

महोत्सव समिति के सयोजक सुश्रावक, धर्मानुरागी, श्री भवरलालजी कोठारी को अपने विचार प्रस्तुत करने को आमन्त्रित किया।

अपूर्व समागम—श्री भवरलालजी कोठारी ने कहा कि समीक्षण ध्यान योगी परमपूज्य आचार्य प्रवर की महान् कृपा से आज बीकानेर सघ को इस महोत्सव के आयोजन का महान् सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैं स्वय की तथा बीकानेर सघ की ओर से आचार्य प्रवर के चरणो मे वन्दना निवेदन करते हुए इस उपकार के लिए अनन्त आभार व्यक्त करता हू। साथ ही अत्र विराजित समस्त संत सती वग के चरणो मे भी वन्दना निवेदन करता हू।

आज का दिवस स्वर्णिम दिवस है। जिस ऐतिहासिक प्रागण मे युग-युग से बीकानेर की जनता अपने युवराज का राजतिलक देखती आई है, उसी गरिमामडित प्रागण मे बीकानेर तथा भारत के प्रायः सभी भागो से पधारे हुए धर्म श्रद्धालुओ की यह विशाल जनमेदिनी धर्माचाय द्वारा युवाचार्य का तिलक देख रही है और अपार हप मे मगन हो रही है। आज से ३० वप पूर्व उदयपुर के राजमहल मे तत्कालीन महाराणा सा श्री भगवतसिहजी की साक्षी मे गुरुणा गुरु श्री गणेशाचार्यजी ने आज के हमारे आचाय श्री नानालालजी म सा को युवाचाय पद की चादर प्रदान की थी और आज बीकानेर महाराजा श्री नरेन्द्रसिहजी की उपस्थिति मे, साक्षी में आचाय श्री नानेश अपनी पाट परम्परा का निर्वाह करते हुए युवाचार्य श्री राममुनिजी म सा को चादर प्रदान करेंगे। कैसा साम्य है!

बीकानेर के तथा सभी समागत धर्मानुरागी आज धन्य हैं। कृतकृत्य हैं इस पावन अवसर पर पधारे समस्त धम श्रद्धालुओ का मैं स्वयं अपनी ओर से बीकानेर सघ की ओर से तथा बीकानेर के नागरिको की ओर से हार्दिक स्वागत करता हू, अभिनन्दन करता हू।

बीकानेर की राजमाताजी महान् धार्मिक एव सेवाभावी हैं। उन्होने अपनी श्रद्धापूर्ण वदना और अभिनन्दन आपश्री की सेवा मे अर्ज की है।

आज यहा आचार्य श्री जी की सन्निधि मे शताधिक सत-सती वृन्द की उपस्थिति मे चादर महोत्सव आयोजित हो रहा है। यह एक अपूर्व समागम है और विरल अवसर है। इस सुअवसर पर

में युवाचार्य शास्त्रज्ञ मुनिप्रवर, तरुण तपस्वी, विद्वान श्री रामलालजी म सा का भी अभिनन्दन और वन्दन करता हू।

गौरव दिवस–बीकानेर के महाराजा श्री नरेन्द्रसिंहजी ने अपने भावपूर्ण अभिभाषण में कहा कि—परम पूज्य जैन आचार्य श्री श्री १००८ श्री नानालालजी म सा, युवाचार्य श्री रामलालजी म सा, सत अ'र सतियाजी म सा,, बीकानेर रा सगला भाई बहिन अर दूर दूर दिशा थरां सू पधारयोडा भाइयो और बहिनो।

आज म्हारै वास्तै बोत सौभाग रो दिन है'क परम पूज्य आचार्य श्री नानालालजी म सा रै दरसण रो लाभ मिल्यो और इयै ऐतिहासिक दुग में आपरो शुभागमन हुयो। मैं इयै जूनागढ़ म आपरो हार्दिक स्वागत, वन्दन अर अभिनन्दन करू।

मैं जूनागढ़ मे उपस्थित इण ऐतिहासिक मौकै मायै पु म्हारी तरफ सू म्हारी मातुश्री री तरफ सू, राज परिवार री तरफ सू अ'र बीकानेर री जनता री तरफ सू पवित्र और हार्दिक शुभ भावनावा अर्पित करू। चादर महोत्सव रै इण मगलमय आयोजन सू समाज अर राष्ट्र मानवीय मूल्या—अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय अर सयम री प्रेरणा लेवेला, इसो म्हारो विश्वास है। मैं एक'र फेर आप सबरो बीकानेर री जनता री तरफ सू हार्दिक स्वागत करू अ'र पधारणै वास्तै धन्यवाद देऊ।

महाराजा साहब रा इया मीठा मिसरी सा बचना सू अ'र थारी भक्ति भावना सू उपस्थित चतुर्विध सघ नै अपार हरख हुयो।

इसके बाद संयोजक श्री सुशीलबच्छावत के अनुरोध पर श्री अ भा साधुमार्गी जन सघ के मंत्री श्री चम्पालालजी डागा ने अपने भाव व्यक्त किए तथा स्वय की एवं श्री अ भा साधुमार्गी जन सघ की ओर से गुरुदेव के निर्णय का हार्दिक अनुमोदन तथा स्वागत किया। श्री डागाजी ने भावपूर्ण स्वरो मे चतुर्विध सघ के प्रति भी अपनी हार्दिक श्रद्धाव्यक्त करते हुए शासन के उज्ज्वल भविष्य के प्रति अपनी आस्था को दुहराया।

[श्री डागा जी का अविकल भाषण इसी अक में अन्यत्र]

रचनात्मक प्रेरणा—इसके बाद श्री समता युवा सघ के अध्यक्ष श्री उमरावसिंह जी ओस्तवाल बम्बई ने गुरुदेव के चरणो मे वन्दना-पूर्वक अपने विचार रखे। श्री ओस्तवाल ने कहा कि गुरुदेव के कानोड चौमासे मे जब मैं अपने युवा मित्रो की मनभावन टोली के साथ मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा के दर्शन करने गया तो आपश्री ने कहा कि नेतागिरी छोडो और रचनात्मक कार्य करो। इसी से प्रेरणा लेकर हमने श्री समता युवा सघ के माध्यम से स्वधर्मी सहयोग की योजना प्रारम्भ की औरयुवको को स्वावलबी बनाने मे सतोषजनक सफलता मिली। इसका सारा श्रेय श्री राम मुनिजी म सा को है। अब आपश्री युवाचार्य बने हैं, हमे विश्वास है कि आप सघ को रचनात्मक मार्गदर्शन देंगे। श्री समता युवा सघ आपका अभिनन्दन करता है।

एकता का सुनहरा इतिहास—श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के पूर्व अध्यक्ष श्री गुमानमल जी चोरडिया ने अपने प्रभावी, ओजपूर्ण, मधुर अभिभाषण से समस्त उपस्थित जनो का मन मोह लिया। सघ प्रमुखो की विचाराभिव्यक्ति के क्रम को आगे बढाते हुए श्री चोरडिया जी ने आचार्य देव को सम्बोधित करते हुए शास्त्रीय मर्यादाओ का परिपालन करते हुए निवेदन किया जिन नही पर जिन सरीखे आचार्य-प्रवर के श्रीचरणो मे वन्दन करता हू। आपश्री जब युवाचार्य बने थे तो साधु संस्था के रूप मे आपको उत्तराधिकार मे एक उजडा उपवन मिला था, जिसे आप आज एक खिली, सुरभित बगिया, दिग्दिगन्त मे समादृत उपवन उत्तराधिकार के रूप मे निर्मित करके सौंप रहे हैं। यह आचार्य श्रीजी का अतिशय है, जिससे युवाचार्य घोषणा की महत्तम आज्ञा सर्वशिरोधार्य हुई है। आज का यह निर्णय, आज का यह समारोह आज का यह दिवस आपश्री के अचल सकल्प से पत्थर की लकीर बना है और आपश्री के अतिशय से आज साधुमार्गी सघ मे, जिनशासन मे एकता का इतिहास सुनहरे पृष्ठ पर लिखा जा रहा है। दशरथ के राम की भाति आज आध्यात्मिक उत्तराधिकारी आचार्य श्री नानेश के राम युग युग तक छाए रहे, यही मगल भावना है।

अद्वितीय निर्णय—सघ के पूर्व अध्यक्ष श्री गणपतराजजी बोहरा ने कहा कि युवाचार्य की घोषणा आचार्य प्रवर का एक अद्वितीय निर्णय

है । मैं इस निर्णय का और आचार्य प्रवर का अभिनन्दन करता हूं तथा सकल संघ की ओर से निर्णय के पालन का विश्वास दिलाता हूं।

श्री बोहरा जी ने कहा कि आचार्य प्रवर मे व्यक्ति पहिचान और निर्माण की विलक्षण क्षमता है । तीन दशक से भी पहले जावरा में स्व आचार्य श्री गणेशीलालजी म सा के चौमासे में तत्कालीन युवा साधु श्री नानालालजी के साथ अपनी वार्त्ता का स्मरण करते हुए, अतीत की स्मृतियो से श्री बोहरा भावुक हो उठे और कहने लगे कि मैं युवक था और मात्र दर्शनार्थ जावरा पहुंचा था किन्तु जब श्री नानालालजी म सा को वन्दना करने गया तो उस समय के घटना-क्रम पर मुझसे बात की और साधु मर्यादा मे मार्गदर्शन भी प्रदान किया । मैंने कहा मेरी इतनी जानकारी नही है और न ही अधिक रुचि । इस पर आपश्री ने कहा उस क्षेत्र मे आपको भूमिका निभानी होगी । मैंने बात को गम्भीरता से नही लिया किन्तु २ ३ वर्ष बाद पाली जिले मे स्थितियो ने कुछ ऐसा मोड लिया कि न चाहते हुए भी मुझे सत्य के समर्थन मे मैदान मे आना पडा और तब मैंने पहली बार आपश्री की मौलिक प्रतिभा को अनुभव किया । योग्य व्यक्ति को योग्य दायित्व देने और उसे प्रदत्त दायित्व के योग्य बनाने मे आपश्री बेजोड़ है । जावरा में आज से चौंतीस वर्ष पूर्व की घटना मैं भुलाये नहीं भूल पाता हूं । उसी समय के चयन के कारण कालांतर मे मुझे २ बार श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष पद का दायित्व भी निर्वहन करने का सौभाग्य मिला ।

आचार्य श्री की महान् दूरदृष्टि के प्रति मेरी और सकल संघ की अविचल आस्था है और मेरा विश्वास है कि भविष्य आचार्य श्री के आज के अद्वितीय निर्णय की पुष्टि करेगा । मैं युवाचार्य श्री के प्रति अपनी विनम्र शुभ कामनाएं अर्पित करता हूं ।

आशीर्वाद फलेगा—इसी समय श्री अ भा साधुमार्गी जैन महिला समिति की संरक्षिका सौ श्रीमती यशोदादेवी जी बोहरा ने समिति की तथा स्वयं अपनी ओर से आचार्य प्रवर के निर्णय की पुष्टि करते हुए कहा कि आपश्री का आशीर्वाद अवश्य ही फलेगा । युवाचार्य श्री का तो नाम ही राम है ये आगे बढ़ते जावेंगे और संघ को भी आगे ले जावें । मेरी शुभकामना है ।

हीरो—कुशल मच सयोजक श्री सुशील बच्छावत ने अपने अपार हृष को मुग्ध भाव से वाणी प्रदान करते हुए गाया कि—"हीरो पायो नाना गुरुवर र नाम रो जी, ओ तो नहीं है अज्ञानिया रै काम रो जी।"

गौरव की बात—संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री दीपचन्दजी भूरा ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि यह खुशी केवल मेरी ही नहीं है, सबकी है। महावीर स्वामी के शासन को हुकम सम्प्रदाय जिस प्रकार से चला रहा है, वह गौरव की बात है। पूज्य गुरुदेव ने हमारे देशनोक गाव के भूरा परिवार के छोटे से बालक को क्या से क्या बना दिया। आपश्री ने श्री राम मुनिजी को तीजे पद का अधिकारी बना दिया। मेरी भगवान से प्राथना है कि वह श्री राम मुनिजी को शक्ति दे कि इस महान् परम्परा को निभा सके।

यशस्वी हों—सघ के पूर्व अध्यक्ष श्री पी सी चौरडा ने स्वय की तथा मालव की ओर से बोलते हुए युवाचार्य श्री राम मुनिजी के यशस्वी होने की मगल कामना की। पीपलिया मडी-अमर नगरी के श्री सुरेशजी पामेचा और जावरा-म प्र के श्री कांतिलालजी कासटिया ने भी अपनी शुभ भावनाए अर्पित की।

देशनोक सघ की बालक बालिका मडली ने समवेत स्वरो मे भक्ति गीत के द्वारा अपनी भावनाए व्यक्त की और कहा—

"घणी घणी बधाई थानै ओ करुणा रा सागर
दो दिन रै प्रवास मे पाच आज्ञा पत्र मिल्या
अब चौमासा दिरावो" —
इसा मगल दिवस माथै मगल गीत गावाला
"'चादर सौंपी राम रै हाथ"
नगरी अयोध्या फिर से सज रही है
उजडे दिल को आस बंधाओ ना
चौमासा दिलाओ ना

मगल सन्देश—इसी समय आचाय प्रवर ने अपने श्रीमुख से उपस्थित चतुर्विध सघ को सम्बोधित किया। आचार्य श्री के विचारो का सार निम्न प्रकार है—

जय जय जय भगवान
अजर अमर अखिलेश निरजन
जयति सिद्ध भगवान

गुरुदेव के साथ ही सहस्रो कठ इस प्रार्थना को गा रहे जिससे वातावरण धर्ममय हो उठा और जन जन भक्तिमय हो उठा

आचार्य प्रवर ने कहा कि—आज का प्रसग सर्वविदित हो चुका है। इस प्रसंग से कई जिज्ञासाए उभर रही होगी। आज का प्रसग व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए कौनसा मगल सन्देश देता है। यह प्रसग आन्तरिक परिवेश सुधारते हुए दु ख, द्वन्द्व और आन्तरिक प्रदूषण तथा मानव जाति में व्याप्त असन्तोष का निवारण करता है।

वैज्ञानिक अनेक प्रकार के प्रदूषणों का अध्ययन विश्लेषण करने मे जुटे हैं किन्तु जो मानसिक प्रदूषण सर्वाधिक घातक है, उसकी ओर बहुत कम चिन्तको का ध्यान गया है। राष्ट्र के कर्णधारो को इस ओर ध्यान देना चाहिये और नागरिको को सजग तथा एकजुट होकर प्रदूषण रहित वायुमडल का निर्माण करना चाहिये।

आचरण प्रदूषण को समाप्त करने के लिए, समाहित करने के लिए समता दर्शन एक सशक्त उपाय है। यह प्रसग समता दर्शन के व्यवहार प्रयोग का एक विलक्षण क्षण उपस्थित करता है।

समता दर्शन का रूप व्यावहारिक जीवन में उतरे, एतदर्थ प्रभु महावीर जो कि क्षत्रिय थे, और अन्तिम तीर्थकर थे क्षात्रधर्म की व्युत्पत्ति के साथ अग्रसर हुए और जनजीवन को कुछ निर्देशो के माध्यम मे सार्थक दिशा दर्शन दिया। वह दिशा दर्शन, वे निर्देश आज भी सामयिक हैं। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और सयम की आज के लोक जीवन में कितनी आवश्यकता है ? क्या कहने की बात है। इन शाश्वत मूल्यो की जन जन को अमित प्यास है।

महावीर ने कहा "पन्ना समिक्खए धम्म" अर्थात् प्रज्ञापूर्वक आत्मावलोकन करते हुए धम का आचरण करो, विवेक से व्यवहार करो। इस सूत्र का अनुपालन करने पर धम व्यक्तिगत जीवन को व्यवस्थित बनाता हुआ, व्यक्ति और समाज के जीवन में नवचेतना का सृजन करता है। "समिक्खए" मे समदृष्टि के साथ, समता भावना के साथ तत्व जीवन के दर्शन का उपदेश है। धम किसी व्यक्ति या पार्टी

का नहीं होता, वह आत्मा का होता है। वह चेतना जगाता है।

यहा यह जो साधु संस्था बैठी है। वह जनजागरण की स्थिति से जनजीवन मे व्याप्त दोषो को पैदल चलकर, अकिंचन भाव से दूर करती है। इस प्रकार यह साधु सस्था महावीर के आदर्शों को व्यवहार मे ढाल रही है। इस जगम पाठशाला हेतु, इस चल विश्वविद्यालय की सुव्यवस्था और शासन सचालन की दृष्टि से युवाचार्य की नियुक्ति की आवश्यकता होती है। शान्त क्रान्ति के अग्रदूत स्व पूज्य गुरुदेव श्री गणेशीलालजी म सा ने इसी विचार से मेरी नियुक्ति की थी और उनके क्रातिकारी कदम को आगे बढाते हुए मैंने यह नियुक्ति की है।

आज का दृश्य स्व गणेशाचार्य जी की शात क्राति का सहज परिणाम है। गुरुदेव ने मुझ पर वजन डाला था, मेरी तो कोई योग्यता और शक्ति न थी कि जो इस गुरुत्तर उत्तरदायित्व से सामना करने मे समय होती, पर चतुर्विध सघ के सहकार से गुरु प्रदत्त काय सिद्ध हुआ है।

अव आज गुरु प्रदत्त दायित्व को, उस वजन को, अन्य को सुपुद करने उपस्थित हुआ हू। वह समग्र उत्तरदायित्व युवाचार्य राम-मुनि को सुपुद करता हू। यह सुपुर्दगी इस ऐतिहासिक स्थल पर हो रही है जो क्षात्रधर्म की स्मृति को ताजा करने का दूसरा संयोग प्रदान कर रही है। पहला सयोग उदयपुर मे मिला था और दूसरा आज जूनागढ मे, बीकानेर मे। बीकानेर की जनता ने यह आयोजन इस ऐतिहासिक स्थल पर रखने का आग्रह करके क्षात्रधर्म के कर्म और ज्ञानयुक्त क्रिया को संयुक्त करने का, एक पूर्व घटनाक्रम को गौरव के साथ पुन स्मरण करने, दुहराने का प्रसंग उपस्थित किया है।

यह प्रसग उस प्राणीमात्र के लिए, जो सत्रास मे है, श्रमण सस्कृति के अभयदान सन्देश का एक प्रतिरूप है। आज जब जन जन भौतिकता की होड मे लगा हुआ है, श्रमण सस्कृति जन जागरण को समर्पित है। जन जागरण और लोक मगल को समर्पित श्रमण सस्कृति को व्यापक जन सहयोग प्रदान करने की जरूरत है।

हुकम सम्प्रदाय का यह साधुमार्गी संघ, ये साधु साध्वी आचरण की शिक्षा प्रदाता एक जंगम विद्यापीठ हैं एक चलती फिरती

कॉलेज है। इस चलती फिरती कॉलेज के साधक श्रमण-श्रमणी ... आप सभी एकजुट होकर विश्व शांति के कार्य को आगे बढ़ावेंगे ... विश्व कल्याण होगा। हमारा प्रत्येक काय विश्व कल्याण की पावन भावना से अनुप्रेरित होना चाहिये।

अहिंसा दिवस—गुरुदेव का मगल सन्देश पूर्ण होते ही उत्सुक मन से समारोह संयोजक श्री भवरलालजी कोठारी ने हजारो की जन मेदिनी को यह हर्षद सूचना दी कि बीकानेर के जिलाधीश श्री आर एन मीणा ने आज बीकानेर जिले मे अहिंसा दिवस की घोषणा की है और आज अगता रखकर प्राणियो को जीवनदान दिया है। श्री कोठारी जी ने एतदर्थ चादर महोत्सव समिति की तथा स्वयं अपनी ओर से भी जिलाधीश श्री मीणा के प्रति हार्दिक आभार ज्ञापित किया।

मगलाचरण व चादर स्पर्श—इसी समय युवाचार्य श्री जी को ओढाई जाने वाली शुभ्र, धवल, त्याग और तप की, संयम और साधना की, महान् उत्तरदायित्व की प्रतीक चादर आचार्य प्रवर ने सन्त वर्ग के सबल हाथो में सौंपी। मन्द मन्द बह रही पवन और राजप्रासादों की छाया मे प्राप्त शीतलता अपार जनमेदिनी की उत्सुकता और श्रद्धा से प्राप्त उत्साह से लहराती धवल चादर, फरफराती हुई अपने समग्र विकास के आयामो मे विस्तीर्ण होकर एक-एक सन्त द्वारा स्पर्शित और समर्थित हुई। तत्पश्चात् यह चादर सतीवृन्द के विशाल समूह को सौंपी गई और उनमे से भी प्रत्येक द्वारा स्पर्शित, समर्थित व अभि नन्दित होती हुई पुन आचार्य प्रवर के पास पहुची।

यह आचाय श्री नानेश द्वारा धारित चादर जिसे आज चतु विध सघ के समक्ष पाचो स्थविर प्रमुखो आदि सन्त रत्नो ने आचार्य श्री को धारण कराई थी और वापस आचाय श्री से अनुग्रह पूर्वक प्राप्त करके सन्त-सती वृन्द को सौपी गई थी, सर्वसमादृत होकर प्रत्येक से समर्थित होकर पुन गुरुदेव के हाथो में आ गई।

इस मंगलमय क्षण मे स्थविर प्रमुख श्री विजय मुनिजी म. सा ने अपनी मधुर वाणी मे मगलाचरण प्रस्तुत किया और इसके साथ ही चादर प्रदान का ऐतिहासिक क्षण स्वय को साथक करने के लिए आ उपस्थित हुआ।

चादर प्रदान- ठीक मुहूर्त के अनुसार १० बजकर ४२ मिनट

र जिनशासन प्रद्योतक आचार्य श्री नानेश ने प्रभु महावीर के शासन का उत्तराधिकार, अष्टाचार्यों के गौरव की सवाहिका, यशस्वी, निर्मल, पावन चादर युवाचार्य मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा को ओढ़ाई। स्थविर प्रमुख श्री शाति मुनिजी, श्री प्रेम मुनिजी एवं विद्वद्वर्य श्री धर्मेश मुनिजी म सा आदि सन्त वृन्द ने युवाचाय श्री जी को चादर धारण कराई, इसके साथ ही ऐतिहासिक जूनागढ के कण-कण मे जय गुरु नाना का घोष गू ज उठा।

विशाल जनमेदिनी मे से श्रद्धालु उठ-उठ कर दौडे और उन्होंने युवाचार्य श्री पर केसर न्यौछावर की। वातावरण मे केसर की पीली पखुडियो ने वसन्त का सा दृश्य निर्मित किया और चारो ओर केसरिया-पवन ने अपनी शीतल सुवास से जन-मन को प्रमुदित किया। चारो ओर हर्ष का सागर लहराने लगा। केसर न्यौछावर का काय युवको-श्रद्धालुओ ने ऐसी विद्युत गति से सम्पन्न किया कि सतो द्वारा निषेध करने तक चारो ओर केशर ही केशर छा गई। शीघ्र ही समता युवा सघ के कार्यकर्त्ताओ ने स्थिति को नियन्त्रित किया।

समता विभूति आचाय प्रवर ने अपनी सुदीघ सयम यात्रा, ज्ञान-दर्शन चारित्र की सम्यक् आराधना से प्रदीप्त यशस्वी और धवल चादर युवाचाय श्री को सौपकर उन्हे गुरुतर उत्तरदायित्व से अभिषिक्त किया।

कार्यक्रम सयोजक श्री सुशील बच्छावत ने गीत का मुखडा गाया—

> गुरु जवाहर, गणेश ने ओढी
> नानेश ने निर्मल कीनी
> राम मुनि को ऐसी ओढाई
> दुनिया दग रह गई—चदरिया—

हर्ष और उत्साह के इस वातावरण मे युवाचार्य मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा ने युवाचार्य के रूप में अपने प्रथम सार्वजनिक प्रवचन को अपने सहज स्वभाव के अनुसार ही सौम्य और विनीत भाव से प्रारम्भ करते हुए सर्वप्रथम पचपरमेष्ठि की प्रार्थना और शासन-नायक आचार्य प्रवर की भावभीनी वन्दना अभ्यर्थना करने के बाद कहा

तो श्रावकत्व खतरे मे होता है । हमे देखना होगा कि स्वधर्मी विनष्ट तो नही रहा है ? उनकी आख के आंसू को दूर करने को हम क्या कर रहे हैं ?

भूखा प्यासा पडा पडोसी
तू ने रोटी खाई क्या ?
दुखिया पास पडा है तेरे
तू ने मौज उडाई क्या ?

क्या इन स्थितियो की ओर हमारा ध्यान जाता है ? श्रावक का १२ वा व्रत अतिथि सविभाग है । इसलिए द्वार सदा सत्कार के लिए खुले रहने चाहिये । आप संतों की भक्ति करते हैं पर यदि सबके लिए समान रूप से द्वार खुले रहे तो कभी संत भी वहां पधार सकते हैं ।

आज बच्चो के सस्कार खतरे में है पर उस ओर मा बाप का लक्ष्य नही । श्रावक समाज के धार्मिक व नैतिक जागरण हेतु भी सोचें । यह चादर धार्मिक जागरण व नैतिक शक्ति की द्योतक है ।

आचार्य-प्रवर के उपकार के विषय मे तो जितना बोलू कम है । मैं पूर्व का इतिहास व आज का दृश्य भी देख रहा हू । अवर्णनीय परिवर्तन प्रत्यक्ष देखने को उपस्थित है । युग-युग इस आचार-क्रांति हेतु आचार्य प्रवर का आभारी रहेगा ।

आज संघ संरक्षक पूज्य श्री इन्द्रचन्दजी म सा नहीं पधार सके, यदि वे पधारते तो सोने मे सुहागा होता पर मैं उनके आशीर्वाद को अनुभव कर रहा हू । स्थविर प्रमुखो और शासन प्रभावक संत सती वर्ग ने शासन की जो जाहोजलाली की है । सन्त-सती वर्ग ने नये नये क्षेत्रो में जो समता का नाद गु जाया है उसे और मुखरित करना है और दिगनाद मे बदल देना है । समता दर्शन के सम्यक् आचरण से ही भारत और विश्व की जनता शांति की सांस ले पाएगी ।

राम मन भाए– इसी समय विद्वद्वय कविरत्न श्री वीरेन्द्रमुनि जी म सा ने "राम सारे मन भाए" नामक स्वरचित गीत सस्वर सुनाकर जन मन के मोद को अभिवर्धित किया ।

इसके बाद बोलते हुए स्थविर प्रमुख विद्वद्वय श्री शांति मुनिजी

म सा ने कहा कि आज हम महलो की, उससे भी अधिक आचार्य-प्रवर की महिमामडित छाया अनुभव कर रहे हैं। यह दिवस मात्र आधुनिक परम्परा का ही नही अपितु वीतराग भगवान की परम्परा का दिवस है क्योंकि वीतराग भगवान के शासन को आगे बढाने वाला यह दिवस है। प्रभु महावीर ने कहा था कि यह जिन शासन २१ हजार वर्ष तक चलेगा, तदनुसार इस शासन मे अनेकानेक क्रांतिकारी शासक हुए और क्राति के शखनाद फूके गए। उत्कर्ष-अपकर्ष के बीच गतिशील यह शासन स्वर्गीय तपोनिष्ठ श्री हुकमीचन्दजी म सा को प्राप्त करके सयम साधना के क्षेत्र मे श्रेष्ठ उत्कर्ष को पहुचा। आचार्य श्री हुकमीचन्दजी म सा से महान् क्रांतिकारी आचार्यो की जो परम्परा चली, उस साधुमार्गी परम्परा ने ज्ञान व क्रिया का समन्वय स्थापित किया। उसी परम्परा के अष्टम आचार्य श्री नानेश ने आज अपने युवाचार्य श्री को चादर प्रदान करके परम्परा को अक्षुण्ण बनाया है।

अनूठे जौहरी—आचार्य श्री अनूठे जौहरी हैं। ये महान् कलाकार हैं। इन्होंने अनेक रत्नो मे से परख कर श्री राम मुनिजी को युवाचार्य बनाया है। वास्तव मे कलाकार का अधिक महत्व होता है और कलाकृति का कम। पिकासो पढा था। पिकासो के भीतर छिपी कला प्रतिभा जब जग जाहिर हुई तो उनकी एक कलाकृति जो झोपडी और घोडे जैसे सर्वज्ञात प्रतीको के माध्यम से चित्रित की गई थी—५८ करोड डालर मे खरीदी गई। कलाकार अपने प्राण कलाकृति मे फूक देता है और स्वय कलाकृति के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। परम पूज्य आचार्य प्रवर ऐसे ही विरल कलाकार है और आपने आज चतुर्विध सघ को युवाचार्य श्री एक कलाकृति के रूप में सौंप कर अपने उत्तराधिकारी की घोषणा की है।

ये श्री राममुनि पूज्य आचार्य देव की कृति है और हम सब आचार्यदेव के प्रति समर्पित हैं। हमारे रग रग मे, रक्त कोशिका में यह समर्पण की भावना अविरल प्रवहमान है। उसी प्रवाह का यह प्रतिफल है, हम सबके उसी समर्पण भाव की यह अभिव्यक्ति है जो आचार्य देव के श्रीमुख से वाणी बन कर नि सृत हुई है। हम सबको इस वाणी को सार्थक करके दिखाना है।

आज श्री गुमानमलजी चोरडिया ने कहा था और कुछ दिन

पूर्व ऐसे ही विचार स्थविर प्रमुख श्री प्रेम मुनिजी म सा ने व्यक्त किए थे कि गुरुदेव ने उजडे बाग को सुदर उपवन बना दिया है और शून्य मे से सृजन किया है । यह सत्य है । गुरुदेव ने जब युवाचार्य श्री चादर ओढी थी तब मे और आज मे बहुत अतर है । परिस्थितियां बदल गई हैं । आज युवाचार्य श्री को एक हरा-भरा बगीचा मिला है और चतुर्विध सघ का आशीर्वाद भी उन्हें मिला है । अत उन्हें इसे और अधिक पुष्पित पल्लवित करना है ।

अभी युवाचार्य श्री जी ने अपने वक्तव्य मे, कार्य में सबके सहकार की अपेक्षा जतलाई तो उन्होंने उचित कहा। वास्तव मे मात्र एक व्यक्ति पोषण नही कर सकता । सरक्षण-सवर्धन हेतु सब सहकार एवं सामान्य आवश्यकता है, अपरिहार्यता है । कोई विलक्षण ही अकेला कार्य कर सकता है, अन्यथा टीम होनी ही चाहिये । सहकार होना ही चाहिये ।

अप्रतिहत व्यक्तित्व—आचार्य प्रवर ने उदयपुर मे चादर ग्रहण कर जब विहार किया तो गाव गाव मे कमी विपरीत स्थिति थी किन्तु आचार्य देव अप्रतिहत आगे बढते ही गए और समाज तथा राष्ट्र को समता दर्शन दिया, धर्मपाल सी उत्क्रांति का सूत्रपात कर हजारों का जीवन परिवर्तन किया । जहा भी गुरुदेव जाते थे पूछा जाता था—आप श्रमण संघ से क्यो पृथक हुए ? आपश्री को प्रश्नो के घेरे मे लेने के प्रयास सर्वत्र होते रहे पर आपने अपनी महान् ऊर्जा तथा जीवट से समस्त घेरे वन्दियो को निरुत्तर करते हुए इस उजडे बाग को सींचा और विकसित किया ।

आप जरा एक एक श्रमणी वर्या का परिचय लेकर देखें, आपको आचार्य श्री के निर्माण स्तर को देख आश्चर्य होगा । आप एक-एक श्रमणवर्य के जीवन में झांक कर देखें, आप हर्ष से पुलकित होंगे । आचार्य प्रवर ने सघ का जैसे निर्माण किया है, वह आदर्श है ।

युवाचार्य श्री को आज आचार्य प्रवर ने जो धरोहर सौंपी है, मैं उस धरोहर की ओर संकेत करना चाहूगा । यह धरोहर है—आचार क्रांति की । इस आचार क्रांति मे विचार क्रांति और संस्कार क्रांति भी सम्मिलित है । इस क्रांति त्रयी आचार विचार और संस्कार क्रांति—

विराटता प्रदान करने का दायित्व आपको मिला है। आप इसका शलता से निर्वहन कर संघ गौरव की अभिवृद्धि करें, यही आशा है।

साथ ही हम सब की यह अपेक्षा भी है कि आप हम सबको री आत्मीयता और स्नेह प्रदान करते रहेंगे जो हमें अभी तक आचाय- र प्रदान करते रहे हैं। सन्त जीवन को और क्या चाहिए? उन्हें चरित्र गरिमा के साथ अपने सरक्षक का स्नेह, प्रेम और दुलार हिये। यह दुलार युवाचार्य श्री जी से मिलता रहे जिससे संघ की बगिया बहुमुखी विकास करेगी हमारी कामना है कि युगो युगों आचार्य देव जीए और उनकी सन्निधि मे रहकर युवाचाय श्री जी छ करके दिखाए। समता का विकास भीतर से होता है, हमारी मना है कि युवाचाय श्री जी अपनी अन्तरग सक्षमता से समता किसित कर चतुर्विध संघ को यशस्वी बनाए।

कीर्तिमन्त शासन आचाय श्री जी का शासन बडा कीर्ति- न है। यह शुद्धाचार पर आधारित है। भगवान महावीर ने पचा- र का विधान किया है, जिसमे आचार साधना का महत्त्वपूर्ण स्थान । श्रमण साधना आचार निष्ठा पर टिकी रहती है। आचार निष्ठा रीढ बडी सुदृढ है। अत हम अपनी साधना को इतना भव्य ावें कि किसी भी परिस्थिति मे हमारे आचार मे कोई मोच न ने पावे।

आचार्य प्रवर ने आचार शांति की सुरक्षा हेतु अपनी दीर्घ ष्टि से ५ प्रमुख सन्तो पर स्थविर प्रमुख का भार डाला है। आचाय वर ने अपनी विलक्षण बुद्धि से संघीय सगठन की सुरक्षा हेतु यह यवस्था दी है। इस सुरक्षा प्रबन्ध के बीच आचार्य श्री जी ने युवा- ाय श्री जी को सुरक्षित कर दिया है। हम सबका यह दायित्व है क जिनशासन की गौरव गरिमा बढाते हुए, सभी एक साथ जुटकर ाचाय प्रवर की व्यवस्था को सहयोग प्रदान करें।

आचार्य प्रवर ने श्री राम मुनिजी को युवाचाय का पद दिया —जब तक आचाय प्रवर हैं, तब तक युवाचार्य श्री जी को चिन्ता रने की आवश्यकता नही। आचाय देव की जो तेजस्विता है, वही ारी समस्याए सुलझा देंगी। आचार्य प्रवर से भी हमारी अपेक्षा है क वे हमे प्रकाश प्रदान करते रहें, जिससे यह संघ निरन्तर आगे

बढता रहे ।

स्थविर प्रमुख श्री शांति मुनिजी के इन उदात्त, दिशाबोध और धर्म दृढ़ता से ओतप्रोत प्रेरक उद्गारो पर चतुर्विध संघ ने आत्म गौरव का अनुभव किया ।

अभिनन्दनीय इसके बाद श्री प्रकाश मुनिजी ने कहा कि आज जो प्रसग उपस्थित है, वह सर्वविदित है । इसकी घोषणा तेले को हुई थी और आज अभिषेक किया है । यह चादर अपने आप में श्वेतता के साथ उत्तरदायित्व को भी लिए हुए है । अब तक मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा ने जिस सेवा भावना और समर्पण के साथ कार्य किया, वह समर्पण आचार्य श्री के प्रति था किन्तु अब चतुर्विध संघ की सेवा का उत्तरदायित्व आप पर आ गया है । हम यही मंगल कामना करते हैं कि आप अपना दायित्व निभाते हुए उत्तरोत्तर संघ को आगे बढ़ाते रहें । आप श्री को युवाचार्य पद तक पहुंचाने में आचार्य श्री जी ने जिस दूरदर्शिता का परिचय दिया है, वह अभिनन्दनीय है ।

हर्ष विभोर शासन प्रभावक श्री धर्मेश मुनिजी म सा ने कहा कि इस दृश्य से मेरा रोम-रोम हर्ष विभोर है । अब गुरुदेव ने राम भरोसे काम सौंप दिया है । सकल संघ के लिए इससे अधिक हर्ष की बात और क्या हो सकती है ? कल तक मैं अस्वस्थता के कारण सोच रहा था कि ऐसे ऐतिहासिक प्रसग पर उपस्थित हो सकूंगा या नहीं किन्तु आज प्रात विचार से शक्ति मिली और मैं यहां पहुंच गया । मेरा रोम-रोम उल्लसित है और मुझे भादवा सुदी ६ सं २०४१ देशनोक चौमासे का प्रसग याद आ रहा है । मैं प्रसंगोपात गणेश गुण शतक की पूर्ति कर रहा था । तेले का तप था और ४८ घंटे का मौन था । स्वप्न मे मुझे राम के दर्शन हुए । उस दिन भी वह घटना मैंने श्री गौतम मुनिजी को नोंध करा दी थी । वह स्वप्न आज साकार हो गया । चादर प्रदान की मगल घडी आ गई है । मैं युवाचार्य श्री जी को मगल बधाई देता हू ।

श्री धर्मेश मुनिजी ने अपने कथन के समापन के साथ ही आचार्य प्रवर को अपनी पुस्तक 'आचार्य गणेश गुण शतक' समर्पित करते हुए भजनपूर्वक गुरु वन्दना करते हुए कहा कि—

तर्ज—उड उड रे ..!

सुनो-३ थो म्हारा पूज्य नाना गुरु
शपथ श्राज सब खावा गुरु सा-२
भावी शासन नायक चरणे,
लुल लुल शीप झुकावा गुरुसा ।
जैसी श्रद्धा था पर म्हारी,
उण सु अधिक रखावा गुरुसा ।
राम राज्य रो आनन्द पावा,
राम नाम रम जावा गुरुसा ।
"धम" सघ श्री वढे निरन्तर,
मगल भावना भावा गुरुसा ।।

महाक्रान्ति स्थविर प्रमुख श्री प्रेम मुनिजी म सा ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि चतुर्विध संघ के लिए आज महान् हर्ष का दिन है कि वर्षों से सघ प्रमुख जिस आशका से उद्वेलित नजर आते थे, आज वह आशका निमूल हुई । समता विभूति आचार्य श्री नानेश चिन्तन के क्षेत्र मे भी प्रथम हैं, इसलिए विघटन नही होगा, उनका निणय सर्वमान्य है व रहेगा । उन्होंने अपने गुरु शातक्रांति के दाता श्री गणेशाचार्य जी से जो उत्तराधिकार पाया था उसे, उस क्रांति को समता के परिवेश में महाक्रांति में ढ़ाल कर आज समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है । समाज की गोदी मे आज युवाचाय के रूप मे 'राम' को सौंपा है, यह एक महान् उपलब्धि है। यह गुरु भ्राताओ की महानता है । सभी सत सती वग निणय तक जैसे सगठित रहे, आगे भी वैसे ही सगठित रहेंगे । कधे से कधा मिलाकर सहयोग करेंगे । जिनशासन का गौरव वढाएंगे ।

आज सघ सरक्षक श्री इन्द्रचन्द जी म सा बीकानेर मे होते हुए भी यहा नहीं पधार सके हैं । उन्होंने मुझे जो निर्देश दिए हैं, तदनुसार मैं उनको अर्थात सघ सरक्षक श्री इन्द्र मुनिजी म सा का आशीर्वाद युवाचाय श्री को सौंप रहा हू । आप पुरुपाथ करें और सघ की यशोवृद्धि करें ।

अभयदान इसी समय श्री लक्ष्मीचन्द जी बाठिया मद्रास ने आचाय प्रवर से ६ उपवास के पचक्खाण ग्रहण किए और ६ गायों को

अभयदान देने के सकल्प भी धारण किए ।

सुग्रनुशासन दें महासती श्री ललित प्रभाजी म सा ने। गीत के साथ अपना कथन शुरू किया—"भूमडल पे चमक रहे गुरु नानेश हमारे" और कहा कि युवाचार्य श्री जी इस पुनीत प्र पर प्राप्त वरदान को धरोहर के रूप में सजो कर रखेंगे, ऐसा ह सबका विश्वास है । आज आचाय देव ने जिस कडी का सृजा किया है, वह शासन को दिपाए गे, ऐसी हमारी दृढ़ धारणा है।

मैं महासती श्री पैपकवर जी म सा एव समस्त सती स की ओर से निवेदन करती हू कि आप श्री सुनिश्चित रहें । हम सबे सक्षम हैं व आज्ञा पालन को सदा तत्पर हैं । आज इस भव्य स रोह मे महासती श्री धापूकवर जी म सा, महासती श्री नानूकवर म सा, श्री इन्द्रकवर जी म सा जैसी सतियां उपस्थित नहीं हैं कि शासन की शोभा हैं । ऐसी महासती वृन्द की अनुपस्थिति हो अखर रही हैं किन्तु वे विभूतियां आचार्य देव के आज्ञा पालन भारत के धुर दक्षिण और मध्य भाग मे रहकर सेवार्पित हैं ।

आज भक्ति मे विभोर होकर भक्तो का दिल बोल रहा है जय गुरु नाना, ऐसे मगल पावन प्रसग पर मेरा युवाचार्य श्री जी निवेदन है कि वे सुअनुशासन दें, जिससे शासन की और भी प्रगति ह

सौरभ आदश त्यागी श्री रणजीत मुनिजी म सा ने। मुक्तक के द्वारा अपने भाव व्यक्त किए और कहा कि गुरुदेव का सौ हरियाले वनो से लेकर ऊसर रेगिस्तानो तक महक रहा है । गुरुदेव ने सघ के लिए आलम्बन प्रस्तुत किया है । हमारी कामना कि गुरुदेव शतायु हो ।

इसी समय फरीदाबाद के श्री केशरीचन्द जी धारीवाल ने गुरुदेव से ६ उपवास के पच्चक्खाण ग्रहण किए ।

पावन घडियां महासती श्री लक्ष्य प्रभाजी के साथ स्री चन्द के भजन "मधुर इन पावन घडियो मे, शत-शत आयु की कामना" ने वातावरण को हर्ष स भर दिया ।

अखण्ड शासन इसके बाद श्री अजित मुनिजी ने अपने ओजस्वी विचार उपस्थित जनसमूह के समक्ष रखे । उन्होंने कहा कि वीतराग शासन की अखंडता निराबाध गतिशील है । इस शासन मे

जब भी भावी आचार्य का चयन हुआ है तो भारी उतार चढाव देखने को मिले हैं। आचार्य श्री श्रीलाल जी म सा ने ऐसे प्रसग पर ४० सन्तो को शासन से निष्कासित कर दिया था। श्रीमद् जवाहराचार्य जी ने जब श्री गणेशाचार्य जी को उत्तराधिकार सौपा था तब भी ऐसी स्थितिया आई थीं। पर हम सभी का परम सौभाग्य है कि आज समता विभूति आचार्य प्रवर के निर्णय का एक स्वर से अनुमोदन हुआ है। इसका श्रेय भी आचार्य श्री के निर्माण को ही है कि आज सत और सतीवृन्द मे ऐसी विभूतिमत्ता है कि वे एक आदेश पर समर्पित होने, न्यौछावर होने को तत्पर रहते हैं।

गुरुदेव ने इस दूरगामी प्रभाव वाले कठिन निर्णय के प्रसग मे केवल इतना संकेत किया कि "अन्तरात्मा को राममुनि जच रहे हैं।" मात्र इस सकेत पर हम सबने गुरुदेव को अन्तिम निर्णय तक पहुचने मे सहकार किया और परिणाम आज हमारे सामने है। बन्धुओ यह श्रद्धा-समर्पण अलौकिक है। आप लोग इस समर्पण के प्रकाश मे सोचें कि क्या आप भी ऐसे चल रहे हैं? जीवन जहा लिया, मरण भी वही होगा। तनिक सा अविवेक भी मोच पैदा कर सकता है। ऐसा सम्यक् आचरण रखें कि कोई अगुली न उठा सके।

श्री अजित मुनिजी ने इन कड़ियों के साथ अपने विचार पूर्ण किए—

युग-युग जीओ नाना गुरुवर
धर्मध्वजा फहराओ
चरणा री शरण म्हा नै राखजो ओ
हाथ जोड मान मोड
तिक्खुत्तो के पाठ से
गुरुवर स्वीकारो, म्हारी वन्दना।

अप्रतिम साहस . स्थविर प्रमुख विद्वद्वर्य श्री ज्ञान मुनिजी म सा ने कहा कि मुझे गुरुदेव की पावन सन्निधि मे रहने का बहुत अवसर मिला और उससे मुझे आचार्य श्री जी को समझने, उनके अन्तरंग मे झाकने का सौभाग्य मिला पर इस बार उनके साहस को देखने का भी मौका मिला। संकल्प के साथ उनका साहस भी जग जाता है फिर तो चाहे सारी दुनिया एक ओर हो जाए गुरुदेव अन-

होनी को कर दिखाते हैं। यह जा निर्णय हुआ है वह तप साधना स ही संभव हुआ है। आप श्री ने शासन को चमका कर बताया है। आप सच्चे अर्थो में तरण तारण के जहाज हैं। स्थविर प्रमुख श्री शांति मुनिजी व अन्य सन्त गण सशक्त सहयोग की स्थिति को पहले से व्यक्त कर चुके हैं। हम सहकार को सदैव तत्पर रहेंगे।

विश्वास है युवाचार्य श्री जी इस निष्ठा को सैद्धान्तिक धरातल के साथ समन्वय पूवक समतामय रूप मे क्रियान्वित करेंगे। आप श्री चतुर्विध सघ नायक बनें हैं—दान, तप, शील का समन्वय बनाए रखने में सजग रहेंगे। यही विश्वास है।

मुक्तक—स्थविर प्रमुख श्री विजय मुनिजी म सा ने अपने मनोहारी, हृदयस्पर्शी मुक्तकों के माध्यम से भावो को अभिव्यक्ति प्रदान की।

मुक्तक

[१]

मझधार मे डूब रहा था
साहिल मिल गया
सूनी राहो मे उलझ रहा था
मजिल मिल गया
भाग्य ने बदली थी करवट तो, आशाओ का दीप ही नही, दिल मिल गया।

[२]

अमृत को होठों से पीना सिखलाया है तूने
बीहड मे बहार बन जीना सिखलाया है तूने
माटी की इस काया मे प्राण फूंककर ओ नाना
चैतन्य मे जीना सिखलाया है तूने।

[३]

कथाए तुम्हारी करने वाला, भाग्यवान होता है
गाथाए तुम्हारी गाने वाला महान् होता है
समर्पित है जो भी अन्तमन से तुम्हें
वह इन्सान इन्सान ही नहीं, राम जैसा भगवान होता है।

अनमोल उपहार : श्री अ भा साधुमार्गी जन सघ के अध्यक्ष सेवा समर्पित समाज रत्न श्री भवरलाल जो बैद ने इस अवसर पर

अपने भाव प्रकट करते हुए कहा कि आज हम सभी अत्यन्त हर्षित हैं। गुरुदेव ने चतुर्विध संघ को एक अनमोल उपहार प्रदान किया है। यह हमारा अहोभाग्य है। आशा है युवाचार्य श्री जी गुरुदेव के कार्य के आगे बढावेंगे। मैं उन्हें संघ की तथा स्वयं अपनी ओर से पूर्ण सहकार का विश्वास दिलाता हूं।

अप्रमत्त श्री राम मुनि श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ के पूर्व मन्त्री और कलकत्ता संघ के प्रमुख श्री सरदारमल जी कांकरिया ने कहा कि आज से ३० वर्ष पूर्व स्व श्री गणेशाचार्य जी ने एक क्रांतिकारी कदम उठाकर नाना को चादर दी थी। आज आप श्री ने उस परम्परा को आगे बढ़ाया है और मुनि प्रवर श्री रामलाल जी को चादर प्रदान की है। श्री राम मुनिजी लगन के पक्के हैं और मैंने इन्हें कभी प्रमाद अवस्था में नहीं देखा। ऐसे अप्रमत्त युवाचार्य के नेतृत्व मे हमें संघ कार्य को आगे बढ़ाना है। समता समाज रचना कोई मामूली कार्य नही। आप इसके लिए तहेदिल से कार्य करें। हम भी संतो की भावनाओं के अनुरूप समता समाज रचना हेतु कार्य करने को संकल्पित है और आपकी सभी आज्ञाओं का स्वयं की तथा कलकत्ता संघ की ओर से पालन करने का विश्वास दिलाते हैं।

वैराग प्यारो लागे युवाचार्य श्री राम मुनिजी की संसार-पक्षीय भतीजी वैराग्यवती सुश्री सुमन भूरा ने गीत के माध्यम से अपने भाव प्रकट करते हुए कहा कि—"संसार खारो लागे, वैराग प्यारो लागे"। सबने इस भाव की सराहना की। इसी समय सुश्री सुमन भूरा की भावना को महत्त्व देते हुए सब श्री सेठ फतेचन्द जी, तेजकरणजी, मागीलाल जी भूरा ने हर्षित मन से सुमन भूरा का आज्ञा पत्र आचार्य श्री के चरणों में समर्पित किया। इसी शृंखला मे वैरागिन सुमन भूरा ने अपना प्रतिज्ञा पत्र गुरुदेव को प्रस्तुत किया।

समर्थन अनेक वक्ताओं ने गुरुदेव के निर्णय के समर्थन मे अपने विचार रखे। श्री विजय चारण देशनोक ने देशनोक के लाल को युवाचार्य बनाने के लिए गुरुदेव का आभार माना। श्री अशोक सुराणा रायपुर ने रायपुर संघ और छत्तीसगढ़ की ओर से गुरुदेव के निर्णय का अनुमोदन किया।

श्री धनराजजी बेताला पूर्व मन्त्री श्री अ भा साधुमार्गी जैन

संघ ने स्वयं की तथा नोखा संघ की ओर से आज्ञापालन हेतु सेवारत रहने का वचन दिया। श्री भंवरलाल जी ओस्तवाल ब्यावर संघ मंत्री श्री वीरेन्द्र सिंहजी लोढा उदयपुर, श्री मदनलाल जी कटारिया रतलाम, श्री धूलचन्द जी कुदाल कानोड, श्री सम्पतमल जी बरडिया सरदार-शहर, श्री सम्पतलाल जी सिपाणी छदयरामसर और श्री मोतीलालजी चंडालिया, कपासन ने अपने-अपने संघों की ओर से गुरुदेव के निर्णय का अनुमोदन किया।

श्री मुल्तान जी गोलछा बीकानेर ने कहा कि सन्त सतीवृन्द और संघ संरक्षक श्री इन्द्रचन्द जी म सा की कृपा से यह चादर महोत्सव बीकानेर मे सम्पन्न हुआ है किन्तु स्वयं श्री इन्द्रचन्द जी म सा इस अवसर पर नहीं पधार सके, इसका हम लोगो को दुःख है।

वयोवृद्ध शिक्षाविद प श्री रतनलाल जी शास्त्री ने शुभ-कामना अर्पित की।

अलौकिक ध्यान से चयन संघ प्रमुखो की ओर से विचारा-भिव्यक्ति के क्रम का समापन करते हुए नवनिर्वाचित संघ अध्यक्ष और वर्तमान उपाध्यक्ष, उद्योगपति श्री रिधकरण जी सिपाणी बैंगलोर ने कहा कि परम पूज्य आचार्य श्री नानेश के पावन चरणों मे कोटि कोटि वन्दन के साथ ही आज मैं युवाचार्य श्री राम मुनिजी के प्रति अपनी तथा संघ की ओर से हार्दिक मंगल कामनाएं प्रकट करता हू और वन्दन करता हू। परम पूज्य आचार्य-प्रवर ने चतुर्विध संघ को और इस गौरवशाली भारत देश को जो महान् तथा सात्विक समता पथ का दिशा निर्देश किया है और उस पथ पर बढ़ने की जो प्रेरणा दी है, उसके लिए देश और समाज आपश्री का सदैव ऋणी रहेगा।

आचार्य-प्रवर ने अपने अलौकिक ध्यान से और अपनी दूर-दर्शिता मे युवाचार्य पद पर श्री राम मुनिजी का चयन करने की जो घोषणा की है, वह चतुर्विध संघ के इतिहास का एक सुनहरा अध्याय है।

आचार्य प्रवर की प्रेरणा से देश भर मे जनकल्याण कार्यों मे श्रावक वर्ग अग्रसर है। गुरुदेव के पिपलियाकलां चौमासे मे मैंने और श्री राजमल जी चोरडिया ने संघ के समक्ष स्वधर्मी बन्धुओं की सहायतार्थ अपने विचार रखे थे। मुझे हर्ष है कि गुणग्राही संघ ने उन

—चारो को स्वीकार कर कैंसर आदि जैसे असाध्य रोगो में अर्थ सहा-
ता के लिए समता जनकल्याण योजना का शुभारम्भ किया और
तदथ एक करोड रुपये की निधि स्थापित करने का सकल्प लिया
इसमे से २७ लाख रुपये के आश्वासन तत्काल ही प्राप्त हुए। मेरा सभी
धुओ से निवेदन है कि इस योजना के लक्ष्यो की पूर्ति हेतु खुलकर
हयोग प्रदान करें।

मुझे यह कहते हुए भी प्रसन्नता है कि इस पुनीत अवसर
र परम पूज्य आचार्य श्री जी के जन्म स्थान दांता मे एक विद्यापीठ
नाने का निणय किया गया है। यह २ करोड रुपये की योजना है,
जिसे साकार करने की दिशा मे तीन महानुभावो द्वारा पच्चास लाख
रुपयो की घोषणापूर्वक योजना का शुभारम्भ कर दिया गया है। आप
सभी से इस महत्वपूण योजना मे भी सहयोग प्रदान करने का निवे-
दन है।

हमारे युवाचाय श्री राम मुनिजी की जन्म भमि देशनोक मे
जनकल्याण कार्यों हेतु भी सघ की ओर से एक योजना प्रारम्भ करने
का निणय लिया है। इस योजना हेतु श्री दीपचन्द जी भूरा, सघ उपा-
ध्यक्ष श्री सुन्दरलाल जी दुगड आदि और देशनोक सघ ने पूर्ण सहयोग
देने का आश्वासन दिया है। इस योजना मे भी आप सबका सहयोग
वांछनीय है।

मेरा विश्वास है कि इस पावन अवसर से प्रेरणा लेकर जन-
सेवा के कार्यों हेतु आप सभी अग्रसर होंगे। अन्त मे मैं एक बार
फिर इस पुनीत अवसर पर परम पूज्य गुरुदेव, युवाचार्य श्री, सत-सती
वग तथा समस्त उपस्थित श्रावक-श्राविका वग, चतुर्विध सघ एव सभी
समागत बन्धु-बहिनो का हार्दिक अभिनन्दन करता हू।

इसके बाद बीकानेर संघ की ओर से श्री भवरलाल जी
कोठारी सयोजक युवाचाय चादर महोत्सव समिति के आभार ज्ञापन
के साथ ही जय गुरु नाना के उद्घोषो के साथ समारोह पूर्ण हुआ।

परम पूज्य गुरुदेव से मगल पाठ श्रवण कर सुधी श्रावक-
श्राविका हर्षित हो नगर-पथों पर स्वस्थान जाने के लिए बढ चले।
बीकानेर नगर की सभी सडकें श्वेताम्बर सन्तो के समूहो और श्रद्धा-
लुओ के प्रयाण से शोभित हो रही थीं। इस प्रकार यह महान् समा-

रोह जन-जीवन पर एक अमिट, सात्विक प्रभाव छोडकर सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम व समारोह समापन से पूर्व समता विभूति आचार्य श्री नानेश ने अपने गुरुभ्राता दिवगत श्री ईश्वरचन्द जी महाराज के अखरने वाले अभाव का स्मरण करते हुए उनकी शासन समर्पणा की भावना का उल्लेख किया । साथ ही आचार्य श्री जी ने फरमाया कि सरक्षक कर्मठ सेवाभावी धायमातृ पदालकृत श्री इन्द्रचन्द जी महाराज की भी प्रबल भावना थी किन्तु शारीरिक कारण से उनका भी पधारना नहीं हुआ । दिल्ली से प रत्न प्रखर व्याख्याता श्री सुदर्शनलाल जी महाराज को जैसे ही युवाचार्य पद घोषणा की जानकारी मिली उन्होंने अपनी प्रशस्त भावनाऐ प्रेषित की । मैं तो चाहता था कि वे भी इस प्रसग पर उपस्थित रहते तो प्रसन्नता होती । इस तरह क प्र तप परम वि महासती श्री नानूकवरजी शा प्र वि महासती श्री इन्द्रकवरजी, स्था शा प्र महासती श्री गुलाबकवरजी आदम सर्व समर्पिता वि महासती श्री सम्पतकवरजी शा प्र महासती श्री ताराकवरजी शा प्र महासती बल्लभकवरजी शासन प्रभाविका सम्पतकवर जी वि महासती श्री मगलाकवरजी आदि सती रत्न यहा नहीं पधार सकी । इसका हम सबके मन मे विचार है । किन्तु वे सभी शासन समर्पिता सती वृन्द शासन सेवा के लिए यहा से दूर है । उनका आगमन सम्भव नहीं था । वे पधार सकते तो सबको विशेष प्रसन्नता होती । अस्तु ।

युवाचार्य समारोह—समता-विभूति आचार्य श्री नानेश द्वारा दिनाक २-३-९२ को युवाचार्य पद पर शास्त्रज्ञ, मुनि प्रवर तरुण तपस्वी, श्री रामलालजी म सा, को आसीन करने की घोषणा की गई और दि ३-३-९२ को इसी क्रम मे पुन समारोह हुआ तथा दि ७-३-९२ को जूनागढ मे युवाचार्यजी को चादर ओढ़ाई गई ।

इन प्रसगो पर समता विभूति आचार्य श्री नानेश का पावन सन्देश प्राप्त हुआ जो अविकल रूप से सलग्न पृष्ठों पर छापा जा रहा है । तीनों दिन श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के मत्री श्री चम्पालालजी डागा ने भी अपने लिखित वक्तव्य प्रस्तुत किए जो साथ ही क्रमश प्रकाशित हैं ।

"चतुर्विध सघ को आचार्य देव श्री नानेश का सदेश"

तीर्थंकर देवों की यह परम्परा अबाध गति से गतिशील है। श्रमण भगवान महावीर ने चतुर्विध सघ की सारणा, वारण, धारणा के लिए आचाय सुधर्मस्वामी को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया उसके पश्चात् आर्य श्री जम्बू स्वामी प्रभृति आचार्यों ने शासन की भव्य प्रभावना की। पूज्यपाद श्री हुक्मीचन्दजी म सा ने क्रांतिकारी कदम उठाकर आचार सहिता को सुदृढ बनाया। ज्योतिर्धर, युगद्रष्टा, युगप्रधान स्व आचार्य देव श्री जवाहरलालजी म सा ने अजमेर वृहत्साधु सम्मेलन स १९९० मे निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति के सुरक्षार्थ एक योजना प्रस्तुत की थी। जिसका सम्मेलन मे उपस्थित सभी सत महात्माओ ने अनुमोदन किया और सबने उसके अनुरूप वातावरण बनाने की आवश्यकता दर्शायी। धीरे-धीरे वातावरण भी बना, सादडी (घाणेराव) वृहत्साधु सम्मेलन के समय वह विषय आगे बढा और शात, क्रांति के अग्रदूत स्वर्गीय आचार्य देव श्री गणेशलालजी म सा नेतृत्व मे (उसी योजना) साधु-साध्वी, श्रावक श्राविका एक ही आचार्य के निश्राय मे धर्माराधना कर, अर्थात् एक ही आचार्य के निश्राय मे शिक्षा, दीक्षा, प्रायश्चित आदि साधना सम्पन्न हो सभी साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाए आचार्य पद के ही शिष्य शिष्याए कहलाए और वह सब सत्ता सम्पन्न आचाय यदि चाहे तो दश से काम ले सकते हैं नहीं तो स्वय सारा काय सँभाल सकते हैं। इस प्रकार से उद्देश्य स्वीकार करते हुए श्रमण संघ का गठन हुआ। उसके सचालन का समग्र कार्य भार स्व आचार्य देव श्री गणेशलालजी म सा के नही चाहते हुए भी उनको सौंपा गया। उन्होंने बखूबी उसका सचालन भी किया। किन्तु जो कुछ परिस्थितिया बनी और रीढ की हड्डी के तुल्य उद्देश्य भी जब डगमगाने लगा तो प्रभु महावीर द्वारा प्ररूपित साधना पथ को अखंड अबाधित बनाये रखने के लिए स्वर्गीय आचार्य देव ने अपने नेतृत्व मे स्वीकृत उद्देश्य को अमली रूप देना उचित समझा। तदनुसार उन्होंने अपने नेतृत्व में स्वीकृत उद्देश्य को जीवन के अन्तिम समय में अमली रूप दे दिया। कालान्तर में मेरे नही चाहते हुए भी जब मुझ पर उत्तरदायित्व आया तो मेने अपनी शक्ति के अनुसार शासन सेवामे अपना आतम योग दिया व देते रहने की भावना है।

किन्तु अब स्वास्थ्य की कुछ स्थिति देखते हुए एव ध्यान याग शास्त्र मे अधिक समय प्राप्त हो इसके लिए मैं अपने कायभार से कुछ को मुक्त होना चाहता हू। निर्ग्रन्थ श्रमण-श्रमणियों ने यथा शक्ति इस स के विकास मे अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है और दे रहे हैं। मैं विश्वास करता हू कि आप भविष्य में भी देते रहेंगे। संघ के प्रत्ये साधु साध्वी इस सघ के अभिन्न अंग हैं। सबका अपना-अपना स्था है। मैं उन सबके सहयोग का सम्मान करता हू। जिन्होंने स्वार्थ लिप्सा से ऊपर उठकर जिन शासन का गौरव बढ़ाया है अब मैं भविष्य की व्यवस्थाओ को ध्यान मे रखते हुए इस जिनशासन के विकास एव पूर्वाचार्यों की क्रांतिकारी विशुद्ध परम्पराओ को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए फिलहाल मेरे बाद तृतीय पद को सभालने के लिए शास्त्रज्ञ, सेवाभावी, तरुण तपस्वी, विद्वान, मुनिप्रवर श्री राम लालजी म सा को संघ के समग्र अधिकारो के साथ युवाचाय पद के रूप मे नियुक्त करता हू।

चतुर्विध सघ शास्त्रज्ञ सेवाभावी तरूण तपस्वी विद्वान युवाचार्य प्रवर श्री रामलालजी म सा की आज्ञाओ को मेरी आज्ञा स्वीकार आराधन करते हुए सघ विश्वास में उन्हे सहयोग प्रदान करें।

संघ पर की गयी सतत् सेवाओ को मध्यनजर रखते हुए सघ संरक्षक के रूप मे धायमाता पद विभूषित, कर्मठ सेवाभावी शासन प्रभावक सरक्षक श्री इन्द्रचन्दजी म सा को नियुक्त करता हू।

इसके साथ ही फिलहाल निम्न पांच महामुनिराजों को शासन सहयोग के लिए "स्थविर प्रमुख' के रूप मे नियुक्त करता हू।

(१) स्थविर प्रमुख विद्वद्वय तरुण तपस्वी ओजस्वी व्याख्याता श्रमण प्रवर श्री शांतिलालजी म सा

(२) स्थविर प्रमुख विद्वद्वय तरुण तपस्वी मधुर व्याख्याता मुनि प्रवर श्री प्रेमचन्दजी म सा

(३) स्थविर प्रमुख पंडित रत्न मधुर व्याख्याता साधु प्रवर श्री पारसकुमारजी म सा

(४) स्थविर प्रमुख विद्वद्वय मधुर व्याख्याता संयति प्रवर श्री विजयचन्दजी म सा

(५) स्थविर प्रमुख विद्वद्वर्य ओजस्वी व्याख्याता संत प्रवर श्री ज्ञानचन्दजी म सा

ये महामुनिराज तृतीय पद के अधिकारी से संघ विकास मे समाचारी के अन्तर्गत संयमी जीवन को आगे बढ़ाने वाले परस्पर महत्वपूर्ण परामर्श करते हुए सघ को गति देने में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। जिनके परामर्शों पर जिन्हे तृतीय पद का कार्यभार सौंप चुका हू वे उस पर विचार करते हुए निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति की सुरक्षा के उद्देश्यो को एव पूर्वाचार्यों की क्रातिकारी विशुद्ध परम्पराओ को एवं शासन हितों को ध्यान मे रखते हुए नि स्वार्थ और निष्पक्ष निणय लेनें में सवथा स्वतन्त्र रहगे।

विद्वद्वय मधुर व्याख्याता तरूण तपस्वी श्री सेवन्तकुमारजी म सा, विद्वद्वय तपस्वी आदर्श त्यागी श्री सम्पतलालजी म सा आदश त्यागी, तरूण तपस्वी पडितरत्न श्री धर्मेशकुमारजी म सा आदि ने जो शासन की प्रभावना में योगदान दिया है उनका मैं "शासन प्रभावक" के रूप में सम्मान करता हू एवं अपेक्षा करता हू कि वे इसी प्रकार शासन प्रभावना मे सहयोग करते रहे।

वीतराग देव का शासन एव पूर्वाचायो का क्रातिकारी विशुद्ध परम्परा की अक्षुण्णता के साथ विकास की गतिशीलता को बनाये रखने के लिए मुख्यरूप से फिलहाल निम्न महासतियाजी-शासन प्रभाविका विदुषी तपस्विनी महासती श्री वल्लभकंवरजी म सा, शासन प्रभाविका परम विदुषी महासती श्री पानकवरजी म सा, शासन प्रभाविका परम विदुषी घोर तपस्विनी महासती श्री नानूकवरजी म सा, शासन प्रभाविका विदुषी महासती श्री चादकवरजी म सा, शासन प्रभाविका विदुषी महासती श्री इन्द्रकवरजी म सा, शासन प्रभाविका विदुषी महासती श्री गुलाबकवरजी म सा आदि सघ के महासती वर्ग की सभी प्रकार की सयमीय सुरक्षा का ध्यान रखती हुई स्वर्गीय आचाय देव के उद्देश्य के अनुरूप सघ संचालन मे सर्वतोभावेन समर्पित होकर शासन नायक को सतत् सहयोग प्रदान करती रहे ऐसी मैं अपेक्षा रखता हू।

पूर्वोक्त परामर्श आदि सभी व्यवस्थाओ मे आगमिक धरातल

राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य और स्वदेशी के प्रश्न पर श्रीमद् जवाहराचार्य की सिंह गर्जना और श्रमण संस्कृति के सुरक्षा के प्रश्न पर श्री गणेशाचार्यजी म सा द्वारा जिस अप्रतिम धैर्य और अविचल विश्वास के साथ शांत-क्रांति की स्थापना की गई, वह भगवान महावीर के शासन की देदिप्यमान और ज्योतित अमर घटनाएं बन कर लोकमानस मे अ कित हैं ।

इसी युग द्रष्टा युग सृष्टा बोध के साथ अष्टम पट्टधर हमारे शासन नायक आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा ने जिन शासन को जिस प्रकार दीप्तमान किया है, वह अविश्वसनीय सा लगने वाला पर सत्य और अलौकिक कार्य है । परमपूज्य आचार्य प्रवर ने आचार्य पद ग्रहण करते ही समता दर्शन रूपी अमृत प्रदान कर समाज जीवन के विषमता रूपी विष को परिहार करने का सूत्रपात किया । आचार्य प्रवर की अमियवाणी से मालव अ चल मे धर्मपाल समाज रचना का युग सत्य साकार हो उठा । समीक्षण ध्यान के पावन उपदेश से आपने समाज जीवन में तनाव शैथिल्य हेतु दिशा-दर्शन किया । आपश्री के भव्य भागवती दीक्षाओं के ऐसे प्रसंग उपस्थित किए जो जिनशासन के विगत शत ५०० वर्षों के इतिहास में दुर्लभ रहे हैं । आपश्री की *संयमीय दृढ़ता—वज्र के समान कठोर और आत्मीय स्नेह* की मृदुता नवनीत के समान स्निग्ध व पोषक तथा पुष्प के समान समाज जीवन को सुवासित करने वाली है ।

आपके अनन्य प्रताप से आज साधुमार्गी समाज का यह चतुर्विध संघ गर्वोन्नत मस्तक और उदात्त हृदय से समाज और राष्ट्र की अहर्निश सेवा मे सलग्न है । आपश्री की सन्निधि व सत्प्रेरणा से श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ विकास के अभिनव आयामों को स्पर्श करते हुए प्रगति के पथ पर आरूढ़ है । सघ सेवा और समर्पण के भाव लेकर शासन की आज्ञा आकांक्षा व निर्देशों की पूर्ति में अप्रमत्त भाव से समर्पित है ।

विगत दिनों सघ प्रमुखों ने नोखा में श्री धनराजजी बेताला के निवास पर एकत्र होकर अष्टाचार्य की गौरव गाथा के संवाहक भावी आचार्य के रूप में युवाचार्य मनोनीत करने हेतु आचार्य प्रवर से निवेदन करने का निश्चय किया । सघ प्रमुखों ने अलाय में प पू

रुदेव की सेवा मे उपस्थित होकर और इस ओर गुरुदेव का ध्यान आकृष्ट
रने का अपना कर्त्तव्य भी निभाया।

सघ के हृप का वारा पारा नहीं है कि परम पूज्य आचार्य-
वर ने इतना शीघ्र निर्णय लेकर युवाचार्य की घोषणा भी करदी
। गुरुदेव की अन्तदर्शी दृष्टि ने शास्त्रज्ञ, विद्वद्वर्य, तरुण तपस्वी मुनि-
वर श्री रामलालजी म सा मे निहित योग्यताओं तथा क्षमताओ को
रखा और आपश्री ने उन्हें युवाचार्य घोषित किया है।

मैं श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ की ओर से आचाय प्रवर
की इस घोषणा का पुरजोर अनुमोदन करता हू और सर्वभावेन सहकार
का विश्वास दिलाता हू। हम सदैव की भाति आज्ञापालन मे तत्पर
रहेंगे।

मैं इस अवसर पर युवाचाय श्री जी का भी सघ की ओर
से हार्दिक अभिनन्दन करता हू और उनकी आज्ञाओ के पालन की
सर्वविध तत्परता प्रकट करता हू। आपश्री की सरलता, सहजता और
अनुशासन पालन की भावना अभिनन्दनीय व अनुकरणीय है।

परम पूज्य आचार्य प्रवर की इस घोषणा से सघ और समाज
में अपार हर्ष छा गया है। गुरुदेव के इस निणय से चतुर्विध सघ को
नवीन बल, आशा और विश्वास प्राप्त हुआ है। हम गुरुदेव के अनन्त
आभारी हैं।

मैं एक बार पुन स्वय अपनी ओर से तथा श्री अ भा-
साधुमार्गी जैन सघ की ओर से युवाचार्य घोषणा का स्वागत करता
हू, अभिनन्दन करता हू।

दिनाक ३-३ ९२ सेठिया धार्मिक भवन, बीकानेर

युवाचार्य चादर महोत्सव

श्री चम्पालाल डागा, मन्त्री
अ भा सा जैन सघ, बीकानेर

चतुर्विध सघ के लिए आज अपार हर्ष और गौरव का अव-
सर उपस्थित है। शासन नायक परम पूज्य आचार्य-प्रवर श्री नाना-
लालजी म सा आज युवाचार्य श्री रामलालजी म सा को चादर
प्रदान कर रहे हैं। बीकानेर त्रिवेणी संघ को इस दिवस के आयोजन

का गौरव प्रदान करके आचार्य प्रवर ने हम पर महान उपकार कि
है । हुकम सम्प्रदाय मे अष्टम आचार्य श्री नानेश ने शासन की
जाहो जलाली की है, वह स्थानकवासी समाज के इतिहास का
सुनहरा पृष्ठ है । मैं आचार्य प्रवर और उनके आज्ञानुवर्ती श्रमण श्रम
घग के प्रति अपने अनन्त प्रणाम वदना निवेदित करता हू ।

युवाचार्य श्री रामलालजी को प्राप्त करके चतुर्विध सघ
हुआ है । आपश्री की अप्रतिम समर्पण भावना, असाधारण अनुशा
पालन, शास्त्र ज्ञान और आचार के प्रति अविचल निष्ठा शासन
और देश को ज्ञान, दर्शन, चरित्र के क्षेत्र मे महान् दिशा निर्देश दे
ऐसा मेरा ध्रुव विश्वास है ।

मैं श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ की ओर से तथा स्व
ओर से इस पुनीत अवसर पर युवाचार्य श्री जी का अभिनन्दन क
हू और परम पूज्य आचार्य प्रवर को इस दीर्घ दृष्टि युक्त शासन हि
कारी निर्णय हेतु बधाई देते हुए सर्वविध सहयोग का विश्वा
दिलाता हू ।

मुझे महान् हर्ष है कि श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ शा
नायक के दिशा निर्देशो का पूर्ण तत्परता से अनुशीलन और क्रियान्वि
करने के प्रत्येक क्षण को सार्थक व साकार करता रहा है और
भी करता रहेगा । सघ की लोक कल्याणकारी योजनाओ में प्रमुख
धर्मपाल प्रवृत्ति, छात्रावास छात्रवृत्ति सचालन, स्वधर्मी सहयोग
स्वावलबन की अनेकानेक योजनाए । जीवदया और शाकाहार के
में सघ की सजगता और सहयोग भावना ने पूरे देश में समाज
आदर प्राप्त किया है ।

मैं उपस्थित सभी जनों से संघ को सबल बनावे का भी
रोध करता हू ।

एक बार पुन आचार्य प्रवर, युवाचार्य वर और चतुर्विध
को विनीत प्रणाम ।

"परमात्मा के न दिखने पर भी संसार मे समस्त प्रा
को आत्मा तुल्य मानने से परमात्मपद की प्राप्ति हो सकती है ।"

—श्रीमद् जवाहरा

श्रमण संस्कृति–उन्नायक

आचाय प्रवर नानेश

△ नाथूलाल जैन चिलेश्वर

जन सघ मे आचार्य का स्थान अत्यधिक महत्त्वपूण माना या है। सघ का उत्कर्ष या अपकर्ष आचार्य के व्यक्तित्व पर आश्रित । जिनेन्द्र देव नें शासन सघ का समूचा उत्तरदायित्व आचाय देव व्यक्तित्व पर इसलिये निभर किया है कि उनके जीवन का कण-कण रत्नत्रय आदि छत्तीस गुणो से आलोकित एवं स्वय के जीवन मे कथनी-करणी का श्लाघनीय सगम रहता है। अतएव सुयोग्य, सफल एव कुशल आचाय देव की सदैव आवश्यकता रही है। आचार्य देव की अनुपस्थिति में संघ अनाथ माना जाता है।

आचाय देव का व्यक्तित्व उस सघ के अन्य साधु साध्वियो पर झलकता है। आचाय-प्रवर श्री नानालाल जी वतमान जैन जगत के एक ज्योतिमय सूर्य हैं। विपमता के इस युग मे समता का दशन, दरिद्रनारायण का उद्धार, परिमार्जित, धम व्यवस्था का सूत्रपात, विशाल शिष्य मडल का सचालन, शिथिलाचार के विरुद्ध क्राति पवित्र सयम-यात्रा, ओजयुक्त वाणी का प्रवाह, तोडने के स्थान पर जोडने का सिद्धात और शात स्वभाव आपकी जीवन यात्रा के महत्त्वपूण चमत्कार है।

आचार्य-प्रवर का सर्वांगीण जीवन विविध विशिष्ट अनुभूतियो का उपवन है। आपके जीवन का प्रत्येक क्षण परोपकार की महक से महकता है। सेवा समता धर्म से दमकता है और शील सदाचार से चमकता है। आप विद्यालय के विद्यार्थी नही बने वरन् विद्या ने आपका वरण किया, आप प्रवचन शैली के ग्राहक नही बनें वरन् स्वय शीतल-सुगन्ध सुधाभरी वाणी ने आपको अपना आस्पद बनाया, आप कल्पना के पीछे नही दौडते, यथार्थता ही आपका अनुगमन करती है। आप पूजा, प्रतिष्ठा, मान, सम्मान के इच्छुक नही हैं, स्वय जनमेदनी ही आपको अपना कणधार बनाकर अपना सौभाग्य समझ रही है।

चतुर्विध सघ द्वारा आप वि स २०१६ मे आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। आज तक करीबन २८६ भव्य आत्मायें आपके आध्यात्मिक वैभव को स्वीकार कर चुकी हैं और उससे भी अधिक महान

आत्मायें आपके सानिध्य मे भारत के कोने कोने में विचरण कर रही हैं । इस समय भी अनेक मुमुक्षु आपसे दीक्षा लेने को आतुर हैं, जिन पिता मे डबी अमीरी को लात मारकर पाच महाव्रत धारण कर रहे अपना अहोभाग्य समझ रहे हैं । कहीं पर पिता पुत्र तो कहीं पर पति पत्नी साथ साथ दीक्षा ले रहे हैं । एक तरफ कठिन तपस्वी मुनि संघ को चमका रहे हैं तो दूसरी तरफ मिथ्या पाखडो को मिटाने समाज सुधार का विशाल कायक्रम चल रहा है । वास्तव में आप समता, तप और सयम की त्रिवेणी प्रवाहित की है और इस त्रिवेणी पर साधु माग का एक ऐसा भव्य प्रासाद खडा किया है, जिसका अस्तित्व युगो युगो तक रहेगा ।

एक सामान्य श्रावक द्वारा एक महामना, महामनस्वी, सत्य स्वरूप आचाय प्रवर के सयमी जीवन का विश्लेपण करना एक दुष्कर कार्य है । क्योकि आप गुणो के पुज हैं और लेखक की लेखनी एक समय मे एक ही गुण का चित्रण कर सकती है । फिर भी आचार्य श्री की कथनी एवं करनी, अनूठी व्याखान शैली से प्रभावित हो कर महामहिम आचाय प्रवर के बहुमुखी व्यक्तित्व एव तपोमय संयमी जीवन की झिलमिलाती भाकी श्रद्धालु श्रावकों के कर कमलो मे समर्पित करते हुए मैं अत्यत गौरव का अनुभव कर रहा हू । आचाय प्रवर की जीवनयात्रा अध्येताओ को आत्मोन्नति के माग पर चलने की महत्वपूर्ण प्रेरणा दे रही है । आचाय श्री नानालाल जी म सा का यह परिचय प्रकाश स्तम्भ का काय करेगा । श्रद्धेय आचार्य प्रवर का जीवन एव दर्शन व्यक्ति एव समष्टि के लिये एक प्रेरणा है ।

जन्म एव बाल्यकाल

कपासन के निकट दाता एक छोटा सा ग्राम है । इसी ग्राम में श्री मोडीलाल जी पोखरना अपनी गृहणी शृंगार देवी के साथ सुखी जीवन व्यतीत कर रहे थे । उनका आदश परिवार धम, स्नेह और चैतन्य का सुरम्य उपवन था । पूज्य श्री की माता शृगार देवी एक धर्म परायणा, सुशीला और आदश गृहणी थीं । सामायिक व दर्शन धर्म-कृत्यों के प्रति वे सदा जागरूक रहती थीं । सौभाग्यवती माता अगणित गुण रत्नो से विभूषित थी ।

जन्मोत्सव :

आपश्री जब गभ म आये, माता शृगार देवी को मन मन्द

मे उत्मोत्तम भाव आने लगे । धर्म, तप, दान, दया, सामायिक, प्रतिक्रमण एव साधु साध्वियो के दर्शन करके जीवन सफल करने की भावना जागृत होने लगी । पुण्यात्मा के पदार्पण के शुभ सकेत मिलने लगे । सम्पूण परिवार मे आनन्द का वातावरण था । कहा भी है कि भावी घटनाओ की प्रतिच्छाया पहले ही दृष्टिगोचर हुआ करती है । तदनुसार वि स १९७७ की ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया को इस पोखरणा वश का भाग्य सितारा चमक उठा । उषाकाल में इस तिलक का जन्म हुआ । शिशु का नाम 'गोवधन' रखा गया, परन्तु लाड प्यार व नन्हा होने के कारण 'नाना' नाम प्रसिद्ध हुआ ।

शैशवकाल

नन्हा गोवर्धन नन्हे कृष्ण की तरह जन्म-जात चपल, चचल परन्तु परोपकारी था, पूरे गाव की आखो का तारा था । एक दिन मे पचासो माताओ की गोद का सुख भोगता था । माता शृ गार देवी का यह लाडला बाल्यकालीन स्वाभाविक नटखट भी था । एक घटना का अवलोकन कीजिये ।

"सध्या का समय" माता शृ गार देवी कुछ महिलाओ के साथ बैठी सामायिक कर रही हैं । रेत की घडी रखी है । नाना बाहर से दौड कर दरवाजे मे प्रवेश करता है । नाना की दृष्टि ज्योही घडी पर पडती है वह घडी को झपट लेता है"

"माता यह घडी तो मैं खेलने के लिये लू गा ।"

"अरे नाना यह खिलौना थोडे ही है, देख मैं सामायिक कर रही हू, यह तो घडी है ।"

"मा ! दिन-रात मे तो ३० घडी होती हैं यह ३१ वीं कौनसी ?"

"इसके हाथ मत लगा, पाप लगेगा ।"

"यह तो मैं ही लू गा" कहते हुए नाना घडी बाहर ले जाता है ।

"और इसे फोडकर देखता हूं, पाप कहा भरा है ?"

क्या उस समय यह कल्पना भी की जा सकती थी कि यह घडी तोड कर पाप को निकालने वाला नाना भविष्य में शिथिलाचार की घडी तोडेगा ।

परोपकारी नाना

नाना जब किसी भी दु खी प्राणी को देखता, उसका हृदय भारी हो उठता था। बूढी औरतो के सिर से पानी का मटका सहर उनके घर रख देता। जाति का प्रश्न तो इसके मस्तिष्क में उठा ही न था। कोई भी बीमार व्यक्ति नाना से देखा नहीं जाता और मृत व्यक्ति को देख कर तो वह स्वय ही रो उठता, मन ही मन प्रश्न करता—क्या मैं भी मरूगा ? विद्यालय मे नाना अध्यापको का प्रिय भाजन था तो छात्रो का मुखिया। नतृत्व की भावना उसमें क्रमश अकुरित थी। इस तरह बालक नाना मे जीवन के सुप्त धार्मिक सं-कार जाग्रत होने लगे।

वैराग्य का उदय

अब नाना पूर्णरूपेण सज्ञान हो गया। वयानुसार माता-पिता नाना के लिये नये ससार की रचना मे लग गये। माता सोचती सदा कि कब मेरा यह होनहार नाना विवाह करके आगन को चमकावेगा। इधर भाग्य नाना को दूसरा आंगन चमकाने के लिये ले जाने लगा। एक बार मादसोडा जाना पड़ा। नाना को घुडसवारी का काफी शौक था। नाना वहा पर भी घोडी पर बैठ कर गया। और लोग तो मुनि श्री के पास सामायिक मे बैठ गये किन्तु नाना एक तरफ उठा मुनि श्री से कालचक्र का वर्णन सुन रहा था। बालक नाना कुछ समझ रहा था तो कुछ उसकी समझ से परे था। व्याख्यान सुनने के बाद नाना अकेला ही घोडे पर बैठ कर अपने ननिहाल को रवाना हो गया। घोडा धरती पर दौड रहा था। नाना का मस्तिष्क काल चक्र मे भ्रमण कर रहा था। रास्ते मे एक पीपल का पेड आया, घोडा अपने आप रुक गया। चिन्तन का वेग बढ़ा, व्याख्यान में जो कालचक्र सुना, अब वह प्रत्यक्ष सामने घूमने लगा, मन उपवन में तूफान उठने लगा-क्या मुझे भी दु खो की ज्वाला में जलना पड़ेगा क्या यह ससार केवल दु खों का ही घर है ? क्या यह संसार, परिवार मुझे मोक्ष-गामी बनने देगा ? अब नाना पीपल के पेड के नीचे त्याग, तप व विराग के झूले झूलने लगा। वाह रे पीपल का पेड और वाह प्रकृति ! तथागत बुद्ध को तो पीपल के पेड के नीचे सुजाता की खीर पीने पर ज्ञान प्राप्त हुआ और यहां पर तो हमारे नाना को प्रकृति स्वय महान-ज्ञान की खीर पिला रही है। धन्य है नाना को, महा

आत्मा को, जिसने उस जगल मे स्वय को स्वय ने बोध दिया । स्वय के लिये स्वय ने ही वैराग्य का दीपक जला दिया ।

नाना चिंतन करता है—'वह दिन कब आवेगा जब मैं सफेद परिधान पहन कर तप व त्याग के माध्यम से लोक व परलोक सुधारने मे तत्पर हो जाऊंगा ? मुनिवृत्ति धारण कर जन जीवन मे वीतराग धम जागृत करू तभी मेरा जीवन सार्थक है । मैं दीक्षा ग्रहण करके ही रहूगा ।'

साधना की राह पर

नाना के जीवन का अब कठिन अध्याय शुरु होता है । पिंजरे से भाग निकलने वाले सिंह की तरह "नाना" एक दिन आंख बचाकर जगत के सभी जाल को भेद कर परिवार से निकल पडता है । किनकिन मुनिराजो के सानिध्य मे नाना पहुचता है यह अपने आप मे एक इतिहास है । पोखरणा वश के इस उज्ज्वल नक्षत्र को ज्ञान की खोज में काफी भटकना पडा । उदयपुर से ब्यावर तक की यात्रा पैदल करनी पड़ी । भूख-प्यास, सर्दी गर्मी के थपेडे इस विरागी आत्मा को सहने पडे । इतना भटकने पर भी ज्ञान की गगा कहा ? कही पर मिथ्या पाखड को धम का धवल परिधान पहना रखा है, तो कही पर सद्वृति की मनगढत कपोल कल्पित धारणा । सर्वत्र सकीण विचार, अन्ध परम्परा एव शिथिलाचार । "नाना" जहा भी जाता धम की मजूषा मे आडम्बर भरा मिलता । कही पर शिष्य-सम्पदा का लोभ था तो कोई मुनि वेष को व्यापार बनाने के लिये प्रेरित करता । एक कहते हैं—"हमारे शिष्य बन जाओ तुम्हारे परिवार को मालामाल कर देंगे" दूसरे कहते हैं कि—"हमारे पथ मे दीक्षा लो, हम तुम्हें आचाय बना देंगे ।"

नाना सोचता—'क्या यही श्रमण धर्म है ! क्या सच्ची साधना लुप्त हो गयी है ! नहीं, नही मुझे प्रयास जारी रखना चाहिये । सच्चे गुरु के बिना नाना को शाति कहा ?

नाना को भाग्य का चक्र अब सही बिन्दु पर लाता है । नाना श्री गणेशाचाय के पास पहुचता है । वन्दना आदि के बाद साक्षात्कार होता है । प्रथम वार्तालाप में ही नाना का रोम-रोम पुलकित हो उठता है । नाना की अन्तरात्मा कहती है—आखिर मेरा प्रयास

सफल रहा, मुझे सच्चे गुरु मिल गए । नाना ने अनुभव किया कि गणेशाचार्य निर्ग्रन्थ श्रमण हैं, शुद्ध सयमी व निर्लोभी हैं, वास्तव में मोक्षमार्ग प्रदर्शक हैं ।

नाना को अपार शांति हुई और उन्होंने अपनी भाग्य नौका श्री गणेशाचार्य को सौंपने का निर्णय कर लिया । गुरुदेव की स्नेहमय मधुर वचनावली का नाना पर गहरा प्रभाव पड़ा । उन्होंने अपना मस्तक गुरु के पद-पंकज मे झुका लिया ।

संघर्षों पर विजय

नाना अपने प्रयास मे विजयश्री प्राप्त कर लेता है, परन्तु अब पारिवारिक संघर्षों का क्रम चलता है । नाना की भावना का पता परिवार को चलता है । डाट फटकार कर नाना दाता ले जाए गया । वहा पर कितने ही प्रलोभन बताए, परन्तु लक्ष्य को प्राप्त करने वाला थोड़े के लिए बहुत को गवाने को तैयार नही था । उसका मन साध्वाचार पालने और ज्ञान-वृद्धि की तरफ ही था ।

सहर्ष आनन्द से

नाना का माता पर बड़ा स्नेह था । माता की आखों के आसू उसके कलेजे को छू रहे थे । वह माता की कोमल भावना को जानता था। माता के आसुओं मे मोह नही किन्तु शुभाशीर्वाद था—"मैं समझ गई नाना, अब तू नही रुक सकेगा", मेरा आशीर्वाद है—"जन्म मरण की व्याधि से तू मुक्त होजा । मुक्ति-माता की गोद प्राप्त करले ।"

अंत मे उग्र वातावरण एकाएक सुधारस समान शान्त, शीतल और सरस बनता है । वैराग्य रस मे प्लावित नाना पुन अपने परिवार की आज्ञा लेकर श्री गणेशाचार्य जी की सेवा मे पहुचता है और संघर्षों पर विजय प्राप्त कर पूर्ण रूप से विरक्त जीवन व्यतीत करता है । श्री नाना ने वि सं १६६६ पौष शुक्ला अष्टमी सोमवार की मगल वेला में कपासन नगर में श्री गणेशाचार्य का शिष्यत्व स्वीकार किया । अत सारे नगर में हर्ष की लहर दौड़ गयी । जन-जन के मुख से नाना के वैराग्य की भूरि-भूरि प्रशंसा होने लगी ।

दीक्षा एक आध्यात्मिक प्रयोग है । केवल रंग-बिरंगे कपड़े उतार कर श्वेत पोशाक पहन लेना, रजोहरण, पात्र, शास्त्र स्वीकार कर लेना ही दीक्षा-व्रत नहीं कहलाता, यह तो केवल बाह्य चिह्न हैं।

दीक्षा तो वह है जिससे जीवन मे एक मर्यादा स्थापित की जाती है। जिसके कारण अतरात्मा मे अनूठा परिवर्तन परिलक्षित होता है।

प्रारम्भिक साधु जीवन

नाना अपनी दीक्षा के बाद सब सावद्य प्रवृति से निवृत्त हो कर मनसा-वाचा कमणा प्रवचन-माता की आराधना में जुट गये। पाच महाव्रतो का पालन करते हुए समयानुसार ज्ञान ध्यान, विनय और गुरु भक्ति मे सदैव जागरूक रहते हुए मुनि जीवन को सायक करने लगे।

मुनि श्री अभी नवदीक्षित थे, परन्तु विनय-विवेक व्यवहार मे बडे कुशल थे। पहले ज्ञान फिर दया इस सिद्धांत के आप पक्के हिमायती हैं। इस कारण ज्ञान सम्पादन सग्रह करने की तीव्र अभिलाषा रखते हुए गुरुजनो का आदर करने मे हमेशा आगे रहे।

पुण्योदय से गुरुदेव भी आपको इस युग मे एक महान स्पष्ट वक्ता मिले। श्री गणेशाचाय जी ने साधु सघ की पवित्रता के लिये पद एवं प्रतिष्ठा का सदैव त्याग किया। उन्होने शिथिलाचार को प्रश्रय नही दिया। गुरुदेव के समस्त गुण लोभी वणिक् की तरह आपने ग्रहण कर लिये।

प्रारम्भ से ही आपकी दिन-चर्या बडी सुव्यवस्थित रही है। गुरुदेव द्वारा दिये गये नवीन पाठ को याद करना, स्वाध्याय मे रत रहना, बडे मुनियो के पधारने पर खडे होकर सत्कार करना तथा प्रत्युतर मे 'तहत' कहकर गुरुवाणी का सम्मान करना, मित भाषा का प्रयोग, आलस्य का परिहार कर द्रव्यानुयोग का चिन्तन करना आपकी दिनचर्या के मुख्य अग रहे हैं।

कुछ प्रकृति संबधित अनुपम विशेपतायें भी आप मे हैं। पुष्प के समान कोमलता, पर्वत के समान अडिगभाव, सूय के समान तेजस्विता, वृक्ष के समान समता, धरती के समान क्षमता एव कमल के समान पवित्रता आपके अन्तरंग जीवन की विशेषतायें हैं।

ज्ञानार्जन का अवसर

मुनि श्री नानालाल जी ग्रामानुग्राम विहार एव शासन प्रभावना करते हुए चातुर्मासार्थ गुरुदेव के साथ फलौदी पधारे। स्थानीय जनता हर्ष-विभोर होकर शात सौम्य मुखाकृति का दशन करके अपने आपको धन्य मानने लगी। यहां आपको अध्ययन की पूण सुविधा

मिली। अध्ययनोपयोगी समस्त सामग्री प्राप्त हो गई। इस स्वर्णिम अवसर का आपने पूरा लाभ लिया और आशातीत ज्ञान-सम्पादन किया। ज्ञान-वृद्धि मे यह चातुर्मास आशातीत सफल रहा।

गुरु एव शिष्य का सुमेल

श्री गणेशाचार्य के स्तुत्य-सगम के प्रभाव से नवदीक्षित नाना मुनि की ज्ञान-पिपासा बढ़ती गई। आप केवल साधु वेश पहन कर सतुष्ट नहीं हुए। गुरुदेव का सफल नेतृत्व पाकर उभरे हुए विचार कणो को कार्य रूप मे परिणत करने लगे। गुरुदेव भी ऐसे ही सुपात्र मे ज्ञान पीयूष उडलने लगे और नाना मुनि अपने ज्ञान खजाने को भरने लगे।

मुनि श्री नानालाल जी का जीवन प्रारम्भ से ही दिनकर की भाति देदीप्यमान था। स्मित हास्य, इन्द्रिय-विजय, मार्मिक वाचा नही बोलना, शुद्धाचार और सत्यानुराग आपके जीवन के मुख्य अंग हैं। ऐसे सुयोग्य पात्रो मे रत्नत्रय का अक्षय भडार होता ही है। वैराग्य का तेज सदैव आपके चहरे पर झलकता रहा है।

गुरु का शुभाशीर्वाद

मुनि नानालाल जी अधिक से अधिक ज्ञान पाकर भी सदैव नम्र रहे हैं, यही उनके यश का कारण है। शान्त स्वभावी गुरु और विनय विवेकी, सुविचारी शिष्य का मेल भी एक महान कार्य का द्योतक है। ऐसे विनीत शिष्य को पाकर गणेशाचार्य सदैव प्रसन्न थे और ऐसे योग्य विनीत विद्वान व्याख्याता शिष्य पर उनका सदैव आशीर्वाद रहता था। आपने उदयपुर मे अपना उत्तराधिकारी (सघ शासक) के रूप मे मुनिश्री नानालाल जी का चयन किया। अब आप युवाचार्य बन गये।

सघ के उन्नायक आचार्य देव

उदयपुर मे राज-महलो के प्रागण मे अपार जनसमूह मे जय घोषो के मध्य वि सं २०१६ मिती आसोज शुक्ला २ रविवार दि ३० सितम्बर १९६२ को महाश्रमण श्री नानालाल जी म सा को युवाचार्य पद प्रदान किया गया। माघ कृष्णा २ सं २०१९ को श्री गणेशाचार्य ने जब अपने नश्वर शरीर का त्याग किया और आचार्य देव श्री नानालाल जी के कन्धो पर संघ के उत्थान का भार आया तब आपके सामने नई विकट समस्यायें खडी हो गई। एक तरफ

शिथिलाचारियो का आक्रोश तो दूसरी तरफ समाज को नया रूप देने का संकल्प । आपका एक सिद्धात रहा है स्वान्त सुखाय के साथ साथ सवजनसुखाय और इसी सिद्धात को आगे बढाने के लिये आपने कई लोक कल्याणकारी योजनायें घोषित की, जिनके प्रकाश से आज चतु विध सघ जगमगा रहा है ।

सफल अनुशास्ता :

आचाय नानेश एक सफल सबल अनुशासक की श्रेणी मे गिने जाते हैं । आपके जीवन का एक-एक क्षण मर्यादा में बीत रहा है । शास्त्रीय मर्यादा का पालन करना और अपने शिष्यो से पालना करवाना आप अपना कतव्य समझते हैं । आपके शासन मे न कटुता, न कपटपूण व्यवहार और न ही दिखावटी दृश्य हैं । सरलता, समता, कथनी-करणी की समन्वयात्मकता, आपकी प्रेरणा के बिन्दु हैं । इन्ही आदर्शों की छाप आपकी शिष्य-सम्पदा पर पड रही है । भारत के कोने-कोने में विचरण कर रहे आपके शिष्य व्यर्थ के पाखण्डो से दूर केवल आत्म कल्याण करने मे ही लगे हैं ।

कलात्मक जीवन

आचार्य 'नानेश' अपने कलात्मक जीवन के कारण इस समय एक दिव्य ज्योति के रूप मे हमारे सामाजिक क्षेत्र को आलोकित कर रहे हैं । आपकी वाणी मे अथाह माधुर्य के साथ-साथ जनमानस को छूने वाला चुम्बकीय जादू है । आपके व्याख्यान के लिये जनमानस तरसते हैं । वाणी प्रवाह मे वैराग्य शान्त रस के झरने बहते हैं । बच्चे से लगाकर बूढे तक आपके व्याख्यान से मुग्ध हुए बिना नही रहते । आपके प्रवचनो की छाया सर्व साधारण पर सदैव अंकित रहती है । किसान, मजदूर, अनपढ़ आदि सभी आपके व्याख्यानो को सुनना अपना अहोभाग्य समझते हैं । वास्तव में आपका जीवन एक कलाकार का जीवन है जो भूले भटके राहगीरो को कलात्मक जीवन-यापन के लिये प्रेरित करता है ।

समाज-सुधार के अग्रदूत

एक युगपुरुष के रूप मे आचाय नानेश समाज मे व्याप्त बुराइयो एव निरर्थक रूढियो का प्रतिकार कर रहे हैं । आज समाज सुधार की महती आवश्यकता है । रूढीवाद की गलत जंजीरो मे जकडा

समाज संकीर्ण विचारो मे उलझ कर दम तोड रहा है, मिथ्या पाखण्ड धर्म की हानि कर रहा है। आचार्य जी ने इन कुरीतियों के निवारण के लिए कई व्यावहारिक कार्यक्रम प्रसारित किये हैं। मृत्यु भोज, दहेज-प्रथा एव व्यर्थ के आडम्बरो से होने वाली हानिया का आचार्य जी बराबर सकेत करते रहते हैं। दहेज प्रथा को समाज का कलंक मानते हैं। आचार्य देव के इस संकेत से सर्वत्र सुधारो की लहर दौड़ रही है। आप जो सुधार चाहते हैं वह दिखावटी नहीं अपितु धार्मिक शिक्षा से अनुप्राणित सुधार चाहते हैं।

समता दर्शन

आचार्य नानेश सामाजिक बुराइयो के साथ व्यक्ति के अन्दर में बैठी बुराइयो को भी उखाडने का विशाल अभियान चला रहे हैं। विषमता की खाई में फसे व्यक्तियो को आपने समता का एक अत्यन्त ही व्यवहारिक दर्शन दिया है। भाई भाई मे द्वन्द्व की दीवारें खड़ी हैं। विषमता की आग मे मानव जल रहा है। सर्वत्र विषमता का नाग जहर उगल रहा है। व्यक्तिवाद की इस घुटन का क्षय करने के लिए आपने समता का दर्शन प्रस्तुत किया कि हम अपने साथ सबको दूसरों को समझें। दूसरों की आत्मा में भी अपनी आत्मा के दर्शन करें। समता के द्वारा ही हृदय परिवर्तन किया जा सकता है।

पतित-पावन नानेश

पतितो को पावन करना आपके दर्शन का एक मुख्य अंग है। मालवा मे इस समय आपकी प्ररणा से 'धर्मपाल' प्रवृत्ति चल रही है। इस प्रवृत्ति से हजारों व्यक्ति अपने जीवन को नया रूप दे रहे हैं। दुर्व्यसनों, शराब, मास, धूम्रपान, वैश्यागमन आदि छोड़कर एक आदर्श जीवन व्यतीत कर रहे हैं। गन्दे गीतो का स्थान धर्म-गीत ले रहे हैं। इसका एक दृश्य देखिये—

बलाईयो की एक पचायत हो रही थी। करीबन २ हजार व्यक्ति कुव्यसनो मे लीन हो कर मानवता का घृणित उदाहरण प्रस्तुत कर रहे थे। आचार्य देव वहा पहुंचते हैं।

"अरे देखो ये महाजनों के महाराज इधर आ रहे हैं।" एक बोला।

"आते होंगे, चलने दो शराब के पेग।" दूसरा बोला।

"अरे ये तो हमारे ही पास आ गये, खडे होकर प्रणाम करो।" तीसरा बोला।

"हमारे क्या लगते हैं। ये तो बणियों के महाराज हैं, अभी वापस चले जावेंगे।" एक बोला।

औरतें गन्दे गीत गा रही हैं, उनको नहीं रोकना, गाने दो।" एक बोला।

आचार्य देव एक चबूतरी पर बैठ गये। सभी व्यक्ति हाथ जोड कर खडे हो गये। आचार्य देव ने उनसे कहा।

"भाईयो, एक बात कहू, मानोगे।"

"अच्छी बात हुई तो अवश्य ही मानेंगे।" एक व्यक्ति बोला।

'भगवान कहा रहते हैं, शरीर या मन्दिर में।'

'दोनो जगह रहते हैं' हाथ जोडकर दूसरा बोला।

'मन्दिर में भगवान को अगरबती जलाते हो या बीडी ?'

"अगरबत्ती, भगवान के तम्बाकू नही चढ़ती।" एक बोला।

"जब इस शरीर में भी भगवान रहते हैं तो, क्या शराब तम्बाकू चढाना अच्छा है ?"

"नहीं यह तो बुरी बात है। हम आपकी बात मानते हैं।" एक बोला।

"क्या आप इन बुराइयो को छोडना पसन्द करेंगे ?"

हाँ, हम आपकी बात मानते हैं।

और देखते ही देखते उन सभी ने कुछ व्यसनो को छोडना स्वीकार कर लिया और हर्ष पूवक आचार्य श्री की जय-जयकार करने लगे। आज ये धमपाल सामायिक प्रतिक्रमण करते हैं, मगल पाठ सुनते हैं, त्याग तपस्या करते हैं यह उत्थान नानेश के उपदेश से आया है। सक्षिप्त कहें तो नानेश पतित पावन हैं।

तोडने की जगह छोडने का सिद्धान्त

आपकी धर्मकला के चमत्कार से कई द्वन्द्व की दीवारें टूटती जा रही हैं। कई सामाजिक झगडे समाप्त हो गये हैं। वैमनस्य से पीडित हजारो परिवार प्रेम व शान्ति का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हर ग्राम में, हर शहर में जहा भी आपका पदार्पण होता है द्वन्द की जगह प्रेम अपने आप आ जाता है।

आपके मानवता वादी दृष्टिकोण से कई जगह खिची त- वारें अपने आप म्यान मे चली गई । आपका सम्प्रदाय वाद में विश्वास नही है ।

आप कोरी प्रतिष्ठा पूजा और नारे बाजी में विश्वास नहीं करते हैं । रायपुर मे आपके नाम के पर्दे को लेकर जब टकराते की स्थिति बनी । और आचार्य देव को ज्योंही यह झलक मिली आपने कहा 'मैं यहा तोडने नही वरन् जोडने आया हूं । मैं आपके हृदय में प्रेम का रसास्वादन करने, करवाने एव प्रेम का रस उडेलने आया हूं। एक निर्जीव पर्दे को लेकर इतना द्वन्द क्यो ? क्या धरा है इस पर्दे में, उतार दो इस द्वन्द के पर्दे को, प्रेम व स्नेह इस पर्दे से कहीं बढ़ कर है।'

शिष्य सम्पदा

आचाय देव की विशाल शिष्य-सम्पदा भारत के कोने कोने में बिखरी है । इनकी सयम-यात्रा पवित्र है, पच महाव्रत का पालन करते हुये ये श्रद्धेय साधु साध्वी केवल तप-त्याग व आध्यात्मिक उत्कर्ष के पथिक हैं । शिथिलाचार इनके पास नही फटकता । आधे से ज्यादा शिष्य २५ वर्ष से कम आयु के बाल ब्रह्मचारी हैं । स्वाध्याय में रत रहना, ज्ञानोपाजन, चिन्तन मनन, सुधा भरी वाणी का प्रवाह, हित मित भाषा का प्रयोग, आलस्य का परिहार करना और आगमों का चिन्तन करना इन भव्य आत्माओ की दिनचर्या है ।

गुरु भगवन्त इन पात्रो में ज्ञान पीयूष भरते हैं । शिष्य के लिये गुरु का वात्सल्य जीवन दायिनी शक्ति है । आचार्य "नानेश" को पाकर शिष्य अपने आपको धन्य समझते हैं । आचार्य प्रवर के अनुशासन मे रहना, उनके बताये हुये आदर्शों को जीवन प्रयोग द्वारा कार्यान्वित करना अपना धर्म समझते हैं । उनके सिद्धान्तो का मनन, आचरण व चिन्तन करते हैं । अपने से वृद्धों की सेवा और मन-वचन काया से अनुशासन की परिपालना इनके मुख्य अग हैं ।

दुर्लभ रत्न

आचाय भगवन्त ने अपने शिष्य रूप पात्रों मे ज्ञान पीयूष भरने का अथक प्रयास किया है । एक से एक ज्ञानी सन्त रत्नों का निर्माण कर आपने अपने पावन कर्त्तव्य का सम्यक निर्वाह किया है । इन्हीं रत्नो मे एक दुर्लभ रत्न उभर कर सामने आया है जो

ाज हमारे सामने युवाचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म सा के रूप
है । युवाचाय जी का निर्माण कर आचार्य श्री जी ने अपने जीवन
ी सर्वोच्च सफलता प्राप्त की है । आशा की प्रखर किरण चमक रही
कि क्रियोद्धारक पूज्य स्व आचाय श्री हुक्मीचन्द जी म सा द्वारा
तिमान पावन पन्थ पूर्वाचार्यो के कठिन परिश्रम, सम्यग् ज्ञान दर्शन
ारित्र के आलोक एव वतमान शासन नायक के शुभाशीर्वाद के साथ
वाचार्य श्री के कुशल निर्देशन मे सतत् चलता रहेगा ।

सयम · आगमिक दृष्टि

● अमिताभ नागोरी

Δ चउव्विहे सजमे—
मणसजमे, वइसजमे, कायसजमे, उवगरणसजमे ।

सयम के चार रूप हैं—
मन का संयम, वचन का सयम, शरीर का सयम और उपधि-सामग्री का सयम । चारो प्रकार का संयम ही सम्पूण सयम है ।
—स्थानाग सूत्र ४/२

Δ गरहा सजमे, नो अगरहा सजमे ।
गर्हा (पापो के प्रति घृणा करके आत्मा की निन्दा करना) सयम है, अगर्हा सयम नही है । —भगवती सूत्र १/९

Δ भावे अ असजमो सत्थ ।
भावदृष्टि से ससार मे असयम ही सबसे वडा शत्रु है ।
—आचारागनियुक्ति ९६

Δ मणसजमो णाम अकुसल मणनिरोहो,
कुसलमण उदीरण वा ।
अकुशल मन का निरोघ और कुशल मन का प्रवर्तन-मन का सयम है । —दशवैकालिकचूर्णि १

—सेठिया जैन लाइब्रेरी, बीकानेर (राज)

युवाचार्य श्री राम परिचयालोक में

—चम्पालाल शाप

अध्यात्म जगत् मे भारतवर्ष सब देशो का गुरु है। भारत भू के राजस्थान प्रान्त का इस क्षेत्र मे अपना विशिष्ट स्थान है। इस राजस्थान के मरु प्रदेश मे बीकानेर जिले मे देशनोक कस्बा है, जहाँ जैनियो की लगभग ५०० घरो की बस्ती है। अधिकाश धन धान्य से सम्पन्न होने के साथ साथ यहा के निवासी धर्म सम्पन्न भी हैं।

यह वह तपो भूमि है जहा घोर तपस्वी उच्च क्रियाधर महामुनि श्री ईश्वरचन्दजी म सा का जन्म हुआ। यह वह पुण्य भूमि है जहाँ शासन प्रभाविका परम विदुषी साध्वी रत्ना श्री नानूकवरजी म सा ने जन्म लिया। अन्य अनेक संयमपूत आत्माओ ने यहाँ जन्म ग्रहण कर इस भूमि को सन्त प्रसू भूमि बनने का गौरव प्रदान किया है।

इसी धर्म नगरी मे श्रेष्ठिवर्य श्री नेमचन्द जी भूरा निवास करते थे। भाग्यशाली भूराजी धर्म ध्यान मे अग्रणी थे। उनकी धर्म पत्नी श्री गवरा देवी भी अत्यन्त सरलमना एवं धर्मनिष्ठ महिला है।

माँ गवरां के एक पुत्र श्री मागीलाल जी एव पांच पुत्रियाँ १ मोहिनी, २ इन्द्रा, ३ झमकू, ४ कमला एवं ५ विमला हुई। इनके अलावा एक पुत्र एवं दो पुत्रिया लघुवय में ही इस नश्वर संसार से रिश्ता तोड महाप्रयाण कर गए।

एक दिन माता गवरा सुख शय्या पर अर्ध निद्रित-अर्ध जागृत अवस्था मे सोयी हुई थी। एक स्वप्न आया। शुभ स्वप्न। स्वप्न में देखा कि किसी अदृश्य शक्ति ने उनकी गोद मे एक तेजस्वी, दीप्तिमन्त बालक को लाकर रख दिया है और सचमुच हुआ भी यही कि नौ माह बाद एक पुण्य पुरुष को जन्म देने का गौरव प्राप्त किया माता गवरां ने। माता धन्य-धन्य हो गई, कृतार्थ हो गई। वह अपने भाग्य की सराहना करने लगी। शुभकारी मंगलकारी पुत्र जन्म के बाद इस परिवार में हर्ष एव आनन्द की असीम लहर व्याप्त हो गई।

भूराकुल मे राशि, ग्रह एव नक्षत्र के आधार पर नामकरण की परम्परा नही हैं । भुआ ही सन्तान के नामकरण सस्कार का कार्य सम्पादित करती है । तदनुसार 'जय' के प्रतीक बालक का नाम रखा गया—'जयचन्द' ।

बालक जयचन्द प्राय व्याधियो से घिरा रहता । व्याधियो के कारण जन भावना के अनुसार पारिवारिक जन लाडले जयचन्द को धूलचन्द या धूलिया अथवा फूसराज अथवा फूसिया कहकर पुकारने लगे ।

कालान्तर मे 'बाबा रामदेवजी' के नाम पर बालक को रामलाल कहने लगे वास्तव मे यह नाम "रमन्ते योगिनो यस्मिन् इति राम" इस सच्चे अर्थ मे चरितार्थ हुआ ।

माता पिता ने लम्बे समय तक उपचार करवाया, देवी देवताओ की मनौतिया की । झाडफूक के लिए जिसने जैसा कहा वैसा उपाय किया परन्तु रोग में कुछ भी फर्क नही पड़ा ।

नाम परिवर्तन के बावजूद रोग से छुटकारा नही मिला, रोग न्यूनाधिक रूप मे चलता ही रहता था ।

बालक राम तीन चार वर्ष का था । देशनोक मे ही रामनाथ जी खत्री से 'पहाडा' पढ़ने लगे । कुछ दिनों मे ही अच्छा ज्ञानार्जन कर लिया । माता पिता सस्कार निर्माण के लिए बालक को स्कूल में भर्ती कराना चाहते थे । अध्यापक ने पूछताछ (इन्टरव्यू) की । बालक के उत्तर अध्यापक को आश्चर्य मे डालने वाले थे । एक एक उत्तर सुनकर अध्यापक सहित सभी अन्य व्यक्ति भी दग रह गए । अध्यापक ने पूछा—कौनसी कक्षा में भर्ती करना ? संरक्षको ने कहा—पहली कक्षा में ही भर्ती करना ठीक रहेगा । अध्ययन और अधिक ठोस होगा ।

माघ शुक्ला पचमी का दिन था । राम को नये कपड़े पहनायें, ललाट पर तिलक किया । पाटी (स्लेट) बरता (पेन्सिल) देकर स्कूल में विधिवत् भर्ती कराया । उस समय बालक राम कभी स्कूल जाता कभी नहीं जाता । वैशाख मे वार्षिक परीक्षा आ गई । राम ने कुछ समय ही अध्ययन किया फिर भी परीक्षा दी । परीक्षा मे अच्छे मार्कों से उत्तीर्ण हुआ ।

नया वर्ष आया, दूसरी कक्षा मे प्रवेश मिला । मोनिटर रामलाल मेघवाल था । बालक राम मोनिटर से पहाड़ा लेता और याद

युवाचार्य श्री राम परिचयालोक में

—चम्पालाल डागा

अध्यात्म जगत् मे भारतवर्ष सब देशो का गुरु है। भारत भू के राजस्थान प्रान्त का इस क्षेत्र मे अपना विशिष्ट स्थान है। इस राजस्थान के मरु प्रदेश मे बीकानेर जिले में देशनोक कस्बा है, जहाँ जैनियो की लगभग ५०० घरो की बस्ती है। अधिकाश धन धान्य से सम्पन्न होने के साथ-साथ यहा के निवासी धर्म सम्पन्न भी हैं।

यह वह तपो भूमि है जहा घोर तपस्वी उच्च क्रियाधर महामुनि श्री ईश्वरचन्दजी म सा का जन्म हुआ। यह वह पुण्य भूमि है जहा शासन प्रभाविका परम विदुषी साध्वी रत्ना श्री नानूकवरजी म सा ने जन्म लिया। अन्य अनेक संयमपूत आत्माओ ने यहा जन्म ग्रहण कर इस भूमि को सन्त प्रसू भूमि बनने का गौरव प्रदान किया है।

इसी धर्म नगरी मे श्रेष्ठिवर्य श्री नेमचन्द जी भूरा निवास करते थे। भाग्यशाली भूराजी धर्म ध्यान मे अग्रणी थे। उनकी धर्मपत्नी श्री गवरा देवी भी अत्यन्त सरलमना एवं धर्मनिष्ठ महिला हैं।

माँ गवरां के एक पुत्र श्री मागीलाल जी एव पाँच पुत्रियाँ १ मोहिनी, २ इन्द्रा, ३ भमकू, ४ कमला एवं ५ विमला हुई। इनके अलावा एक पुत्र एवं दो पुत्रिया लघुवय में ही इस नश्वर संसार से रिश्ता तोड महाप्रयाण कर गए।

एक दिन माता गवरां सुख शय्या पर अर्ध निद्रित अर्ध जागृत अवस्था मे सोयी हुई थी। एक स्वप्न आया। शुभ स्वप्न। स्वप्न में देखा कि किसी अदृश्य शक्ति ने उनकी गोद मे एक तेजस्वी, दीप्तिमान बालक को लाकर रख दिया है और सचमुच हुआ भी यही कि नौ माह बाद एक पुण्य पुरुष को जन्म देने का गौरव प्राप्त किया माता गवरां ने। माता धन्य धन्य हो गई, कृतार्थ हो गई। वह अपने भाग्य की सराहना करने लगी। शुभकारी मंगलकारी पुत्र जन्म के बाद भूरा परिवार मे हर्ष एव आनन्द की असीम लहर व्याप्त हो गई।

भूराकुल मे राशि, ग्रह एव नक्षत्र के आधार पर नामकरण परम्परा नही हैं। भुआ ही सन्तान के नामकरण सस्कार का कार्य सपादित करती है। तदनुसार 'जय' के प्रतीक बालक का नाम रखा गया—'जयचन्द'।

बालक जयचन्द प्राय व्याधियो से घिरा रहता। व्याधियो के कारण जन भावना के अनुसार पारिवारिक जन लाडले जयचन्द को धूलचन्द या धूलिया अथवा फूसराज अथवा फूसिया कहकर पुकारने लगे।

कालान्तर मे 'बाबा रामदेवजी' के नाम पर बालक को रामलाल कहने लगे वास्तव मे यह नाम "रमन्ते योगिनो यस्मिन् इति राम" इस सच्चे अर्थ मे चरितार्थ हुआ।

माता पिता ने लम्बे समय तक उपचार करवाया, देवी देवताओ की मनौतिया की। झाडफूक के लिए जिसने जैसा कहा वैसा उपाय किया परन्तु रोग में कुछ भी फर्क नही पड़ा।

नाम परिवर्तन के बावजूद रोग से छुटकारा नही मिला, रोग न्यूनाधिक रूप मे चलता ही रहता था।

बालक राम तीन चार वर्ष का था। देशनोक मे ही रामनाथजी खत्री से 'पहाडा' पढने लगे। कुछ दिनों मे ही अच्छा ज्ञानार्जन कर लिया। माता पिता सस्कार निर्माण के लिए बालक को स्कूल में भर्ती कराना चाहते थे। अध्यापक ने पूछताछ (इन्टरव्यू) की। बालक के उत्तर अध्यापक को आश्चर्य मे डालने वाले थे। एक एक उत्तर सुनकर अध्यापक सहित सभी अन्य व्यक्ति भी दग रह गए। अध्यापक ने पूछा—कौनसी कक्षा में भर्ती करना? संरक्षको ने कहा—पहली कक्षा में ही भर्ती करना ठीक रहेगा। अध्ययन और अधिक ठोस होगा।

माघ शुक्ला पचमी का दिन था। राम को नये कपड़े पहनायें, ललाट पर तिलक किया। पाटी (स्लेट) बरता (पेन्सिल) देकर स्कूल मे विधिवत् भर्ती कराया। उस समय बालक राम कभी स्कूल जाता कभी नहीं जाता। वैशाख मे वार्षिक परीक्षा आ गई। राम ने कुछ समय ही अध्ययन किया फिर भी परीक्षा दी। परीक्षा मे अच्छे अकों से उत्तीर्ण हुआ।

नया वर्ष आया, दूसरी कक्षा मे प्रवेश मिला। मोनिटर रामलाल मेघवाल था। बालक राम मोनिटर से पहाडा लेता और याद

करता । मोनिटर ने कहा—जिसको जो पहाड़ा लेना हो तो ले लें। राम ने कहा—मुझे एका एका एका, बिलबिलिये रा चौका, तिया तिया नका, चौका चौका सोला, का पहाड़ा दो ।

रामलाल मेघवाल ने कहा—कक्षा मे मजाक क्या करता है? बार बार पहाड़ा के बारे मे पूछने पर भी राम यही कहता—मुझे उक्त पहाड़ा दो । आखिर मोनिटर राम को कक्षा अध्यापक के पास ले गया ।

अध्यापक ने कहा—तुम्हारी शिकायत है । कक्षा में मजाक करते हो । ऐसा क्यो करते हो ? राम ने कहा—मोनिटर ने कहा—पहाड़ा मागो तब पहाड़ा मागा । अध्यापक—क्या मांगा ? राम ने कहा—एका एका एका, बिलबिलिये रा चौका—पहाड़ा मागा ।

अध्यापक—क्या इससे पहले के पहाड़े आते हैं ?

राम—हां, आते हैं ।

अध्यापक—बोलो ।

राम ने तत्काल ढाया, ड्योढ़ा, ढूंचा सभी मालनी तड़ातड़ सुना दी । सुनकर अध्यापक अत्यन्त प्रसन्न हुआ । प्रतिभा देखकर राम को कक्षा का मोनिटर बना दिया । तीन वर्ष तक फिर राम ही मोनिटर रहा ।

राम अध्ययन के क्षेत्र में आगे से आगे बढ़ता गया । कक्षा पाचवी में प्रवेश हो चुका । चर्म रोग ने पुन कुछ उग्र रूप धारण कर लिया । पारिवारिक जनो ने विचार किया—बिहार में यह चर्म रोग ठीक हो सकता है । अत बालक को वनमनखी (बिहार) ले चलना चाहिए । विचार कार्य रूप मे ढले और राम को देशनोक से वनमनखी ले गये ।

वनमनखी मे कक्षा छ और सात तक विद्याध्ययन किया । इसी दौरान राम ने प्रयास कर वनमनखी मे "मारवाड़ी छात्र संघ" का गठन किया । जिसका कोषाध्यक्ष स्वयं राम को बनाया गया ।

सर्दी की अपेक्षा गर्मी के दिन बड़े होते हैं । मध्याह्न की प्रचंड गर्मी घर से बाहर निकलने को निषेध करती है । चाहे वृद्ध हो या जवान अथवा बालक । सभी घर या छाया में दुबक कर बैठना पसन्द करते हैं । ऐसे अवसर पर ताश शतरज इत्यादि खेलकर प्राय लोग

अपना समय व्यतीत करते हैं।

बालक राम भी गर्मी के दिनो मे ताश खेल रहा था। बच्चो-बच्चो मे चर्चा चली कि—कौन क्या बनेगा ? किसी ने सेठ, किसी ने व्यापारी, किसी ने अध्यापक तो किसी ने और ही कुछ कहा। परन्तु भाग्यशाली बालक राम के मुह से निकला—मैं साधु बनू गा।

साथियों ने तत्काल कहा—इस बात की लिखा पढ़ी करो। वस्तुत लिखा पढी हुई। उस पर सभी के हस्ताक्षर हुए। रेवेन्यू स्टाम्प लगाई गई और काम पक्का किया गया। अब साथी कहने लगे—अगर तू साधु बन गया तो हम अमुक त्याग करेंगे, कोई कहता—हम अमुक त्याग करेंगे। कौन क्या त्याग करेगा इसकी सूची (तालिका) बनाई गई।

चचेरे भाई ने यह सारा वृत्तान्त राम के पिता श्री नेमचन्द जी को कह सुनाया। पिता ने कहा—कोई (साधुपना) लेने वाला भी हो.. ..।

राम समय का पाबन्द और नियम का दृढ़ था। स्कूल मे पढ़ने जाता तो घर से समय पर जाता और पुन समय पर घर चला आता। यह नहीं कि कहीं ठहर गया, बातचीत मे लग गया या इधर उधर घूमने चला गया। समय पर आना समय पर जाना—यह नियमितता थी बालक राम मे।

राम फिजूलखर्ची से दूर संग्रहशील वृत्ति का था। माता पिता भाई इत्यादि के विदा होने पर अथवा किसी प्रसग पर कभी भी कुछ रुपये मिलते तो तत्काल उसे ब्याज पर जमा करा देता। हर माह रुपये बढाता। फिर ब्याज पर जमा करा देता। इस प्रकार सवर्धन का काम भी चलता रहता।

राम की उम्र सात वर्ष के लगभग थी। देशनोक मे शा प्र, विद्वान श्री सत्येन्द्र मुनिजी म सा का चातुर्मास था। राम ने प्रवचन, सत्संग का भरपूर लाभ उठाया। उसी समय सन्तो से प्याज, लहसुन, चाय के तो त्याग थे ही, परन्तु बालको के जो प्रिय खेल है—गोले, गिल्ली-डडे इत्यादि के त्याग भी कर दिये। इन त्याग के लिए माता इत्यादि ने निषेध किया परन्तु बालक के अत्याग्रह पर मुनिराज ने "स्थिरता प्रमाणे" त्याग कराये। इस त्याग की स्थिरता आज तक

अखण्ड चल रही है।

कथा, कहानी, बौद्धिक गणित की पहेलिया इत्यादि की रुचि राम को अधिक थी। श्री सत्येन्द्र मुनिजी म सा, मुनि श्री कमलजी म सा, श्री ईश्वरचन्दजी म सा इत्यादि सन्तों के देशनोक प्रवास का बालक ने पूरा लाभ उठाया और रुचि अनुसार कथा, कहानी सुनता रहता। साथ-२ सत्संस्कार भी प्राप्त करता रहता।

राम उत्पातिया बुद्धि सम्पन्न था। लगभग १० वर्ष की लघु वय मे विवाह शादी इत्यादि कार्य मे कसे क्या करना, कितना करना, किसको क्या देना इत्यादि तथा परिवार को सम्भालने का काम तक करने मे सक्षम हो गया।

राम एक बार मोठ (धान्य विशेष) लेने अपने साथी के साथ गया। साथी ने कहा मोठ हाट का लेना चाहिए। आपने कहा—नहीं छाट का लेना। अन्त मे छाट का लिया जो सस्ता तो पड़ा ही, अच्छा भी था।

हाट मे अनेक जगह के मोठ मिले हुए होते हैं जबकि छाट मे माल निखालिस होता है। राम सदा शुद्ध वस्तु ही पसन्द करता चाहे पैसा कुछ ज्यादा भी क्यो न लगे। किसी भी कीमत पर विशुद्धि की चाह बालक में दिन व दिन बढ़ती गई।

बालक राम की उम्र बढ़ती जा रही थी। उम्र के साथ अनुभव योग्यता एव दक्षता भी बढ़ती जा रही थी। बालक वय को पार कर किशोर वय मे प्रवेश हो चुका था। किशोर राम की उम्र लगभग १५ वर्ष की थी।

भाई मागीलाल जी की धर्मपत्नी को भाव आये। माँ गवरां ने पूछा—इस राम को काम या नौकरी कब मिलेगी ?

श्रीमती मागीलाल जी ने कहा—एक वर्ष मे नौकरी लग जायेगी। किशोर राम को इन सब पर कोई विश्वास नही था। उसने दृढतापूर्वक कहा—यह सब पाखंड है। मैं एक वर्ष तक तो अब कोई काम करूगा ही नही। वस्तुत फिर एक वर्ष तक कहीं काम किया ही नही।

माताजी ने जोर से कहा—बलिया रे" उसी समय निर्भय किशोर राम ने कहा—बता तू कौन है, क्या नाम है तेरा ? उसने

कहा—मैं भभूतमलजी हू। राम ने तत्काल कहा—देख लिया भभूतमल जी को। अपने नाम के आगे भी कोई "जी" लगाता है ? मैं नहीं मानता ये सब कुछ। पाखण्ड है ! पाखण्ड !!

किशोर अन्त तक दृढ़ रहा। भय से मौत होने का नाम नही। देव गुरु धम पर अविचल आस्था ! अडोल मन !! शुद्ध श्रद्धान!!

राम की उम्र १६ १७ वष की होगी। वह प्रकृति की सुरम्य गोद मे बसे देशनोक में घर पर क्रान्तदृष्टा आचार्य श्री जवाहर की अमर कृति "अनाथ भगवान" पुस्तक पढ रहा था। बाह्य चक्षुयुगल ही नही, अन्तर के दिव्य नेत्र भी खुले थे। ओह ! क्या अनाथी के धम सकल्प करने मात्र से रोग उपशात हो गया ! धम की शक्ति अमाप है धम की शक्ति वर्णनातीत है। मेरा चम रोग भी ठीक हो सकता है ? राम का चिन्तन गहरा होता गया। उसने भी सकल्प दृढ कर लिया। सकल्प था—"अगर २ वप तक चर्म रोग ठीक रहा तो मैं साधु बन जाऊ गा।"

सकल्प मे गजब की शक्ति है। सकल्प से पत्थर तोड दिये जाते हैं तो चैतन्यमय देह पर उसका असर क्यो नहीं होगा। आस्था गहरी होती गई और चर्म रोग ठीक होता गया। चम रोग पूणतया ठीक हो गया।

किशोर राम को नाव चलाने का शौक था। लाला बाजार रहते हुए किशोर राम ने मनीपुर मे दो तीन बार नाव चलाई। नाव चलाते समय राम को ज्ञात हुआ कि नाव चलाना कितना कठिन है।

किशोर राम को पारिवारिक जन व्यापार सिखाने की दृष्टि से बिहार में जदिया व बनमनखी तथा आसाम मे लाला बाजार ले गये। वहां गल्ला, किराणा, कपडा, दलाली, गिरवी एव एजेन्सी इत्यादि के काम मे राम शीघ्र ही निष्णात हो गया।

राम ने व्यापार की नाना विधाओ मे निपुणता प्राप्त कर ली परन्तु राम का मन अचानक उखड गया। इधर मन उखडा, उधर दूसरे तीसरे दिन ही "पितृ देवो भव ' के तुल्य उपकारी पिता का जदिया मे देहावसान हुआ उसके समाचार मिले। राम उस समय लाला बाजार आसाम मे था। कहां जदिया (बिहार) और कहा लाला बाजार

(आसाम) ! मनोवैज्ञानिक असर हुआ कि पिता का देहावसान होते ही राम का मन उखड गया ।

पारिवारिक जन देशनोक (राज) आ गये । लाड्ले राम को भी देशनोक बुला लिया । राम ससार की विचित्र दशा पर चितन करने लगा—जीव क्या है ? मनुष्य क्यो जन्मता है ? क्यो मरता है ? ससार क्या है ? आदि विभिन्न प्रश्न उभरते, समाधान की खोज में डूबते रहते । ज्यो-ज्यों प्रश्न उभरते, समाधान मिलते त्यो-त्यो विरक्ति के बीज मनोभूमि में बिखरते रहते ।

राम को सुना-२ सा महसूस होने लगा । पिता का साया उठ गया ।

१५-२० दिन बाद राम को पूज्य श्री (आचार्य श्री) के दर्शनार्थ जयपुर जाने की प्रबल इच्छा जागृत हुई । राम ने सोचा—देखें, पूज्य जी कैसे होते हैं ? राम जयपुर की ओर चल पड़ा । देखिए, उत्थानगामी जीव में प्रकृति सयोग बिठा रही है ।

राम ने ज्यों ही जयपुर मे चौड़ा रास्ता स्थित लाल भवन में प्रवेश किया सामने दिव्य भव्य जीवन्त प्रतिमा के दर्शन हुए । राम के नेत्र विस्फारित रह गये । ओह ! यह मनोहारी मूरत है पूज्य श्री की । धन्य धन्य हो गया । नेत्र पवित्र हो गये ! सन्निकट जाकर वंदन कर चरण स्पर्श किये । स्पर्श क्या हुआ सम्पूर्ण शरीर पवित्र हो गया ! प्रशात मूर्ति, समता सागर के मुखारविन्द से ज्योंहीं "दया पालो" की मधुर-श्रुति प्रिय वाणी प्रस्फुटित हुई, राम का चेहरा शत दल की भांति खिल गया ! प्रसन्नता का पारावार नही रहा ।

राम का मन अब गुरु चरण छोडकर कही अन्यत्र जाने का नही रहा । राम का मन मधुकर गुरु चरण कमलो का मकरन्द प्राप्त करने का इच्छुक हो गया । मकरन्द का लुब्ध मन अन्यत्र जा भी कैसे सकता है ?

राम ने लाल भवन मे ही सवर किया । प्रार्थना, प्रवचन, प्रतिक्रमण का उत्साह पूर्वक लाभ लेता रहा । तीन दिन यही क्रम चलता रहा । चौथे दिन आगम व्याख्याता श्री कवरचन्दजी म सा ने राम से पूछताछ की । वार्ता द्वारा जब ज्ञात हुआ कि यह आत्मा सयम के पथ पर चलने को तैयार है तो मुनिश्री कंवरचन्दजी म सा राम

को प्रातः प्रतिक्रमण के पश्चात् पूज्य गुरुदेव के ध्यान करने के कमरे में ले गये। संक्षिप्त परिचय के बाद राम ने पूज्य गुरु देव से सम्यक्त्व ग्रहण किया।

राम की शाम को देशनोक के लिए टिकिट बनी हुई थी। रवाना हो रहे थे कि नाल मे उतरते उतरते पूज्य गुरुदेव ने श्रमण प्रतिक्रमण प्रारम्भ कराया। फिर देशनोक के लिए रवाना हो गये। पूरे रास्ते राम के नयनो में गुरु की दिव्य भव्य छवि तैरती रही।

देशनोक आने के दो तीन दिन बाद ही सम्यक्त्वधारी राम भयकर अपशकुनो के होते हुए भी आसाम की ओर रवाना हो गये। रवाना होते समय भयानक अपशकुन हुए—१ काली बिल्ली ने रास्ता काटा, २ लकड़ों की भरी गाडी सामने आई और ३ गाव मे किसी के मृत्यु हो गई परन्तु ये अपशकुन भी राम के लिए श्रेयकारी ही सिद्ध हुए। राम आसाम मे चार माह तक रहे। मन किसी भी काम मे नहीं लगता। शरीर अस्वस्थ बना रहता।

जवाहर किरणावली पढ़ते समय संकल्प किया और सकल्प के फलस्वरूप जो चम रोग ठीक हो गया था, वह दो वर्ष तक ठीक ही रहा, परन्तु दो वर्ष हो गये और कृत संकल्प की क्रियान्विति नहीं हो पा रही थी तब तीसरे वर्ष रोग ने अधिक उग्र रूप धारण कर लिया।

औषधोपचार किये परन्तु रोग पूर्णतया ठीक ही नहीं हो पा रहा था। न्यूनाधिक रूप मे रोग चलता ही रहा।

राम का आसाम में शरीर ठीक नहीं रहने से जदिया (बिहार) चले गये। जदिया में राम का वैराग उतारने के लिए पुस्तकों मे अनुपयुक्त फोटूए इत्यादि रखी जाती परन्तु प्रतिक्रिया रूप में राम कुछ नही कहता। 'आई गई' कह कर अपने काम मे लग जाते।

रोग चल रहा था... कभी कम, कभी ज्यादा।

बीकानेर (गगाशहर-भीनासर) मे १२ दीक्षाओ का भव्य ऐतिहासिक अवसर था। राम ने विचार किया—दीक्षाओ के दुलभ अवसर को नही चूकना चाहिए। भावना प्रबल बन गई, अत बीकानेर आ गये।

पूज्य गुरुदेव का सायकालीन प्रतिक्रमण चल रहा था। प्रतिक्रमण के बाद मुमुक्षु राम ने गुरुदेव से ज्ञान ध्यान के लिए कहा।

गुरुदेव ने कहा—'अमर मुनिजी से प्रतिक्रमण सीखो'। तपस्वी श्री अमर मुनिजी म सा के पास जाकर आपने कहा—आचार्य भगवन् ने प्रतिक्रमण सिखाने के लिए कहा है। तपस्वी मुनिश्री ने स्वीकृति दे दी। प्रतिक्रमण प्रारम्भ कर दिया।

एक दिन मुमुक्षु राम ने पूज्य गुरुदेव से कहा—भते! जल्दी से जल्दी दीक्षा कैसे हो सकती है? राम की अभिलाषा उत्कृष्ट बन चुकी थी। एक अजीब छटपटाहट। जैसे मुनि गजसुकुमाल कुमार ने भगवान् अरिष्टनेमि से कहा—भंते! जल्दी से जल्दी मुक्ति का उपाय बताईए। वैसे ही मुमुक्षु राम अपने आराध्य से पूछने लगा—दीक्षा जल्दी कैसे हो सकती है। पूज्य गुरुदेव ने कहा—आवश्यक ज्ञानार्जन करो, साधु की आचार सहिता की जानकारी करो तत्पश्चात भी माता पिता, अभिभावको के बिना अनुमति दीक्षा नही दी जाती। आज्ञा जरूरी है।

अब मुमुक्षु राम अपने पारिवारिक जनों को दीक्षा की अनुमति हेतु पत्र देने लग गये। एक माह पश्चात भ्राता श्री मागीमाल जी मुमुक्षु राम को लेने के लिए गगाशहर-भीनासर आ गए। भाई कहने लगे—अगर यहा रहना है तो, माँ जो जदिया मे है, उसे यहीं ले आओ, फिर चाहे रहना। दोनो को सेवा का लाभ मिल जायेगा।

मुमुक्षु राम अग्रज की बात मान कर जदिया चले गये।

जदिया मे मुमुक्षु राम को आये १०-१५ दिन हो गये। अब पुन देशनोक भेजने के लिए भ्राता से आग्रह करने लगे। अब तक भाई का रंग ढंग सभी बदल गया था। भाई ने कहा—कहीं जाने की जरूरत नहीं। यही रहो और पढ़ाई करो।

अनिच्छा से मुमुक्षु राम को एक माह बारह दिन जदिया में रहना पड़ा। प्राय प्रतिदिन राम को स्वप्न मे पूज्य गुरुदेव के दिव्य दर्शन होते रहते थे।

अग्रज, मुमुक्षु राम को देशनोक भेजने को कतई राजी नहीं थे। राम ने विचार किया—"स्वयं की मुक्ति स्वय के हाथ।" स्वयं ने बीकानेर आने का उपाय सोचा। दुकान पर बैठना प्रारम्भ किया और देशनोक आने लायक अस्सी रुपये इकट्ठे कर लिए।

एक दिन भाई ने राम को दुकान का माल खरीदने के लिए

धनमनखी जाने हेतु कहा । राम ने विचार किया, अब अच्छा मौका हाथ लगा, लाभ उठा लेना चाहिए । राम ने साथ मे खाने के लिए मुढी चुडवा ले लिया, लोटा टॉर्च चद्दर आदि आवश्यक सामग्री भी ले ली । ये सभी इसीलिए कि देशनोक पहुंचना है ।

राम की यात्रा चल पडी देशनोक की ओर । सहरसा होते हुए दिल्ली की तरफ आये । जब तक बरोनी स्टेशन नही आया तब तक मन मे आशका थी कि कोई पकडने वाला नही आ जाय परन्तु आशका आशका ही रही, कोई पकडने वाला नही मिला, राम सकुशल देशनोक पहुच गये ।

देशनोक मे चाचाजी श्री तेजकरणजी इत्यादि को ज्ञात हुआ तो उन्होने कहा—इस प्रकार नही आना चाहिए । वे चिंता करेंगे । मुमुक्षु राम ने तार और पत्र द्वारा सभी को सूचित कर दिया कि "मैं देशनोक पहुच गया हू ।"

फिर एक पत्र द्वारा आज पूर्व हुए अपराधो की क्षमायाचना की । राम ने लिखा—"मैंने दुकान से अस्सी रुपये लिए, जो आपसे गुप्त लिए, कोई चारा नही था, लेने पडे, नही लेने थे । मेरे कारण आप (भ्राता) को, माताजी को कष्ट हुआ, अत क्षमा करेंगे ।"

क्षमायाचना के बाद राम ने अपने को हल्का महसूस किया । निर्भार मुमुक्षु राम अब धर्म साधना मे सलग्न हो गये ।

इधर पूज्य गुरुदेव नोखा मडी से देशनोक पधार रहे थे । सत-सेवी राम ने सेवा का लाभ लिया । देशनोक पधारने पर तो अहर्निश गुरुचरण मे ज्ञानाजन करने लग गये ।

श्री साधुमार्गी जैन सघ—सरदारशहर वि श्री शाति मुनिजी म सा के चातुर्मास हेतु आग्रहशील था । श्री शांति मुनिजी गुरुदेव से फरमाने लगे—हम नये हैं, नया क्षेत्र है, कैसे क्या होगा ?

मुमुक्षु राम ने विनोद से कहा—आप श्री ये क्या फरमा रहे हैं ? पूज्य जवाहराचार्य ने, पूज्य गणेशाचार्य को आज्ञा दी तो प्रचड गर्मी के मौसम मे भी गणेशाचार्य ने तहत् कर लिया और पधार गये । तब आप श्री जी विचार क्यो कर रहे हैं ?

वि श्री शान्ति मुनिजी म सा ने मुमुक्षु राम से कहा—क्या आप साथ चलेंगे ?

राम ने कहा—गुरुदेव की जैसी आज्ञा होगी। जब गुरुदेव का संकेत मिला तो मुमुक्षु राम वि श्री शांति मुनिजी म सा के साथ सरदारशहर की तरफ विहार मे साथ हो गये।

डूगरगढ अथवा नापासर की बात है। जंगल में एक प्याऊ पर ठहरने का प्रसग आया। आषाढ़ की तप्त रेत थी। मध्याह्न के लगभग दो बजे थे। देशनोक के कुछ व्यक्ति साथ थे, उन्होंने मुमुक्षु राम से कहा—वैरागी जी! इस सामने के धोरे (रेत के टिब्बे) पर अभी खडे होकर बताओ तो जानें तुम्हारा वैराग पक्का है।

कष्ट सहिष्णु राम तत्काल सामने के धोरे पर जा खडे हुए फिर पिंडली तक रेत मे पांव गाड कर कुछ देर खडे रहे। दर्शक श्रावक् रह गये, दातो तले अगुली दबा दी। वैराग्य की एक सजीव परीक्षा मे आप पूर्णतया सफल सिद्ध हुए।

वि श्री शांति मुनिजी म सा की सेवा मे रहते हुए सरदारशहर पधारे। सरदारशहर मे ज्ञानार्जन के साथ तपस्या का क्रम भी बराबर चल रहा था। मुमुक्षु राम को सर्वाधिक प्रिय सब्जी थी आलू की। भोजन का राजा था आलू। राम, जो त्याग के महापथ पर चलने को कटिबद्ध थे फिर प्रिय अप्रिय क्या रहा? आलू का त्याग कर दिया वह भी वर्ष दो वर्ष के लिए नहीं, सदा-सदा के लिए—जीवन भर के लिए।

एक बार मुमुक्षु राम ने अठाई की। पारणा के लिए थली के प्रमुख श्रावक रत्न, शासन निष्ठ श्री मोतीलाल जी बरडिया अपने घर ले गये। घर के आंगन मे वैरागी राम को धोवन पानी का लोटा दिया और कहा—कुल्ला (दतधावन) कर लीजिए। वैरागी राम ने स्पष्ट निषेध कर दिया—"वैरागी को इस प्रकार नाली मे पानी नहीं गिराना चाहिए।" फिर उपयुक्त प्रासुक निर्जीव स्थल पर ही वैरागी राम ने हाथ मुह धोये।

सरदारशहर प्रवास के दौरान मुमुक्षु राम का भोजन पानी प्राय श्री मोतीलालजी बरडिया के यहा ही होता। राम की संतोष वृत्ति, रसना जय से सारा बरडिया परिवार अत्यन्त प्रभावित था। बरडिया परिवार के सदस्य मोतीलाल जी आदि प्राय कहा करते—

वैरागी तो बहुत देखे परन्तु ऐसे उत्कृष्ट वैरागी देखने का अवसर कम ही मिलता है।

आचार्य भगवन् का वर्षावास बीकानेर था। मुमुक्षु राम आसोज माह मे सरदारशहर श्री सघ के साथ बीकानेर आ गये। चूकि बीकानेर मे आसोज मे कतिपय दीक्षाओ का प्रसग था। सघ मत्री श्री भवरलाल जी कोठारी गगाशहर राम के मातु श्री के मामेरा भाई श्री महेशदास जी पीचा के पास गये और इसी अवसर पर राम की दीक्षा हो जाय तदथ प्रयास करने लगे। दीक्षा के प्रयास मे उत्साही युवारत्न श्री जयचन्दलाल जी सुखानी भी पीछे नही थे।

पीचा जी ने कहा—यह गुरुदेव के साथ रहे और गुरुदेव के सामने वैराग्य की परीक्षा दे। उसके बाद कुछ सोचा जायेगा। राम सरदारशहर जाकर पुन गुरुदेव की सेवा में आ गये। कुछ समय तक गुरुदेव की सेवा मे रहे कि आसाम से श्री पानमल जी राका (बहनोई जी) के समाचार आये कि अगर दीक्षा लेनी हो तो अपने हाथ का काम पूरा करके चले जाओ। मुमुक्षु राम ज्यू त्यू शीघ्र दीक्षित होनें की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने विचार किया—चलो इतने मे काम बन जाय तो अच्छा है। राम ने वहाँ—लाला बाजार (आसाम)जाकर अपने हाथ का काम जो बिखरा पडा था, समेटा। लेन देन पूरा किया।

लाला बाजार मे 'दीक्षा' के बारे मे राम को खूब प्रश्न पूछे जाते। सम्यक् समाधान के साथ मुमुक्षु राम प्रश्नो के चक्रव्यूह को को छिन्न भिन्न कर अपनी प्रखर प्रतिभा का परिचय देते।

कोई कहता—आपको साधु बनना है तो बनो, मना कौन करता है। परन्तु किसी सम्प्रदाय विशेष का साधु नही बनकर विश्व का साधु बनना चाहिए। हम आपको आश्रम बना देते हैं। आश्रम मे साधना करो। रजनीश, रामकृष्ण परमहस इत्यादि के साहित्य राम को देकर कहा गया—इसका अध्ययन करो, फिर निणय करो कि कैसा साधु बनना चाहिए।

राम इन सारे साहित्य का अध्ययन करते। अध्ययन ही नहीं, रात को एक एक, दो-दो बजे तक चिन्तन मनन करते। चिंतन के क्षणो मे डूबकर सोचते। एक विचारक ऐसा कहता है, दूसरा ठीक इसके विपरीत ऐसा। सत्य के निणय हेतु राम की आत्मा मचल

उठती । आगम का अध्ययन करते, जवाहर साहित्य का भी अवलोकन करते । अन्ततोगत्वा भगवान का मार्ग वीतराग पथ ही सत्य प्रतीत होता । प्राप्त साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के बाद जिन-वचनों पर और अधिक दृढ आस्था जमती गई । आचार्य मानतुंग ने भगवान ऋषभदेव की स्तुति में जो कहा—वह सत्य प्रतीत होने लगा कि—
मन्ये वरं हरि हरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्य, कश्चिन्मनो हरति नाथ!
भवान्तरेऽपि ॥

एक बार एक सज्जन ने मुमुक्षु राम से कहा—भगवान की व्यवस्था है कि प्रकृति में एक पुरुष, एक नारी—इस प्रकार जोड़ा उत्पन्न करना । आप जब साधु बन जाओगे तो भविष्य में आपके लिए जिस कन्या का जन्म हुआ है उसका क्या होगा ?

तीक्ष्ण बुद्धि के धनी राम ने कहा—भगवान् की ऐसी व्यवस्था होती ही नहीं अगर ऐसी व्यवस्था होती तो राजाओ के सकडों रानियां क्यों होती ? आज भी एक पुरुष के दो-दो, चार-चार पत्निए होती है। यह अव्यवस्था कैसे होती ? कई पुरुष कवारे घूमते हैं तो कई लडकियां कवारी घूमती हैं। एक बात और—अगर भगवान ने यह जोडे की व्यवस्था कर रखी है तो वर वधू की तलाश करने की क्या आवश्यकता ? वह जोड़ा भगवान ने उत्पन्न किया है तो जोडने का कार्य भी भगवान ही कर देगा । लेकिन आप ऐसा नहीं मानते । जोडने के लिए आप लोग प्रयत्न करते हैं । इसका तात्पर्य यह हुआ कि भगवान की तरफ से कोई व्यवस्था नही है । अगर भगवान की तरफ से कोई व्यवस्था मानते हो तो यह व्यवस्था भी मान लेनी चाहिए कि ऐसे साधु बनने वालों को इस जोडे की व्यवस्था से भिन्न-पृथक् उत्पन्न किया जाता है ।

कोई कोई राम से कहता—इतनी पांच बहनें हैं । मानेज-भानजिया है सभी के मायरे भरने पडेंगे इसलिए साधु बन रहे हो ।

राम ने कहा—मुझे इसकी कोई चिन्ता नही । चूंकि कार्य करने वाले बडे भाई है । कदाचित् कोई नहीं होता और ऐसी स्थिति होती तो इस स्थिति से साधु बनने के विचार उठ जाते—यह सम्भव नहीं । ऐसे बहुत से लोग इस दुनिया मे हैं जो न तो पुरुषार्थ कर पाते हैं न आजीविका चला पाते है । किसी के मायरा भरने की बात तो स्वप्न मे भी नहीं सोची जा सकती ।

अभावग्रस्त व्यक्ति को भी साधु बनने का कहा जाय तो वह ादन हिलाता रहता है। साधु बनने को तैयार नही होता। साधु वही ान सकता है जिसे ससार से पूण विरक्ति हो गई हो।

इस प्रकार नित नये प्रश्नोत्तर का क्रम जारी रहता। लाला ाजार मे एक माह तक रहने का काम पडा।

पूज्य गुरुदेव चूरू मे धर्म ध्वजा फहरा रहे थे। मुमुक्षु राम ाला बाजार से गुरु चरणो मे पहुच गये। गुरु चरणो मे अध्ययन के ाथ २ अनुभव का खजाना भी भरते गये। शान्त विनम्र सादगी प्रिय ाम ने चूरू की दृढ धर्मी जनता पर त्याग की गहरी छाप छोडी।

चूरू मे पूज्य गुरुदेव प्रवचन स्थल जाने हेतु प्रवास स्थल मे ीचे उतर रहे थे। श्रावकवर्य श्री फतहचन्द जी कोठारी गुरुदेव के ास ही खडे थे। श्री कोठारी राम की ओर इशारा कर कहने लगे— से अगर दीक्षा दो तो मेरा समर्थन है ये योग्य है। परन्तु इसे (अन्य रागी की ओर इशारा करते हुए) अभी और पकाना चाहिए। अभी सके देरी है दीक्षा मे।

श्री कोठारी जी मुमुक्षु राम के दीक्षा बाद जब भी गुरु चरणो े आते तो गुरु देव से पूछते—महाराज! राम मुनिजी कहाँ है? फर मालूम पडता, साथ ही हैं तो दशन कर बडे प्रमुदित होते।

एक बार मुमुक्षु राम भोजन करके पुन सत स्थल पर आ हे थे। माग मे तेरहपथी सत (सभवत श्री पूनमचन्दजी म) मिले। उन्होंने राम से नाम, पिता का नाम, जन्म स्थल इत्यादि के बारे में रिचय पूछा। फिर पूछा—क्या पच्चीस बोल आते हैं?

राम ने कहा—हाँ, आते हैं।

सन्त—एकेन्द्रिय मे पर्याप्ति कितनी?

राम—चार।

सन्त—(वृक्ष की ओर इशारा करते हुए) इस दरख्त मे पर्याप्ति कितनी?

राम ने सोचा—मार्ग मे चर्चा करने की अपेक्षा एक तरफ कहीं विराज कर पूछताछ करें तो ठीक रहेगा। सडक के एक किनारे पर पाटा पडा था उसकी ओर इशारा करते हुए राम ने निवेदन किया—यहा पाट पर विराज जाईये, फिर पूछिए।

सन्त—नही, नही, तुमको उत्तर आता हो तो बता दो, अन्यथा.. ।

राम—बताने मे कोई बात नही । इस दरख्त (वृक्ष) म भी चार ही पर्याप्ति होती है । मार्ग मे ज्यादा चर्चा करना ठीक नहीं रहता इसलिए एक तरफ चर्चा का कहा । राम की पीठ पर शाबाश कहते हुए थापी लगाई और संत तथा राम अपने अपने गन्तव्य की ओर चल पड़े ।

चूरू से सुजानगढ पूज्य गुरुदेव के साथ जाना हुआ । व लाडनू की तरफ जाना था । सुजानगढ के श्री भागचन्द जी लोढा कहा—वैरागी जी ! यहां तक तो भोजन पानी की व्यवस्था हो परन्तु आगे लाडनू की तरफ क्या होगा ? वहां व्यवस्था कस जमेगा

भविष्य की चिन्ता से निश्चिन्त मुमुक्षु राम ने कहा—अ की चिंता अभी क्यो करना । ज्यो ज्यो आगे जायेंगे सब गुरु कृपा ठीक होता जायेगा ।

हुआ भी वैसा ही । लाडनू मे काफी लोग भोजन की म हार करने वाले मिले । एक भाई जिसका घर प्रवास स्थल से लग एक किलो मीटर दूर था लेकिन भोजन हेतु अत्यन्त श्रद्धा भक्ति से गया । आदर सहित उसने भोजन कराया । उस समय राम न अनु किया—कि जवाहराचार्य का थली प्रवास व्यर्थ नहीं गया । उनके यायी चाहे नाममात्र के हो परन्तु उनके द्वारा फलाये गये सिद्धांतों अनुयायियो की सख्या कही कम नहीं है । थली मे दया दान परोप इत्यादि मानवीय गुण आज भी मौजूद हैं । मानवता के शत शत आज भी जल रहे हैं ।

आचार्य भगवन् का वर्षावास सरदारशहर था । जिज्ञासु ने अथक प्रयास कर ज्ञानार्जन किया । आचार्य भगवन् की सन्निधि भरपूर लाभ उठाया । हर शंका का समाधान प्राप्त करना राम नियति थी । जिज्ञासा भाव से सविनय प्रश्न पूछते और सम्यक् प्राप्त कर ज्ञान को ठोस बनाते ।

सरदारशहर चातुर्मास में राम ने वैरागी, गौतम सेठिया लोच भी किया । वैराग्यवस्था मे ही राम ने साध्वाचार सम्बन्धी अनुभव प्राप्त कर लिए ।

सरदारशहर चातुर्मास के पश्चात् ग्रामानुग्राम विहार करते हुए आचार्य भगवन् बीदासर पधारे। राम भी गुरुदेव की सेवा मे साथ थे। बीदासर मे देशनोक सघ को दीक्षा की स्वीकृति प्रदान की गई। देशनोक सघ मे हर्ष छा गया। राम ने विचार किया—अब मुझे भी दीक्षा का प्रयास करना चाहिए। परिवार के प्रमुख प्रमुख सदस्यो को अपनी दीक्षा पक्की होने के समाचार दे दिये। सयमेच्छुक राम ने तार द्वारा सूचित किया—

My Diksha final At Deshnoke on 23rd Feb 1975 (2031 Magh Shukla 12) Come As Soon As Possible

ये समाचार उत्कृष्ट वैरागी राम ने नितान्त व्यक्तिगत रूप से दिये और दृढता के साथ दिये।

बीदासर में शासन समर्पित, सेवाभावी, प श्री लालचन्द जी मुणोत जो पूज्य गुरुदेव की सेवा मे साथ थे, अस्वस्थ हो गये। दयालु राम ने उनकी सेवा मे अपने आपको लगा दिया। सेवा का वह गुण राम के जीवन मे बढता ही गया, बढता ही गया।

दीक्षातुर राम बीदासर से दीक्षा के प्रयास हेतु देशनोक, नोखा, गगाशहर-भीनासर इत्यादि जगहो पर गये और सगे सम्बन्धियो से दीक्षा मे सहयोगी बनने हेतु निवेदन करने लगे और साथ मे यह भी कहते गये कि मेरी दीक्षा निश्चित है आप विश्वास करें या न करें? आज्ञा मिलेगी तो भी दीक्षा होगी, नही मिलेगी तो भी दीक्षा होगी। बाद में उपालम्भ न मिले आप लोग यह नही कहें कि हमे ज्ञात ही नहीं था, अत यह सूचित करने आया हू।

राम के दृढता पूवक इस प्रकार सभी को सूचित करने पर पारिवारिक जन व देशनोक श्री सघ ने श्री आईदानजी बुच्चा (मौसेरा भाई), श्री सुगनमल जी साड (मामेरा जंवाई) तथा करणीदान जी बोथरा (बहनोई जी) इन तीनो को साथ देकर दीक्षातुर राम को जदिया (बिहार) भेजा, जहा राम की मातु श्री तथा बड़े भ्राता श्री मांगीलाल जी रहते थे।

जदिया मे घर पर पहुचने के बाद दीक्षातुर राम श्री करणीदानजी बोथरा से सं २०३१ माघ कृष्णा चतुर्दशी को मध्याह्न मे आज्ञा पत्र का प्रारूप लिखवा रहे थे कि अग्रज मांगीलाल जी ने कहा—

क्यो व्यथ मे आज्ञा-पत्र लिखवा रहे हैं ? मैं दीक्षा की आज्ञा देने वाला नही हू । राम ने कहा—आप आज्ञा देंगे जब ही काम होगा। य लिख रहे है तो लिखने दीजिए ।

फिर रात को मागीलाल जी व्यापार का कार्य सम्पन्न कर निवास मे आये । पुन चर्चा चल पडी । चर्चा के दौरान मागीलाल जी ने कहा—पिताजी के स्वर्गवास के बाद ये (राम) घर छोड़कर चला गया और हमारी बिना आज्ञा/अनुमति सन्तो की सेवा में रहने लग गया । मैं अकेला क्या-क्या करू ? यह दीक्षा लेना चाहे तो मेरी अनुमति है । परन्तु एक शर्त है कि यह दो वर्ष तक मेरे साथ रहे । यह शर्त मैंने इसे पहले भी सुना दी थी ।

मैं तो सोच रहा था यह कार्य करने मे हुशियार है । स कुछ जानता भी है । अत सारे घर को सभाल लेगा । मैं तो विवा शादी आदि घरेलू कार्यों मे विशेष भाग न लेता हू न किसी अ लेन देन के काम मे । यह तो इसे सोचना चाहिए या नहीं ?

दीक्षातुर राम के साथ जाने वालो ने मागीलाल जी से कहा इसे आप दो चार वर्ष अथवा जितना चाहो उतना घर पर रखो—अप पास रखो, परन्तु यह भी तो देखलो कि राम अब घर पर रहने वा है क्या ?

माताजी ने कहा—रंग ढग से तो यह अब घर पर रहे, ऐ नही लगता । अगर घर पर रहना होता तो सतों के साथ इधर उ क्यो घूमता ?

साथियो ने कहा—जब आपको मालूम है कि यह घर रहने वाला नही हैं, तो जबरन रोकने से क्या फायदा ? क्यों इस ज्ञान ध्यान मे बाधा डालते हो ?

माताजी कहने लगें—मांगीलाल अगर आज्ञा देवे तो मैं सकती हू अन्यथा मैं नहीं दूगी । मागीलाल जी कहने लगे—प माताजी आज्ञा देवे जब हो । एक दूसरा एक दूसरे पर डालने लगे।

जदिया के ही निवासी जगदीशप्रसाद जी अग्रवाल आदि वहां मांगीलाल जी के पास पहुंच गये । वो बोलने लगे—मामा ! यह (राम) मान नहीं रहा है तो क्यो नही दीक्षा की अनुमति द हो।(मांगीलाल जी को जदिया निवासी 'मामा' इतने सम्बोधन मात्र

जानते हैं ।) ये अग्रवाल जो आज दीक्षा की प्रेरणा कर रहे हैं । दो वर्ष पूर्व ही राम को घर रहने की प्रेरणा करते थे । वे कहते—बुड्ढी माँ की सेवा करो माता देवता के तुल्य है । माता सब तीर्थों मे श्रेष्ठ तीर्थ है माता है जब तक माता की सेवा करो और फिर चाहे साधु बन जाना । राम के त्याग वैराग्य का इतना असर पडा कि उनकी विचार धारा भी बदल गई ।

सभी के काफी विचार विमर्श करने के बाद आज्ञा-पत्र देने की तैयारी तो हो गई, पर बात अटक गई यहा कि आज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर पहले कौन करे ? मागीलाल जी कहते—माता जी करेंगे । माताजी कहते—मागीलाल करेगा । अन्त मे मागीलाल जी ने यह कहते हुए कि "यह (राम) नही मानता है तो यह लो हस्ताक्षर कर देता हू ।" हस्ताक्षर कर दिये । फिर माताजी ने भी अपना अगूठा लगाकर धर्म और पुण्य के महापथ का अनुमोदन किया । यह कार्य रात को लगभग १२ बजे सम्पन्न हुआ । वातावरण मे प्रसन्नता छा गई ।

दीक्षार्थी राम, उनके साथ आज्ञा के प्रयास हेतु चलने वाले एव माताजी आज्ञा-पत्र होने के बाद एक दिन रूक कर दूसरे दिन देशनोक के लिए रवाना हो गये । देशनोक आने के बाद बीकानेर आये तथा क सेवा धाय पदालंकृत मुनि श्री इन्द्रचन्द जी म सा के दर्शन किये । शासनसेवी, कर्मठ कार्यकर्ता श्री जयचन्दलाल जी सुखाणी भी साथ थे । सुखाणी जी अत्यन्त प्रसन्न थे । अपनी प्रसन्नता मे वे दीक्षार्थी राम को स्टूडियो ले गये ।

अहिंसा एव सादगीप्रिय राम के मुह पर उत्तरासन लगा था तथा श्वेत खादी के परिधान थे । सुखानी जी ने वे सभी वस्त्र, जो विरक्त वर्ग के भूषण थे, उतरवा दिये तथा कोट पेंट, टाई लगाकर तैयार किया—कैमरे के सामने बैठने को । विरक्त राम को फोटू खिचवाने को बाध्य होना पडा ।

देशनोक मे दीक्षा की तैयारिया अत्यन्त जोर शोर से चल रही थी । दीक्षा अवसर पर वैसे ही धर्म प्रेमियो मे उत्साह होता है और अपने गाव के ही किसी योग्य युवा की दीक्षा हो तो उत्साह द्विगुणित क्यों नहीं होगा ?

घर-घर मे राम के पगलिये करवाये। मुह में मगल पदार्थ रखकर श्रद्धालुओ ने शुभाशीर्वाद दिया। हर्ष से, धर्म श्रद्धा से, त्याग मय वातावरण से देशनोक का कण कण परिव्याप्त हो गया।

मा गवरा ने आचार्य भगवन् से कहा—यह (राम) अब तो दीक्षा ले लेगा। अत कुछ दिन घर पर सोना चाहिए। मा ने लाडले राम को भी घर पर सोने का आग्रह किया परन्तु विरक्त राम ने घर पर सोना स्वीकार नहीं किया वरन् सन्त स्थल पर ही सोए।

गुरुदेव के परिपार्श्व मे जो कमरा था, वही राम का विश्राम स्थल था। वही वे स्वाध्याय इत्यादि करते। शयन के समय गुरु चरणों मे अत्यल्प वस्त्र बिछाकर सो जाते।

वि स २०३१ माघ शुक्ला १२ को राजकीय करणी उच्च प्राथमिक विद्यालय के विशाल प्रागण मे समता विभूति, धर्मपाल प्रतिबोधक, पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानेश ने अत्यन्त उत्साहमय वातावरण एव शुभ मुहूर्त मे १० १५ बजे दीक्षातुर राम को "मुनि राम" के रूप में परिवर्तित कर दिया।

भगवान महावीर, जैन धर्म, आचार्य श्री नानेश के साथ ही नवदीक्षित मुनि राम के जय घोष से आकाश गूज उठा।

मुनि राम आचार्य श्री की सेवा में समर्पित हो गये। समय के पाबंद मुनि राम साध्वाचार के हर कार्य को व्यवस्थित रूप से समय पर करते।

शा प्र क से श्री इन्द्रचन्दजी म सा ने सिंघाडे जमाने की दृष्टि से नवदीक्षित मुनि राम को विहार कराने का निवेदन किया परन्तु आचार्य श्री ने उन के निवेदन के उत्तर में फरमाया कि इसे साथ ही रखने का विचार है। दीर्घदर्शी आचार्य श्री को न जाने कौन सी अव्यक्त प्रेरणा मिली कि उसी समय गहरी दृष्टि से छिपे रत्न को पहचान लिया। दीक्षित होने के बाद मुनि राम ने अपने जीवन को विविध गुणों से सजाने सवारने का कार्य प्रारम्भ किया और आचार्य श्री ने अनमोल रत्न को तराशने का कार्य।

मुनि राम की दीक्षा के पश्चात आचार्य श्री पाचू पधारे। पाचू में नवदीक्षित मुनि राम के संसारपक्षीय पारिवारिक जन रहते थे। उन्होंने प्रवचन देने हेतु अत्यन्त आग्रह किया। पूज्य गुरुदेव की

आज्ञा प्राप्त कर नवदीक्षित मुनि ने—"अणासवा थूलवया कुसीला, मिउ पि चड पकरंति सीसा" (उत्तरा १-१३)।

उपरोक्त शास्त्र वचनो के साथ अपना प्रवचन प्रारम्भ किया। प्रथम प्रवचन सुनकर जनता ने नवदीक्षिन मुनि की त्याग वैराग्य पूर्ण वाणी का हृदय से स्वागत किया।

पाच से भभू होते हुए आचाय प्रवर के साथ नवदीक्षित मुनि राम गंगाशहर-भीनासर पधारे तथा प्रथम चातुर्मास गुरुदेव की सेवा में ही ज म स्थली देशनोक मे किया।

देशनोक चातुर्मास मे नवदीक्षित मुनि राम अपना ज्ञान घट भरने मे लग गये। पूज्य गुरुदेव, अ य सन्त रत्नो एव विद्वानो से भी अध्ययन करते। प शोभालाल जी मेहता से इसी वर्षावास मे प्राकृत व्याकरण का अध्ययन किया। नवदीक्षित जिज्ञासु मुनि राम ने पडित जी से प्राकृत व्याकरण के कुछ सूत्रो की सिद्धी पूछी परन्तु पडित जी सहित कोई बता नही पाया। प श्री मेहता जी कहने लगे—मुझे लग-भग ४५ वर्ष हो गये पढाते हुए पर तु ऐसा खोजी विद्यार्थी आज तक नहीं मिला। विद्या दाता पडित भी नवदीक्षित मुनि को ज्ञान-दान देकर अपने को कृतार्थ समझते थे।

देशनोक वर्षावास के बाद आचार्य भगवन् बीकानेर पधारे, जहा गुरुदेव के सग्रहणी रोग की उपशाति हेतु परपट्टी का देशी उप-चार चला। सेवा प्रवीण नवदीक्षित मुनि राम ने पूज्य गुरुदेव की उस समय लगन से सेवा की। नवदीक्षित होते हुए भी सभी कार्य योग्यता पूवक सम्पन्न करना वस्तुत आश्चर्यजनक था।

देशनोक के बाद नवदीक्षित मुनि राम ने गुरुदेव के साथ नोखा मडी चातुर्मास किया। नोखा वर्षावास के समय युगदृष्टा ज्योति-धर जवाहराचाय की शताब्दी-थी। नवदीक्षित मुनि नें गुरुदेव से निवे-दन किया– भगवन्! शताब्दी आई है और चली जायेगी। छुट पुट काय हो रहे हैं इसकी अपेक्षा जवाहराचाय पर कोई ठोस कार्य हो तो उपयुक्त रह सकता है। प काशीनाथ जी (आचाय च द्रमौलि) से कहा जाय तो वे जवाहराचार्य के जीवन पर रचना कर सकते हैं। नवदीक्षित मुनि राम के चिंतन का प्रतिफल है कि आज समाज के

सामने आचार्य श्री नानेश के तत्त्वावधान में "श्री मज्जवाहराचार्य यशोविजय महाकाव्यम्" ग्रन्थ का सजन हो सका।

नोखामडी के बाद गगाशहर-भीनासर चातुर्मास हुआ जिसके दौरान विद्याध्ययन का क्रम जारी रहा तथा श्री अ भा साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड की जैन सिद्धांत शास्त्री द्वितीय वर्ष तक की परीक्षा सम्पन्न की। विद्यार्थी मुनि राम की यह परीक्षा का अंतिम वर्ष था। उसके पश्चात् किन्ही कारणो से परीक्षाए बन्द कर दी।

फिर जोधपुर वर्षावास हुआ। जोधपुर चातुर्मास में पूज्य गुरुदेव ने विद्यार्थी मुनि राम की योग्यता को देखते हुए कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य उनके हाथ में सौंप दिये। गुरुदेव द्वारा सौंपा हुआ कार्य मुनि राम ने सदा कुशलता पूर्वक सम्पन्न किया।

तत्पश्चात क्रमश अजमेर, राणावास एवं उदयपुर चातुर्मास सम्पन्न किये। इन वर्षावासो मे ज्ञान पिपासु मुनि राम ने पूज्य गुरु से टीका टब्बा न्याय आगम-शास्त्रो का गहराई से अध्ययन किया अध्ययन ही नही किया वरन् चिंतन-मनन अनुशीलन कर आगमों गूढ़ रहस्यो को जानने की दक्षता भी प्राप्त कर ली। आगम पु आचार्य श्री नानेश की श्रमशीलता ने एक आगमज्ञाता संत रत्न निर्माण कर सकल जैन समाज पर महान् उपकार किया है।

वीर भूमि मेवाड के केन्द्रीय स्थल उदयपुर वर्षावास के ब परिव्राजक मुनिराम ने पूज्य गुरुदेव के साथ गुजरात की धर्मधरा पदार्पण किया। क्रियापात्र मुनि राम के त्याग, तप एवं उत्कृष्ट क्रि की सुरभि से यहा की जनता भी प्रभावित हुए बिना न रह सकी।

अहमदाबाद वर्षावास मे मुनि राम ने अप्रमत्त रहकर स्वाध्याय ज्ञानार्जन सेवा करते हुए मासखमण की कठोर तपस्या सा सम्पन्न की।

तपस्वी मुनि राम ने भावनगर (गुजरात) वर्षावास में प्र प्रहर-प्रवचन तक मौन रहकर शास्त्रों का गहन अध्ययन चिंतन म किया। स्वाध्यायी मुनि राम को इस वर्षावास मे आगम के अ गूढ़ रहस्यों का ज्ञान प्राप्त हुआ। साथ ही आगम शास्त्रो के पुन स्वाध्याय की महत्ता का परिबोध भी।

भावनगर वर्षावास के बाद रतलाम मे २५ दीक्षाओ का भव्य

उपस्थित हुआ । १८१ साधु-साध्वियो का सहज सम्मिलन हो गया । अत आचार्य श्री की सन्निधि मे अनेक सत रत्न साध्वियो से विचार विनिमयपूर्वक आगम एव परम्परा के अनुकूल साधु समाचारी का परिवर्तन, परिवर्धन, सशोधन का कार्य चला । इस समाचारी के सम्यक् संकलन मे स्वाध्यायी मुनि राम की सक्रिय अह भूमिका रही ।

रतलाम दीक्षा के बाद पूज्य गुरुदेव महाराष्ट्र मे पधारे । छाया की तरह साथ रहने वाले मुनि राम ने बोरीवली (बम्बई), घाटकोपर (बम्बई) एव जलगाव मे चातुर्मास किये । इन वर्षावासो में भी निर्लेप भाव से सेवा साधना एव उत्कृष्ट भाव से ज्ञान आराधना मे जुटे रहे ।

भारत की हृदयस्थली मध्यप्रदेश मे इन्दौर तथा रतलाम वर्षावास अत्यन्त प्रेरणादायक धर्मजागरण मूलक सिद्ध हुए । इसी समयावधि मे मुनि राम की प्रतिभा उभरने लग गई । इनके तत्त्व ज्ञान की गहराई से तत्त्वज्ञ श्रावक प्रसन्नता व्यक्त करने लग गये ।

रतलाम चातुर्मास मे झमकलाल जी बोहरा, जो ज्योतिष के प्रमुख विद्वान् हैं, मुनि राम से चर्चा कर रहे थे । चर्चा के अन्तर्गत आपके अगाध ज्योतिष ज्ञान से प्रभावित होकर उन्होने कहा—"आपने अल्पकाल में ज्योतिष का जो ज्ञानार्जन किया है वह आश्चर्यजनक है ।"

ज्ञान ग्रहण के लिए मुनिराम ज्ञान की विभिन्न धाराओ मे अपनी शक्ति का सदुपयोग करने लगे ।

सेवा प्रवीण मुनि राम की प्रेरणा से अनेक साधु साध्वियो ने दीर्घ तपस्याएं की है । तपस्वी साधुओ की मुनि राम जिस ढग से सेवा करते वह अपने आप मे अनूठी होती ।

मध्यप्रदेश के बाद ज्योतिषज्ञ मुनि राम ने मेवाड के सपूत समता विभूति आचार्य श्री के साथ वीर भूमि मेवाड मे पदार्पण किया । श्रद्धा, भक्ति एव ज्ञान के समन्वित क्षेत्र कानोड मे वर्षावास हुआ । कानोड शिक्षाविदों की प्रजनन भूमि है । कानोड शिक्षा के क्षेत्र में सम्पूर्ण मेवाड का गौरव है । इस शिक्षा क्षेत्र मे प्रवचनकार मुनि राम ने चार माह तक पूज्याचार्य प्रवर के पूर्व सुख विपाक सूत्र, अन्तगड सूत्र एवं उत्तराध्ययन सूत्र पर सरल, सरस एव शास्त्रीय प्रवचन फरमाये जिससे आधुनिक शिक्षित व्यक्ति भी अत्यन्त प्रभावित हुए ।

भाषा के जटिल शब्द जाल से उन्मुक्त, तत्त्व ज्ञान से ओतः

प्रोत प्रवचन श्रोताओ के अन्त स्थल को छू जाते हैं। प्रवचनकार,
राम के प्रवचन दीर्घकालीन प्रभाव छोड जाते हैं जो श्रोताओं
चिंतन मनन एव आगम पथ पर चलने को बाध्य कर देते हैं।

कानोड वर्षावास मे ही दीन दयालु मुनि राम ने
विभूति आचाय नानेश की दीक्षा अध शताब्दी पर "अ भा सम
युवा सघ" के कायकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा—"नतांगिक
छोडकर कुछ रचनात्मक कार्यो की ओर ध्यान दो। असहाय ए
विपन्न स्वधर्मी बन्धुओ को सभालना सम्यक्त्वी का काम है। इ
तरफ ध्यान नहीं गया तो धर्म का विकास सम्भव नहीं।"

अन्तर से प्रस्फुटित उद्‌गारो को सुनकर समता युवा सघ
कायकर्ताओ मे जागृति का दौर प्रारम्भ हो गया और इस दिशा
उल्लेखनीय सेवाकाय सम्पन्न हुए।

मुनि राम के साध्वाचार के अतगत दिये गये प्रवचन के फ
स्वरूप सघ सदस्यो ने स्वधर्मी सहयोग विकास के तहत "ब्याज मु
ऋण प्रदान योजना" प्रारम्भ की। इस योजना से अनेक स्वध
लाभन्वित हुए हैं।

शिक्षा भूमि कानोड के बाद जौहर भूमि चित्तौड में वर्षाव
हुआ। चित्तौड मे संवत्सरी महापर्व तक मुनि राम के त्याग प्रधा
प्रवचन चले। उसके बाद अस्वस्थता के कारण प्रवचन देना बन्द
दिया।

कानोड वर्षावास पूर्ण होते २ केकडी निवासी तत्त्वज्ञ श्रा
वय श्री लालचन्द जी नाहटा 'तरुण' के काफी प्रश्न पूज्य गुरु
आचार्य श्री की सेवा मे आये। आचाय-प्रवर समयाभाव एव अन्य
कायवशात प्रश्नो के उत्तर नही दिलवा पाये।

आचाय प्रवर नें प्रश्नावली मुनि राम के हाथो में सौंपते
फरमाया—'इन प्रश्नो के उत्तर तैयार करना है।'

'तहत्' कहकर सविनय मुनि राम ने आचाय श्री के आ
को शिरोधाय किया और कुछ प्रश्नों के उत्तर तैयार किए। वि
का समय नजदीक आ गया, अत कार्य अधूरा ही रह गया।

पूज्य गुरुदेव के साथ मुनि राम का उदयपुर पधारना हुआ
उदयपुर के उपनगर अशोक नगर मे श्रावक वय श्री लालचन्द

[illegible] का आना हुआ । श्री नाहटा जी ने कुछ प्रश्न पूछे तथा समाधान [illegible] कर प्रमुदित हुए । मुनि राम ने कहा—आपके प्रश्न कानोड मे [illegible] आये थे । समयाभाव तथा अन्य कार्यवश उनके उत्तर नही दिलवा [illegible] यद्यपि कुछ उत्तर लिखे हुए हैं कुछ और लिखने हैं । पूरे होने पर [illegible] को प्राप्त हो सकते हैं ।

[illegible] श्री नाहटा जी के समग्र प्रश्नो के उत्तर विद्वान् मुनि राम [illegible] तैयार किये । आचाय भगवन के अवलोकन के पश्चात् वे प्रश्न-उत्तर [illegible] नाहटा जी के पास केकडी पहुंचे तो उनकी प्रसन्नता का पार नही [illegible] । उन्होने प्रश्नोत्तर प्राप्ति का उत्तर दिया । कुछ समय बाद उन्होने [illegible] पत्र दिया । उस पत्र की पक्तियें द्रष्टव्य है । श्री नाहटा जी [illegible] लिखते हैं—

"आपके वहां पर विराजमान जैन शासन सम्राट, [illegible]चाय चक्रवर्ती, हुक्म वंश भास्कर, प्रतिपल वन्दनीय, आगम तत्त्व [illegible]दधि, महामहिम, प्रात स्मरणीय, परम पूज्य, गुरुदेव श्रीमज्जैना-[illegible] श्री नानालाल जी म सा परमागम रहस्य ज्ञाता, युवाचार्य कल्प, विद्वद्रत्न श्री राम मुनिजी म सा आदि ठाणा के परम पवित्र चरणार-विन्दों में नाहटा परिवार केकडी की अत्यन्त भक्ति बहुमानपूवक मत्थ-[illegible]ण वन्दना अर्ज कर सुख-शाति पूछावें ।

"पूज्य आचार्य भगवन् एव परमागम रहस्य ज्ञाता श्री राम मुनिजी म सा द्वारा आगमिक जिज्ञासाओ के समाधानो को इन दिनों गहराई से देखा । देखकर मैं चमत्कृत हो गया । कुछ समाधान तो प्रचलित धारणाओं से हट कर भी इतने युक्तियुक्त और प्रमाण पुरस्सर हैं कि देखकर स्थानीय विद्वान भी दग रह गये हैं । पूज्य गुरुदेव को कितना परिश्रम करना पडा होगा इसकी कल्पना ही दुष्कर है । तथापि केवल मात्र परिश्रम ही काफी नही है उसके साथ साथ तीव्र मेधा शक्ति, अवधारणा शक्ति, स्मरण शक्ति एवं स्वयं का तलस्पर्शी अध्ययन भी आवश्यक है । इन सबकी आपके यहा एक साथ उपस्थिति समस्त विश्व के लिए गौरव का विषय है ।"

ये पक्तियें नाहटा जी ने उस समय लिखी जब मुनि प्रवर राम मुनि प्रवर राम' ही थे । वे युवाचार्य नहीं बने थे ।

श्री नाहटा जी तत्त्वज्ञ है, जैन दशन के जानकार हैं । उनकी

जन्म-भूमि केकडी शास्त्रार्थ भूमि है । उनके पिताजी भी शास्त्राथ करने में निपुण थे नाहटा जी को शास्त्रीय चर्चा की रुचि बपौती स प्राप्त है । ऐसे श्रावक ने समय से पूव मुनि प्रवर राम के लिए जो पंक्ति लिखी वो सहज आश्चय मे डालती है । इससे पाठक वृन्द स्वय अनुमान लगा सकते हैं कि शास्त्रीय विषयों में मुनि प्रवर की कितनी गहरी रुचि है, ग्रहण शक्ति है ।

एक बार प्रश्नो के उत्तर लिखने के दौरान मा गवरा पूज्य गुरुदेव को वन्दन कर खडी थी । गुरुदेव ने पूछा—क्या राममुनि के दर्शन किये ? सेवा की ? कलियुग की मा मरुदेवी ने कहा—महाराज क्या दशन करें, क्या सेवा करें ? वो तो "दया पालो" कहना तो दूर, आख उठाकर.... देखते भी ... नहीं । कहते २ मा का गला भर गया.... वाणी अवरुद्ध हो गई ।

आचार्य प्रवर ने माता को सात्वना के स्वर में फरमाया वे अत्यावश्यक कार्य में सलग्न है । आप कुछ विचार न करें ।

आसोज शुक्ला द्वितीया (द्वितीय) २२ सितम्बर १९९० शनिवार को समता विभूति आचार्य श्री ने मुनि राम को चातुर्मासिक विनतिया सुनना, चातुर्मास की घोषणा करना, विहार एव संघों के विवाद आदि सुनकर समाधान करने का अधिकार प्रदान करते हुए "मुनि-प्रवर" के पद से विभूषित किया । अधिकार प्रदान करने के बाद शास्त्रज्ञ मुनि प्रवर श्री राम ने अधिकारो का योग्यता पूर्वक निर्वहन किया । यद्यपि मुनि प्रवर यह कार्य वर्षों से करते आ रहे परन्तु आचार्य श्री ने वैधानिक रूप से आसोज शुक्ला द्वितीया को अधिकार प्रदान कर मुनि प्रवर के गौरव को अभिवर्धित किया ।

जब यह अधिकार प्रदान की घोषणा हुई तो विद्वद्वय, तत्त्व तपस्वी श्री शान्ति मुनिजी म सा ने प्रवचन स्थल से पधारकर मु. राम को यह सन्देश सुनाते हुए बधाई दी तथा कहा—अब आप हमारा ध्यान रखना । मुनि राम यह सुनकर स्तब्ध रह गये । विद्वान् मुनि श्री शान्तिलाल जी म सा से फरमाने लगे—आप यह क्या फरमा रहे हैं ? आज क्या हो गया आपको ? कहते कहते गलगले हो गये आगे कुछ ज्यादा बोल न सके ..। चू कि मुनिराम तो अस्वस्थ थे, ज्वर पीडित थे । उन्हे तो इन सब घटनाओ का पता तक नहीं था । म

श्वास ही। परन्तु बाद में ज्ञात हुआ कि जो सुना वह सत्य तथ्य । तब मुनि प्रवर श्री राम ने आचार्य श्री के चरणो मे इस उत्तरदायित्व से मुक्त रखने का काफी निवेदन किया। एक लम्बा पत्र लिखकर गुरुदेव को दिया उसमे भी उन्होंने काफी आग्रह पूर्ण निवेदन किया कि आपकी सेवा करने को तैयार हू परन्तु यह सब अधिकार की बात मत कीजिए। मुझे भार मुक्त ही रखिए परन्तु हुआ वही जो होना था।

आचार्य प्रवर के साथ मुनि प्रवर का पीपलिया कला पधारना हुआ। पीपलिया कला का वर्षावास शासन प्रभावना की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहा।

पीपलिया कला के बाद मुनि प्रवर का अपनी जन्म भूमि में पधारना हुआ। १७ वर्षों के बाद गुरुदेव के साथ अपनी जन्म भूमि में पधारने पर आबाल वृद्ध रूप से स्वागत को उमड पडे। मुनि बनकर जन्म भूमि से प्रस्थान किया, मुनि प्रवर बनकर पुन राम अपनी जन्म भूमि में आये।

जन्म भूमि देशनोक के बाद पूज्य गुरुदेव के साथ बीकानेर २१ दीक्षाओ के भव्य महोत्सव पर पधारना हुआ। दीक्षा महोत्सव पर ऐसा लग रहा था मानो बीकानेर जैन नगर ही हो। चारो तरफ एक अद्भुत चहल पहल हो गई।

लगभग १५० साधु साध्वियो का सगम हुआ।

दीक्षा के बाद दो दिन तक आचार्य श्री जी की सन्निधि एव प्राय सभी साधु-साध्वियो की उपस्थिति मे नवदीक्षितो के लिए शिक्षा सत्र चले। इन सत्रो मे आचार्य श्रीजी ने साध्वाचार के सम्बन्ध में नवदीक्षितो को व्यापक जानकारी दी।

शिक्षा सत्रो के बाद काफी दिनो तक साधु समाचारी, सघीय व्यवस्थाओं के बारे मे विचार चर्चाए चली—जो अपने आप मे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थी। इन कार्यक्रमो मे अन्य सतो के साथ मुनि प्रवर ने तत्परता से कार्य किया।

२ मार्च १९९२ को प्रात प्रतिक्रमण के समय आचार्य श्रीजी ने आदेश दिया कि सभी सन्त आज प्रार्थना मे पधारेंगे। महासतियां जी को भी यथासमय यह सूचना मिल गई।

आदेशानुसार साधु-साध्वियां प्रार्थना सभा में पहुंच गये। आचार्य प्रवर ने प्रार्थना के पश्चात् मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म.सा को समग्र उत्तराधिकारों के साथ अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। इस घोषणा का चतुर्विध संघ ने भारी उत्साह के साथ स्वागत किया। "युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा की जय" के साथ नभ मंडल गूंज उठा। साधु, साध्वी एवं श्रावक-श्राविकाओं ने अपने २ विचार व्यक्त किये।

एक दो दिन बाद ही बीकानेर संघ के अत्याग्रह से एवं साधु साध्वियों के विनम्र निवेदन पर बीकानेर में ही फाल्गुन शुक्ला ३ को चादर प्रदान करने की घोषणा कर दी गई।

फाल्गुन शुक्ला ३ को यथासमय शुभ मुहूर्त में चतुर्विध संघ की साक्षी एवं अनुमोदन पूर्वक समता विभूति आचार्य श्री नानेश अपनी श्वेत, शुभ्र, धवल, निर्मल, पवित्र चादर युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा को ओढाई। यह चादर प्रदान दृश्य बड़ा मनोहारी था जय जयकारों के नारों से काफी समय तक वातावरण गूंजता रहा

श्रद्धा से नित, करो प्रणाम।
जय गुरु नाना, जय श्री राम।।

मन्त्री

श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ

(युवाचार्य महोत्सव का समग्र वर्णन इसी अंक में पढ़िए।)

युवाचार्य श्री के चातुर्मास स्थल

वर्ष	स्थल	अवस्था
१९७५	देशनोक	मुनि
१९७६	नोखामण्डी	"
१९७७	गंगाशहर-भीनासर	"
१९७८	जोधपुर	"
१९७९	अजमेर	"
१९८०	राणावास	"
१९८१	उदयपुर	"
१९८२	अहमदाबाद	"

१९८३	भावनगर	"
१९८४	बोरीवली (बम्बई)	"
१९८५	घाटकोपर (बम्बई)	"
१९८६	जलगाव	"
१९८७	इन्दौर	"
१९८८	रतलाम	"
१९८९	कानोड	"
१९९०	चित्तोडगढ	मुनि प्रवर नियुक्ति
१९९१	पिपलियाकला	मुनि प्रवर
१९९२	उदयरामसर	युवाचार्य

[सभी चातुर्मास परम पूज्य गुरुदेव की सेवामे किये]

समय का मूल्य

जागरण एव साधना के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति समय को साधे। समय के पाबन्द व्यक्ति को साधना मे विशिष्ट सकेत मिल सकते हैं। समय का पाबन्द व्यक्ति स्वल्प समय मे अधिक काम कर सकता है। समय के मूल्य को समझने वाले की प्रज्ञा निर्मल एव बुद्धि तीक्ष्ण हो सकती है।

जीवन के सत्य

अहकार और ममकार की भावना को नष्ट किये बिना जीवन के सत्य को प्राप्त नही किया जा सकता।

समभाव

मन को भेदन करने वाले कटु वचनो को सुनकर भी समभाव बनाये रखना जीवन उन्नति का माग है। ऐसे पथ का पथिक समता के सर्वोच्च शिखर पर उस हद तक पहुच जाता है जिसकी उसे स्वय कभी कल्पना भी नहीं होती। —युवाचार्य श्री राम

ध्यायमाता पद विभूषित, कर्मठता की प्रतिमूर्ति शासन प्रभावक संघ संरक्षक श्री इन्द्र भगवान्

वैराग्यवती–मधु दुगड़, कपासन
(वर्तमान–साध्वी पराग श्री)

"सेवा धर्म परम गहनो" की उक्ति चरितार्थ करते हुए "नन्दी सेन" के गुणों से प्रतिस्पर्धा करने वाले मुनि पुंगवों की परम्परा में वात्सल्य विभूति मुनि श्री इन्द्रचन्द्रजी म सा नाम महत्वपूर्ण रूप है। जिसे एक मशाल की उपमा से अलंकृत किया जाना अतिशयोक्ति पूर्ण न होगा। जिनके पुनीत व्यक्तित्व का सृजन मारवाड़ के अप्रसिद्ध छोटे से "माडपुरा" ग्राम की ग्रामीण संस्कृति में हुआ। पिताश्री रूपचन्दजी मातुश्री विरजादेवी के धार्मिक कुली सुसंस्कारों का जीवन पर गहरा प्रभाव अंकित हैं। इन्हीं के पैतृक संस्कारों के कारण आप विदुषी साहसी साध्वीरत्ना श्री राजकुंवरजी के सम्पर्क में आये और सम्यक्त्व व्रत अंगीकार किया। इसी प्रकार मासार्ध घोर तपस्वी पं रत्न श्री सूरजमलजी म सा एवं श्री करणीदानजी म सा भी आपके जीवन मे मुख्य प्रेरणा स्रोत रहे हैं, इनके सत्समागम से चिंतन की धारा बाहर से अन्तर की ओर मुड़ी, संयम का साहस संकल्प लिया। पूज्य भूआजी, फूफाजी के प्रोत्साहन से 'देह वा पात यामि कार्यं वा साधयामि" का संकल्प जगा। स्व श्रीमद जवाहराचार्य आदि विशिष्ट संत महापुरुषों के समागम से उत्तरोत्तर बढती त्याग वृत्ति के साथ स्व श्रीमद् गणेशाचार्य के पुनीत सानिध्य मे भागवती दीक्षा अंगीकार कर जीवन को कृतार्थ किया।

आपके पुनीत व्यक्तित्व की उपलब्धि चतुर्विध श्री संघ के लिये खासतौर पर साधु साध्वी समुदाय के लिये वरदान स्वरूप सिद्ध है। आपने स्वर्गीय पूज्य गणेशाचार्य की रुग्णावस्था में अहर्निश तन मन से सेवा कर संघ के सन्मुख एक अपूर्व स्तुत्य आदर्श प्रस्तुत किया एवं वर्तमान में भी अपने शरीर की/स्वास्थ्य की बिना परवाह कि

रोगी–वृद्ध–तपस्वी नवदीक्षितो को निग्लनि/निस्वाय भाव से सेवा कर रहे हैं ।

आपका व्यक्तित्व अनुपम एव अनुत्तर है । आप आचार्य श्री नानेश के गुरु भ्राता होते हुए भी अपने आपको शिष्य रूप मे मानते एव कहते हैं । आपके संकल्प में समर्पण का सहज भाव दूध में मिश्री की तरह घुला हुआ है । आचार्य श्री नानेश के आचार्य पद पर समारूढ होने के बाद उनके सर्वाधिक सहयोगी बनकर शासन की जो सेवा की है वह अपने आपमे अविस्मरणीय एव संघ के लिये चिरस्मरणीय है ।

"जिघर होगा प्रभु का इशारा, उघर बढेगा कदम हमारा" की पक्तिया आपके जीवन का आदश है । इस पक्ति को आपश्री ने मात्र शब्दगत नहीं रखकर उसे क्रियात्मक रूप दिया । आप बालक की तरह निच्छल सहज सरल एव गम्भीर विचारक हैं । कतव्य निष्ठा आपके व्यक्तित्व का प्रमुख अग है । आप विरक्तात्माओ के पथ प्रदशक हैं । परिणामत श्री सेवतमुनिजी, श्री अमरमुनिजी, श्री शातिमुनिजी, श्री पार्श्वमुनिजी, श्री प्रेममुनिजी, श्री महेन्द्रमुनिजी, श्री ज्ञानमुनिजी, श्री जितेन्द्रमुनिजी, श्री विजयमुनिजी, श्री विरेन्द्रमुनिजी, श्री पद्ममुनिजी एव श्री प्रमोदमुनिजी आदि समता विभूति आचाय श्री के अनुशासन मे समर्पित हुए हैं । जो प्रखर प्रवक्ता, कवि, लेखक, तपस्वी, सेवा निष्ठ गुणो द्वारा आपश्री कीर्तिस्तम्भ स्वरूप हैं । आप आगमो थोकडो के अगाध ज्ञान समन्वित एव कथनी करनी के साम्य से ओत प्रोत है । वस्तुत आप अत्यन्त साहसी, सुदृढ सकल्पी, कर्तव्यनिष्ठ सत रत्न है, जो प्रत्येक अनुकूल प्रतिकूल परिस्थितियो मे अविचल धैर्य के साथ मशाल की तरह ज्योतिर्मान रह कर भूले भटके पथिको को मार्ग दर्शन प्रदान कर जिन शासन के प्रति अपूर्व निष्ठा का परिचय दे रहे हैं । आप अपने सद्भूत विद्यमान गुणो के कारण समाज के बीच (१) आभ्यन्तर तप के तपस्वी (२) कर्मठ सेवाभावी (३) धाय माता आदि विशिष्ट विशेषणो से समलकृत हैं । आप अनेक वृद्ध बालक रोगी ग्लान संयम साधको के साहसी सम्बल हैं । आप जैसे सत रत्न से श्रमण सस्कृति का असीम उपकार हुआ है । ऐसे मुनिपु गव वात्सल्यविभूति, धाय माता मुनिश्री इन्द्रचन्द्रजी म सा चतुर्विध श्री

सघ को ज्ञानालोक प्रदान कर अन्धकार से उबारते रहे, इस भावना के साथ चरणारविन्दों में वदन ।

युवाचार्य पद प्रदान की इस पुनीत शृ खला मे परम श्रद्धेय भगवन पूज्य श्री नानेश ने इन्हें सघ के सरक्षक पद से सम्मानित कर विशिष्ट गौरव प्रदान किया है । इनके सेवामय आदर्श जीवन से प्रभावित हो आचार्य भगवन् ने इन्हे धायमाता का सम्माननीय पद प्रदान किया है तदनुरूप आपने अपने आचार-विचार से उस पद का गौरव बढाया है ।

आपके ससार पक्षीय भतीजे "शाति और काति" ने भी अपना समर्पण आचार्य श्री नानेश के शासन मे किया है । जो क्रमश वर्तमान मे सेवा सुशोभित "श्री पद्ममुनिजी' एव मधुर व्याख्यानी 'श्री शातिमुनिजी" के नाम से जाने जाते हैं ।

—"वैराग्य अभिनन्दन उदयपुर से साभार

शासन प्रभावक विद्वद्वर्य तरुण तपस्वी श्री संवन्ती लालजी म सा

आपश्री जी को समता विभूति शासन नायक आचार्य श्री नानेश के शासन के प्रथम शिष्य बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आप सरल एव सरस मनस्विता के धनी हैं । आपके माधुर्यपूर्ण व्यवहार तथा ध्यान साधना की जन समूह पर एक अविरल छाप पडती है।

आपके प्रवचनों में गुरुभक्ति एव शासन निष्ठा के स्वर विशेष रूप से मुखरित होते हैं इन विषयो में आपकी विशेषता तल्लीनता/ दर्शनीय होती है । साधुमार्गी परम्परा के विकास मे आप श्री जी का विशिष्ट योगदान रहा है ।

आपको आचार्य भगवन् प्यार एव दुलार के साथ 'बडे देवता' कहते हैं इसी तरह दूसरे साथी सत विद्वद्वर्य श्री रमेशमुनिजी म सा को छोटे देवता कहते हैं । संयमी जीवन की साधना मे सजगता के साथ आप दोनों ने साधुमार्गी परीक्षा बोर्ड की सर्वोच्च परीक्षा में सफलता प्राप्त की है ।

शासन प्रभावक आदर्श त्यागी, विद्वद्वर्य, तपस्वी श्री सम्पतमुनिजी म सा

आपश्री जी गृहस्थ जीवन में अनेक धार्मिक/सामाजिक सस्थाओं के आदरणीय पद पर रहे हैं आप उच्च कोटि के विद्वान हैं आपकी प्रखर एव तात्विक प्रतिमा से साधुमार्गी परम्परा मे शैक्षणिक परीक्षाओ को वल मिला है आप कमग्रान्थिक अध्ययन/अध्यापन मे सुदक्षता रखते हैं।

सघ की समुन्नति मे आप सदैव जागरूक एवं सक्रिय रहे हैं आपश्री जी इस वृद्धावस्था मे भी जवानो सा उत्साह रखते हैं आपका जहा पर भी पदापण होता है वहा पर ज्ञानाराधना की होड सी लग जाती है हर क्षेत्र मे छोटे बडे शिविरो के द्वारा अनेको को धम के स मुख करना यह आपकी विशेप रूचि का प्रसग है तथा इस अभियान में आपने अपेक्षा अनुरूप सफलता प्राप्त की है।

सयम साधना की सजगता के साथ आपश्रीजी ने साधुमार्गी जन धार्मिक परीक्षाओ मे सर्वोच्च परीक्षा श्रेष्ठ अ को में उत्तीर्ण की है आप चतुर्विध सघ मे 'भाईसा" महाराज साहब के नाम से विख्यात हैं।

शासन प्रभावक, आदर्श त्यागी, तपस्वी, विद्वान श्री धर्मेशमुनिजी म सा

० आप जैन दशन के विशिष्ट विद्वान हैं। आपश्री जी आचाय श्री नानेश शासन के प्रथम सत रत्न हैं कि जिन्होने तमिलनाडु, कर्नाटक, आध्रप्रदेश, पाण्डीचरी मे जाकर धर्मोद्योत व जिनशासन की प्रभावना की है।

० साधुमार्गी सघ मे आपका अपना विशिष्ट स्थान है। आपके पास जो प्राचीन, ऐतिहासिक, प्रामाणिक जानकारियो का सग्रहण है वे आपकी विशिष्ट श्रमशीलता व अनुसधानपरक बुद्धि की परिचायकहै।

० मधुर एव आकषक प्रवचन शैली से श्रोताओ को मंत्रमुग्ध करने मे आप सुदक्ष हैं।

(शेप पृष्ठ ११३ पर)

स्थविर प्रमुख, श्रमण प्रवर, विद्वद्वर्य, तरुण तपस्वी, प्रखर व्याख्याता श्री शांतिलालजी म सा

आचार्य श्री नानेश के शासन में आप विशिष्ट श्रेणी के विद्वान मनीषी सन्त रत्न हैं आपने भक्ति गीतो का सजन कर एवं रोचक प्रवचनो को प्रस्तुत कर जन जीवन में आध्यात्मिक जागरण करने मे अह भूमिका अदा की है । पूज्य आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त समीक्षण ध्यान साधना जैसे गभीर विषयो पर लिखित रूप में साहित्य प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । लेखनकला और आध्यात्म भाव प्रवण गीतो की सर्जना के प्रति आपकी विशेष अभिरुचि है ।

आपश्री जी के पाद विहरण से राजस्थान, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, गुजरात, महाराष्ट्र, दिल्ली, पजाब, हरियाणा, हिमाचल एव जम्मू कश्मीर की धरा पावन बनी । आप जहां भी पधारे आपके समन्वय प्रिय आकर्षक व्यक्तित्व एव तकपूण समाधान एवं प्रभावक प्रवचन शैली से बुद्धिजीवी एव युवा पीढी मे नूतन चेतना का आविर्भाव हुआ है । अनेक भव्यात्माए आपसे प्रतिबोध पाकर धम सन्मुख हुई हैं। आपकी सूझबूझ और प्रतिभा प्रवणता से साधुमार्गी संघ समय समय पर लाभान्वित हुआ है । आपश्री जी ने संयम साधना की सजगता के साथ जैन धार्मिक परीक्षाओ मे सर्वोच्च परीक्षा को श्रेष्ठ अकों से उत्तीर्ण किया है ।

विशेष—आप हजारो शैक्षणिक/सामाजिक एव अन्य परंपराओं के धर्म स्थलो पर प्रवचन हेतु आमंत्रित किये गये । जहां जाकर जन एव जैनेतरो को जैन धर्म एवं सस्कृति से अवगत कराया ।

स्थविर प्रमुख, मुनिप्रवर, विद्वद्वर्य, तरुण तपस्वी, मधुर व्याख्यानी श्री प्रेमचन्दजी म सा

भावुक परिवेश मे स्पष्टवादिता, निर्भीकता एवं कमठता से मण्डित व्यक्तित्व की दूसरी सज्ञा है—मुनि प्रेम ।

सघ उन्नयन एवं सेवा भावनाओ से अनुप्राणित आपश्री जी विचक्षण प्रतिभा के धारक हैं । आप सस्कृत, प्राकृत, न्याय एव आगमो के अध्येता मत हैं । अपनी धुन के पक्के व समझावट शैली मे निष्णात मुनि श्री साधुमार्गी परम्परा के अभ्युदय में सक्रिय रहे हैं ।

आपश्री जी की रचनात्मक ठोस काय मे रुचि है । आपका विचरण क्षेत्र राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात रहा है आपने अपने विचरण के दौरान एक ही स्वर बुलद किया है कि "केवल ज्ञानी बनना है तो सम्यग् ज्ञान का प्रचार-प्रसार करो और तीथकर बनना हो तो निष्काम भाव से जीवदया का पालन करो अर्थात् अभयदान दो" आपके उपदेश से अनेक मूक प्राणियो को प्राणदान, स्वधर्मियो को वात्सल्य एव असहायों को सहारा मिला है । आपने वयोवृद्ध एव रोगी सतो की सेवा के साथ अध्ययन/अध्यापन का काय किया है ।

आपश्री जी ने सयम साधना की सजगता के साथ साधुमार्गी सघ की सर्वोच्च परीक्षा उत्तीर्ण की है ।

(शेष पृष्ठ १११ का)

० आपके व्यक्तित्व में सरसता ओतप्रोत है । संघ की गतिविधियो की सक्रियता और सुचारूता के प्रति आप चिन्तनशील रहे हैं ।

० आपके प्रवचनो मे साध्वाचार व श्रावकाचार पर विशेष बल दिया जाता है ।

० आपका वैराग्य प्रसंग भी प्रेरक है विवाह के तत्काल कुछ माह बाद ही आप सजोडे सयम पथ पर आरूढ हुए हैं ।

० श्रमण सस्कृति की मर्यादाओ से जनता को परिचित कराना यह आपका मुख्य अभियान है ।

स्थविर प्रमुख, साधु प्रवर, विद्वद्वर्य मधुर व्याख्यानी श्री पार्श्वकुमारजी म सा

धायमातृ पदालकृत सेवावरेण्य श्री इन्द्रचन्दजी म सा की पावन सन्निधि मे आपश्री जी ने अपने जीवन को तराशा है। आप शात, सौम्य एवं गभीर प्रकृति के सन्त रत्न हैं। आप सिद्धान्त कौमुदी, प्राकृत व्याकरण, के गभीर अध्येता है।

मधुर एव मृदुवाणी के धनी आप अच्छे प्रवचनकार है। आपके द्वारा रचित, मधुर स्वरो मे मुखरित एव विवेचित प्रद्युम्नकुमार चरित्र हजारों श्रोताओ द्वारा अत्यन्त प्रशसनीय है। सघ के निश्रेयस के प्रति आप सदैव विचारवान रहे है।

आपका विचरण क्षेत्र मुख्य रूप से पश्चिम राज रहा है विचरण के दौरान समाज में व्याप्त कुरीति/बुराईयो को दूर करते हुए व्रतधारी श्रावको का निर्माण करने रूप अभियान आपका मुख्य रूप से रहा है। बोलना कम-काम ज्यादा यह आपकी विशेषता है। आपकी सत्प्रेरणाओं से अभिभूत होकर अनेक भव्यात्मा सद्धर्म की ओर गतिशील बनी हैं।

आपकी बहिन श्री विदुषी महासती जी राजमतीजी भी धाय मातृ पदालकृत श्री पेपकवरजी म सा के साथ मे अपने जीवन को धन्य बना रही है।

स्थविर प्रमुख, सयत प्रवर, विद्वद्वर्य, कविरत्न, प्रभावी प्रवचनकार, तेजोमय व्यक्तित्व श्री विजयराजजी म सा

"जैनम् जयति शासनम्" के स्वर को विविध रूपों मे बुलद करने वाले युवा मनस्वी, रूप सम्पदा के धारक, मुनिवर्य जन-जन के आकषण केन्द्र हैं ।

आपश्री सरलता, सहजता और समरसता की त्रिवेणी मे अवगाहन करते हुए उन्नति के शिखर पर आरोहण कर रहे हैं "जीवन कल्याण के साथ जन कल्याण" यह आपके व्यक्तित्व की गरिमा है ।

आपश्री के प्रवचन मे "शूल नहीं फूल बन खिलना सीखो" "ज्वाला नहीं ज्योति बन जलना सीखो" की भव्य प्रेरणायें प्रस्फुटित होती हैं ।

आप स्वयं भक्ति गीत, वैराग्य गीत के रचयिता एवं गायक हैं जब आपके श्रीमुख से भक्ति रस, वैराग्य रस की स्वर लहरिया मुखरित होती हैं तब आपकी भाव भगिमा एवं जनमानस की भावविभोरता निरखने योग्य होती है आप सैंकडो गीतो, कविताओ के निर्माता है विशाल जनमेदिनी को एक स्वर में मदमस्त करने की आपकी अद्भुत क्षमता है ।

तेजस्वी प्रतिभा, सारगर्भित विषय प्रतिपादन रूप वक्तृत्व कला एव प्रच्छन्न काव्यकला सौम्य मुखमडल ये आपकी उल्लेखनीय विशेषतायें हैं जो जन-जन द्वारा प्रशसनीय हैं ।

आपने १६ वर्ष की उम्र में सपरिवार अर्थात् पिता-पुत्र, मां-बेटी चारो ने अभिनिष्क्रमण किया है ।

संयमी मर्यादाओ मे दृढ़ रहते हुए आपश्री जी ने साधुमार्गी जैन परीक्षाओं में सर्वोच्च परीक्षा श्रेष्ठ अको मे उत्तीण की है ।

स्थविर प्रमुख, सत प्रवर, विद्वद्वर्य, ओजस्वी प्रवक्ता श्री ज्ञानचन्दजी म सा

वर्चस्वी व्यक्तित्व के धनी मुनिश्री १३ वष की अल्पायु के प्रव्रजित सत रत्न हैं। आप सस्कृत प्राकृत, न्याय-व्याकरण एवं आगम ग्रन्थो के अभ्यासी हैं। आपकी आगम अनुप्रेक्षा प्रभावशाली है आपके प्रवचनो के ओजस्वी बुलद स्वरो को श्रवण कर अनेको श्रोताओं ने अपने जीवन को सुधारा और सवारा है।

आपश्री जी को न्याय आदि के कठिन ग्रन्थो को पढ़ाने की अनुपम दक्षता प्राप्त है। गुजरात मे भी अनेको संत सतियो ने आपश्री के सानिध्य को प्राप्त कर अपना ज्ञान बल बढाया है आपकी विलक्षण एवं तक प्रवण प्रतिभा से संघ की गौरवशाली परम्पराओ को अभिनव सबल प्राप्त हुआ है। साहित्य सर्जन आपकी विशेष रूचि है।

जन्मदातृ माता एव शासन की धायमाता (श्री इन्द्रचन्दजी म सा) इन दो किनारो के मध्य आपकी जीवन सरिता त्याग वैराग्य के स्वरों को मुखर करती हुई प्रवाहित रही है। दीक्षा के पश्चात् बीकानेर मे श्री इन्द्र भगवान् के श्री चरणो में रहकर अध्ययन की दिशा मे प्रगति की है।

विशेष—आपके साथ आपकी बहन ने भी भागवती दीक्षा अगीकार की है जो विदुषी महासती श्री ललिताजी म सा के नाम से जानी जाती है संयमी सजगता पूर्वक आपश्री ने साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षाओ मे सर्वोच्च परीक्षा श्रेष्ठ अको मे उत्तीण की है।

शासन प्रभाविका महासती श्री वल्लभकवर जी म सा

शा प्र महासती श्री वल्लभकवर जी म सा का जन्म जावरा (म प्र) में श्रीमान रूपचन्द जी खींमेसरा की धर्मपत्नी श्रीमती गुलाब बाई की कुक्षि से हुआ। स १९८९ पौष शुक्ला ३ को उत्कृष्ट भावो के साथ निसलपुर में भागवती दीक्षा अंगीकार की। दीक्षा के पश्चात अनेक शास्त्रो की वांचनी ली। आपने अनेक थोकडे कण्ठस्थ किये। स्वाध्याय मे अप्रमत्त रत रहते हुए सयम के महापथ पर आप निरन्तर गतिशील हैं। धर्म संघ मे आप अनुभवी एव दीक्षा पर्याय की दृष्टि से वर्तमान में २५४ साध्वियो के विशाल समूह मे आपका प्रथम स्थान है।

विदुषी साध्वी श्रीजी चौपाई आदि के माध्यम से महिलाओ में धर्म जागृति लाने में सुदक्ष है। पूज्य जवाहराचार्य के शासन काल में दीक्षित साध्वी रत्ना श्री वल्लभकवर जी म सा वृद्धावस्था के कारण मन्दसौर (म प्र) मे विराजमान है।

महाश्रमणी रत्ना श्री पानकवर जी म सा

शा प्र महाश्रमणी रत्ना श्री पानकंवर जी म सा का जन्म झीलो की नगरी उदयपुर मे स १९८० कार्तिक शुक्ला ५ को धर्म-परायण माता श्री सलेकंवर जी की कुक्षि से हुआ। पिता श्री गेंगराज जी हिंगड धर्मनिष्ठ पुरुष थे। धर्म कार्य मे विघ्न डालने का उन्होंने त्याग कर रखा था। फलस्वरूप माता श्री एव लघु भगिनी (परम विदुषी स्वर्गीया साध्वी रत्ना श्री मनोहरकवर जी म सा) ने भी उत्कृष्ट भावो से आपके साथ स १९९१ चैत्र शुक्ला १३ को भीडर में सयम स्वीकार किया। साध्वी रत्ना श्री मनोहर कवरजी म सा प्रखर चिन्तिका, तात्विक प्रवचनकर्ता एव अनुभव समृद्ध महान साध्वी जी थे खेद है कि वे आज हमारे बीच नही रहे। आप श्रीमद् जवाहराचार्य के शासन काल मे दीक्षित साध्वी रत्ना हैं।

दीक्षा के बाद आपने सस्कृत प्राकृत एव शास्त्रों का सम्यक्

समय तक अध्ययन किया। सरल भाषा मे आपके प्रवचन जनग के हृदय को छूने वाले होते हैं।

धर्म संघ मे आप दीर्घ अनुभवी तथा साध्वियों में दीक्षा पर्याय की अपेक्षा से द्वितीय स्थान पर हैं। आपने १६ तक तपस्याएं की है तथा सरल, सेवा परायण, सादगीमय व्यक्तित्व अन्यों के लिए प्रेरक है।

महाश्रमणी रत्ना श्री गुलाबकवर जी म सा

शासन प्रभाविका महासती श्री गुलाबकवर जी म सा का जन्म स १९७० पौष शुक्ला १० को खाचरोद (म प्र) में हुआ। आपके पिता का नाम श्रीमान प्यारचन्द जी मेहता एवं माता का नाम श्रीमती कस्तूरा बाई था।

बाल्यकाल मे ही आपको विवाह बन्धन में बांध दिया। लेकिन कुछ समय में ही पति श्री चम्पालाल जी माडोत इस क्षणिक अशाश्वत सम्बन्ध से नाता तोड़ इस दुनिया से चल बसे। पति के चले जाने पर मानो गुलाब का फूल मुर्झा गया हो। प्यारचन्द जी के प्यार को छोड़कर ससुराल गई गुलाब अब अनाथ हो गयी। चिन्तन के क्षणों मे गुलाब ने सोचा—ये सम्बन्ध नश्वर हैं मुझे अनश्वर आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति करना है। चिन्तन के क्षणों मे वैराग्य का सूर्य उदित हुआ। अब क्या था, सुख का मार्ग मिल गया।

३ वर्ष वैराग्यावस्था मे रहने के पश्चात खाचरोद में वैशाख कृष्णा ६ स १९९२ को युगद्रष्टा, क्रांतिकारी श्रीमज्जवाहराचार्य के शासनकाल में आपने भागवती दीक्षा अंगीकार की। दीक्षा के पश्चात आपने ३० शास्त्रो का अध्ययन किया है। काफी मात्रा में थोकड़े इत्यादि भी कठस्थ किये हैं। आप विदुषी हैं एव आपके प्रवचन सरल सरस तथा प्रभावी होते हैं।

★

शासन प्रभाविका महासती श्री केशरकवर जी म सा

स्थविर पद विभूषिता महासती श्री केशरकवर जी म सा सरल एवं भद्रमना साध्वी हैं। आपका जन्म स १९७० श्रावण कृष्णा १४ को नोखा मंडी में हुआ। आपके पिता का नाम श्रीमान शिवदासजी डागा तथा माता का नाम श्रीमती तुलसी बाई था। आपको बाल्यकाल मे ही बीकानेर के श्रेष्ठीवर्य श्री पानमलजी गोलछा के साथ विवाह बन्धन मे बाध दिया। प्रकृति ने पति पान को जीवन वृक्ष से पृथक कर दिया। केशरकवर ने हिम्मत से काम लिया और भावी जीवन के बारे में चिन्तन किया। वैराग्य के फल खिल उठे। केशर का जीवन सुगन्ध से भर गया। आत्मा मचल उठी सयम पथ पर कदम बढाने के लिए।

एक वर्ष तक ज्ञानाभ्यास पूर्वक वैराग्यावस्था व्यतीत करने के बाद बीकानेर में श्रीमद् जवाहराचार्य के शासन काल मे स १९९५ ज्येष्ठ शुक्ला ४ की कल्याणी भागवती दीक्षा अगीकार की।

दीक्षा के पश्चात् अनेको थोकडो का ज्ञान किया, आगमो का अध्ययन किया तथा आप सहज सरल भाषा मे प्रवचन देते हैं, जो जन-साधारण के भी समझ मे आ जाता है। आचार्य श्री की आज्ञानुवर्ती प्रमुख साध्वियों मे आप भी एक है।

शासन प्रभाविका महासती श्री धापुकवर जी म सा

विदुषी महासती श्री धापुकंवर जी म सा का जन्म बीकानेर प्रात में दादा गुरु के पुण्य धाम भीनासर मे स १९७९ पौष माह में हुआ। आपके पिता का नाम श्रीमान बींजराज जी पटवा एव माता का नाम श्रीमती गगा बाई था।

श्रीमान रगलाल जी बाठिया के साथ आपका विवाह सम्बन्ध हुआ, परन्तु जिसकी नियति वैराग्य रूपी रग में रगना हो भला वह राग रंग में बन्धन मे कैसे बन्धा रह सकता है? पति वियोग के पश्चात् आप ससार से विरक्त हो गये। तीन वर्ष तक वैराग्यवस्था मे रहने के बाद स १९९८ भादवा कृष्णा ११ को पूज्य श्रीमद् जवाहरा

चार्य के शासन काल मे भीनासर मे भागवती दीक्षा अंगीकार की। दीक्षा के पश्चात् प्रथमा एव विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण की।

आपके प्रवचन सरल-सरस एव प्रभावी होते हैं। आपकी कला मधुर है। रामायण आदि चरित्र भाग जब आप सुनाते हैं जनता भाव विभोर हो जाती है। आपकी वाणी में मधुरता, व्यवहार मे सरलता एव जीवन मे सादगी है जो सम्पर्क में आने वाले को प्रभावित किये बिना नही रहती।

महाश्रमणी रत्ना श्री पेपकवर जी म सा

धमनगर बीकानेर मे श्रीमान सोहनलाल जी कोठारी की धमपत्नी श्रीमती जतन बाई की कुक्षि से स १९७९ पौष शुक्ला को एक बालिका का जन्म हुआ। जिसका नाम रखा पपकुवर। पे कुवर को बाल्यकाल में ही परिणय बन्धन मे आबद्ध कर दिया विधि को यह बन्धन स्वीकार नही था। पति का वियोग होने आपने संयम के महापथ पर चल कर जीवन सफल बनाने का दृढ संकल्प कर लिया। स १९९९ ज्येष्ठ कृष्णा ७ को बीकानेर म ही पू जवाहराचार्य के शासन काल मे भागवती दीक्षा अगीकार कर साधना के पथ पर कदम बढ़ा दिये।

सयमी जीवन स्वीकार करने के बाद आपने विशारद अध्ययन किया। आगम ज्ञान के साथ स्तोक ज्ञान भी प्राप्त किया ज्ञान साधना के साथ २ आपने सेवा के क्षेत्र मे विशिष्टता प्राप्त फलस्वरूप आपको धायमातृ पदालंकृता पद से विभूषित किया गया। प- वि महाश्रमणी रत्ना श्री नानूकंवर जी म सा जसे व्यक्तित्व निर्माण मे आपका प्रमुख हाथ रहा है।

महाश्रमणी रत्ना श्री नानूकवर जी म सा

रत्न प्रसवा भूमि देशनोक निवासी श्रीमान किसनलाल जी बोथरा की धमपत्नी श्रीमती पार्वती बाई की कुक्षि से स १९८४ फाल्गुन कृष्णा ८ को कूच विहार मे एक बालिका ने जन्म लिया। जिसका नाम नानूकवर रखा गया।

माता-पिता ने अपनी लाडली को परिणय बन्धन मे बाध दिया। पति श्री सूरजमल जी छाजेड शादी के ३-४ दिन बाद ही इस नश्वर संसार को छोड चले। स्वप्निल ससार के क्षण भंगुर नाटक को देखकर आप वैराग्य की पगडंडी पर पहुच गये।

ज म भूमि देशनोक मे ही १९९९ आषाढ़ शुक्ला ३ को पूज्य श्रीमद् जवाहराचार्य के शासन काल मे दीक्षित होकर आपने ज्ञान एवं तपोज्योति की आराधना करते हुई धर्म प्रभावना का सवर्धन किया। प्रारम्भ मे लगभग २०० थोकडे कठस्थ किये तथा चरित्र भागो का पुष्कल मात्रा मे पठन किया। तत्पश्चात् संस्कृत-प्राकृत व्याकरण एव तात्विक ग्रन्थो का अध्ययन करते हुए सस्कृत मे शास्त्री तथा प्रयाग से विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण की। आगमों का गूढ अध्ययन कर आपने अनूठी विद्वता अर्जित की।

आपकी निडरता भी गजब की है। एक बार आपको सप ने डस लिया था। आपने मु ह से जहर चूस कर निकाल दिया और बिना घबराये नौ मिल का विहार किया। वहां जाकर उपचार की दृष्टि से ९ उपवास की तपस्या की।

विगत ९ वर्षों से आप दक्षिण भारत में भ्रमण कर ओजस्वी प्रवचनों के द्वारा धर्म की व्यापक प्रभावना कर रहे हैं।

शासन प्रभाविका महासती श्री कचनकवर जी म सा

महासती श्री कचनकवर जी म सा का जन्म टोंक जिले के अन्तर्गत अलीगढ़ (रामपुरा) मे हुआ । माता का नाम श्रीमती केश बाई तथा पिता का नाम श्रीमान् मोतीलाल जी पोरवाल था। माता पिता ने आपका विवाह सम्बन्ध सवाई माधोपुर निवासी श्रीमान् गोपा-लालजी पोरवाल से कर दिया ।

ससार असार है । जीवन का सार भूत तत्व है—सयम ! इस सत्य को आपने जाना, जाना ही नहीं इसे प्राप्त करने के लिए आत्मा आतुर हो उठी । आपने पति के सामने सयम की बात की। भाग्यशाली आत्मा को सहज शीघ्र सयम स्वीकार करने की आज्ञा प्राप्त हो गयी ।

समस्त सासारिक बन्धनो को तोड़कर पति आज्ञा से स २००१ वैशाख शुक्ला द्वितीया ब्यावर मे पूज्य श्रीमद् गणेशाचार्य के शासन काल में प्रव्रज्या अगीकार की । पति ने भी पत्नी के पथ का अनुसरण किया और उन्होंने (प रत्न मुनि श्री गोपीलाल जी म सा ने) स २००१ कार्तिक कृष्णा ६ को सरदारशहर में पूज्य श्रीमद् गणेशाचार्य के शासन मे दीक्षा अगीकार की ।

आपकी दीक्षा एक आदर्श दीक्षा थी । आपका त्याग एक आदर्श त्याग था । दीक्षा के पश्चात् आपने आगम ग्रन्थो के साथ हिन्दी एव सस्कृत साहित्य का भी काफी अध्ययन किया । दीक्षा के एक वर्ष पश्चात् ही आपने प्रवचन देने प्रारम्भ कर दिये । आप सरल शांत एव विनम्र स्वभावी साध्वी रत्ना हैं ।

शासन प्रभाविका महासती श्री सूरजकवर जी म सा

स १९७८ पौष शुक्ला ८ को रिंगनोद (म प्र) में श्रीमान् राजमल जी पगारिया की धर्मनिष्ठ पत्नी श्रीमती धापू बाई की कुक्षि से पुण्य प्रभा को लेकर एक सूर्य उदित हुआ जिसका नाम रखा गया-सूरज बाई ।

लाड़ प्यार में पालन-पोषण करने के बाद परिजनों ने आप

विवाह बिरमावल गांव में श्रीमान घेवरचन्द जी सोनी के साथ कर दिया। घटना प्रसंग से आपके हृदय में वैराग्य के अंकुर फूट पडे। २ वर्ष तक वैराग्यावस्था मे रहते हुए संस्कृत व्याकरण एव शास्त्रो का अध्ययन किया तथा बिरमावल (जिला रतलाम) मे ही आपने पूज्य श्रीमद् गणेशाचार्य के शासन काल मे दीक्षा अंगीकार की। दीक्षा के पश्चात् हिन्दी (मध्यमा) का अध्ययन किया। थोकड़ों का ज्ञानार्जन प्राप्त करने के बाद आपने जन-जागृति हेतु प्रवचन देने प्रारम्भ किये। आपके प्रवचन सरल-सरस मधुर होते हैं। आप विदुषी सरल स्वभावी एव शान्त प्रकृति की साध्वी रत्ना हैं। विनय एव सहजता आपके जीवन मे ओत प्रोत है।

[नोट—इस विशेषांक के प्रकाशन होने तक वह सूरज गंगाशहर में अस्त भी हो गया। अब जिसकी स्मृतियां मात्र ही शेष है। —सम्पादक]

शासन प्रभाविका महासती श्री भंवरकंवर जी म सा

श्रीमान मंगलचन्द जी सोनावत की धर्मपत्नी श्रीमती पान बाई की कुक्षि से स १९८८ आषाढ़ कृष्णा एकम को धर्म भूमि बीकानेर में आपका जन्म हुआ। श्रीमान नथमल जो बाठिया के साथ आपका वैवाहिक सम्बन्ध हुआ। ससार की चित्र विचित्रता सयोग-वियोग को देखकर आपका मन ससार से विरक्त हो गया। एक वर्ष तक वैराग्यावस्था मे रहने के बाद आपने सं २००३ वैशाख कृष्णा १० को बीकानेर मे ही पूज्य गणेशाचार्य के शासन काल मे भागवती दीक्षा अंगीकार की।

दीक्षा के पश्चात् आपने दत्तचित होकर संस्कृत, प्राकृत, न्याय, दर्शन, व्याकरण एवं आगम ग्रंथों का अध्ययन किया। आप सरल स्वभावी, सेवाभावी एवं मधुर व्याख्यानी हैं। विनम्रता एवं दया का गुण आपमें विशेष रूप से देखने को मिलता है।

शासन प्रभाविका महासती श्री चांदकवर जी म सा

बीकानेर निवासी श्रीमान् डूगरमल जी डागा की धर्मपत्नी श्रीमती महतू बाई की कुक्षि से चान्द की तरह निर्मल बालिका ने जन्म लिया। जिसका नाम रखा गया—चांदकंवर। चांद कवर का बचपन से ही धर्म के प्रति रूझान था परन्तु माता पिता ने आपकी लघुवय मे ही शादी कर दी। धर्मपति के वियोग होने पर आपने परमात्मा के चरणो मे सर्वात्मना समर्पित होने का दृढ निश्चय कर लिया। स २००८ फाल्गुन कृष्णा ८ को आपने श्री गणेशाचार्य के शासनकाल मे प्रव्रज्या अगीकार की।

दीक्षा के पश्चात् ३२ शास्त्रो का वाचन एव अध्ययन किया। आपकी सरलता एवं क्रिया निष्ठा का जनता पर गहरा असर पड़ता है।

कजार्डा के निकट एक बार आप मार्ग भूल गये और जगल मे पहुच गये। वहा सामने शेर आ गया परन्तु आप घबराये नहीं अहिंसा मूर्ति के आगे शेर अपना स्वभाव भूल गया और कुछ समय बाद शेर स्वयं चला गया। आपकी यह वीरता आगम युग के साधको की सहज स्मृति दिलाती है।

महाश्रमणी-रत्ना श्री इन्द्रकवर जी म सा

साधुमार्गी धर्म संघ के ऐतिहासिक स्थल बीकानेर में सं १९९० मे श्रीमान् हनुमानमल जी वच्छावत की धर्मपत्नी श्रीमती गंगा बाई की कुक्षि से एक बालिका का जन्म हुआ। जिसका नाम रखा गया इन्दरा।

श्रीमान् दीपचन्द जी बेगानी के साथ इन्दरा का विवाह सम्बन्ध हुआ। परन्तु क्रूर काल के झोंके ने इन्दरा के जीवन दीप को बुझा दिया। इन्दरा घबराई नहीं। उनके घट में वैराग्य का दीप जल उठा। चारों ओर प्रकाश की किरण फैल गई। वैराग्य-दीप के प्रकाश मे इन्दरा ने संसार की असारता एवं जीवन स्वरूप को समझा।

प तक वैराग्यवस्था मे रहकर मध्यमा एव प्रभाकर की परीक्षाए त्तीण की तथा स २०१० चैत्र कृष्णा ५ को बीकानेर मे पूज्य श्रीमद् णेशाचार्य के शासन काल मे दीक्षित होकर ज्ञान साधना तथा चारि-राधना मे सलग्न हो गये । आपने विपुल ज्ञान सम्पदा प्राप्त कर ान २ में ज्ञान प्रचार हेतु प्रयत्न प्रारम्भ किया ।

आपके मधुरता पूण प्रवचनो का, उदारतापूण विचारो का, शीलतापूण व्यवहार का तथा अनुशासनपूर्ण आचरण का जन-मानस र अच्छा प्रभाव पडता है ।

शासन प्रभाविका महासती श्री सरदारकवर जी म सा-

विदुषी सती रत्ना श्री सरदारकवर जी म सा का जन्म स- १६८६ में माघ कृष्णा अष्टमी को अजमेर मे हुआ । आपके माता जी ा नाम श्रीमती चूकीबाई तथा पिताजी का नाम श्रीमान् कस्तूरचन्द जी सेठिया था ।

दो वर्ष तक वैराग्य भावना मे रहने के पश्चात् आपने पूज्य श्रीमद् गणेशाचार्य के शासनकाल में स २०१५ वैशाख शुक्ला ६ को भागवती दीक्षा अगीकार की ।

दीक्षा के पश्चात् आपने लगभग १५० थोकडे कठस्थ किये तथा बीकानेर एव पाथर्डी बोड से जैन सिद्धान्त शास्त्री की परीक्षा उत्तीण की । आगमो के स्वाध्याय एव तत्त्व के चितन मे आपकी गहरी रूचि है । तपस्या के क्षेत्र मे आपने ३८ की एव ३१-३१ की दो बार तपस्या की है । ८, ६, १०, ११ एव अन्य फुटकर तपस्याए तो चलती ही रहती हैं एवं १६ तक लडी पूरी की हुई है ।

आपके प्रवचन सरल सरस एवं मधुर होते हैं । सहज सादगी-मय जीवन जन २ को सादा जीवन उच्च विचार का मूक सदेश देता है ।

श्रीमान् पीरदान पारख व धनराज बेताला की जिज्ञासाएं : समाधान- आचार्य श्री नानेश

प्र क्या आप श्री राम मुनिजी को अन्य सन्तो से ज्यादा योग्य मानते हैं ?

उ यह प्रश्न ही अपने आप मे विचारणीय है, कौनसी आख ज्यादा श्रेष्ठ है ? ऐसा ही यह प्रश्न है। दो हाथ हैं एक हाथ से भोजन करते हैं, दूसरे हाथ से अन्य काम लिया जाता है तो इसका यह मतलब नही कि भोजन का कार्य करने वाला श्रेष्ठ व दूसरा हीन। वैसे ही मेरे लिए कोई सत श्रेष्ठ या हीन वाली बात नहीं। जो हाथ सेवा कर रहे हैं उनका सबका सम्मान है। उसी तरह जो ज्ञान-दर्शन चारित्र की आराधना द्वारा स्वय की और शासन की यथाशक्ति—शक्ति का गोपण नहीं करते हुए सेवा कर रहे हैं, वे सब मेरे लिए आदरणीय हैं।

प्र फिर आपने श्री राम मुनिजी के लिए ही क्यों सोचा ?

उ व्यवस्था तो एक ही को दी जा सकती है। दूसरी बात आपको समता दर्शन को समझना होगा, तदनुरूप जिस काय के लिए जो योग्य हो, उसके लिए मैंने निष्पक्ष रूप से सोचा है, वतमान स्थिति में भार सम्भालने मे उसे मैं उपयुक्त समझ रहा हू, और यही मेरा अन्तर साक्षी है।

प्र आप तो महान् हैं फिर भी --और भी तो सन्त योग्य है ?

उ राम मुनिजी के चयन का मतलब और सन्त अयोग्य हैं, ऐसा नहीं मानना चाहिए। सघ व्यवस्था एक को ही सौंपी जा सकती है इसलिए "योग्य मे भी योग्य का चुनाव" आप थोडे में समझ गए होंगे और ध्यान रखें, राम मुनि के अतिरिक्त कदाच किसी किसी का चयन होता तो भी यह प्रश्न "और भी तो योग्य सन्त है" यह जैसा का वैसा रह जाता, अर्थात् यह प्रश्न अनुत्तरित ही रहेगा।

प्र श्री राम मुनिजी ने रत्नाकर आदि की परीक्षा नहीं दी है, क्या कि ......?

उ परीक्षा साधना का फल नहीं है, साधना का फल है अन्त

समीक्षा । साधक की श्रेष्ठता वाणी से नहीं, सच्चरित्र से प्रकट होती है । परीक्षा ही योग्यता का एकमात्र मापदण्ड नही है, कोई ज्ञान के द्वारा कोई तप के द्वारा, कोई सेवा के द्वारा अपना विकास करता है । जेण विरागो जावईते, तं सव्वायरेण कायव्व । जिस किसी भी क्रिया से वैराग्य की जाग्रति होती हो, उसका पूण श्रद्धा के साथ पालन करना चाहिए । वास्तविक योग्यता तो वह है जिससे वैराग्य भाव के रसदार फल लगे । परीक्षा के निमित्त से या अन्य निमित्त से पठन-पाठन इसीलिए करना है कि जिससे हमे अपने आपको पढ़ने की, अपने आपको जानने, देखने की क्षमता प्राप्त हो ।

प्पं पि सुयमहीय पयासयं होई चरण गुत्तरस्
इक्को विणहं पई वो सचक्खु' अस्सा पयासेई ।

क्या आप श्री राम मुनिजी के प्रति आश्वस्त हैं । क्या उनकी भी जाहोजलाली, विनय आदि होगी ?

जहां तक शासन की जाहोजलाली का प्रश्न है, तो यह ध्यान रखना चाहिए कि यह पचम आरा है, इसमे काल के प्रभाव से उतार चढाव होते ही रहे हैं और आगे भी होगे । इसलिए इस विषय में क्या कहा जा सकता है । रही विनय की बात, इस विषय मे, मैं यो यही विश्वास रखता हू कि शासन के प्रति निस्वार्थ, निष्ठा रखने वाले साधक, साधिका, श्रावक-श्राविका रहेंगे, तब तक विनय व आज्ञा पालन मे कमी नही आयेगी ।

इनका प्रभाव कैसे क्या रहेगा ?

यशोकीर्ति और आदेय नाम कम का जैसा उदय होगा, तदनुरूप रहेगा ।

क्या श्री राम मुनिजी पूर्णरूपेण योग्य हैं ?

राम मुनिजी ही क्यो, कोई भी पूर्ण योग्य नहीं है । पूर्ण योग्यता तो वीतराग अवस्था मे होती है । हा, यह कह सकता हू कि वह पूण योग्यता के पथ पर आगे बढ़ रहा है । छद्मस्थ के द्वारा छद्म-

(शेष पृष्ठ १२६ पर)

परम पूज्य आचार्य श्री नानेश से साक्षात्कार

साक्षात्कारकर्त्ता-प्रो सतीश मेहता

प्रश्न—१ आपने युवाचाय श्री रामलालजी म सा में ऐसी क्या विशेषता देखी जिससे प्रभावित होकर उन्हें अपना उत्तराधिकारी घोषित किया ?

उत्तर— किस मे कितनी योग्यता-विशेपता है, इसे पूर्ण रूप से तो सर्वज्ञ ही जान सकते हैं। फिर भी श्रुतज्ञान के आधार पर एव व्यक्ति के व्यवहार से उसके आतरिक गुणों का परिचय हो जाता है ।

पूज्य गुरुदेव स्व आचाय श्री गणेशीलालजी म सा के चरणो में रह कर जो श्रुतज्ञान का अनुभव प्राप्त किया उसके आधार पर उक्त पद के योग्य साधक में जो नैसर्गिक विशेपताए होनी चाहिये वे भी अनुभूति में भासित हुई। वे समग्र अनुभूतिया शब्दो के माध्यम से इस समय व्यक्त नहीं की जा सकती । फिलहाल नमूने के तौर पर कुछेक विशेपताओ का कथन कर रहा हू ।

युवाचाय श्री रामलाल जी म सा विगत लगभग १६ २० वर्षों से (वराग्यकाल से ही) मेरे पास रह रहे हैं। मैंने उन्हें यथाशक्ति नजदीक से देखा है। उनकी निष्पक्षता, न्याय प्रियता, निग्र थ श्रमण सस्कृति (वीतराग सस्कृति) पर दृढ़-आस्था, स्वर्गीय आचाय देवों द्वारा निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति की सुरक्षा हेतु उठाए गये चरण के चरण चिह्नों पर समर्पणा आदि अनेक विशेपताओं को ध्यान म रख कर मैंने उन्हें अपना उत्तराधिकारी घोपित किया है।

प्रश्न—२ आपकी दृष्टि में युवाचाय में कौन २ से गुणो एवं विशेषताओं का होना आवश्यक है ?

उत्तर— मेरी दृष्टि में युवाचार्य में जिन-२ गुणो एवं विशेपताओं का होना आवश्यक है उन-२ का संक्षिप्त उल्लेख पूर्व प्रश्न के उत्तर मे किया जा चुका है ।

प्रश्न—३ आपकी विद्यमानता मे युवाचार्य श्री किन २ कार्यों को सम्पादित करेंगे ?

उत्तर— अब तक जो दायित्व मुझ पर था, उन सभी दायित्वो का निर्वाह उन्हें करना है । मैंने मुनि श्री रामलालजी म सा को केवल युवाचार्य पद ही नहीं दिया है अपितु युवाचार्य पद घोषणा के साथ ही अपने समग्र अधिकार भी उन्हे प्रदान कर दिये हैं जिसकी क्रियान्विति चादर ओढ़ाने की रस्म के साथ ही सम्पन्न हो गयी । अत तब से मेरे समग्र दायित्वो का निर्वहन युवाचार्य श्री कर रहे हैं व करेंगे ।

प्रश्न—४ क्या उन्हे कोई स्वतन्त्र कार्य सौंपा जाएगा ?

उत्तर— मैंने जब समग्र अधिकार ही उन्हें सौप दिये हैं तो स्वतन्त्र काय सौंपने का प्रश्न ही कहा रह जाता है ।

प्रश्न—५ सम्पूर्ण जैन समाज की एकता में आपका एव युवाचाय श्री का क्या प्रयास रहेगा ?

उत्तर— मैं उस एकता का पक्षपाती हू—

- जिसका निर्माण सैद्धान्तिक धरातल पर हो, अर्थात् मूलभूत सिद्धान्तों को सुरक्षित रखा जाता हो ।
- जिसके निर्माण मे सिद्धान्तो का सौदा-समझौता न किया जाता हो ।
- जिसका निर्माण जिनाज्ञा के अनुरूप तथा चारित्रनिष्ठा एव अनुशासित व्यवस्था के आधार पर हो ।
- जिसका निर्माण दिखावटी न हो, जिसके अन्दर में स्वार्थ परक क्षुद्र भावना छिपी हुई न हो, जिसका आन्तरिक एवं बाह्य स्वरूप एक हो ।
- इस प्रकार की एकता के प्रति मैं प्रयत्नशील रहा हू व प्रयास करते रहने की भावना है । फिलहाल सवत्सरी जैसे एक-२ बिन्दुओ पर यदि हम एक होते गये तो एक दिन हमारी सार्वभौम एकता भी सिद्ध हो सकती है, अर्थात् बिन्दु से सिन्धु की यात्रा ही स्थायी एकता के लिए उत्तम मार्ग प्रतीत होता है इस हेतु मेरा प्रयास

रहा है, युवाचार्य श्री भी ऐसा प्रयास रखेंगे, ऐसा मुझे विश्वास है।

प्रश्न—६ आप युवाचार्य श्री जी को इस अवसर पर क्या सन्देश देंगे?

उत्तर— इस विषयक संक्षिप्त सन्देश मैंने घोषणा पत्र के माध्यम से दिया ही है। युवाचार्य श्री अपने जीवन में संघ संचालन के गुरुत्तर दायित्व को निभाते हुए निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति की पवित्रता को सदा अक्षुण्ण रखें यही शुभ भावना है।

(पृष्ठ १२३ का शेष)

स्थ का चुनाव जहा होता है, वहा पूर्णता का प्रश्न उठाना व्यर्थ ही है।

प्र उनके समकक्ष या इनसे पुराने सन्तो के विषय में आपके क्या विचार हैं ?

उ मेरा तो सभी साधकों के प्रति एक ही विचार है। "जाए सद्धा निक्खते तमेव अणुपालिज्जा" जिस श्रद्धा से ...... तदनुरूप संयम का पालन करके जिनशासन का गौरव बढावें।

प्र आपने यह निर्णय जल्दबाजी मे क्या सोच कर लिया ?

उ शासन का हित, दूसरी बात यह स्पष्ट कर दू कि मैं जो भी निर्णय लेता हू अच्छी तरह सोच समझकर ही लेता हू, इसलिए यह निर्णय जल्दबाजी मे नही हुआ है।

साध्य निर्धारण

साध्य का निर्धारण साधना से पूर्व होना आवश्यक है। साध्य का निर्धारण हुए बिना साधना की भी कैसे जा सकती है अर्थात् साध्य विहीन साधना तेली के बैल की तरह केवल-भटकाव रूप व्यर्थ श्रम ही सिद्ध हो सकती है। इसलिए साधक को साधना में गति करने के पूर्व अपना लक्ष्य अवश्य निर्धारित कर लेना चाहिए।

—युवाचार्य श्रीराम

शास्त्रज्ञ तरुण तपस्वी युवाचार्य
श्री रामलालजी म.सा. से साक्षात्कार

साक्षात्कारकर्त्ता–प्रो सतीश मेहता

प्रश्न—१ युवाचाय के रूप में आपके मनोनयन की घोपणा पर आपको कैसा लगा, आपकी क्या अनुभूति रही ?

उत्तर— उक्त घोपणा के समय विराट् चतुर्विध सघ के सचालन की परिकल्पना से मैं स्वयं मे काफी भारीपन सा अनुभव कर रहा था आचार्य भगवन् की सन्निधि मे रहते हुए संघ सचालन के अनुभवो के आधार पर मेरे मन मस्तिष्क मे एक ही प्रश्न घूम रहा था कि क्या इस विराट् सघ का सचालन करने मे मैं सक्षम हो सकू गा ?

काफी सोच के पश्चात् भी मैं इसका समाधान नही ढू ढ पा रहा था। अन्ततोगत्वा संकल्प इस रूप मे जागृत हुआ कि आचाय देव का आशीर्वाद ही इस गुरुत्तर काय के निवहन मे सक्षमता प्रदान करेगा इससे मुझे उस भारीपन से राहत की अनुभूति हुई साथ ही कतव्य के प्रति दृढ़ संकल्प जागृत हुआ।

प्रश्न—२ क्या आप वता पायेंगे कि आचाय श्री नानेश ने आपकी किस विशेपता के कारण आपको युवाचार्य के रूप में मनोनीत किया ?

उत्तर— मुझ में क्या विशेपता है इस ओर मैंने कभी लक्ष्य ही नहीं किया। आचार्य प्रवर की पैनी दृष्टि, गहन व प्रखर चितन व गहरे अनुभव ज्ञान ने मुझ मे क्या विशेषता देखी ? यह आचाय भगवन् की—अनुभूति का विषय है।

प्रश्न—३ यदि आपसे पूछा जाता तो आप युवाचाय के रूप में किस सन्त के नाम का सकेत करते और क्यो ?

उत्तर— आचार्य देव की शासन सचालन शैली अद्भुत है। वे जो काय करते हैं मुख्य रूप से आत्मसाक्षी पूवक करते हैं। कभी वे छोटे बच्चे की बात को भी गंभीरता से ले लेते हैं जबकि बडे-बडे व्यक्तियो की बात भी कभी उन्हें मजूर नही होती। अतः मुझ से अथवा अन्य किसी से आचार्य श्री के द्वारा पूछ भी लिया जाता अथवा पूछ भी लिया गया हो तो उसका

विशेष महत्त्व नही है क्योकि आचार्य श्री जी को बात वही स्वीकार होती है जो उनकी अन्तर आत्मा को जंच जाती है।

वैसे जब यह विषय (युवाचाय विषयक) मेरे सामने आया तब पूज्य आचाय देव द्वारा नहीं पूछे जाने पर भी मैंने पूज्य गुरुदेव के चरणो में अपनी बुद्धि के अनुसार सत रत्नो के विषय में निवेदन किया था उस निवेदन के पीछे उद्देश्य यही था कि मैं सारे सघ की जिम्मेदारी से मुक्त रह कर पूज्य भगवन् की सेवा का, उनके अनुभवो का, उनके ज्ञान का और उनकी साधना का अधिक से अधिक लाभ उठा सकू ।

प्रश्न—४ आपकी दृष्टि में युवाचाय मे किन-किन गुणो एव विशेषताओं का होना आवश्यक है ?

उत्तर— आचाय के गुणो व क्षमतादि का कथन आगम साहित्य में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है । ३६ गुण व आठ सम्पदाए भी आचार्य के लिए मानी गयी हैं । सभी आचार्यों में य गुण समान रूप से ही विद्यमान हों ऐसा सम्भव नहीं है । किसी आचार्य में कोई गुण विशेप रूप से पाया जाता है, किसी आचाय में अन्य गुण । किन्तु सामान्य रूप से आचाय का वीतराग वचनो पर दृढ़ आस्थावान् एव पचाचार का जागृत भाव से पालन करने कराने वाला होना आवश्यक है । व्युत्पन्न मति अव्युत्पन्न मति आदि समग्र साधक परिवार को वात्सल्य पूवक, सम्यकृतया साधना माग में यथायोग्य सबल देने वाला व प्रबल वैराग्य भावना से सयुक्त होना चाहिए । आचार्य का न्याय पक्षी होना भी आवश्यक है । ये विशेपताए युवाचाय मे भी होनी चाहिये ।

प्रश्न—५ आपने आचार्य श्री नानेश के चरणो मे कब दीक्षा ली ? दीक्षा लेने का कारण क्या था ? प्रेरणा क्या थी ?

उत्तर— सं २०३१ के माघ मास की शुक्ला द्वादशी के दिन मैंने आचार्य देव के श्री मुख से सामायिक चारित्र (दीक्षा) ग्रहण किया था ।

दीक्षा ग्रहण के पीछे साधु बनने की प्रबल भावना थी।

ससार के भौतिक पदार्थों मे मन की सतुष्टि नही थी । व्यापारादि करते हुए भी साधु जीवन के प्रति प्रगाढ अनुराग था । इन शुभ सस्कारों की प्राप्ति पैतृक देन थी । बचपन से ही साधु बनने के खेल खेला करता था । एक बार मित्रो के साथ प्रतिज्ञाबद्ध भी हुआ था । इन सबके बावजूद मनाथ-अनाथ निणय नामक जवाहर किरणावली पुस्तक, जो पूज्यवाद स्व आचाय श्री जवाहरलालजी म सा के प्रवचनो का सकलन है, से दीक्षा लेने का सकल्प दृढीभूत बना था और इस सकल्प को वतमान आचाय श्री के जयपुर चातुर्मास के समय आगम व्याख्याता श्री कवरचन्दजी म सा ने आचार्य देव की सन्निधि मे जागृत करा दिया वहीं से दीक्षा लेने की भावना अत्यन्त प्रबल बन गयी । जो दीक्षा ग्रहण करके ही पूर्ण हुई ।

प्रश्न—६ दीक्षा लेने का आपका उद्देश्य (लक्ष्य) क्या था, उस उद्देश्य की प्राप्ति मे आपका युवाचाय बनना कितना सहायक सिद्ध होगा ?

उत्तर— पहले तो कोई खास उद्देश्य नही था, बस साधु परिवेश अच्छा लगता था, उसके प्रति लगाव था, किन्तु जब आचार्य भगवन् का सान्निध्य (वैराग्यावस्था मे) प्राप्त हुआ, तब आत्मा परमात्मा आदि का सम्यक अवबोध हुआ । उस बोध से "सव्व भूयप्प भूयस्स सम्म भूयाइ पासओ' के आदश को सन्मुख रख आत्मा से परमात्मा बनने का लक्ष्य निर्धारित किया और उसी की प्राप्ति के लिए साधना माग मे प्रवृत्त हुआ ।

मैं पिछले कई वर्षों से आचाय देव के निर्देशन मे अपने लक्ष्य के अनुरूप साधना करता रहा हू इसी बीच जो गुरुतर दायित्व का प्रसग मेरे साथ जोडा गया है, उसके विषय मे भी विचार करता हू तो पूज्य गुरुदेव का आभा मण्डल मेरी आखो के सामने तैर जाता है । वह आभा मण्डल सहसा निर्मित नही होता, उसके निर्माण मे विश्व की समस्त आत्माओ के प्रति कल्याण भावना का होना जरूरी है जिसके

दशन आचार्य देव के जीवन व्यवहार मे सहज सुलभ है। ऐसी स्थिति में मेरा मानना है कि ऐसे महान् व्यक्तित्व के धनी महामनस्वी पू गुरुदेव ऐसा कोई चिन्तन व काय नहीं कर सकते जो मेरे या अन्य किसी के आत्मकल्याण रूप लक्ष्य मे बाधक बनें ।

दूसरी बात यह है कि आचाय देव के आदेश को शिरोधार्य करना हमारी साधना का प्रथम सूत्र होना चाहिये, उस दृष्टिकोण से आचार्य देव का जो आदेश है, आज्ञा है, वह मेरे लिए करणीय है क्योकि भगवान ने कहा है "आणाए धम्मो" अर्थात् आज्ञा मे ही धम है और धम की साधना ही आत्मसिद्धि में सहायक है। अत आचाय देव ने अपने आत्म बल से, ज्ञान बल से मेरे लिए जो भी निर्देश दिया है वह मुझे मेरे लक्ष्य तक पहुंचाने में साधक होगा, ऐसा मेरा दृ विश्वास है ।

प्रश्न—७ आपकी दृष्टि मे चतुर्विध संघ का स्वरूप क्या है और इससे आपकी क्या अपेक्षाएं हैं ?

उत्तर— चतुर्विध संघ गुण रत्नो के पात्रो का समूह है यानि जिसमें अनेक भव्यात्माएं अपने रत्नत्रयादि आत्मीय गुणो का संवर्धन करती हुई यथायोग्य उत्कर्ष को प्राप्त करती हैं, उसे संघ कहते हैं । उस संघ मे साधु-साध्वी, श्रावक श्राविका रूप चार विभाग होने से उसे चतुर्विध कहा गया है ।

चतुर्विध सघ प्रभु महावीर द्वारा प्ररूपित सिद्धान्तों के आधार पर आत्म साधना करता हुआ शांत क्रान्ति के अग्रदूत स्व आचाय श्री गणेशीलालजी म सा द्वारा निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति की सुरक्षा हेतु दी गई—व्यवस्था जो सच्चे अर्थों मे निग्रन्थ को निर्ग्रन्थ बनाये रखती है, को भावात्मकता पूर्वक आत्मसात् कर श्रुत चारित्र धर्म की भव्य प्रभावना करे तथा अन्यो के लिए यथा योग्य सबल बन उन्हें उत्कर्षता प्राप्त करावे, यह अपेक्षा है ।

प्रश्न—८ युवाचाय के रूप मे आपका समाज राष्ट्र एवं विश्व के लिए क्या सन्देश है ?

उत्तर— आर्थिक भेद रेखा कृत्रिम जातीय भेद रेखा व इसी प्रकार भाषादि को लेकर जो भेद रेखाएं खींची हुई हैं, वे सारी

सकीण मनोदशा के परिणाम स्वरूप ही हैं । उस संकीर्ण मनोवृत्ति के कारण ही मानव के हृदय से प्रेम, सौहार्द, वात्सल्य की भावना शुष्क होती जा रही है जिससे व्यक्ति, व्यक्तिगत जीवन मे सिकुडता चला जा रहा है, समष्टिगत जीवन का वह मूल्यांकन ही नहीं कर पाता । वह केवल तुच्छ व्यक्तिगत स्वार्थ साधन मे तत्पर रहता है इसका परिवार, समाज, देश व विश्व पर घातक प्रभाव पडना स्वाभाविक है । इस घातक परिणाम से बचने के लिए विज्ञ-पुरुषो को जनजागरण की दिशा मे कार्यरत होना चाहिये । व्यक्ति बदलेगा तो देश बदलेगा । अत सबसे पहले व्यक्तिश आत्म समीक्षा करनी होगी कि वह अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए जितना सजग है, सक्रिय है, क्या उतनी ही सजगता सक्रियता उसकी दूसरे के अस्तित्व के स्वीकार के प्रति है ? यदि नही तो उसका कारण क्या ? क्या दूसरो को जीने का अधिकार नहीं है ? यदि दूसरो को भी जीने का अधिकार है तो उसके अधिकार का हनन करना कहा तक उचित है ? इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को आत्म समीक्षा के क्षणो में, पर अस्तित्व सापेक्ष चिन्तन कर यथाथ में जीने का प्रयास करना चाहिये ।

विशाल वृक्ष का आकार बीज में समाया, हुआ होता है । उसी प्रकार परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्वशान्ति का आकार व्यक्ति में रहा हुआ है । अतः स्वय से ही सुधार की प्रक्रिया प्रारम्भ करनी चाहिये ।

प्रश्न—९ युवापीढी के लिए आपका क्या मागदर्शन है ? उन्हें किस क्षेत्र मे क्या कार्य करना चाहिये ?

उत्तरः— चरमराते हुए आर्थिक ढाचे व कराहती हुई मानवता के लिए यदि आशा की किरण है तो वह है—"युवापीढ़ी" । युवापीढी मे कुछ कर गुजरने की ललक है । वह हताश और निराश जीवन जीने की आदी नहीं है । उसकी रग-रग मे उफनता जोश है । आवश्यकता है उस जोश को सही दिशा निर्देश की ।

युवाओ को चाहिये, "जीने के पहले जीवन को जाने' । आजकल प्राय होता यह रहा है कि लोग जानना कम पसंद

करते हैं वे जीना चाहते हैं । जब तक 'जीना' जानेंगे नहीं तो भला जिया कैसे जा सकता है? मुझे मानवीय जीवन के चरम विकास के छोर को समुपलब्ध करने वाले भगवान् महावीर का यह सन्देश याद आ रहा है । भगवान महावीर ने कहा है कि "पढम नाण तओ दया" अत मैं चाहूंगा कि "युवापीढी" 'जीने' के पहले 'जाने' । जब वह जीना जान लेगी तो किस क्षेत्र, किस दिशा में क्या कार्य करना, इसका मार्ग स्वत प्रशस्त बन सकता है ।

प्रश्न—१० आचार्य श्री नानेश के किस गुण से आप सर्वाधिक प्रभावित हुए हैं आपके जीवन निर्माण मे उनकी क्या भूमिका रही है

उत्तर— आचाय देव का जीवन गुण सौरभ से सुरभित है । सुगन्धित पुष्पों सा आचार्य देव का जीवन है । उनका प्रत्येक व्यवहार प्रभावित करने वाला है । इसलिए किसी एक गुण या विशेषता का सकेत करना कठिन है । किन्तु जब एक विशेषता की ओर इगित करना है तो मेरा मानना है कि आचाय देव की "मनोवैज्ञानिक काय पद्धति" व सबके प्रति आत्मीय भावना अपने आप मे अद्वितीय है जिसके द्वारा पूज्य गुरुदेव अपनी इच्छा शक्ति के अनुरूप काय करते में समय होते हैं उस मनोवैज्ञानिक कार्य पद्धति व आत्मीय भावना से आचाय प्रवर विरोधी से विरोधी व्यक्ति को भी अपने मनोनुकूल बना लेते हैं । मेरे जीवन निर्माण में पूज्य गुरुदेव की भूमिका ठीक वैसी रही है—जैसे दूध म शक्कर।

प्रश्न—११ अपने सत-सती व श्रावक श्राविका वर्ग को आप कैसा बनाना चाहेंगे ?

उत्तर— सच्चे अर्थों मे निग्रन्थ व सच्चा ज्ञानी ।

प्रश्न—१२ सघ पर की गयी सतत सेवाओ को मध्य नजर रखते हुए संघ सरक्षक व शासन सहयोग के लिए स्थविर प्रमुख के रूप मे जिन महामुनियों को अलंकृत किया गया है, उससे आप कैसा महसूस करते हैं ?

(शेष पृष्ठ १३६ पर पढ़ें)

हुक्म पूज्य की गादी सदा से दीपती रही है और दीपती रहेगी--संघ संरक्षक

साक्षात्कारकर्त्ता–सुशील कुमार बच्छावत

सुशील— मत्थएण वदामि

संघ संरक्षक—स्नेह और करुणा का वरद हस्त उठाते हुए—दया पालो।

सुशील— सर्वप्रथम मैं आपको बधाई देता हू चू कि आपको सघ सरक्षक के महत्त्वपूर्ण पद से अभिसिक्त किया गया है। अब मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हू, समय हो तो ।

सघ सं—हां, हा, अवश्य पूछिये।

सुशील— श्रद्धेय मुनि श्री के उपपात मे बैठते हुए—आप सघ-सरक्षक पद प्रदान (प्राप्ति) के पश्चात स्वय में कैसा अनुभव कर रहे हैं ?

सघ स—इस पद की न तो पूर्व मे आवश्यकता महसूस की और न अभी भी कर रहा हू। मैं दीक्षित होने के पश्चात् पूज्य आचार्य श्री गणेशीलालजी म सा के चरणो में समर्पित भाव से सेवा करता था। उसके पश्चात् पूज्य आचार्य श्री नानालालजी म सा की भी उसी समर्पित भाव से सेवा करता आ रहा हू। मैंने सदा सेवा मे प्रसन्नता का अनुभव किया है। अभी आप देख रहे हैं। शरीर जड के समान हो रहा है, कार्य करने की क्षमता नहीं रही फिर भी कुछ न कुछ किये बिना मन को सन्तोष होता ही नही। इस पद को तो मैं आचार्य श्री का मेरे प्रति अनन्य स्नेह भाव है उसी की अभिव्यक्ति मानता हू। मैं अपने को पूर्व की भांति अभी भी अपने आपको अकिंचन लघु के रूप मे ही अनुभव कर रहा हू।

सुशील— बहुत अच्छा, क्या आप बताएगे कि सघ विकास के रूप मे आपकी क्या परिकल्पनाए हैं ?

सघ स—मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हू कि मुझे तीन तीन आचार्यों की सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ। चौथे भावी आचार्य जो युवाचार्य के रूप मे हैं वे तो मेरे सामने ही वैरागी बने साधु बने और आज युवाचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं। मैं सघ विकास की जो बात जब भी दिमाग में उभरती है श्री चरणो मे रखता हू। प्रत्यक्ष का प्रसंग

उपस्थित नहीं होता है तो पत्र द्वारा भी अपने भाव अभिव्यक्त करता रहता हूँ। वैसे मैं कहने मे कम, करने में ज्यादा विश्वास करता हू। मैं चाहता हू। सघ के साधु साध्वियों का शैक्षणिक विकास हो और अपनी प्रतिभा से शासन की अभिवृद्धि करें। वैरागी वैरागनों के अध्ययन की अभी तक समुचित व्यवस्था नहीं जम पाई है। मेरे पास कोई वैरागी रहा मैंने व्यवस्था जमा ली या किसी अन्य के पास रहने पर उसने व्यवस्था जमा ली, यह बात अलग है। परन्तु सार्वभौम ऐसी व्यवस्था की आवश्यकता है जिससे वैरागी वैराग के जीवन का समग्र विकास हो सके।

पूज्य गणेशाचार्य, दीर्घ दृष्टा आचार्य थे। उन्होंने पूज्य जवाहराचार्य के क्राति स्वप्न एक शिक्षा, एक दीक्षा, प्रायश्चित्त और विहार को साकार किया। उस साकार स्वप्न के स्थिरीकरण हेतु दृढ़ता हेतु नानेशाचार्य के हाथो एक और क्राति हो जो वैरागी वैरागन के समुचित व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते।

आचार्य श्री नानेश के सफल मार्ग दर्शन में सघ ने विका के नये आयाम प्रस्तुत किये हैं। साधु साध्वियो ने चतुर्दिक विका किया है। शिक्षा, दीक्षा, तपस्या, सथारा इत्यादि मे कीर्तिमान स्थापि हुए हैं। विहार क्षेत्र भी आज तक की परम्परा मे सर्वाधिक विस्त हुआ है। मेरी भावना है कि सघ के समर्थ साधु साध्वियाँ देश के विस्त भूभाग को अपने ज्ञान एव चारित्र बल से लाभान्वित करें और स की कीर्ति कौमुदी को प्रसरित करें। वृद्ध साधु साध्वियों के सेवा स्थ्य के बारे में भी मैंने अपने विचार गुरुदेव के चरणो मे रखे हैं।

सुशील— बहुत अच्छा, महाराज श्री ! आप सघ मे दीर्घ अनुभव वरिष्ठ संत हैं। आप स्व श्रीमद् गणेशाचार्य द्वारा वर्तमान आचार्य श्री को युवाचार्य पद प्रदान के समय साक्षी रहे हैं व वर्तमान आचार्य श्री नानालालजी म सा द्वारा मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा के युवाचार्य पद प्रदान के समय भी साक्षी हैं। दोनों अवसरों के सम्बन्ध में आप अपनी अनुभूति से अवगत करायेंगे ?

संघ सं —मैं अपनी अनुभूति क्या बताऊ ! जब उस समय की स्मृति आती है तो रोमांचित हो जाता हू। बड़ी विकट समस्याएं

थी । चारो ओर विरोधी बादल मडरा रहे थे । गणेशाचार्य स्वयं अस्वस्थ थे । शारीरिक दृष्टि से अशक्त हो चुके थे । जब वतमान आचाय श्री को युवाचार्य पद प्रदान करने की बात आई तो श्रावक श्राविकाए तो क्या, साधु साध्वियो मे से भो आवाज आने लगी कि इस अनबोले (कम बोलवे वाले) को आचाय बना रहे हैं, क्या होगा ? कैसे सघ चलेगा ? सभी को निराशा थी । परन्तु मुझे विश्वास था । क्योकि पूज्य गणेशाचार्य का आशीर्वाद इन्होने प्राप्त किया था । उस महापुरुष का आशीर्वाद कब खाली जाने वाला था ।

उस समय की परिस्थिति और आज की परिस्थिति मे काफी अन्तर है । आज सघ मे एक से एक बढ़कर विद्वान् सत है । विशाल साध्वी समूह है । उसमें से एक तरुण सत को युवाचाय का पद प्रदान किया गया है । विरोध की जगह सहयोग के लिए सौ-सौ हाथ तैयार हं । यह तो युवाचाय श्री (रामलालजी म सा) की महान् पुण्यवानी है कि सघ मे सेवा हेतु सहयोग हेतु तपस्वी, सेवाभावी, विद्वान्, वक्ता, कवि, उग्रविहारी इत्यादि सभी तरह के छोटे-मोटे अनुभवी सत हैं ।

परिस्थिति में सब कुछ अन्तर होते हुए भी वतमान आचाय श्री ने अपने उत्तराधिकारी का जो चयन किया उसमे गहरी सूझबूझ का दशन होता है । जब मेरे से विचार विमश करते समय आचार्य श्री जी ने अपनी भावना दर्शाई तो मैं दग रह गया । मैंने पूण सहयोग का भाव दर्शाया और इस चयन को सवथा उपयुक्त बताया ।

सुशील— क्षमा करें, मैं बीच में एक बात पूछ लेता हू—अगर इस नाम की जगह कोई दूसरा नाम युवाचाय पद के लिए आता तो ?

सघ स —मैंने आपको पूव मे ही कहा था कि सघ मे एक से एक विद्वान संत हैं । आचाय श्री जो सोचते है वो सवथा उपयुक्त सोचते हैं और एक बात विशेषता की हैं कि वे जो सोचते हैं, करके ही रहते हैं । चाहे कितनी ही बाधाएं क्यों न हो ।

मैंने तो प्रारम्भ से ही अपने जीवन का मूलमत्र बना रखा है—

होगा प्रभु का जिधर इशारा ।
उधर बढेगा कदम हमारा !!

आचाय श्री जो मेरे गुरु भाई हैं, फिर भी मैंने अपने आपको

शिष्य ही समझा है तथा मेरी प्रवृत्ति शिष्यवत् ही रही है। मैं तो आचार्य श्री के हर इशारे को आदेश मानता हू और वे सोचते हैं उसे सही मानता हू। यह तो आचाय श्रीजी की महानता है कि वे मेरे स भी पूछ लिया करते है।

सुशील— बस मैं आपका अधिक समय नही लू गा। अब यह अन्तिम प्रश्न है मेरा। युवाचाय श्री रामलालजी म सा को विशाल सघ का उत्तरदायित्व सौंपा गया है आप अपने दीर्घ अनुभव के आधार पर सघ के भविष्य को किस रूप मे देख रहे हैं?

सघ स —निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति की सुरक्षा को मद्देनजर रखकर जो भी काय किया जाता है वह सदा सही होता है तथा उस कदम का भविष्य उज्ज्वल होता है। युवाचाय श्री रामलाल जी म सा अत्यन्त विनम्र, सरल, सेवाभावी, आगम ज्ञान के धनी तथा आचारवान्त महापुरुष हैं। इस परम्परा का सौभाग्य है कि इसे एक से एक बढकर क्रियानिष्ठ उत्तराधिकारी मिलते रहे हैं। उत्तराधिकारी में युवकत्व, विद्वत्ता और आचारवंतता तीनो का एक साथ सद्भाव सघ को उन्नति के शिखर पर ले जाने वाला है। हुक्म पूज्य की यह गादी सदा से दीपती रही है और दीपती रहेगी।

[मैंने साक्षात्कार के दौरान पाया कि सघ संरक्षक मुनि श्री इन्द्रचन्दजी म मे आत्म विश्वास की अमित रेखाए झलक रही हैं और उनके सरल मन मे समूचे सघ का उज्ज्वल भविष्य चमकता हुआ दिखाई दे रहा है तथा शासननिष्ठा, शासननायक के प्रति समर्पण बेजोड है—साक्षात्कारकर्ता]।

(पृष्ठ १३२ का शेष)

उत्तर— मैंने आपके एक प्रश्न के उत्तर मे कहा था कि आचार्य देव के आदेश को शिरोधार्य करना हमारी साधना का प्रथम सूत्र होना चाहिये उसी सदभ मे मैंने भगवान् द्वारा निरूपित "आणाए धम्मो" की बात भी कही थी, तदनुसार आचाय भगवन् ने जो व्यवस्था दी है उसे मैं अपने आत्म श्रेय मे सहायक मानता हू।

卐

युवाचार्य पद महोत्सव पर विराजमान
सन्त भगवन्तो की नामावली

१ समता विभूति आचाय श्री नानेश
२ मुनि श्री इन्द्रचन्द जी म सा
३ " अमरचन्द जी म सा
४ " शातिलाल जी म सा
५ " प्रेमचन्द जी म सा
६ " पार्श्वकुमार जी म सा
७ श्री धर्मेश मुनि जी म सा
८ श्री रणजीत मुनि जी म सा
९ " महेन्द्र मुनि जी म सा
१० " सौभाग मुनि जी म सा
११ " वीरेन्द्र मुनि जी म सा
१२ " हुलास मुनि जी म सा
१३ " विजय मुनि जी म सा
१४ " ज्ञान मुनि जी म सा
१५ " बलभद्र मुनि जी म सा
१६ " राम मुनि जी म सा
१७ " प्रकाश मुनि जी म सा
१८ " गौतम मुनि जी म सा
१९ " प्रमोद मुनि जी म सा
२० " प्रशम मुनि जी म सा
२१ " मूल मुनि जी म सा
२२ " अजित मुनि जी म सा
२३ " जितेश मुनि जी म सा
२४ " विनय मुनि जी म सा
२५ " पद्म मुनि जी म सा
२६ " सुमति मुनि जी म सा
२७ " चंद्रेश मुनि जी म सा
२८ " धर्मेन्द्र मुनि जी म सा
२९ " धीरज मुनि जी म सा

३० श्री क्रांति मुनि जी म सा
३१ " विवेक मुनि जी म सा
३२ " रत्नेश मुनि जी म सा
३३ " समव मुनि जी म सा
३४ " इन्द्रेश मुनि जी म सा
३५ " राजेश मुनि जी म सा

युवाचार्य पद महोत्सव पर विराजमान साध्वी रत्नो की नामावली

१ महासती श्री सिरे कवर जी म सा
२ " " पान कंवर जी म सा
३ " " पेप कवर जी म सा
४ " " थापू कवर जी म सा
५ " " कचन कंवर जी म सा
६ " " सूरज कंवर जी म सा
७ " " भंवर कंवर जी म सा
८ " " फूल कवर जी म सा
९ " " सायर कवर जी म सा
१० " " चांद कवर जी म सा
११ " " बदाम कवर जी म सा
१२ " " सुमति कवरजी म सा
१३ " " इचरज कवर जी म सा
१४ " " चन्द्र कवर जी म सा
१५ " " सरदार कवर जी म सा
१६ " " रोशन कवर जी म सा
१७ " " झमकू कवर जी म सा
१८ " " सुशीला कवर जी म सा
१९ " " लीलावती जी म सा
२० " " कस्तूर कंवर जी म सा

२१ महासती श्री ज्ञान कंवर जी म सा
२२ " " इन्दुबाला जी म सा
२३ " " चदनबाला जी म सा
२४ " " सुशीला कंवर जी म सा
२५ " " सुशीला कवर जी म सा
२६ " " कुसुमलता जी म सा
२७ " " प्रेमलता जी म सा
२८ " " विमलावती जी म सा
२९ " " कमलप्रभा जी म सा
३० " " विमला कंवर जी म सा
३१ " " कुसुमलता जी म सा
३२ " " तारा कवर जी म सा
३३ " " चेतन श्री जी म सा
३४ " " तेजप्रभा जी म सा
३५ " " कुसुमकांता जी म सा
३६ " " राजमती जी म सा
३७ " " मजूबाला जी म सा
३८ " " प्रभावती जी म सा
३९ " " ललितप्रभा जी म सा
४० " " सुशीला कवर जी म सा
४१ " " समता कंवर जी म सा
४२ " " ललिता श्री जी म सा
४३ " " विचक्षणा श्री जी म सा
४४ " " सुलक्षणा श्री जी म सा
४५ " " प्रियलक्षणा श्री जी म सा
४६ " " प्रीति सुधा जी म सा
४७ " " किरणप्रभा जी म सा
४८ " " सोमलता जी म सा
४९ " " जयत श्री जी म सा
५० " " सुदशना श्री जी म सा
५१ " " आदश प्रभा जी म सा

५२ महासती श्री कीर्ति श्री जी म सा
५३ " " मनोरमा श्री जी म सा
५४ " " सुप्रतिभा श्री जी म सा
५५ " " मुक्ति प्रभा जी म सा
५६ " " गुण सु दरी जी म सा
५७ " " मधुबाला जी म सा
५८ " " पद्म श्री जी म सा
५९ " " अरुणा श्री जी म सा
६० " " दशना श्री जी म सा
६१ " " प्रवीणा श्री जी म सा
६२ " " पकज श्री जी म सा
६३ " " कमल श्री जी म सा
६४ " " प्रमोद श्री जी म सा
६५ " " उर्मिला श्री जी म सा
६६ " " सुभद्रा श्री जी म सा
६७ " " ललित प्रभा जी म सा
६८ " " वसुमति जी म सा
६९ " " विद्यावती जी म सा
७० " " विरक्ता श्री जी म सा
७१ " " समिता श्री जी म सा
७२ " " शुचिता श्री जी म सा
७३ " " श्वेता श्री जी म सा
७४ " " नम्रता श्री जी म सा
७५ " " मुक्ति श्री जी म सा
७६ " " सिद्ध प्रभा जी म सा
७७ " " विशाल प्रभा जी म सा
७८ " " रक्षिता श्री जी म सा
७९ " " महिमा श्री जी म सा
८० " " मृदुला श्री जी म सा
८१ " " वीणा श्री जी म सा
८२ " " लक्ष प्रभा जी म सा

८३	महासती श्री सूर्यमणि जी म सा
८४	" " शारदा श्री जी म सा
८५	" " विकास श्री जी म सा
८६	" " तरुलता जी म सा.
८७	" " करुणा श्री जी म सा
८८	" " सुयश मणि श्री जी म सा
८९	" " सिद्ध मणि जी म सा
९०	" " रजत मणि जी म सा
९१	" " गरिमा श्री जी म सा
९२	" " हेम श्री जी म सा
९३	" " कल्पमणि जी म सा
९४	" " मयकमणि जी म सा
९५	" " चन्दनबाला जी म सा
९६	" " मीना श्री जी म सा
९७	" " पराग श्री जी म सा
९८	" " भावना श्री जी म सा
९९	" " दिव्य प्रभा जी म सा
१००	" " उज्ज्वल प्रभा जी म सा
१०१	" " कल्पलता जी म सा
१०२	" " सुमित्रा श्री जी म सा
१०३	" " इगिता श्री जी म सा
१०४	" " लक्षिता श्री जी म सा
१०५	" " विकाम श्री जी म सा
१०६	" " अक्षयप्रभा जी म सा
१०७	" " अर्पिता श्री जी म सा
१०८	" " समर्पिता श्री जी म सा
१०९	" " किरणप्रभा जी म सा
११०	" " गरिमा श्री जी म सा
१११	" " रेखा श्री जी म सा
११२	" " कल्पना श्री जी म सा
११३	" " विवेक श्री जी म सा

११४	महासती	श्री	पुनीता श्री जी म सा
११५	"	"	पूजिता श्री जी म सा
११६	"	"	स्वण प्रभा जी म सा
११७	"	"	स्वण रेखा जी म सा
११८	"	"	स्वण ज्योति जी म सा
११९	"	"	स्वणलता जी म सा
१२०	"	"	प्रमिला श्री जी म सा
१२१	"	"	सुमगला श्री जी म सा
१२२	"	"	पावन श्री जी म सा
१२३	"	"	प्रज्ञा श्री जी म सा
१२४	"	"	सम्बोधि श्री जी म सा
१२५	"	"	विपुला श्री जी म सा
१२६	"	"	विजेता श्री जी म सा
१२७	"	"	स्थित प्रज्ञा जी म सा
१२८	"	"	मनीषा श्री जी म सा
१२९	"	"	धैय प्रज्ञा जी म सा
१३०	"	"	मणि श्री जी म सा
१३१	"	"	वैभव श्री जी म सा
१३२	"	"	शीलप्रभा जी म सा
१३३	"	"	अभिलाषा श्री जी म सा
१३४	"	"	नेहा श्री जी म सा
१३५	"	"	कविता श्री जी म सा
१३६	"	"	अनुपमा श्री जी म सा
१३७	"	"	नूतन श्री जी म सा
१३८	"	"	अंकिता श्री जी म सा
१३९	"	"	संगीता श्री जी म सा
१४०	"	"	जागृति श्री जी म सा
१४१	"	"	विभा श्री जी म सा
१४२	"	"	मननप्रज्ञा जी म सा

सन्त ३५, सतियांजी १४२ कुल = १७७

युवाचार्य विशेषांक

शुभकामना

संदेश

बधाई

तृतीय-खण्ड

आचार्य भगवन् का निर्णय प्रसन्नता लाने वाला है

—दीर्घ तपस्वीराज शासन प्रभावक महा
मुनिराज श्री ईश्वरचन्द जी म सा

मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म को सन्त-सतियो के विहार आदि के लिये अधिकार देने का वातावरण सुनने को मिला, सुनकर प्रसन्नता होना स्वाभाविक है। भविष्य में भी आचार्य भगवन् जो काम करेंगे प्रसन्नता का ही कारण बनेगा।

भगवान ऋषभ देव ने माता से पूछा—मा! मैं दीक्षा लू? माता ने कहा—हे लाल! तू जो करता है अच्छा ही करता है। यह कार्य भी अच्छा ही है। दीक्षा आनन्द से लो। इसी प्रकार आचार्य भगवन् ने जो काम किया है वह अच्छा ही किया है एव जो करेंगे वह भी अच्छा ही करेंगे। यह कार्य भी सघ हित मे ही किया है। जो प्रसन्नता लाने वाला है। माता मरुदेवी की तरह हमारे लिए कर्मो की निर्जरा कराने वाला है।

[उपरोक्त भाव आचार्य भगवन् द्वारा चित्तौड मे मुनि प्रवर को अधिकार प्रदान किया उस समय तपस्वीराज ने व्यक्त किये।]

✻

शुभानुशंसा एव शुभकामना

✻ सघ सरक्षक श्री इन्द्रचन्द जी म सा

सेठिया जन धार्मिक भवन मे आज प्रार्थना के समय गहमागहमी थी। सर्वत्र एक शान्ति का वातावरण परिलक्षित था। उपस्थित जनमेदिनी निर्निमेष दृष्टि से आचार्य प्रवर द्वारा घोषित किसी महत्वपूर्ण निर्णय की वाचना का श्रवण कर रही थी। एक ऐतिहासिक भव्य दीक्षा समारोह के पश्चात् युवाचार्य श्री की घोषणा का यह मागलिक अवसर था। चित्तौडगढ के वर्षावास मे आचार्य देव ने एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया था और चातुर्मासिक व्यवस्था का उत्तरदायित्व तरुण

तपस्वी, शास्त्र मर्मज्ञ, विद्वद्वय "मुनिप्रवर" श्री रामलाल जी म सा को सौंपा था। आप बडी शालीनता पूवक इस महनीय भूमिका का निर्वहन करते रहे हैं।

स्वर्णिम प्रभात था आज ! गौरवान्वित था बीकानेर ! और धन्य हुई सेठिया कोटडी कि यहा परम आराध्य आचाय देव ने शासन व्यवस्था के लिए गहन विचार विमर्श असीम चिन्तन एवं अपूर्व दूर दर्शिता के पश्चात् श्री राम मुनिजी को आचार्य पद सम्बन्धी समग्र अधिकारों के साथ युवाचाय घोषित किया। प्रार्थना-सभा में हर्ष ध्वनि के पश्चात् जयघोष एव अनूठे आनन्द का वातावरण उपस्थित हो गया। और अन्त हुआ एक अनिश्चितता एव अटकलबाजियों का। चतुर्विध सघ ने इस निणय का तहेदिल से स्वागत किया और गुरु आज्ञा को शिरोधाय कर तदनुसार समर्पित रहने का संकल्प भी किया।

मैं खो गया अतीत की घटनाओ मे। स्मृति पटल पर विस्मृत दृश्य उभर रहे थे। किस प्रकार मैं हुक्मेश सघ का अभिन्न अंग बना और आज आचाय-प्रवर के वरद हस्त से आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त कर सका .. सिंहावलोकन करते चार दशक से भी अधिक दूर की स्मृतिया जैसे वर्तमान की प्रतीत होने लगी। विक्रम सं २००० की बात है। मैं विरक्तावस्था में देशनोक मे विराजित शान्त क्रान्तद्रष्टा, सौम्यमूर्ति परम श्रद्धेय गुरुदेव आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा के दशनार्थ उपस्थित हुआ था। तत्पश्चात बीकानेर दर्शनार्थ उपस्थित हुआ। अन्य सन्त महात्माओ के मध्य एक समवयस्क सन्त–वतमान आचाय श्री जी ही नजर आये, जिन्होंने मुझे सहज ही आकर्षित कर लिया। उनके उपदेशामृत से लाभान्वित होने की जिज्ञासा से वन्दन कर निकट बैठ गया। मैंने अपना नाम बताया और वैराग्य भावो के बारे मे बताया तो आप—"बहुत अच्छा" मात्र कहकर पुन ज्ञानार्जन में संलग्न हो गये। एक क्षण के लिए कुछ अटपटा तो लगा परन्तु शीघ्र ही अनुभूति हुई कि यह निर्लिप्त भाव ही तो साधुत्व की कसौटी है। उनकी इस निर्लिप्तता से प्रभावित तो हुआ ही—आज उनका सत्सानिध्य पाकर धन्य अनुभव कर रहा हू।

दीक्षोपरान्त शांत क्रांति के अग्रदूत स्वर्गीय गुरुवर्य आचार्य श्री का कृपा पात्र होने के कारण सन्त सेवा व वैराग्य रंग के साथ

दर्शन व सामाजिक/चातुर्मासिक व्यवस्था सम्बन्धी विचार विमर्श के स्वर्णिम क्षणों के शुभावसर मिलते रहे । फलस्वरूप वर्तमान शासनेश के सम्पर्क में आने का विशेष सौभाग्य प्राप्त होता रहा ।

वर्तमान आचार्य श्री जी म सा के पद ग्रहण के समय संघ में कुछ अव्यवस्था व बिखराव प्रतीत हो रहा था परन्तु आपके विराट् व्यक्तित्व व अनुपम कार्य प्रणाली से पुन एक रौनक का उद्भव हुआ । आपकी प्रखर प्रतिभा, विलक्षण रत्नत्रय वैभव एव सुगठित अनुशासन व व्यवस्था से श्री हुक्मेश संघ की गरिमा मे उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही और आज इस गुलशन का स्वय मे एक महत्वपूर्ण स्थान है ।

आचार्य का पद कोई सामान्य पद नहीं है, गुरु के शीर्ष पद हेतु गरिमा, आचार, विचार, योग्यता, आगमिक तलस्पर्शी ज्ञान, त्याग, वैराग्य, चारित्र एव अनुभव का होना महत्वपूर्ण है । साथ ही दूरदर्शिता, संघ के प्रत्येक सदस्य के प्रति उदारवृत्ति पूर्ण समान व्यवहार, निष्पक्ष शासन व्यवस्था आदि दृष्टिकोण भी आवश्यक है । इन्हीं आयामों को दृष्टिगत रखकर आचार्य श्री ने ३ मार्च ९२ (फाल्गुन बदी १३) को बीकानेर संघ को विशिष्ट पद युवाचार्य घोषणा का मांगलिक शुभवसर प्रदान किया । इस उद्घोषणा के चार दिन पश्चात् फाल्गुन सुदी ३ को श्री रामलाल जी म सा को ऐतिहासिक राजप्रासाद— जूनागढ़ मे विशाल जनसमूह की साक्षी मे इस गरिमा मण्डित पद से विभूषित किया ।

युवाचार्य श्री राम मुनिजी म सा क्रियोद्धारक आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी म सा से लेकर वर्तमान आचार्य देव श्री नानेश की वृद्धिगत परम्परा मे अक्षरशः गति प्रदान करते रहें व उदित दिवाकर वत् प्रकाशित होते हुए संघ की दीप्ति को उजागर करते रहेंगे, इन्हीं शुभानुशसाओं के साथ ।

[संघ संरक्षक श्री इन्द्रचन्द जी म सा के भावों पर आधारित]

युवाचार्य श्री उच्च स्तर के प्रज्ञानिधि हैं

—शासन प्रभावक श्री सेवन्त मुनिजी म सा
एव विद्वद्वय श्री रमेश मुनिजी म सा

शास्त्र ममज्ञ मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा को सब गुण सम्पन्न समझकर आपश्री ने जो युवाचार्य पद दिया है। यह अत्यन्त दूरदर्शिता एव सघ के हित की उत्कृष्टता का आपश्री ने अभिव्यक्तिकरण किया है, जो कि बहुत ही समीचीन है। आपश्री ने दूरदर्शिता पूवक जिस महापुरुष को परखा है तथा धम के साम्राज्य के सिहासन पर बिठाया है वह बहुत ही उत्तम, मगलमय एव श्रेयस्कर कार्य किया है। आपश्री चतुर्विध संघ के वफादार हैं। लगता है कि आपश्री आत्मोत्कर्ष की पवित्र शक्तियो से सम्पर्क पा चुके हैं।

सब गुण सम्पन्नता, आत्मिक सिद्धियां अतिशय चारित्र निर्मलता की प्रतीक है। जो कि आपश्री ने हस्तगत करली है। आपश्री की सुदूरदर्शिता से अत्यधिक प्रभावित हुए—हम दोना सत।

सुयोग्य सुदृढ़ कन्धों पर शासन भार वहन के लिये जिस महामेधावी महापुरुष का चयन हुआ, यह बहुत ही सही समय पर सुयोग्य काय शासन हित की उत्कृष्टता का ख्याल करके किया गया है। शास्त्रज्ञ मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा बहुत ही सुयोग्य उच्च स्तर के प्रज्ञानिधि हैं। सुविचक्षण हैं। अप्रमत्त होकर शासन सेवा तथा आपश्री के चित्त को प्रसन्न कर जीत लिया है। इसमें किंचित भी सदेह नहीं। मुनि प्रवर की विचक्षणता ही शासन भार को वहन करने म समथ हो सकेगी।

मुनि प्रवर के विशुद्ध श्रमणत्व जीवन पर हमको पूर्ण विश्वास है। आपश्री की सतत् जागरूकता सयम में सजगता अद्वितीय है। इसमे कोई शक नहीं। मुनि प्रवर के सुयोग्य कन्धा पर युवाचार्य पद सहित चादर ओढ़ाकर आपश्री ने बहुत ही प्रशंसनीय काय किया है। पर समय पर वास्तविकता सामने आयेगी तब कईयों को आपश्री की दूरदर्शिता का ख्याल आयेगा तब सब कुछ ठीक हो जायेगा।

काफी समय से मेरे हृदय मे मुनि प्रवर पर अत्यधिक स्नेह प्रशस्त रागमय स्नेहिल दिल हो जाया करता है। हृदय मडल में स्ने

हिल भाव की गजब की अनुमति होती रहती है ।

स्वर्गीय आचाय श्री गणेशलाल जी म सा ने जो आप श्रीजी को शासन भार सौंपा था उसको वखूबी प्रभावी ढग से सचालित कर पूण रूपेण निभाया है । उसी तरह से पुरुषोत्तम सव गुण सम्पन्न ज्ञान, दशन, चारित्र व तप की उत्कृष्ट आराधना करते हुए युवाचाय श्री रामलाल जी म सा भी आपश्री जी की तरह ही चतुर्विघ सघ की अभिवृद्धि के साथ-२ शासन में चार चाद लगायेंगे तथा पूर्वाचार्यो की निग्र थ श्रमण सस्कृति की रक्षा करने मे अतिशय आगे रहेंगे इसमे कोई सन्देह जैसी बात नहीं है । हम दोनो संत भी आपश्री के चरणो में समर्पित रहे हैं उसी तरह युवाचाय श्रीजी के चरणो मे समर्पित रहेंगे । जैसे आपश्री हमारी श्रद्धा के केन्द्र रहे हैं उसी तरह से युवाचाय श्रीजी के भी श्रद्धा के पात्र हम रहगे और वे हमारे श्रद्धा के केद्र रहेंगे । युवाचाय श्री की आज्ञाओ को भी आपश्री जी की आज्ञा की तरह मानकर चलेंगे ।

निर्णय सघ के लिए वरदान बनें

✠ घोर तपस्वी श्री अमीर मुनिजी म सा

पूज्य गुरुदेव अद्‌भुत योगी हैं ।
इनकी अथाह ज्ञान शक्ति को पहचानना
सव साधारण की सीमा से बाहर है ।
श्री गुरुदेव ने युवाचार्य पद का जो निर्णय
लिया वह उत्तम ही नहीं अत्युत्तम है ।
भगवान का यह निणय सघ के लिये
वरदान बनें । पूज्य गणेशाचाय की भाँति
श्री नानेशाचार्य की परख भी सोलह आना
सही निकले, यही शासन देव से प्राथना
है । श्री युवाचाय श्री जी दीर्घायु हो एव
शासन की प्रभावना करते रहें ।
यही शुभ मगल कामना है ।

जैसा हम सोचते थे वैसा ही आपका चिन्तन सही रहा

✠ आगम व्याख्याता मुनिश्री कंवरचन्द जी म.
सेवाभावी मुनि श्री रतनचन्द जी म

आचार्य भगवन ने गहरा चिन्तन मनन करके अपने उत्तराधिकारी युवाचार्य के रूप मे मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा को पद पर नियुक्त किया। उसका हमे गौरव है। जैसा हम सोचते थे वैसा ही आपका चिन्तन सही रहा है, इस बात पर द्वय मुनिवर ने प्रसन्नता व्यक्त की तथा शासन के प्रति निष्ठावान बने रहने की भावना व्यक्त की है।

कानोड

शासन की शोभा बढावें

✠ शासन प्रभावक श्री सम्पत मुनिजी म
सेवाभावी श्री नरेन्द्र मुनिजी म

जिन आज्ञा ही श्रमणजीवन के लिए मुख्य विधि है उसकी वैधानिक सुरक्षा के लिए आचार्य श्री नानालाल जी म सा. ने बीकानेर के भव्य राजमहल मे महाराजा श्री नरेन्द्र सिंहजी की उपस्थिति मे सुधर्मा स्वामी जम्बू स्वामी जैसे महापुरुषों की परम्परानुरूप शुभ्र वर्णी श्वेत चादर युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा को शुभ मिती फाल्गुन शुक्ला ३ सं २०४८ शनिवार दि ७ ३-१९९२ को उपस्थित अन्य ३३ मुनिवर एवं १३८ महासतिया जी तथा जन समुदाय के जय घोष के अनुमोदन पूर्वक प्रदान की।

अर्थात् अपना उत्तराधिकार और इस संघ का भार अपने कधों से उतारकर पू श्री हुक्मीचन्द जी म सा के नववें पाट पर युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा के कधो पर रखा। अष्ट सिद्धि नव निधि का सम्मिलन हुआ।

जिस योग्यता को परखकर आचार्य श्रीजी ने अपना उत्तरा

विकार प्रदान किया उसी योग्यता मे दिन दुना रात चौगुना निखार लाते हुए युवाचाय श्रीजी, पू श्री इन्द्र भगवान् की संरक्षकता मे स्थविर प्रमुख तथा चतुर्विध सघ के सहयोग से इस महान् गुरुतर भार को अच्छी तरह से वहन करते हुए शासन की शोभा बढावें ऐसी शुभकामना ।

पाली (मारवाड)

सही समय पर सही कदम

शासन प्रभावक श्री धर्मेश मुनिजी म

आचार्य के जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि है—सुयोग्य उत्तराधिकारी का निष्पक्ष चयन !

प्रसन्नता की बात है कि आचाय प्रवर श्री नानेश ने अपने जीवन की सर्वोचिच उपलब्धि प्राप्त की है युवाचार्य के रूप में 'श्रीराम' को पाकर ।

आचार्य भगवन ने शास्त्रज्ञ विद्वद्वर्य तरुण तपस्वी मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा को युवाचार्य पद पर नियुक्त करके सही समय पर सही कदम उठाया है । आचार्य श्री के इस कदम ने जहां सघ को चिन्ता मुक्त किया है वहां स्वय को भार मुक्त भी किया है ।

इस अवसर पर आचार्य श्री को
सश्रद्धा वन्दन !
युवाचाय श्री का भाव भीना
अभिनन्दन

पावन परम्परा अक्षुण्ण रहेगी

—कविरत्न श्री गौतम मुनिजी म

चतुर्विध सघ मे काफी समय से इस बात को लेकर चर्चा चल रही थी कि युवाचाय पद का चयन कब होगा ? हमारे श्रद्धा केन्द्र आचाय श्री नानेश भी चतुर्विध सघ की इस चर्चा को यथावसर

सुनते रहे परन्तु उस चर्चा से कभी प्रभावित नही हुए।

सुदीर्घ चिन्तन के पश्चात् संवत् २०४८ फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी को युवाचार्य पद की घोषणा करके आचार्य श्री ने 'कालज्ञ' विशेषण को सार्थक कर दिया।

महान् क्रांतिकारी, क्रियानिष्ठ, तपोमूर्ति आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी म सा की परम्परा जैन समाज मे अपना विशिष्ट स्थान रखती है। त्याग, तपस्या, सयम, साधना एव आगमाधार के बल पर जहां इस परम्परा ने विकास की लम्बी दूरी तय की है वहीं दम्भ, मिथ्याडबर, शिथिलाचार, भौतिक लालसाओ, बाह्य चाकचिक्य से दूर रहकर अपने मौलिक अस्तित्व को कायम भी रखा है।

धर्मपाल प्रतिबोधक, समीक्षण ध्यानयोगी, समता विभूति आचार्य श्री नानेश ने इस तेजस्वी, प्राणवान, सुसगठित परम्परा के भावी आचार्य के रूप में तरुण तपस्वी, शास्त्रज्ञ, विद्वद्वर्य मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा का चयन कर सर्वथा उपयुक्त कार्य किया है। इस चयन से दृढ़ विश्वास किया जाता है कि यह आत्म एवं लोक कल्याणकारी पावन परम्परा अक्षुण्ण रहेगी।

युवाचार्य श्री वैराग्यावस्था में थे, मैं भी वैराग्यावस्था में था। साथ साथ खूब रहे। आहार विहार सब कुछ साथ चलता उस समय से ही मैं देख रहा हू कि आपकी त्याग भावना सयम की सजगता, ज्ञान प्राप्ति की ललक एव सेवा भावना अत्यन्त गहरी है। दीक्षा प्राप्ति के बाद तो आपने (युवाचार्य श्री) अपना सारा जीवन ही गुरु सेवा मे लगा दिया। सेवा धर्म की आराधना के लिए खान-पान एव आवश्यक विश्राम की भी कभी परवाह नहीं की। धन्य है सेवामूर्ति "श्री राम" को।

सापेक्ष दृष्टि से युवाचार्य प्रवर मेरे प्रथम गुरु हैं। चूंकि सवत् २०३१ के आचार्य श्रीजी के सरदारशहर वर्षावास में वैराग्यावस्था में आपने मेरा केश लु चन किया इस प्रकार प्रथम चोटी आपने ली। दीक्षित होने के बाद आचार्य प्रवर ने चोटी ली। मुझे क्या पता था कि मेरी चोटी लेने वाले आगे चलकर मेरे गुरु भी बनेंगे। मैं गद् गद् हू उस स्मृति को याद कर तथा गद्‌गद् हू ऐसे गुरु को प्राप्त कर।

महान् उपकारी वि श्री धर्मेश मुनिजी म सा की प्रेरणा से

आप श्री (युवाचार्य श्री) की जन्म भूमि मे मुझे वैराग्य की प्राप्ति होना तथा पूज्य आचाय श्रीजी की कृपा से मेरी जन्म भूमि मे आपश्री को युवाचार्य पद की प्राप्ति होना मेरे लिए अनूठे आत्मतोष का कारण है।

युवाचार्य प्रवर के चरणो मे मेरी विनम्र प्राथना है कि भगवन् ! आप श्री की महती अनुकम्पा उसी प्रकार बनी रहे जैसे पूज्याचाय श्रीजी की अद्यावधि रही है । बस, इसी भावना के साथ—

युवाचार्य श्री राम !
शत शत प्रणाम !!

धडकन धडकन में श्रीराम बसे रहें

विद्वान श्री प्रशम मुनिजी म.

पूज्य गुरुदेव ने मुनि प्रवर, शास्त्रज्ञ, त तपस्वी श्री रामलाल जी म सा को युवाचार्य बनाया यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है। मेरे जीवन का हर क्षण, हर पल युवाचाय श्री की सेवा मे व्यतीत हो तथा धडकन धडकन मे श्रीराम बसे रहे । गुरुदेव से इसी आशीर्वाद की आकाक्षा के साथ युवाचाय श्री को शत-शत प्रणाम !

★

सुस्वागतम्

△ मुनि श्री सुमति कुमार जी

अनादिकाल से शासन परम्परा अविच्छिन्न रूप से चली आ रही है । इस सघ व्यवस्था मे सुधर्मा आदि अनेको अनेक महाविभूतियो का महत्वपूण रूप से योगदान रहा है । उसी परम्परा मे वीर लोकाशाह ने सुपुप्त चेतना जागृत की । आचाय हुक्मगणि ने क्रियोद्धार किया । आचाय श्री शिवलाल जी म सा आदि पूर्वाचार्यो ने और तेजस्विता भरी । महाप्रतापी आचाय श्रीलाल जी म सा एव युगद्रष्टा ज्योतिधर आचाय जवाहर ने ज्ञान रश्मि प्रस्तुत की, गणेशाचाय एव आचार्य श्री नानेश ने सघ विकास में अद्भुत क्रान्ति की, उसी शृ खला में आपको महत्वपूर्ण सघ शासन सेवा का अवसर मिला है। सघ चेतना एवं विकास

मे आपको अपना परिपूर्ण आत्मभोग देकर नूतन चेतना प्रस्तुत करना है। आपके प्रत्येक कार्यों में मेरा पूर्ण रूप से योगदान देने के भाव है। मैं आपको सघ सेवा के अपूव अवसर पर बहुत बहुत साधुवाद देता हूं, आपको प्रत्येक काय संघ एव शासन के लिए वरदान हो इन्ही शुभ भावनाओ के साथ।

हुक्म सघ ज्ञान के आलोक से आलोकित और चारित्र की सुगन्ध से सुगंधित होता रहे

● विद्वान मुनिश्री जितेश कुमार जी

दर्शन कुकुम, ज्ञान है अमृत, चारित्र जहा का प्राण है।
ऐसा सघ है मेरा जिसमे, हर चेतन भगवान है॥

युवाचार्य श्री जी !

आपश्री जी को ऐसे शासन के सिरताज बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। परम आराध्य आचार्य भगवन् ने आपको जैसा हरा भरा बगीचा सौंपा है उस बगीचे को हरा भरा बनाये रखने के साथ साथ आप पर यह गुरुतर दायित्व भी आया है कि इस बगीचा का हर फल रसदार बने, हर फूल महकता रहे।

बगीचे में जहां फल-फूल है, वहा कांटे और कचरा होना भी स्वाभाविक है। बगीचे का रखवाला माली उन कांटों तथा कचरे को बगीचे के बाहर फक देता है तथा जो कुशल माली होता है वह कांटा और कचरे का उपयोग क्रमश बगीचे की सुरक्षा व खाद के रूप में करके बगीचे का उपयोगी अग बना देता है। आपश्री जी का व्यक्तित्व भी एक कुशल माली के रूप मे उभरकर सामने आवे यही हमारी मगल मनीषा है।

हम जिनशासन देव से यही प्राथना करते हैं कि आपके कुशल नेतृत्व से हुक्मसंघ ज्ञान के आलोक से आलोकित और चारित्र की सुगन्ध से सुगंधित होता रहे इसी शुभकामना एवं बधाई के साथ—

आचार्य भगवन के पवित्र पावन पाद पद्मों में,
सश्रद्धा वन्दन-नमन अभिवादन।

आचार दृढता के लक्ष्य में शिथिलता नहीं आयेगी

आप श्रीजी म सा के चतुर्विध श्रीसघ के नाम दिये गये संदेश का प्रारूप प्राप्त हुआ । आप श्रीजी म सा ने अधिवेशन के प्रसग पर इस साहसिक घोपणा को करके सघ के दूरदर्शी भविष्य को उत्तम सुरक्षा कवच प्रदान किया है । आप श्रीजी ने अपने इस निणय से संघ मे अनवरत आचार दृढता पूवक विकास यात्रा मे आगे बढते रहने का नया आयाम समर्पित किया है ।

श्रमण संघीय परिस्थितियो की सदगभ चर्चाओ के बीच आप श्री की बौद्धिक चातुर्य पूण निर्णायक क्षमता की चमत्कारिक घटनाओ को सुना ही था किन्तु अब हम उनका साक्षात्कार कर रहे है । यह हमारा सौभाग्य है ।

जहां भारत सरकार ने आरक्षण के माध्यम से देश के सामने एक प्रश्न वाचक चिह्न खडा किया है । वहा आप श्रीजी ने (अपने दूरदर्शी निणय पूर्वक) आरक्षण कर घम सघ के बीच से एक प्रश्न वाचक चिह्न हटा लिया है । यह है आप श्री जी की प्रतिभा का अद् भुत चमत्कार ।

जहा राष्ट्रीय स्तर पर श्री राम मन्दिर "निर्माण" एक विवा दास्पद समस्या लेकर उभर रहा है । वहा आप श्रीजी ने घम सघ के लोगो के हृदय मन्दिर मे श्रीराम के मन्दिर बनाने का निर्विवाद उप क्रम करके अप्रतिहत बौद्धिक चातुय का परिचय दिया है । आप श्री का यह चयन हिन्दू व जैनो के बीच भी एकात्मकता स्थापित करने का सुन्दर सगम सिद्ध होगा ।

श्री राम मुनिजी के चयन से यह आश्वस्तता स्वाभाविक है कि वे फिलहाल एक निष्पक्ष व्यक्तित्व रूप में भी निष्पक्ष रहगे । श्रावक श्राविकाओ, सत सतियो के पक्षपात मे नही फंसकर योग्यता व गुणात्मकता के मूल्यो पर सघ का विशुद्ध सचालन करेंगे ऐसा हमारा विश्वास है ।

श्रीराम मुनिजी के चयन से संघ इस बात के लिए आश्वस्त हुआ कि हमारे सघ मे आचार दृढता के लक्ष्य मे शिथिलता नही आयेगी । वे सघ को भौतिक चकाचौंध एव लोकेपणा की मृगतृष्णा

के भटकाव मे बचाते रहेंगे। ऐसा हमारा विश्वास है।

श्री राम मुनि ने आप श्रीजी सेवा कर जिस रहस्यपूर्ण गूढ़ आगम रसिकता को आत्मसात् किया है। उस रूप मे आप श्रीजी का (उनके प्रति) यह योग्यतम सुन्दर उपहार है। जो सघ के लिए कृतार्थता का भी परिचायक है। इन अर्थों मे आप श्रीजी के यह मगल मय कदम हमारे लिए सदैव अभिनन्दनीय रहेंगे।

यद्यपि हम आपश्री के हर निर्णय के प्रति सहमत एवं समर्पित है क्योकि सिद्धान्त यह कहता है कि आचाय मोहवश किसी अयोग्य व्यक्ति को उत्तराधिकार नही सौंपते अस्तु आप श्रीजी म सा यदि अपनी इस घोषणा को स्थायित्व दें या परिवतन करें, हमारी शासननिष्ठा सदैव आपके साथ रहेगी।

[आचाय श्री ने चित्तोडगढ में मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा को अधिकार प्रदान किये। उस समय जोधपुर मे चातुर्मासाथ विराजमान विद्वद्वर्य तपस्वी मुनि श्री प्रेमचन्द जी म सा एवं वि श्री जितेश मुनिजी म सा ने उपर्युक्त भावाभिव्यक्ति की। वह श्री सायर चन्दजी कोटडिया द्वारा संकलित है—सम्पादक]

अति प्रसन्नता हुई

—सेवा समर्पिता साध्वी श्री सम्पतकवरजी म सा

आचार्य भगवन् द्वारा युवाचाय पद पर श्री श्री घा व शास्त्रज्ञ मुनि श्री रामलाल जी म सा को निरूपित किया उसके समाचार पढकर अति प्रसन्नता हुई। आपके श्री मुख से फरमाये हुए निर्देशों का हम सभी हृदय से शिरोधार्य करती हैं और आचार्य श्री के स्वास्थ्य एव दीर्घायु की कामना करती हैं। युवाचाय श्री के यशस्वी, तेजस्वी जीवन की कामना करती हुई प्रभु महावीर से प्राथना करती हूँ आपकी कृपा दृष्टि युगा युगो तक पूर्वाचार्यों सी बनी रहे। इसी शुभ भावनाओं के साथ।

ब्यावर

वैसी छत्र छाया बनी रहे

—शा प्र महासती श्री केशरकवर जी म

आचाय भगवन् ने शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, आगम मनीषी, प्रखर प्रतिभा सम्पन्न श्री रामलाल जी म सा को बीकाणा की धरती (जूनागढ के प्रागण मे) युवाचाय पद विधिवत दे दिया, यह बहुत ही प्रसन्नता की बात है। हमे बहुत खुशी हुई है। हमारी ओर से बधाई है। जैसी छत्र छाया आपकी रही वैसी युवाचाय श्री की बनी रहे। यही शुभभावना है।

नोखा (बीकानेर)

हृदय में आनन्द छा गया

△ विदुषी साध्वी श्री धापुकवरजी म सा

आचार्य भगवन् ने शास्त्रज्ञ मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा को युवाचाय पद पर प्रतिष्ठित करने की घोषणा की जिसका हम सब महासतियां जी म सा के हृदय मे आनन्द छा गया। हम सभी आपश्री (आचाय श्री) का एवं युवाचाय मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा का हार्दिक अभिनन्दन करते है एवं शासन मे निरन्तर प्रगति होने की शुभकामना शासन देव से करते हैं। आप श्री की आज्ञा को हम सहप शिरोधार्य करते हैं। हमे बहुत प्रसन्नता हो रही है। केवल गम इतना ही है कि हम प्रत्यक्ष मे शुभकामना न करके पत्र द्वारा शुभकामनाए भेज रहे हैं।

आप शासन की शोभा बढायें, यही शुभकामना है।

शासन की गौरव गरिमा बढे

△ शासन प्रभाविका साध्वी श्री नानूकवरजी म सा

तपस्वी, विद्वद्वर्य, शास्त्रज्ञ, मुनि प्रवर श्री १००८ श्री रामलालजी म सा के युवाचाय पद की घोषणा और चादर महोत्सव

अत्यन्त उल्लास और अपरिमित आनन्द के साथ धम नगरी बीकानेर के पावन प्रागण मे सुसम्पन्न हुआ । इस शुभ काय के लिए परम श्रद्धय आचार्य प्रवर श्री नानेश को शत शत बधाई । बधाई ।।

श्रद्धेय आचार्य भगवन ने अपनी दीघ दृष्टि से तथा आत्म चिन्तन से शासन व्यवस्था का जो काय अपने कर कमलो द्वारा सम्पन्न किया वह अति सुचारू रूप से शासन की वृद्धि करने वाला बने ।

आप श्रीजी दीर्घायु हो । आप श्रीजी का सयम वपु स्वस्थ रहे । शासन की गौरव गरिमा बढ़े । दिन दिन प्रगतिमान हो यही मगल कामना करती हू ।

-कडूर (कर्णाटक)

卐

"हुक्म सघ की दिव्य ज्योति"

—शासन प्रभाविका विदुषी साध्वीश्री कचनकवरजी म सा

अनन्त ज्ञान विभूषित, सव शास्त्र पारगत श्रद्धेय गुरुवय ! आपके युवाचार्य बनने का सुखद सवाद सुनकर मेरा रोम रोम पुलकित हो रहा है । आप श्रीजी मे कितने गुण भरे हैं । उन गुणो को देखकर मेरा मन बार बार प्रफुल्लित हो उठता हैं । आप जसे विराट व्यक्तित्व, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्नता के धनी महान ज्ञानी महापुरुष को पाकर मेरा जीवन महान हो गया है । मेरा जीवन धन्य धन्य हो गया है ! आपकी कैसी दिव्य शक्ति हैं कि आप निरन्तर आत्म साधना में लीन बने रहते हैं, जीवन मे ऊचे-नीचे कितने ही झझावत क्यो न आये, किन्तु उन सब में अप्रतिहत होकर सुमेरु पवेत की भांति अचल रहना, यह तो आप श्रीजी की महान आत्मिक शक्ति है कितनी गौरव गरिमा है आपकी, कितनी नवीनता है आपमे । कितनी मौलिकता और पवित्रता है आपकी । यह सब वणन करने के लिए चाहिये दिव्य वाणी, दिव्य शक्ति । वह भला मेरे पास कहा है ? मैंने अपने जीवन मे जो कुछ भी पाया है । वह सब गुरु कृपा का ही सुफल है । आप श्रीजी में अनतानत गुण समाहित हैं । उन गुणों की अभिव्यक्ति शब्दो द्वारा नहीं की जा सकती है, जीवन के प्रारम्भिक क्षणो से ही आप ज्ञान के

ामुपासक रहे हैं । आत्मा का अपूर्व तेज भक्तो के अनन्य विश्वास ाश, संत सती वर्ग के सिरमौर, आचार की दृढ़ता, विचारो की पवित्रता, ीघ द्रष्टा, गम्भीर विचारक, साधना के सजग प्रहरी, प्रतिभा सम्पन्न ौर भी न जाने क्या-क्या विशेषताए हैं आप श्रीजी के जीवन में... उन सबका वणन करना हमारे लिए संभव नही है । राजमहल ूनागढ के प्रागण मे सात माच १९९२ को समता विभूति आचार्य ी नानेश ने आप श्रीजी को सघ के उत्तराधिकारी के रूप मे श्वेत ादर प्रदान की । युवाचाय श्री रामलाल जी म सा के लिए भी हम साध्वी मडल यही हार्दिक मगलमय शुभकामना करते हैं कि जिस अपार विश्वास के साथ आचाय प्रवर ने आप श्रीजी को यह गरिमा-मय पद प्रदान किया है, आप अपनी प्रज्ञा और प्रतिभा के द्वारा हुक्म सघ की गौरव गरिमा मे चार चाद लगायेंगे और आचाय श्री नानेश के शासन की और अधिकाधिक अभिवृद्धि करेंगे । हम साध्वी मडल आप श्रीजी से यही मगल प्राथना करते हैं कि हमारी सयम यात्रा में आपकी ज्योतिर्मयी मगल कामना सदैव प्ररणा देती रहे । आप श्रीजी का वरद् हस्त हमारे पर सदैव बना रहे । शासन देव से यही प्रार्थना है कि आप श्रीजी सदैव स्वस्थ रहे शतायु हो और भू-मडल पर गध हस्ति की तरह विचरण करते हुए भक्तो की पिपासा तृप्त करें । इसी आशा और विश्वास के साथ श्रद्धा-सुमन समर्पित करते हैं ।

अनुपम व्यक्तित्व के धनी · "युवाचार्य श्री"

—शासन प्रभाविका श्री चादकवर जी म सा.

यदि सन्ति गुणा पुसाम् विकसन्ते एव ते स्वय ।
नहि कस्तूरिका मोद शपथेन भाव्यते ॥

के अनुसार हमारे श्रद्धेय युवाचार्य श्री का प्रेरक व्यक्तित्व सहज आकर्षण का केन्द्र है । आप सयम साधना के प्रबल सेतु हैं । आपकी सयमी धवल धारा की तुलना गगा के निर्मल जल से की जा सकती है । आप अपनी साधना मे सतत् जागरूक हैं । आगम के तल-

स्पर्शी ज्ञान के साथ आप में क्रिया का समन्वित रूप है।

जब जब आपके सम्पर्क मे आने का सौभाग्य मिला, वहा देखा आप मे अपूर्व उत्साह कार्य करने की सतत् ललक, सामाजिक गति विधियो का गहन अध्ययन तथा विकट से विकट रही हुई ग्रन्थियो को सुलझाने में सक्षमता है।

आपकी अप्रमत्त साधना से हुक्म सघ के पूर्वाचार्यों की स्मृतिया उभरती है।

व्याख्यान शैली भी आपकी आगमिक धरातल से संपुष्ट है, घोर तपोधन से आपकी तेजस्विता अपने में पृथक ही पहचान बनाये हुए है।

आप शासन की गरिमा को अक्षुण्ण बनाये रखने में कुशल प्रशासक हैं। असीम गरिमाधनी युवाचार्य श्री हुक्म शासन की कीर्ति सौरभ बिखरने में पूर्ण सफल रहेंगे।

इन्हीं आशा से शत शत वन्दन अभिनन्दन।

हृदय हर्ष विभोर हो गया

शा प्र साध्वी श्री इन्द्रकवर जी म.

शासन क्षितिज पर नूतन निर्मल बाल रवि उदीयमान देखते ही हृदय हर्ष विभोरित हो गया। महावीर शासन की गौरवशाली पाट परम्परा की अक्षुण्ण स्वर्ण श्रृखला में एक वीर आत्मा को अनुस्यूत कर आचार्य देव ने जो अपने उत्तरदायित्व का कुशलता से निर्वहन किया है, उसमे हम सभी सती मण्डल के अनुमोदना के स्वर सम्मिलित हैं। युवाचार्य श्री हुक्म वाटिका की संयम सुरभि को खिलाने फैलाने वाले जवाहर ज्योति को देदीप्यमान बनाते हुए गणेश गगन के धर्मादित्य बन प्रचण्ड तेजस्वी बने एवं आचार्य श्री नानेश की समता सरिता को अनवरत प्रवाहित कर अगणित मुमुक्षु आत्माओ की प्यास उपशांत बनायें। इन्हीं भावो के साथ समर्पण के स्वर—

हे! अनन्त ज्ञान पुंज
मेरे अनन्य आराध्य

आचाय श्री नानेश दश कर तेरे
आत्मा के कण कण मे होता है प्रस्फुटित, आनन्दमय अनन्त निर्झर पा जाता है, जन्म जन्मान्तर का अनन्न आतम वैभव, हे समता निधि ! तव पुनीत चरणो में मेरा शत शत वन्दन ! अभिवन्दन !!
वैशालीनगर (म प्र)

"खजाना-ए-खिद्‌मत"

—स्थविर महासती श्री झमकूकवर जी म सा

जनागमो मे बडी ही सुन्दर अभिव्यक्ति दी गई है। मानव मन मे उठने वाली विभिन्न उच्चावच्च सूक्ष्म गतिविधियो को दर्शाने के लिए 'इच्छा हु आगास समा अणतिया" कहकर तृष्णा को सभी दु खो का मूल बताया गया है, अपनी अभिलाषा के अपूर्ण रहने पर व्यक्ति क्या कुछ नही कर गुजरता ? कितनी निम्न स्तरीय बन जाती है उसकी मनोवृति ! इसी आशय को व्यक्त करती हुई निम्न पक्तिया सटीक लगती है—

चाहो के अधूरेपन मे घिरकर,
आदमी हैवान बन सकता है।
दूभर बना सकता है—
खुद का औरो का भी जीना।
चाहो की कमी का अहसास—
बाजहा बना देता है,
काबिल शख्स को भी, हद दर्जे का कमीना ॥

चाहे अर्थात् अनन्त आकाश के समान सदा वृद्धिगत होने वाली इच्छाए जीवन के सभी मानवीय गुणो को धीरे-धीरे खोखला बनाती चली जाती हैं, महत्वाकाक्षाए पूरी करने मे उचितानुचित का विवेक भी धूमिल पड जाता है और मानवता के सर्वोच्च शिखर से गिरते गिरते व्यक्ति सस्ती खुशियो से मिलने वाली प्रसन्नता को ही बटोरने सलग्न हो जाता है। वह भूल जाता है कि दुलभ मनुष्य जन्म पाकर उससे चरम सुख की भी आराधना हो सकती है, वह भूल जाता है

कि जीवन का सर्वोत्तम ध्येय समस्त प्राणियो की रक्षा और सेवामें निहित है। एक कवि के शब्दो मे —

सस्ती और मामूली खुशिया, इन्सान को बौना बना देती है
दावेदारी करने लगता है फिर वह जायज नाजायज हरेक हक की,
ज्यादा जा बाजी भी उसे दुनियां के हाथों का खिलौना बना देती है ॥
नामुराद मुरादों को पूरी तरह फतह करने मे ही,
जब कोई शख्स लगा देता है अपनी तमाम ताकत—
जब जिन्दगी हो जाती है, फकत जिस्मानी बुजदिली की हिमायत,
तब नायाब मौके हमसे दूर हो जाते हैं
और वैसी हालत में, हमारे करीबी रिश्तो के नूर—
फीके पड जाते हैं, काफर हो जाते हैं ॥
वह शियाना दरिन्दगी की निशानी है खुदगर्जी से भरा नजरिया,
अपना जिक्र ही सुनना और फकत अपनी फिक्र ही करना
जिसकी बन जाए बस इतनी सी दुनियां
वह किसी की हमदर्दी नहीं पा सकता,
बेहयाई से खुद मे खुश भले ही रह ले,
मगर, सच्ची खुशी का राज नहीं पा सकता।
सबसे अहम मसरंत है – दुश्मन को भी शाति देना
खुद परेशानी सहकर भी दु ख बांटना सबका,
खिदमते बेजार है खुशियो का बेशकीमती खजाना।
मन, वचन और काया से सेवा मे रम जाना तभी मुमकिन होता है
घट-घट वासी राम को आरामगाह लाना।
राम जी की इबादत है इसी सम्बोधि को जाना ॥

वस्तुत सेवा में जीवन की चरम सफलता रही हुई है। कोई खुद की सेवा मे मस्त रहता है, अपने को खुश रखता है बस, शेष लोगों से उसे कोई मतलब नही होता, इसके विपरीत कुछ विरले पुरुष ऐसे भी होते हैं जो पर-सेवा में स्व-सेवा को समाहित करके दूसरों के लिए जिया करते हैं। पर-सेवा में विजेतर सभी आत्माए आ जाती है जिसमे सर्वप्रथम गुरु सेवा, रुग्ण सेवा, साधर्मी सेवा, वृद्ध सेवा, स्थविर सेवा आदि सब आ जाती है।

गुरु सेवा को अपने जीवन मे प्रथम स्थान देवे वाले बहुत से व्यक्ति मिल जाते हैं, किन्तु सर्वतोभावेन अधिकार भाव से समर्पित होते हुए गुरु की सेवा करना अत्यन्त दुष्कर कार्य है ।

सेवाकार्य बडा दुष्कर है, आत्मशुद्धि से सम्बन्धित सेवक और सेव्य का नाता, रहे हमेशा अविखण्डित ।।

जब होता है निज का निग्रह, केवल तब सेवा सभव, सेव्य की इच्छा को प्रधान कर, सेवक भूलें हर उत्सव ।।

सेवा करे न कोई किसी की, सिर्फ बनें ज्ञाता के निमित स्वामी-व्याज से हो निज सेवा, नाना कर्म सुशोधन-हित ।।

सेवामे तल्लीन भाव से, निर्जरा का शुभ लाभ मिले,
सच्चा सेवक तो निरपेक्षी, श्लाघा या अभिशाप मिले ।
राग-सुसेवा है, बहुरूपी उसका नही है पारावार,
सेवक हर क्षण जुडे, सेव्य से, छिन्न न हो आत्मिक सधाज्ञा ।।
सेवा करके हो कृतार्थ वह, प्रत्युपकार का लोभ नही,
निज सौभाग्य उदय ही माने, मान-क्रोध विक्षोभ नही ।।
योग्य और पुण्यवान जीव ही, सेवा का अवसर पाता,
गुरु, साधर्मी, वृद्ध, ग्लान को यथायोग्य दे सुख साता ।।
हर वस्तु की तरह आजकल, मिश्रित हो गई सेवा भी,
पात्र-सुअवसर-विधि ज्ञान बिन, मिले न मुक्ति मेवा भी ।।
अतिशय कठिन व सूक्ष्म विद्या यह, सुख शांतिमय जीवन की,
कोटि सूर्यों से अधिक प्रकाशक, सम्बोधि, उद्योतन की ।।

– सेवा का विधि विधान अत्यन्त गहन और दुष्कर है । जो इस प्रकार की सेवा का अप्रतिम आदर्श प्रस्तुत करते हुए हमारे आस्था के आयाम बनकर चतुर्विध सघ के भव्य सेवक का भार सभालने को तत्पर हैं, उन्हीं शास्त्रज्ञ युवाचार्य श्री जी को कोटि-कोटि प्रणाम । धन्य है आप श्री जी का जीवन जिसके पर्यावेक्षण द्वारा, चिन्तन मनन द्वारा अनुकरण द्वारा राग-सुसेवा का नवीन द्वार उद्घाटित होते हैं एकमात्र सेवा ही हमारे भी जीवन का सर्वोत्कृष्ट लक्ष्य बने, हम भी उस खजाना-ए-खिद्मत को पाकर स्वय की आत्मा को धन्य धन्य बना सकें, इन्हीं भावाभिव्यक्तियो के साथ ..

[स्व महासती श्री भमकूकवर जी म सा के भावो के आधार पर वि साध्वी श्री सम्बोधि श्री जी द्वारा]

सदा जयवन्त रहे

कर्ण-श्रुति कर तन मन अप्रतिम पुलक से भर उठा। धन्य है हम सभी नव-निर्वाचित युवाचार्य श्री के दिव्य दीदार को पाकर।

सदा यशवन्त रहे—भगवन् का वरदहस्त
सदा विजयवन्त रहे—आचार्य श्री नानेश का पट्टधर
हर दिशा मे यशस्वी नेतृत्व चमक उठे
सदा कीर्तिमान रहे—युवाचार्य श्री का वचस्व

युवाचार्य पदाभिषेक दिवस पर समर्पित है—हम सभी की भावप्रणति पूर्वक हार्दिक बधाईया।—

नानेश पदरज
श्री गंगावतीजी म सा
श्री सुमति श्री जी म सा
श्री निरंजना जी म सा
श्री वनिता जी म सा
श्री संयम प्रभा जी म सा
श्री पुष्प प्रभा जी म सा
श्री सुबोध प्रभा जी म सा
श्री मृगावती जी म सा

साधुमार्गी परम्परा को दैदिप्यमान करते रहें!

—विदुषी साध्वी श्री जय श्री जी म सा

युग पुरुष समता सिन्धु की प्रखर प्रतिमा ने एक नव्य भव्य प्रतिमा का निर्माण किया युवाचार्य श्री रामलालजी म सा के रूप में यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है।

युवाचार्य चयन एव चादर महोत्सव पर हम दूर थे/काफी दूर थे! परन्तु इतनी दूर से यह बधाई लेकर हम गुरु चरणों में पहुचे हैं। इसकी हमे हार्दिक प्रसन्नता है।

आचाय श्री ने इस प्रकार का चयन करके असम्भव को सभव कर बताया है। माना है, युग पुरुष के कपोपल/कसौटी को सर्माव लम्बी युगों युगों तक याद करेंगे एवं यह निर्णय इतिहास को दुलभ कड़ी सिद्ध होगा।

हमारी मगल कामना है कि आचार्य प्रवर दीघ काल तक स्वस्थ्य/निरामय रहे एवं युवाचार्य प्रवर प्रभु महावीर के शासन को, पूज्य हुक्मेश की परम्परा को एव साधुमार्गी संघ को दैदिप्यमान करते रहें ।

हर कदम समर्पित हैं हम

—विदुषी साध्वी श्री मगला कवर जी म सा

जीवन सागर में खुशियो की लहरों पर तरता हुआ एक अनुपम अवसर दस्तक दे रहा है, द्वार आपके आप अपनी जिंदगी के व्यस्ततम अनमोल क्षणो में हार्दिक चादर महोत्सव के सुनहरे पव पर हमारी विनम्र मगल शुभ कामनायें स्वीकार करें ।

रवि रश्मि सम जगमगाता अरूणिम प्रभात जीवन मे खुशियो बिखेरे । फूलो मे खुशबू की तरह आपकी यश कीर्ति दिग् दिगन्त मे प्रसरित होवे ।

दे सकती हू सिर्फ शुभकामनाओ का गुलदस्ता,
इस रम्य स्वर्णिम महोत्सव पर ।
दीप जलाईये ज्ञान–पीयूष के,
हर कदम समर्पित हैं हम ॥
समता भरना बहे निरंतर,
बारम्बार है आपका अभिनन्दन ।
कीर्तिपुंज बन गया है आपका,
गरिमा मंडित जीवन ॥

△
△△

त्याग तप की अद्वितीय रश्मि

—विदुषी साध्वी कमलप्रभा जी म सा

मैं श्रद्धा की तुच्छ भेंट ले, द्वार तुम्हारे आई हू ।
और नहीं मेरे पास कुछ, श्रद्धा सुमन चढ़ाई हू ॥

भारतीय संस्कृति की भागीरथी धारा दो प्रवाहो मे विभक्त है, एक ब्राह्मण द्वितीय श्रमण ।

ब्राह्मण पक्ष में तो वेद द्वारा दिये संस्कारों से ओत प्रोत जो यज्ञोपवीत आदि संस्कार से उद्भव है उसके अन्तर्गत जाता है।

श्रमण संस्कृति अपने में एक पृथक महत्त्व रखती है। श्राम्यति शाम्यति इति श्रमणः अर्थात् जो श्रम पुरुषार्थ को प्रधानता देता है वह श्रमण है कि वा जो बाह्य क्रिया कलापों से इन्द्रियों को भिन्न रखता है वह श्रमण है।

इसके अवान्तर भेद करें तो असीमित हो जायेंगे। इसी श्रमण संस्कृति मे जैन श्रमण संस्कृति है जो अपने यम, नियम, उपनियमों के आधार पर अनादि काल से अविच्छिन्न है। वह संस्कृति प्राचीन इतिहास का पुनरावर्त्तन करती चली आ रही है। सुधर्मा स्वामी से इक्यासीवें पट्टधर समता विभूति, चारित्र-चक्रवर्ती आचार्य देव श्री नानेश इस सनातन परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखते हुये "सर्व जन हिताय, सर्व जन सुखाय" सिद्धान्त का प्रतिपादन कर रहे हैं।

आप श्री अपनी विलक्षण गरिमा के द्वारा शासन की सौरभ सुषमा द्विगुणित करते दिखाई दे रहे हैं।

आपश्री ने २ मार्च १९९२ फागण बदि तेरस को इसी श्रमण संस्कृति की परम्परा को यथावत देखने के लिए शास्त्र ज्ञाता, आगम मर्मज्ञ, तरूण तपस्वी युवाचार्य प्रवर श्री रामलालजी म सा का संचयन किया। ७ मार्च १९९२ को अपना सम्पूर्ण अधिकार इनके सशक्त कन्धों पर डाल दिया।

युवाचार्य प्रवर भी आचार्य प्रवर के प्रत्येक इशारों पर अहर्निश गतिशील रहते हुये अपने जीवन को निखार कर उज्ज्वल कर रहे हैं।

आप तीक्ष्ण मेधा के धनी आगम विज्ञाता क्रिया के समन्वित महासाधक हैं।

वास्तव मे आपश्री का व्यक्तित्व कर्त्तृत्व सम्पूर्ण जैन समाज एव मानव जाति के लिए प्रेरणा प्रदीप है। आपश्री द्वारा शासन प्रगति करता रहेगा ऐसी गहरी आशा है।

आप स्वस्थ रहते हुए दीर्घायु हों। इन्हीं भावाञ्जलि से शत शत वन्दन, अभिवन्दन।

खुशियों का बहुरगी वातावरण

—विदुषी साध्वी श्री ललिता प्रभा

सितारों की हर झंकार आज बधाई गा रही कवियो की हर कविता आज नाज से कह रही—नानेश की दिव्य दृष्टि ने दिया, युवाचार्य श्री राम को जिसे पा आज जन-जन मे खुशिया छा रही ।

अधिपति और आधिपत्य की परम पवित्र प्रणाली जीवन निर्माण के लिये भौतिक व आध्यात्मिक उभयक्षेत्र मे चलती आ रही है जो—आवश्यक ही नहीं परम आवश्यक है तभी इस प्रणाली का जन्म हुआ ।

ससार में भी व्यवहारिक जीवन को व्यवस्थित दिशा देने तथा शान्तिपूर्ण जीवन निर्वाह हो, इसलिये एक योग्य शासक होता है जो एक अच्छे शासक के योग्य सभी गुणो से अभियुक्त होता है ।

उभय क्षेत्र मे शासक का सम्बन्ध स्वामी और दास का नही अपितु भ्रातृत्व, मातृत्व एव बन्धुत्व आदि अनेक गुणो से अभियुक्त होता है ।

आध्यात्मिक क्षेत्र मे भी इसका स्वरूप वडी विराटता को लिये हुए कई विशेषताओ से विशिष्ट होता है । तथा सवसम्मति से प्रत्येक की अन्तर श्रद्धा का केन्द्र एव "परस्परोपग्रह जीवानाम्" की गहरी व पुनीत भावनाओ से युक्त आचाय का पद होता है, जिनके नेतृत्व मे मैं चारों तीर्थ आत्मिक उन्नति की ओर अग्रसर होते हैं ।

आचाय पद की गरिमामय स्थिति को बतलाते हुए शास्त्रो मे "दीवो समाआयरिया" पाठ आया है, अर्थात् जिस प्रकार दीपक स्वय प्रकाशमान होता हुआ सहस्त्र दीपकों को प्रज्जवलित कर सकता है उसी प्रकार आचार्य भी अपने आत्मज्ञान से स्वय को शाश्वत सत्यो से प्रकाशित करता हुआ अनेको का जीवन अज्ञान से हटाकर प्रकाशमय बना देते हैं ।

भगवान महावीर ने अपने शासन काल मे श्री सुधर्मा स्वामी को आचाय पद प्रदान किया, उसी परम पवित्र मगलमय परम्परा में ८१ वें पाट पर विराजमान आध्यात्म जगत के दिव्य भास्कर समीक्षण ध्यान योगी, समता विभूति, गूढ़ आगम ज्ञानी, श्रद्धास्पद श्री आचाय भगवन जिनके, संयममय-जीवन के बारे मे क्या कुछ कहा जाय ? मन

मोहक प्रकृति मे जीने वाले महापुरुष प्रत्येक सद्गुणों के कमनीय कोष हैं। जिनका कुसुम सा करूणाद्र कोमल हृदय, पृथ्वी के समान मान अपमान, अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियो मे समभावी, आत्मतत्त्व के अतल गहराईयो में निमज्जित है। आपश्री जी ने शासन व्यवस्था एव परम पुनीत परम्परा के अनुरूप भावी आचार्य के रूप मे उत्तराधिकार संयम एव साधना के सजग प्रहरी, आगम, तत्त्ववेत्ता, तरूण तपस्वी सेवा समपणा की बेजाड कृति विद्वद्वर्य मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा को दिया जो अपने आप मे अनुमोदनीय गुरु की अन्तर दृष्टि का राज कुछ विलक्षण ही है। आचार्य भगवन द्वारा जब घोषणा हुई तब सभा में खुशी का अन्दाज भी नही लगाया जा रहा था। चारों ओर अपरिमित खुशियो का बहुरंगी वातावरण था और प्रफुल्लित निगाहें श्रद्धेय आचार्य भ की ओर निहार रही थी जिनके मुख मण्डल पर एक अद्‌भुत प्रसन्नता एव आश्वस्तता की रेखा अठखेलियाँ कर रही थी तो दूसरी तरफ पास मे ही विराजमान श्रद्धेय युवाचार्य प्रवर खुशियों की ओट मे सकुचित होते हुए अजीब ही नजर आ रहे थे। एक अद्‌भुत दृश्य अनिमेष दृष्टि से निहारते रहे और आज उसी घोषणा का एक महत्वपूण, दिवस चादर की गरिमामय स्थिति को लिये हुए है। बीकानेर नगरी के राजमहल मे एक समोशरणसा ठाठ लगा हुआ है। शास्त्रीय मागलिक क्रिया के पश्चात् युवाचार्य प्रवर को अभी ओढ़ाई गई चादर सभी सन्त प्रवर एवं सती वृन्द के बीच फहराती हुई आत्म विजय का शुभ सकेत कर रही थी। जन जन की बधाइयाँ, खुशियाँ, गीत, संगीत, कविता एव गद्यभाव के माध्यम से वातावरण बड़ा आह्लादित बना हुआ है।

शृंगार नन्दन श्रद्धेय आचार्य श्री ने श्वेत चादर का महत्त्व एव उसकी एकरूपता तथा शान्ति का प्रतीक बताया जिसे जनता मन्त्र मुग्ध हो सुनती रही थी तथा सभी ज्येष्ठ कनिष्ठ संत रत्न ने भी अपनी खुशिया जाहिर करते हुए श्रद्धा केन्द्र आचार्य प्रवर के युग युग मंगल सानिध्य प्राप्ति की कमनीय कामना की।

भूरा कुल भूषण युवाचार्य प्रवर श्री अपनी अजनबी स्थिति को बताते हुए आचाय प्रवर के अनन्त उपकार एवं अपने आपको चतुर्विध सघ की गोद का बालक बताया। उनकी वाचा में विनम्रता व

सहजता आदि अनेक गुणो के दशन हो रहे थे । श्रद्धेय आचाय प्रवर की गूढ दृष्टि ने आप जैसे सादगी प्रिय, निष्पृह वात्सल्यता विराटता आदि गुणो से युक्त दिव्य विभूति को चतुर्विध सघ के बीच दिया है । जिससे शासन सदा समुन्नत होता हुआ गौरवान्वित होगा ।

आज इस मंगलमय वेला मे भी हम आपश्री जी के भावी जीवन के लिये अनन्त शुभ कामनाए व श्रद्धा समपरण श्री चरणो में भेंट करते हैं । साथ ही हमे युगो युगों तक उभय महान् आत्माओ का सानिध्य प्राप्त होता रहे । इन्हीं भावनाओ के साथ ही श्रद्धावनत —

卐

युवाचार्य श्री आत्मानुशासित हैं ।

—विदुषी साध्वी मजु बाला जी म सा

युवाचाय श्री जी क्रिया मे बहुत ही कठोर हैं । ज्ञान के धनी एव शास्त्रो के ज्ञाता हैं । त्याग तपस्या से जीवन संजोते रहते हैं । मैं उनको गुण गरिमा को कहा तक गाऊ । उनका जीवन बहुत ही सरल है । सौम्य उनकी आकृति है । अपने जीवन पर अत्यधिक अनुशासन है । युवाचाय श्री मे रोम रोम मे विनयभाव कूट कूट कर भरा पडा है । युवाचाय श्री आचाय श्री की छत्रछाया में दिनोंदिन बढते रहे यही शुभ कामना है ।

卐

याद उस मगलमय घडी की
झलक उस आनन्ददायक लडी की

—विदुषी साध्वी श्री सुशीला जी म सा

विश्व शान्ति के दीप ! तुम्हारा अभिनन्दन ! शिव सागर के दीप तुम्हारा !

मानवता के दीप ! तुम्हारा अभिनन्दन ।
दिव्य धरा के द्वीप ! तुम्हारा अभिनन्दन ।।

'प्रभु महावीर का शासन आज दिन तक अक्षुण्ण, अबाध, गति से गतिशील है । पंच परमेष्ठि मे तृतीय पद के अधिकारी आचार्य होते हैं । जो स्वयं आचार का पालन करते हैं और चतुर्विध सघ को भी आचार का पालन कराके शासन की भव्य प्रभावना करते हैं । प्रभु

महावीर ने अपने पाट पर सुधर्मा स्वामी को बिठाया । सुधर्मा स्वामी ने जम्बू स्वामी को इस प्रकार पाट परम्परा के अनुसार अभी वर्तमान मे तृतीय पद के अधिकारी समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी, चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री 'नानेश' हैं जो कि अद्भुत दिव्य द्रष्टा हैं । उन्होंने अपनी विलक्षण दृष्टि से, तीक्ष्ण प्रज्ञा से आगम मर्मज्ञ मुनि प्रवर 'श्री रामलालजी म सा' को परख कर ७ ३ ९२ के दिन युवाचार्य पद पे आसीन किया । आज के दिन बीकानेर के जूनागढ़ के राज प्रागण मे इस मनमोहक दृश्य की अपूर्व छटा को देखने के लिए हजारो की तादाद मे जनमेदिनी एकत्रित हुई । जन जन का हृदय बासो तले उछलने लगा, मन-मयूर नाच उठा । आबाल वृद्ध, सभी प्रसन्न मुद्रा में थे । सभी का मुख मण्डल विहंसशील ऐसे हर्षोल्लास मय दृश्य को देखकर स्वत मन मे प्रश्न उठा कि राम के चरित्र को इतना महत्व क्यो मिला ? राम के सर्वत्र गीत क्यो गाये जा रहे हैं ? 'राम' इतने वदनीय, पूजनीय क्यो बने ? इसका एकमात्र कारण 'राम' का सौरभमय जीवन है ।" राम के विराट जीवन को गन्ने की उपमा दी जा सकती है । गन्ने में सवत्र मिठास होता है, जहा भी देखते हैं, वहा रस का माधुय अविरल दिखाई देता है, वैसे ही मुनि श्री 'राम' के जीवन में सवत्र मधुरता के सदर्शन होते हैं, गुलाबी बचपन से लेकर यौवन की देहलीज तक वही सरल और अपूर्व मर्यादा तप त्याग की स्वर लहरी झकृत हो रही है, यही कारण है कि आचाय श्री जी के विराट हृदय को भी मुनि श्री 'राम' ने छू लिया ।

'राम' नाम किसे प्यारा नहीं लगता ? हर कोई व्यक्ति उठता है, बैठता है, सोता जागता है आदि प्रत्येक क्रिया कलाप में 'राम' शब्द का उच्चारण करता रहता है, राम नाम की माला जपता रहता है, 'राम' की गुणावली जितनी गाई जाय उतनी थोडी है ।

ऐसे पावन पवित्र अवसर पर, युवाचाय श्री जी के चरणाम्बुजो मे श्रद्धा पुष्प समर्पित करती हुई प्रभु से यही समीहा करती हू कि हमारे युवाचार्य श्री जी गुरु चरणों में युगों युगों तक जयवंत बने व हमें सही मार्ग दर्शन मिलता रहे । आपश्री जी की कीर्ति कौमुदी चहुं दिश् विकीर्ण होती रहे । यही शुभाभिलाषा है ।

"झुकी है सम्पूर्ण चेतना, श्रद्धा से करते नमन ।

सदियो रहेगा आबाद, आकाश, धरती और
महकता चमन ।"

अलौकिक महापुरुष

—विदुषी साध्वी श्री समता कवर जी

युवाचार्य पदोत्सव पर हम
शत शत वदन करते हैं ।
तपो तेजस्वी महा यशस्वी
सद्‌गुण सौरभ भरते हैं ।

७ माच का स्वर्णिम दिवस किसके लिये आह्लाद कारक न होगा । जिस दिन हमारे गणनायक समता विभूति आचाय श्री नानेश ने अधिकारो से साथ अपना उत्तरदायित्व ऐसे मजबूत कधो पर डाला जो हुक्म शासन के दायित्व को उजागर करने मे एक अलौकिक महापुरुष है ।

युवाचार्य प्रवर का जीवन बाल्य काल से ही सेवा सहिष्णुता व कत्तव्य परायणता पर टिका रहा है ।

आप अपनी सयमीय साधना द्वारा वर्तमान आचार्य प्रवर के सानिध्य में अनवरत रह कर आगमिक तत्वो का तलस्पर्शी गहन अध्ययन कर साधना की कसौटी पर खरे उतरे व आपने आचार्य प्रवर के इंगित इशारो से अपने को तराशा ।

शासन देव से यही अभ्यर्थना है कि युवाचाय प्रवर हुक्म सघ की गरिमा की श्री वृद्धि मे आये दिन बढोतरी करते रहें ।

इन्हीं शुभ भावों से श्रद्धावनत पुष्पाजलि ।

जय राम अभिनन्दन हो तुम्हारा

—वि साध्वी श्री किरण प्रभा जी म

विशुद्ध हृदय की प्रसन्नता सहित हार्दिक अभिनन्दन अनवरत अभिनन्दन । अभिनन्दन है, सेव शुश्रूषा और विनय की साकार प्रतिमा का ।

स्मृति में अतीत की गहरी परछाईयां भ्रमण कर रही है। आज से लगभग १७ वर्ष पूर्व आपश्री के साथ ही दीक्षा ग्रहण करने का पुनीत प्रसंग प्राप्त हुआ। लेकिन आपने तो अपना सम्पूर्ण जीवन साधक बना लिया और मैं प्रमाद के कारण अस्वस्थता के कारण अपने आपको साधना के उच्च शिखरों तक पहुंचा न सकी।

अब आप श्री के समक्ष अनुरोध है कि सह दीक्षित होने के कारण आप हमें साधना का अमीरस पान करायें ताकि हम अपना उज्ज्वल तम भविष्य आपश्री के शासन मे निखार सकें।

प्रसन्नता की अनुभूति

—विदुषी साध्वी श्री सोमप्रभाजी

युवाचार्य पद की घोषणा सुनकर मुझे बहुत प्रसन्नता की अनुभूति हुई। क्योकि युवाचार्य श्री जी के साथ ही सयमी जीवन में प्रवेश पाने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था। अब जीवन भी आपश्री जी की तरह ही निरन्तर बढता रहे।

यही हार्दिक शुभेच्छा है।
ओ गवरी नन्दन ! ओ गवरा नन्दन !
कोटि कोटि मेरा वन्दन, स्वीकार करो यह अभिनन्दन ॥

जब जूनागढ के प्रागण मे नूतन ज्योति जली

—विदुषी साध्वी श्री सुदर्शना श्री जी

हिमाचल से उत्तु ग ज्योतिपु ज शासनपति प्रभु महावीर की पुनीत पाट परम्परा में समता साधना से सुशोभित ब्रह्मतेज की दिव्य प्रभा से आलोकित आचार्य श्रेष्ठ श्री नानेश देव ने शासन संचालक के रूप में नवोदित सूर्य समान तप पूत, तेजस्वी, पंडित प्रवर, प्रतिभा पु ज श्री रामलालजी म सा को बीकानेर की पुण्यधरा पर जिसकी ख्याति दूर तक दिग्दिगन्त यानि सुदूर मेवाड, मालवा, मारवाड़, थियाली, हाडोती, ढु ढाण आदि तक फैली हुई है इसका प्रबल प्रमाण यह है कि इन देशान्तरों मे भी बहने मुख्य रूप से यह संगीत सुनाती

रहती है कि—

कोटा जाइजो बू दी जाइजो जाइजो बीकानेर
बीकानेर सु चेला लाइजो सूतर लाइजो चार "

इस गीत से बीकानेर का त्याग वैराग्य ज्ञान सग्रह के साधन इत्यादि की गरिमा का स्पष्ट प्रतिभास होता है । इसीके साथ दूसरा प्रमाण यह भी हैं कि इस हुकम सम्प्रदाय मे प्रथम आचाय पद भी यही दिया गया साथ ही उसी अवधि मे एक अद्‌भुत घटना भी घटित हुई जो कि यहा की महत्ती उदात्तत्ता की द्योतक है । जब चार भाइयो की दीक्षा का प्रसग था और नाई ५ आ गए । ४ अपने अपने काय में प्रसन्न-चित लग गए ५ वा उदास हो गया तो एक उदारचेता सज्जन ने उसके गमगीन होवे का कारण पूछा तो उसने अपनी व्यथाकथा कहते हुए प्रकट किया मेरे ४ भाई आज निहाल हो जायेंगे किन्तु मुझे निराश लौटना पडेगा । मुझे ऐसा सौभाग्य नही मिला यह सुन वे सज्जन संसार को त्यागने के लिए तुरन्त उद्यत हो गये । इस नाई की आशा चमक उठी ४ के बदले ५ दीक्षाए सम्पन्न हुई । जन जन के मानस इस दृश्य से अभिभूत हो गये ।

ऐसी रत्नप्रसविनी उदार धरा पर फाल्गुन सुदी ३ के मगल प्रभात के सुनहरे क्षणो मे जूनागढ के ऐतिहासिक प्रांगण मे वतमान शासन सम्राट आचार्य देव ने युवाचार्य पद की विमल, धवल, अखड सुसंगठित चादर अपने पवित्र हस्त सरोजों से चार सघ की साक्षी पूवक प्रदान की तो उन पुनीत पलो को पाकर हजारो हजार दर्शक धन्य-२ हो गये । अनगिन नयन हर्षित हो गये । जूनागढ का कण कण पुलकित हो उठा, गगन जयकारो से गू ज उठा, दिशाए हर्षोन्मत हो झूम उठी । हवा के झोंको ने यशोगान गाया, प्रकृति ने प्रसन्नता प्रकट की सृष्टि ने सादर शीश झुकाया, प्राणो ने सत्कार किया, जनता ने जयनाद किया, धरती पुलकित हो उठी, जड जगत् भी एक बार रोमाचित हो उठा ।

चतुर्विध सघ मे सद्‌भावनाओ का पारावार बहने लगा । आशकाओ के बादल छटने लगे, आशाओ के सितारे चमकने लगे । हर्षोल्लास की घटाऐ उमडने लगी । अन्तर भावो की ध्वनियां फूटने लगी केशर की बौछारें होने लगी ।

सर्वत्र आह्लाद उमग उत्साह जिसने भी देखा देखता ही रह गया। देव दुर्लभ वह क्षण क्या मिला ? मानो सृष्टि को शृंगार मिला शासन को उपहार मिला।

मननयन तनवदन सब कुछ आनंदित हो उठा। अणु-२ से अनगिन गुहारें शुभाशसा के रूप में फूटने बिखरने लगे।

पोर पोर कोर कोर डाली २-पत्ता २ रोम २ धरा अंबर यत्र तत्र सर्वत्र हर्ष ही हर्ष, आनद ही आनद न ओर न छोर।

संघ की सुदर व्यवस्था क्या हुई ? दिल से सहज उद्गार निकल पडे।

छटा में भी छटा छा गई
बहारों मे भी बहार आ गई
एक स्वर में दशों दिशाएं
हर्ष का सगीत गा गई।

❀ जिंदगी के हर मोड पर गुलदस्ते की तरह खिलते मुस्कराते रहो।

❀ साधना से आलोकित है, जीवन का आंगन।
रत्नत्रय से सुशोभित है, जीवन का हर कण,
स्वस्थ एव तन्दुरुस्त, रहो तुम हर पल,
खुशियों से पूरित हो, जीवन का हर क्षण।

❀ तुम जीओ मालिक हजारो साल।
हर साल के दिन हो सौ सौ हजार॥

❀ जलता ही रहे साधना का चिराग यह,
खिलता ही रहे आराधना का बाग यह।
एक ही ख्वाब और एक ही है ख्वाहिश,
मिलता ही रहे चरणोपासना का पराग यह।

❀ जलाते रहो तुम लक्षाधिक शिखाए
खिलाते रहो तुम लक्षाधिक कलिकाएं
यही है आरजू यही है अभीप्सा
दिलाते रहो तुम लक्षाधिक दीक्षाए।

सविधि, सविनय, भावभरी अनगिन चरण वंदना शुभाशाओ के साथ…।

त्याग तप के अद्वितीय वैभव

—विदुषी साध्वी आदर्श प्रभा जी

आर्य सुधर्मा की श्रमण परम्परा निर्बाध गति से चरम जिनेश शासनाधिपति प्रभु महावीर के निश्रेय मार्ग का अनुशीलन परिवर्धन संरक्षण सवर्धण करती हुयी, भव्य आत्माओ के लिए प्रदीप की भाति मुक्तिपथ का सतत प्रदर्शन करती हुयी प्रगतिशील है।

और इस पचम आरे की पूर्णता तक यह महान ज्योति जजल्यमान रहेगी ऐसा आत्म विश्वास है। इसी परम्परा का अनन्त पुण्य है कि इस पर समारूढ श्रद्धेय समीक्षण ध्यान योगी, सघ की समुज्जवल ज्योति, कलिकाल सर्वज्ञ, शासनेश नानेश ने फाल्गुन सुदी तृतीया को बीकानेर की पुण्य भूमि जूनागढ़ के पुनीत प्रागण मे अपनी प्रखर प्रतिभा से सूक्ष्ममेधा से मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा को युवाचाय पद पर समारूढ़ किया। अत यह दिवस चिर स्मरणीय रहेगा।

इस अवसर पर प्रत्येक प्राणी के अणु अणु मे उत्साह उमग और उल्लास की अनगिन तरगें उठ रही थी। मन चमन प्रपफुल्लित हो रहा था हृदय पटल सारगसम हृप विभोर हो नाच रहा था, झूम रहा था।

अहो! यह अमूल्य अवसर क्या मिला कोई मानो भडार मिल गया, इस सुअवसर पर मन विविध रूप से अभिनन्दन करना चाहता था, अन्तर हृदय से, श्रद्धा से, विनय भक्ति से, मागलिक गीत गाते हुए हार्दिक भाव सुमनों से थाल को सजाकर, श्रद्धा एवं अनुरक्ति का अनूठा दीपक जलाकर, भक्ति की वीणा को बजाते हुए, विनय के घु घरू बाधकर, सुयश का मृदग बजाते हुए, मन के मोती का तिलक करके, ज्ञान के अक्षत को लेकर अपने धमदेव को हृदय में सजोकर भाव दीप जला रहा था।

प्रकृति भी मानो स्वागतार्थं उमड पडी थी पवन के प्रबल झोंके मानो हर्ष ध्वनि करते हुए गुलाल उडा रहे थे। पेड और पौधे मानो झूम झूम कर प्रणाम करते हुए अपने प्रमोद को प्रकट कर रहे थे। आबाल वृद्ध नदन वन सा आनन्द अनुभव कर रहे थे। वास्तव में युवाचार्य श्री जी एक प्रज्ञा पुरुष हैं या यू कहा जा सकता है, जिनागम मन्दिर में सतत प्रज्वलित एक अखण्ड प्रज्ञादीप है। आपकी

वाणी मे ज्ञान गाम्भीर्य के साथ ही अनुभव का सागर लहलहा रहा है। इनकी लेखनी से आगमो के रहस्य इतनी सहजता से प्रस्फुटित होते हैं, मानो उपवन में कुसुम कलिया चटकती खिलती हुई, अपना सौरभ लुटा रही हैं। तत्वो की गभीरता, विषय की विशदता और भाषा की स्पष्टता आगम व्याख्याओं मे सार पूर्ण चिन्तन वस्तु स्वरूप का निचोड प्रस्तुत कर देती है। वास्तव मे आप श्री का कृतित्व व्यक्तित्व सम्पूर्ण जैन समाज के लिए प्रेरणा रूप है। ज्ञान क्रिया का समन्वित रूप है। हम सब का परम सौभाग्य है कि हमे असीम वात्सल्य एव कृपा बरसाने वाले अपनी सूक्ष्म ज्ञान छैनी से हमारे जीवन को तराशने वाले जीवन शिल्पी मिले हैं।

युवाचार्य श्री जी दिव्यातिदिव्य परात्पर गुरु हैं। श्री चरणों मे अभिवदन-अभिनन्दन के साथ

'कटक फूल गुलाबी बनकर महक-महक महके।
ऐसा ही व्यक्तित्व सुहाना चम चम चमके दमके।"

एक चमकती मशाल

—विदुषी साध्वी मधुबालाजी

इतिहास के सुनहरे पृष्ठो पर तो फाल्गुन सुदी तृतीया का शुभ दिवस स्वर्णाक्षरों मे चमकेगा ही किन्तु अ भा साधुमार्गी जैन सघ के लिए भी यह दिन अनूठा और सर्वोच्च सौभाग्यशाली सिद्ध हुआ। क्योंकि इस मगल दिवस पर चतुर्विध सघ को एक होनहार कर्णधार मिला।

जब अष्टम पट्टाधीश, विलक्षण प्रतिमा-पु ज पूज्य आचार्य श्री नानेश ने अपनी पावन प्रज्ञा से परीक्षित, अन्तरानुभूति से अवलोकित सयम साधना से सुशोभित, दिव्य तेज से विभूषित एवं ज्ञान रश्मियों से आलोकित, सत रत्न शिरोमणि श्री रामलालजी म सा को युवाचार्य पद की चद्दर प्रदान की तब हजारों दिलों ने सश्रद्धा सुस्वागत किया, सविनय इस शुभ संदेश को स्वीकार किया। सहृष पलकों पर बिठाया।

शासन निष्ठा की बेजोड झलक प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिली ।

कोना २ हर्ष निनाद से पूरित हो उठा चतुर्विध संघ धन्य-धन्य हो खुशियों से झूम उठा ।

वस्तुत युवाचाय श्री जी के जीवनागन मे हसने महकने वाले सद्गुण रूपी सुमनो की सुषमा को काफी समय से निकटता से देखने समझने का सुअवसर मिल रहा है ।

आपश्री का विशिष्टतम पुष्प पत्रो से सुसज्जित गुलदस्ते के समान जीवन की छटा अत्यन्त आकर्षक और मनोरम ही नही अपितु शुभ्र-तम एवं सर्वोत्तम लगती है ।

आभ्यन्तर तपोतेज से मडित सत्य एवं सयम प्रेम की अप्रतिम प्रति मूर्ति को भाव-भरी कोटि-कोटि वन्दना अभिवन्दना के साथ—

हवाओ ने गाया बधाई का गीत यह ।
घटाओ ने सुनाया स्वागत सगीत यह ।
कण २ गू जा, हर क्षण ने पूजा,
नानेश से पाया भावी का नवनीत यह ।

केशरिया बल देने वाला

—विदुषी साध्वी श्री पद्म श्री जी

केशरिया बल देने वाला सफेद है । सच्चाई जिसकी स्मृतिया मन को आह्लादित्ता/आनदित कर रही है वह दिन ७ मार्च ९२ कितनी आशा उमगो को अपना सकता था । प्रात कालीन मगल वेला मे हजारो जनमेदिनी का अपूर्व उत्साह अत्यन्त प्रसन्न वंदन आचार्य भगवन् ।

जिन्हें कर रहा था चतुर्विध सघ वन्दन नमन ।
युवावग भक्ति स्वर से गु जा रहे थे सारा गगन ।
केशर की खुशबू कर रही थी सबको मगन ।
मद शीतल का हो रहा था आगमन ।
खिल रहा था सारा चमन ।
मैं अग्रिम पक्ति में बैठू इन भावा का कर रहे थे मनें दमन ।
आराध्य देव को निहार रहे थे सबके नयन,

वाणी मे ज्ञान गाम्भीय के साथ ही अनुभव का सागर लहलहा रहा है। इनकी लेखनी से आगमो के रहस्य इतनी सहजता से प्रस्फुटित होते हैं, मानो उपवन में कुसुम कलियां चटकती खिलती हुई, अपना सौरभ लुटा रही हैं। तत्वो की गभीरता, विषय की विशदता और भाषा की स्पष्टता आगम व्याख्याओ मे सार पूर्ण चिन्तन वस्तु स्वरूप का निचोड प्रस्तुत कर देती है। वास्तव मे आप श्री का कृतित्व व्यक्तित्व सम्पूर्ण जैन समाज के लिए प्रेरणा रूप है। ज्ञान क्रिया का समन्वित रूप है। हम सब का परम सौभाग्य है कि हमें असीम वात्सल्य एव कृपा बरसाने वाले अपनी सूक्ष्म ज्ञान छैनी से हमारे जीवन को तराशने वाले जीवन शिल्पी मिले हैं।

युवाचार्य श्री जी दिव्यातिदिव्य परात्पर गुरु हैं। श्री चरणों मे अभिवदन-अभिनन्दन के साथ "

'कटक फूल गुलाबी बनकर महक महक महके।
ऐसा ही व्यक्तित्व सुहाना चम चम चमके दमके।"

एक चमकती मशाल

—विदुषी साध्वी मधुबालाजी

इतिहास के सुनहरे पृष्ठों पर तो फाल्गुन सुदी तृतीया का शुभ दिवस स्वर्णाक्षरो मे चमकेगा ही किन्तु अ भा साधुमार्गी जैन सघ के लिए भी यह दिन अनूठा और सर्वोच्च सौभाग्यशाली सिद्ध हुआ। क्योंकि इस मगल दिवस पर चतुर्विध सघ को एक होनहार कर्णधार मिला।

जब अष्टम पट्टाधीश, विलक्षण प्रतिभा पुज पूज्य आचार्य श्री नानेश ने अपनी पावन प्रज्ञा से परीक्षित, अन्तरानुभूति से अवलोकित सयम साधना से सुशोभित, दिव्य तेज से विभूषित एव ज्ञान रश्मियों से आलोकित, संत रत्न शिरोमणि श्री रामलालजी म सा को युवाचार्य पद की चद्दर प्रदान की तब हजारों दिलों ने सश्रद्धा सुस्वागत किया, सविनय इस शुभ सदेश को स्वीकार किया। सहर्ष पलकों पर बिठाया।

शासन निष्ठा की बेजोड झलक प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिली ।

कोना-२ हर्ष निनाद से पूरित हो उठा चतुर्विध संघ धन्य-धन्य हो खुशियो से झूम उठा ।

वस्तुत युवाचाय श्री जी के जीवनागन में हसने महकने वाले सदगुण रूपी सुमनो की सुषमा को काफी समय से निकटता से देखने समझने का सुअवसर मिल रहा है ।

आपश्री का विशिष्टतम पुष्प पत्रो से सुसज्जित गुलदस्ते के समान जीवन की छटा अत्यन्त आकर्षक और मनोरम ही नही अपितु शुभ्र-तम एवं सर्वोत्तम लगती है ।

आभ्यन्तर तपोतेज से मडित सत्य एवं सयम प्रेम की अप्रतिम प्रति मूर्ति को भाव-भरी कोटि-कोटि वन्दना अभिवन्दना के साथ—

हवाओ ने गाया बधाई का गीत यह ।
घटाओं ने सुनाया स्वागत सगीत यह ।
कण २ गूजा, हर क्षण ने पूजा,
नानेश से पाया भावी का नवनीत यह ।

केशरिया बल देने वाला

—विदुषी साध्वी श्री पद्म श्री जी

केशरिया बल देने वाला सफेद है । सच्चाई जिसकी स्मृतियां मन को आह्लादिता/आनदित कर रही है वह दिन ७ मार्च ९२ कितनी आशा उमगो को अपना सकता था । प्रात कालीन मगल वेला में हजारो जनमेदिनी का अपूर्व उत्साह अत्यन्त प्रसन्न वदन आचार्य भगवन् ।

जिन्हें कर रहा था चतुर्विध सघ वन्दन नमन ।
युवावर्ग भक्ति स्वर से गु जा रहे थे सारा गगन ।
केशर की खुशबू कर रही थी सबको मगन ।
मद शीतल का हो रहा था आगमन ।
खिल रहा था सारा चमन ।
मैं अग्रिम पक्ति में बैठू इन भावो का कर रहे थे मने दमन ।
आराध्य देव को निहार रहे थे सबके नयन,

वधा रहे थे बड़े-बुजुग करके भजन ।
संघ का अधिनायक कौन हो इस प्रश्न का हो रहा उपशमन।
कर्त्तव्य मुद्रा मे सजग थे सारे श्रमण
श्री राम कर रहे थे स्वाध्याय मे रमण ।
अनेक की स्मृति मे उभर रहा था युवाचार्य श्री का वतन
भक्त दे रहे थे मगल भावना के वचन ।

कितना सुन्दर नयनाभिराम दृश्य था युवाचार्य चादर प्रदान दिवस का । वीतराग के पथ पर समारूढ़ साधको में से एक चेतना श्रीराम के रूप में उच्चता के शिखर पर आरोहण कर रही थी । उस चेतना के सद्गुणो का अभिवादन करने रूप यह धम महोत्सव था । यह महोत्सव गुरु कृपा से, चतुर्विध सघ की समपणा से भक्त मडली के परिश्रम से सानद सम्पन्न हुआ ।

यह महोत्सव पूज्य आचार्य भगवन् के भावों की पूर्णाहुति नही किन्तु है पूज्य भगवन् के शासन हितैषी भावों का, अर्थात् नवीन शासन व्यवस्था का शुभारम्भ इस प्रकार के पुनीत शुभारंभ के प्रति हमारी अनंतानन्त मागलिक भावनाए त्रियोग के साथ जुड़ी रहे —

युवामनस्वी महामहिम श्री युवाचार्य श्री जी ! केशरिया रंग की आभायुक्त धवल चद्दर गुरुदेव ने आपको प्रदान की है उसके साथ पूज्य भगवन् की दिव्य भव्य प्रेरणाए अनुस्यूत है, उन प्रेरणाओं को सबल देने हेतु साकार रूप प्रदान करने के लिए आचार्य श्री ने आपश्री जी को आगम बल दिया है । इस बल का उपयोग आप सारणा धारणा वारणा के रूप में करके शासन को उन्नति पथ पर निरन्तर बढ़ाते रहे यही हमारी शुभाशसा है ।

आचार्य भगवन् ने अत्यन्त प्रेम से—विश्वास से सौहार्द सापूर्ण वातावरण मे आपको श्वेत शुभ्र केशरिया आभा से युक्त अनेक सूत्रों से संयुक्त ऐसी पवित्र चदरिया प्रदान की है, यह चदरिया सत्य सुरभि से सुशोभित है—इस चदरिया के साथ अनेक गुरु भ्राता मुनिवरो एवं गुरु भगिनी महासती वृन्द का स्नेह सद्भाव सहकार युक्त प्रेम जुड़ा हुआ है । साथ ही पूज्य गुरुदेव के अन्तरभावों की मगल प्रेरणा निर्जरा में परम सहायक गुरुत्तर दायित्व और चतुर्विध सघ की आशाए भी इनके साथ कड़ी के रूप में जुड़ी हुई है ।

ऐसी स्थिति में सभी के प्रेम स्नेह का समादर करने रूप दायित्व निर्वाह एव पूज्य गुरुदेव की अन्तर-भावनाओं की सपूर्ति करके आप इस चादर के साथ सयुक्त शुभ भावनाओ का क्रियात्मक प्रत्युत्तर देकर भगवान महावीर के शासन का गौरव बढा सकते है।

यह श्वेत रंग की चादर साधारण नही असाधारण है इसमे त्याग-वैराग्य की महत्ता एव सत्य की भगवत्ता रही हुई है। इस महत्ता भगवत्ता की आन-बान-शान को पूर्वज आचार्यों ने पचाचार के साथ बनाये रखा है। आचार्य श्री भी उसे बनाये रखे हुए हैं तथा भविष्य में आप श्रीजी को भी बनाये रखना है।

इन्ही मगल भावनाओ के साथ पुन आप जैसे रत्न के निर्माता एवं पारखी रूप जौहरी पूज्य आचार्य भगवन् का बारम्बार अभिनन्दन करते हुए कुशल क्षेम की परिपृच्छद एव निरामय स्वास्थ्य की मंगल कामना करते हैं।

शुभ्रतम आशीष चाहे

विदुषी साध्वी श्री प्रमोद श्री जी

सघ की सौरभ सुहानी,
द्विगुणित होगी अनुपम।
और शासन मे सुमन,
विकसित बनेंगे भव्य नूतन।
हो समर्पण सार संभृत,
शुभ्रतम आशीष चाहे।
चारू चरणो की पुलक से,
आत्म भावो को जगाये।

आज के इस स्वर्णिम दिवस पर हृदय की असीम आस्था के साथ अगणित बधाई देवे को मन समुत्सक बन रहा है पर भावो की असीमता शब्दो की सीमा से परिबद्ध नहीं कर पा रही हूं। अत यह निवेदन है कि जैसा आप श्री ने अपने आन्तरिक स्नेह की सरिता से

ज्ञान पिपासा को परिसिंचित किया है वैसे अब उसकी क्रियान्विति मे आप श्री का वरदहस्त अविरल अविरत बना रहे। इसी आन्तरिक अभीप्सा के साथ।

आत्मीय कृपा वर्षण हो

विदुषी साध्वी श्री सूयमणि जी म सा

परम श्रद्धेय अनवानत आराध्य देव आचार्य भगवन् एव युवाचाय के गौरवमय पद सुशोभित महामहिम के पाद पद्मों मे आत्मीय भावाभिवन्दना।

अनुपम आत्मीय स्नेह वात्सल्य तरंगो से युक्त उज्ज्वल, धवल, ज्ञान, चारित्र की विशिष्ट अध्यात्म किरणें प्रदत्त कर आराध्य देव आचाय भगवन् ने अपनी सवस्व साधना की ज्योतिमय आभा से आप श्रीजी के व्यक्तित्व को निखार कर गुण गरिमा युक्त पद पर सुनियोजित किया है।

उन्हीं निर्मल प्रखर किरणों से श्रमण सस्कृति के गौरव को दिन दूना रात चौगुना प्रवर्द्धित करने मे समथ हो। आराध्य देव आचार्य भगवन् वत् ही आप श्रीजी से भी हम भगिनियो को वही वात्सल्यता आत्मीय चेतनात्मक सुमधुरता अध्यात्म शिखरारूढ होने का दिव्य सम्बल सदा सम्प्राप्त हो। हमारी साधना आचार्य भगवन् व युवाचार्य भगवन् के चरणो मे उत्तरोत्तर निखार लाते हुए मुक्ति पथ पर सचेतता पाते हुए बढती रहे।

इन्हीं भावो के साथ शुभाञ्जलि सहित समर्पण।

युवाचार्यपदम् भवता, भवान् युवाचार्य पदेन च परिमण्डितोऽस्ति

—विदुषी साध्वी श्री चितरजना जी

आचार्य श्री नानेश जैनशासनस्य सफलोऽनुशास्ता (प्रख्यातो) सुप्रसिद्ध ध्यानयोगी प्रबुद्ध विचारक एवं व्याख्याता च अस्ति।

आचायस्य श्रिय गुणा अमिता सन्ति । अद्यावधि वय पुन पुन आचाय श्रिय गुण गौरव अकथयाम किन्तु वस्तुतया गुणगौरव गातु अवसर। साम्प्रत प्राप्त ।

यत आचार्यवर्यस्य सर्वोत्तम गुणोऽस्ति "परीक्षण दृष्टि" अय गुण आचायवर्येण प्राप्त । प्राप्तएव न अपितु सुयोग्यस्य युवाचार्यस्य चयनं कृत्वा जगत् प्रादशयत् ।

आगमज्ञ तरुण तपस्वी विद्वद्वय श्री मुनिप्रवर श्री रामलाल जी महाराज महोदय सरल विनीत अनुशासनप्रिय. क्रियानिष्ठ तेजस्वी ओजस्वी सच्छिरोमणि अस्ति । युवाचार्य पदमपि भवादृश सन्त सम्प्राप्य स्वगौरवमवर्धयत् । इद सुनिश्चित सत्यमास्ति यत् भवान् युवाचार्य पद न वाञ्छति अपितु युवाचायपदस्य भवत महत्यावश्यकता वर्त्तते । अहं अति प्रसन्नाऽस्मि यत् युवाचार्यपदम् भवता, भवान् युवाचाय पदेन च परमण्डितोऽस्ति ।

दक्षिण भारते विचरणशीला परम-विदुषी, मरुधर सिंही, शासन प्रभाविका, साध्वी रत्ना श्री नानूकंवर जी म सा युवाचार्य पदस्य घोषणा श्रुत्वा अति हृष्टवती आसीत् । सा प्रसन्नता शब्देन वक्तु नकोपि शक्त ।

आशा वर्त्तते यत् युवाचार्यप्रवर प्रवधमान हुक्मपट्ट पूर्वापेक्षया अधिक गतिशीलं करोतु एव जिनशासनस्य प्रभावना करोतु । युवाचाय श्री सदैव स्वस्थ अस्तु दीर्घायुभवतु एव तस्य वरदहस्तौ मम मस्तके शतवर्षपयन्त भवताम् । युवाचार्यस्य पादयो शत शत वन्दनम् ।

गुणों का गुलदस्ता

वि साध्वी श्री गरिमा श्रीजी म सा

उदात्त प्रतिभापु ज युवाचाय श्री का जीवन सर्वतोमुखी एवं सावभोम है । जहा गणधर गौतम सी नम्रता भी है तो अभयकुमार सी बुद्धिमता भी । आय सुधर्मा सा तेज है तो जम्बू स्वामी सा ओज भी । अनाथी जैसा त्याग है तो एवन्ता सा वैराग्य भी विचारो मे सरसता एव कोमलता भी है तो आचार पालन मे दृढता एवं अनुशासन

मे कठोरता भी। व्यवहार मे सुमन जैसी मृदुता है तो दिल मे ऋजुता एव पटुता भी गुरु सेवा मे तत्परता है तो कार्य विधि मे कुशलता भी। हृदय की विशालता भी तो चित्त की एकाग्रता भी। वाणी मे माधुर्यता तो व्याख्यान में गभीरता भी। शास्त्र के गहन अध्ययन की तन्मयता भी। सयम मे सजगता तो तप मे अनुशीलता, सत्य साधना में दक्षता तो गुरुवर्यों के चरणोपासना मे तल्लीनता। व्यवस्था की विलक्षणता तो विवेचन की विचक्षणता। ज्ञान-रश्मि की महत्ता तो जिज्ञासा में लघुता, गुरु आज्ञा में आस्था तो सिद्धान्त मे सात्विकता।
हुक्मेश सी तपोतेजस्विता तो श्रीलाल सा वर्चस्व।
सुमेरु सी अचलता तो धरा सी सहनशीलता। नीर सी निर्मलता तो गगा सी पवित्रता। दूध सी धवलता, तो मेघ घटा सी उदारता।

विविध गुण घटाओ से परिपूरित हमारे युवाचार्य श्री जी के व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धा से अभिभूत हो-शुभाशा और मंगल मनीषा के साथ—

सत्य के शृगार तुम धरती के उपहार हो।
शासन के सरताज तुम, गौरव की सितार हो।
अभिनन्दन, सुस्वागत है तेरा—
जीवन के पतवार तुम ही आशा के आधार हो।

युवाचार्य श्री दो आशीष

वि साध्वी श्री कल्पमणि जी

मा गवरा ने तुमको पाया।
पिता नेमी का भाग्य सवाया॥
गुरु नानेश ने जीवन सजाया।
सघ का सिरमोर बनाया॥१॥
नाना दीपो से यह जीवन जगमगा उठे,
नाना पुष्पो से यह बगिचा सरसा उठे,
त्याग तप से यह चमन चमक उठे,
युवाचार्य श्री दो आशीष मेरा जीवन भी सद्गुणो से दमक उठे॥२॥

बधाई

—साध्वी निवेदिका, भावना, कल्पना, रेखा

हमारी हार्दिक बधाई स्वीकार करने की कृपा कीजियेगा।

※

शुभकामना

चरण रज—साध्वी उज्ज्वल प्रभा

भावी शासनाधार को
हार्दिक शुभकामनाओं सहित
बहुत-२ बधाई हो।

एक विलक्षण व्यक्तित्व

—वि साध्वी समर्पिता ओजी

हुविम क्षितिज पर उदीयमान नवें नक्षत्र आगम प्रवक्ता युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा है। बाल्यकाल से ही आप धर्म परायण एवं सेवाधर्मी रहे। पर-दुःख कातर युवाचार्य प्रवर के मन में वैराग्य का उद्रेक जागा। जीवन को सासारिक प्रलोभन से दूर रखते हुए अपने को आत्म दर्शन के प्रति भावित करते रहे। वि संवत् २०३१ को दीक्षित होकर आप अपने जीवन को आगे बढाने लगे। आपश्री ने आचार्य प्रवर के सान्निध्य में आगम, टब्बा, सस्कृत, प्राकृत, गुजराती आदि का सम्यक्तया अध्ययन किया। अपनी तीक्ष्ण प्रज्ञा से जीवन को अहर्निश समुन्नति की ओर अग्रसर किया। आप श्री का विराट् व्यक्तित्व एक अनबुझी पहेली-सा लगता है। जिसमे उर्मिल सागर का गाभीर्य, अंशुमाली का तेज, वैश्वानर की दीप्ति, सुधाकर की शीतलता, हिमाचल की अचलता, वसुन्धरा की सर्व सहिष्णुता, ध्रुव का धैर्य, तारुण्य का अपार उत्साह है। ऐसे रंगीले व्यक्तित्व, ऊर्ध्वगामी चतन्य का शब्दों में परिचय परिवेश कैसे दिया जा सकता है ? युवाचार्य श्रीजी एक विलक्षण व्यक्तित्व के धनी हैं इसलिये इस तथ्य

का विश्लेषण विरले ही कर सकते हैं । परम पूज्य युवाचार्य के प्रेरणा स्रोत श्री रामलाल जी म सा शासन गरिमा मे आये दिन निखार लाते रहे और मुझ जैसी अबोध बाला को मार्ग दर्शन देते रहें इसी शुभानुशंसा से आपके चरणों में बार बार वन्दन अभिनन्दन करती हू ।

युग द्रष्टा युग सृष्टा—
तेरा है अभिनन्दन ।।
साम्य भाव के उद्‌गाता को ।
शत्-शत् वन्दन ।।
युवाचार्य के श्री चरणो मे—
श्रद्धा सुमन चढ़ाती हू ।।
जन मानस मराल हो—
तुम पर बलि-बलि जाती हू ।।

★

संस्मरण

दर्पण में प्रतिबिम्ब

—वि साध्वी श्री स्वर्णप्रभाजी म सा-

एक दिन का सहज प्रसग,

समता विभूति आचार्य श्री नानेश की पावन सन्निधि सुलभ थी । आचार्य देव तारों के बीच चन्द्रवत् सुशोभित थे, मानो अमृत का निर्झर प्रवाहित हो रहा हो ।

प्यासे पथिक अमृत पान मे भाव विभोर-से हो रहे थे ।

सहसा एक वृद्धकाय साधु लगड़ाता हुआ आ पहुंचा, कहता है—गुरुदेव !

"मु मोरवनउ विहार कर रयो थो, पाछे इ आपरा गुणवान सत पधार्‌या ने म्हारो बोझो लेई लियो, मने यू लाग्यो ज्यू श्री कृष्ण जी बूढा री ईट उठाइने वीरो बोझो हल्को कर्यो होय ।"

गुरुदेव !

"इ आपरा संत कितरा गुणवान है, म्हारो अन्तर हियो इण ने घणो-घणो आशीर्वाद देइरयो है"

गुरुदेव ने कहा—

सेवा करना मानवीय कत्तव्य है, साधुता उससे ऊची है, साधु को सेवा करने में आगे रहना चाहिए, इन्होने सेवा करके साधुता का गौरव बढाया है ।

वही साधु पुन लगभग दो वप के बाद लौटा—

कहते हैं—गुरुदेव इ मुनिराज जणा वी दिन म्हारो बोझो हल्को कर्‌यो थो आज आपरो भी बोझो हल्को कर दियो । गुरुदेव ! इ तो घणा गुणवान निकल्या । "आज म्हारो आशीष फली गयो ।"

गुरुदेव ने कहा—

आपकी भावना प्रशस्त थी ।

आप बधाई के पात्र हैं ।

भगवन् ! आपरो शासन खूब दीपो, इ सत खूब फूलो फलो।

वे वृद्धकाय संत है आदश त्यागी "श्री सौभाग्यमल जो म सा" ग बोझ उठाने वाले सत थे युवाचाय "श्री रामलालजी म सा" ।

पावन चरणों मे स्वर्ण सुमन

△ साध्वी श्री स्वरण रेखा जी

समय नदी की धार, कि जिसमे सब बह जाया करते हैं ।
समय बड़ा तूफान प्रबल, पर्वत झुक जाया करते हैं ।
असर दुनिया के लोग समय मे चक्कर खाया करते हैं ।
लेकिन कुछ ऐसे होते हैं जो इतिहास बनाया करते हैं ।

मुक्तक के इसी लक्ष्य को ध्यान मे रखकर आचार्य भगवन् वं युवाचार्य श्री जी का वरदहस्त हमेशा मुझ व छोटी सी साधिका र निरन्तर बना रहे और ज्ञान, दशन चारित्र की अभिवृद्धि मे सदैव तिशील बनकर इगित इशारे पर चलती रहूं । यही शुभ आशीर्वाद ाज के पावन प्रसग पर महान भगवन्तो का चाहती हू तथा पावन रणों में स्वरण सुमन चढ़ाती हू ।

दोण्ह महापुरिसाण वरहत्था चिट्ठन्तु

—नवदीक्षिता वि साध्वी श्री शीतलप्रभा

पुज्जेण गुरुदेवेण समयाविभुइणायरियेण सिरिणाठोसेण सयलदिट्ठीहि परिक्खिऊण मुणिप्पवरो सत्थण्णु 'सिरी रामलालजी म सा' इइ जुवा• यरियरूवेणालकिओ एसो ण ममेव अवित्त सघुण्णसघस्स हरिसविसओ अत्थि ।

दिक्खअम्मि एवं मइ जुवायरिय चयणं मम महल्लसोहग्गस्स विसओ विज्जइ । जओ मे मुद्धाणम्मि दुण्ह महापुरिसाणं वरहत्था विराइआ ।

ममान्तरिओ अभिलासो उल्लसइ जआयरियप्प वरस्स जुवाय रियप्पवरस्स च छत्तच्छाया मम सीसम्मि जुअजुम तर भवउ अह घ ताण चरणेसुमुवविसिऊण णाणदसणचरित्ताभिवुड्ढि कुणन्तो भविस्सामि।

अनन्त अनन्त बधाई

—साध्वी अभिलाषा

मगल अवसर पर मगल अभिलाषा लिए अनन्त अनन्त बधाई !

स्नेहमय बधाई

साध्वी "नेहा"

आत्मिक नेह के चरमोत्कर्ष के इस अवसर पर—
राम चरण में—
हार्दिक श्रद्धा समन्वित
स्नेहमय बधाई !

अनुपम बधाई

साध्वी अनुपम श्री

अनुपम काय के लिये
अनुपम द्वारा
अनुपम बधाई ।

सतत बढेंगे आदेशों पे ये कदम

[वि साध्वी श्री इन्द्रकवरजी म सा की सहवर्ती साध्वी मण्डल]

"तेरी शीतल छाया मे लाखो जीवन पा जाए
तुम बोओ जो बीज वही शत शाखो बन लहरा जाए
आभार का किन शब्दो में अनुवाद करें 'सती मण्डल'
तेरी साधना का दिव्य तेज लख लाखो पथ पा जाए"
चकित हुआ है दिव्य दृष्टि से सघ सदन
सतत बढेंगे आदेशो पे ये कदम
हम ही क्या सारी इच्छा तव चरणो मे अर्पण
तन मन क्या सारा जीवन हम करें समपण
"पुलक रहा है आज खुशी से मन का कोना कोना
लायी है उषा की किरणें इक उपहार सलोना
सजग साधना के महासूर्य ! नत अवनत तव चरणों मे
'इन्द्र' सहज भावों की माला स्वीकारो गुरुवर नाना ।"

समता जगत् के अग्रदूत क्रान्त चेतना के स्वामी श्रमण सस्कृति के सरक्षक दीर्घद्रष्टा युग पुरुष हुक्म गच्छाधिपति आचाय श्री नानेश के चिन्मय कणों से सिक्त युवाचार्य श्री जी के चारू चयन मे हार्दिक अनुमोदन एव

भाव समर्पणा सहित ।

युवाचार्य श्री देदीप्यमान होते रहेंगे

वि साध्वी श्री स्वर्ण रेखा जी म सा

युवाचार्य श्री जी श्रीसघ की शान है
युवाचार्य श्री जी महा प्रज्ञावान है
आपश्री के किन गुणों का वर्णन करू मैं
युवाचार्य श्री जी क्रिया मे प्रधान है

रोज सुबह होती है, शाम होती है जिन्दगी समय के अन्धकार में गुजर जाती है, लेकिन जीवन मे कुछ दिन ऐसे आते हैं, जो हमारे मन पर अमिट छाप छोड जाते हैं । वह एक ऐसा ही दिन था

जब आप और हम आचार्य श्री एव शास्त्रज्ञ मुनि प्रवर श्री रामला
जी म सा के दर्शन के आलोक को अपनी आत्मा मे महसूस कर र
थे । दर्शन के आलोक को महसूस करके जब मैं साधुमार्गी सघ
इतिहास की ओर दृष्टिपात करती हूं तो ज्ञात होता है कि इस क्रम मे
मैं वीतराग प्रभु के इस शासन को विश्व क्षितिज पर चमकाने के लि
महान ज्ञानी, महान ध्यानी और महा क्रियावान विभूतियां चतुर्विध सघ
विकासोन्मुखी बनाने हेतु प्राप्त हुई और उसी शृ खला में बीकानेर
पावन पवित्र प्रागण पर नया भास्कर उदित हुआ, और आचार्य
नानेश ने अपना सम्पूर्ण उत्तराधिकार शास्त्रज्ञ आगम निधि मुनि प्रव
श्री रामलाल जी म सा के सशक्त कधो पर २ मार्च १९९२ फाल्गु
बदी तेरस को सौंप दिया । सवत्र वातावरण एक अलौकिक रूप लि
हुए रहा ।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी युवाचार्य श्री इस उत्तराधिकार
समालने में पूर्ण सक्षम रहेगे । विनय, विवेक, सरलता निष्पक्षता मे
आपश्री के अद्भुत गुण हैं तथा साथ ही आप त्याग तपस्या की साक्षा
मूर्ति हैं । मन करता है ऐसे युवाचार्य श्री जी की उपमा सूर्य से करू
किन्तु फिर ज्ञात होता है कि सूर्य तो दिन मे ही देदीप्यमान होता
किन्तु युवाचार्य श्री जिनशासन मे निरन्तर देदीप्यमान होते रहेंगे ।

युवाचार्य श्रीजी की उपमा चन्द्रमा से करू किन्तु फिर ख्या
आता है चन्द्रमा में तो कहीं कहीं काले धब्बे दिखाई देते हैं किन्
युवाचार्य श्री जी विषय विकारों के धब्बे से रहित हैं ।

अन्त मे श्रद्धा भक्ति के भावों से युवाचार्य श्री से यही प्रार्थन
करती हू कि आप सदा जिनशासन की गरिमा मे उत्तरोत्तर निखा
लाते रहें । यह गुलशन आपश्री की अपूर्व क्रियाकलापों से प्रवर्धमान हो

❉

समयोचित दूरदर्शितापूर्ण निर्णय

—आचार्य श्री हीराचन्दजी म (रत्नवंश)

विशुद्ध निग्रन्थ श्रमण सस्कृति के रक्षण सवर्धन मे स्व आचार्य भगवन्त पूज्य श्री गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म सा एव आपश्री का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । श्रमण सस्कृति का उन्नयन हो और परस्पर मैत्री सम्बन्धो से चतुर्विध संघ की सैद्धान्तिक धरातल पर मान्यता बढ़े, इस दृष्टि से स्व आचार्य भगवन्त और आप श्री के चिंतन से परस्पर मैत्री की प्रभावना बढी है । स्व आचाय भगवन्त के प्रशस्त मार्ग का अनुगमन करते रहने का आचार्य श्री का सतत् प्रयास है और रहेगा ।

आपश्री जीवन के अवशिष्ट समय को स्वय के आत्म श्रेय में लगा कर लोकोत्तर साधना के विशिष्ट रूप को प्रशस्त करना चाहते हैं, वस्तुत सच्चा साधक चिन्तन मनन अनुसधान कर साधना का चरम और परम लक्ष्य प्राप्त करता है । आत्म साधना के अनुष्ठान मे आप श्री की सफलता के लिये मगलकामना की है ।

आपश्री ने निरीक्षण परीक्षण के पश्चात् आत्म साक्षी से अनेक गुणवन्त साधक सन्तो मे से विद्वद्वय मुनि प्रवर श्री रामलालजी महाराज को ७ मार्च को चतुर्विध सघ की उपस्थिति मे युवाचाय श्री का दायित्व सौंपा है, यह आपश्री का समयोचित दूरदर्शितापूर्ण निर्णय है, आपश्री ने युवाचार्य श्री को सैद्धान्तिक धरातल पर संघ एक्य के उद्देश्यो के प्रति समर्पित रहने का सकेत किया है, आशा है, आपश्री की सतत् प्रेरणा एवं युवाचाय श्री के आत्मीय सद्भाव से परस्पर सहयोग की प्राणवत्ता बनी रहेगी ।

❀

निर्णय हितकारी, कल्याणकारी एव श्रद्धास्पद ही रहेगा ।

—आचार्य श्री सरदार मुनि जी
(बर वाला सप्रदाय, गुजरात)

विगत अनेक वर्षों से पूज्य आचाय भगवन्त (श्री नानेश)

जैन शासन की महत्ती प्रभावना कर रहे हैं । आपश्री की छत्र छाया में साधुमार्गी सघ ने काफी प्रगति की है ।

आपश्री ने अपनी सुयोग्य दीर्घ दृष्टि द्वारा विनयवत-धीर-गमीर एव सयमनिष्ठ प र श्री राममुनिजी के सक्षम कधो पर सघ का जो भार सौंपा है वह बिल्कुल निर्विवाद एव यथायोग्य ही है ।

चतुर्विध सघ के लिए आपका निर्णय अवश्य हितकारी, कल्याणकारी एव श्रद्धास्पद ही रहेगा ।

सयम की साधना एव जिन शासन की प्रभावना में सघ साथ एव सहकार की भावना रखते हैं ।

सुदीर्घकाल पर्यन्त पू आ श्री की मधुर शीतल छत्रछाया में पू युवाचार्य श्री चतुर्विध सघ की सेवा करते रहें, शासन की शोभा में अभिवृद्धि करते रहे । हमारी ये मगलकामनाए सदैव अविचल रहें

कुशलता से साधुमार्गी सघ का सचालन करेंगे

—उपाचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी

(श्रमण सघीय)

स्थानकवासी परम्परा एक विशुद्ध परम्परा है । जिस परम्परा का सिचन हमारे आराध्यदेव महापुरुष सदा करते रहे हैं । सघ समुत्कर्ष हेतु महापुरुषों का अनुदान अपूर्व रहा है । इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ इस बात के साक्ष्य हैं कि हम आचार की उत्कृष्टता म और विचारों की निर्मलता में विश्वास करते रहे हैं । यह जानकर आह्लाद है कि आपश्री (आचार्य श्री नानेश) जागरूकता से प्रयास कर रहे हैं । और आपने अपना उत्तराधिकारी सुयोग्य सन्त प्रवर श्री रामलाल जी म को नियुक्त किया है । आशा है, वे कुशलता से साधुमार्गी सघ का सचालन करेंगे । यदि युवाचार्य श्री सैद्धान्तिक धरातल पर सहयोग चाहेंगे तो श्रमण सघ सदैव सहयोग देने के लिए तत्पर रहेगा ।

संघ सेवा का भार सशक्त कन्धों पर

—उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म, (रत्नवंश)

"दूरदर्शी आचार्य श्री ने अपना भार शास्त्रज्ञ मुनिप्रवर श्री रामलालजी म को सौंपकर अवशिष्ट समय साधना मे लगाने का लिखा, ऐसा विचार आचार्य श्री की प्रशस्त भावना का द्योतक है। आचार्य श्री ने स्वयं आत्मसाक्षी से अनेक गुणवान साधक संतों के होने पर भी मुनिप्रवर श्री को युवाचार्य पद प्रदान किया, यह उनकी गहरी सूझ-बूझ है। आपने समय रहते हुए उचित निर्णय लेकर संघ सेवा का भार सशक्त कंधो पर रखा है।

आपने जो युवाचार्य श्री को संकेत देते हुए फरमाया है कि सैद्धान्तिक धरातल पर संघ ऐक्य के उद्देश्यो के प्रति समर्पित रहे, आपका इस तरह का सन्देश भविष्य मे हमारे परस्पर के सम्बन्धो को दृढ बनायेगा, मेरा तो हमेशा से आत्मीय सद्भाव ही रहा है। आगे भी इसी तरह से सम्बन्ध रखने के भाव हैं।"

श्री रामलालजी म उसी माला के देदीप्यमान माणिक्य हैं

—शा प्र पूज्यपाद श्री सुदर्शनलालजी म सा

आपश्री जी (आचार्य श्री नानेश) इस युग की दिव्य विभूति है, आप ने अपने शासनकाल में वीर प्रभु की चारित्र धारा मे वेग प्रदान किया है, वीर लोकाशाह के धर्म मार्ग की नींव को अधिक सुदृढ किया है, पूज्यपाद श्री हुक्मीचन्दजी म के परिवार की श्री वृद्धि की है। पूज्य श्री जवाहरलालजी म के वंश के मुक्ता रत्न बनकर आपने पूज्य गुरुदेव श्री गणेशीलालजी म के गौरव में चार चांद लगाए हैं। आपने अपनी शिष्य माला को भी संयम, चारित्र, अनुशासन विनय प्रभावना ज्ञानाराधना से सुसज्जित अलंकृत एवं परिमंडित किया है। श्री रामलालजी महाराज उसी माला के देदीप्यमान माणिक्य है। इन्हें आपश्री जी के सान्निध्य का, कृपा का वरदान प्राप्त हुआ, ये इनका सौभाग्य है। आपश्री जी की गहन प्रज्ञा ने इनकी योग्यता को परखा

श्रौर इन्हें सघ का गुरुतर भार प्रदान किया है इसके लिए हम आपके निर्णय पर हृपाभिव्यक्ति करते हैं । तथा श्री राममुनिजी को वर्धापन देते हैं । आपके कुशल-मार्ग दर्शन में इनका व्यक्तित्व और निखरता जाएगा श्रौर ये आपश्री जी की आशाओ के अनुरूप ही सघ का सचालन करेंगे ऐसी मगलकामना करते हैं । जिस प्रकार आपश्री जी के प्रति हमारी श्रद्धा-बनी रही है इसी प्रकार इनसे भी हमारा हार्दिक सबध बना ही रहेगा । युवाचार्य चादर प्रदान समारोह पर हार्दिक शुभकामनाए स्वीकार करें ।

निर्णय उचित है

—प्रवर्तक श्री अम्बालालजी म

—महामन्त्री श्री सौभाग्यमलजी म (श्रमण संघीय)

आचार्य श्री नानालालजी म सा समयज्ञ और दूर दृष्टा हैं, उन्होंने सम्प्रदाय के सदर्भ मे जो निर्णय लिया वह उचित ही है । नव नियुक्त युवाचार्य श्री राममुनिजी स्थानकवासी जैन समाज मे श्रमण सस्कृति की सुरक्षा के साथ समाज मे व्याप्त साम्प्रदायिक वैमनस्य एवं दुराव को समाप्त करने में अपना अमूल्य योगदान देंगे । ऐसी शुभ कामना प्रकट करते हैं ।

शुभ कांक्षा है

—प्रवर्तक श्री रूपमुनिजी 'रजत'

(श्रमण संघीय)

आपने अपने पीछे सघ समाज का संचालन और नेतृत्व करने के लिये श्री राममुनिजी म को योग्य समझकर युवाचार्य के रूप में चयन किया । अब युवाचार्य श्री अपनी योग्यता और स्नेह शीलता का सभी के साथ सम्यक् रूप मे व्यवहारता में उतरे यही शुभकांक्षा है ।

शुभ कामना

—प्रवर्तक श्री महेन्द्र मुनि जी 'कमल'
(श्रमण संघीय)

आचार्य श्री नानालालजी म पुरानी पीढ़ी के अनुभव समृद्ध संत रत्न हैं। उन्होने अपने उत्तराधिकारी के रूप में पं श्री राममुनि जी को घोषित किए तो निश्चित रूप से उन्होने उनका परीक्षण किया ही है। सैद्धांतिक धरातल पर हमारा आत्मीय सहयोग जब भी चाहेंगे, ले सकेंगे। श्रमण संघ, वैसे भी हमेशा सभी का उदारता पूर्वक सहयोगी रहा है।

卐

विरल मेधा शक्ति की पहचान

—प्रवर्तक श्री रमेशमुनिजी म
(श्रमण संघीय)

आप आचार्य श्री ने अपना अवशिष्ट व अनमोल समय विशेष रूप से अपने आत्म श्रेय में व्यतीत करने की भावना से उत्प्रेरित होकर साधुमार्गीय स्थानकवासी जैन श्रमण परम्परा के भविष्य की सुदृढ़ता हेतु अपने उत्तराधिकारी शास्त्रज्ञ तरूण तपस्वी श्री रामलाल म को युवाचार्य के रूप में निर्वाचित किया, यह आपश्री की विरल मेधा शक्ति की पहिचान है। सूझबूझ है।

जैसे आपश्री ने संघ संगठन योजना का सदैव प्रयास किया है वैसे ही नवोदित युवाचार्य प्रवर श्री रामलालजी म भी पारस्परिक सौहार्दता को गति देंगे ताकि—भविष्य में भी सैद्धान्तिक धरातल पर सहकार सद्भाव संघ समाज हित के सुहाने वृक्ष अंकुरित ही नहीं पुष्पित पल्लवित फलवित होंगे।

इसी शुभाशा के साथ। पुनश्च वन्दना विदित करें।

महावीर के शासन मे चार चाद लगाये

—मेवाड सिहनी साध्वी श्री यश कवर जी म
(श्रमण सघीय)

"भारतीय सस्कृति मे ऋषि-मुनियो एव सतो का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । श्रमण वृन्द की अनुपम सयम-साधना से, यशस्वी क्रिया-कलापो से, सदैव से गौरवान्वित रही है । समय समय पर महामता युग पुरुषो ने जन्म लेकर इस धराधाम को धन्य बनाया, अध्यात्म जागरण के मगलमय सदेशवाहकों ने समूचे जीवन को नयी दृष्टि प्रदान की, मार्गदर्शन दिया है । मानव की सुप्त चेतना जागृत कर नया आलोक प्रदान किया, इसी कडी में यशस्वी व्यक्तित्व के धनी, आचार्य जवाहरलालजी म सा एव निर्मल सयमनिष्ठ आचार्य श्री गणेशलाल जी म हुए । जिनकी उदात्त भावनाओ से अनेक मगल कार्य सम्पादित हुए । उन्हीं के पद पर आप (आचार्य श्री नानेश) जैसे क्रान्त द्रष्टा प्रज्ञापुरुष को प्रतिष्ठित किया गया । हार्दिक प्रसन्नता है कि आपश्री सुयोग्य सफल अनुशास्ता के रूप मे सघ, समाज के हित साधन में सदैव तत्पर रहे हैं । आचार की पवित्रता एव विचारो की निर्मलता से आपने साधुमार्गी संघ की नींव को सशक्त बनाया । सघ ऐक्य के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किये । अनेक भव्यात्माओं को मार्गदर्शन दिया । आपश्री सघ का सफल नियोजन कर रहे हैं । जीवन को विशिष्ट सयम साधना में सलग्न करने के लिए आपश्री ने अपने उत्तराधिकारी के रूप मे शास्त्रज्ञ प्रज्ञा प्रदीप श्री राममुनिजी म का चयन किया है । हार्दिक प्रसन्नता ! आप अध्यात्म जोहरी हैं, आपने उनको परखा है और युवाचार्य की पदवी से उन्हें अलंकृत किया है । वे गुरुतर भार का सम्यक् प्रकार से निवहन करे । तथा उनके पुनीत नेतृत्व में चतुर्विध सघ सुदृढ़ बने, महावीर के शासन में चार चांद लगाये । निर्मल तेजस्वी सयम-साधना से जन-जन को मार्ग दर्शन मिलता रहे, सदैव कृपा दृष्टि बनी रहे, यही हार्दिक मनोभावना है ।"

देशाणे रो टाबरियो

—शासन प्रभावक श्री धर्मेश मुनिजी म

तर्ज—नखरालो देवरियो

देशाणे रो टाबरियो, साधना रे शिखर चढ़ग्यो ।
शिखर चढ़ग्यो, भावी शासक वणग्यो ।।टेर।।
नेमीचन्दजी रो लाडलो, ओ गवरां बाई रो जायें ।
भूरा कुल रो देखो जग मे, नाम हुयो सवायो ।।
जिन शासन क्षितिज मे, आशा रो दीप जलग्यो ।।१।।
सयम लेकर गुरु चरणा मे, तन मन अपण कीनो ।
सेवा करके ज्ञान सौरभ सू, जीवन सुरभित कीनो ।।
गुरुवर री कसौटी पर, खरो श्रीराम उतरग्यो ।।२।।
बीकाणे रे राज प्रागण मे, महोत्सव हुयो सवायो ।
गुरुवर नाना निज चादर दे, युवाचाय वणायो ।।
चतुर्विध सघ सारो, हप विभोर वणग्यो ।।३।।
गुण गौरव गा आज म्हे तो, मन मे आनंद पावा ।
राम राज्य आदश वरो आ, "धम" भावना भावा ।।
जैनागम सद्ज्ञान सू, हृदय घट पूरो भरग्यो ।।४।।

श्री युवाचार्य सप्तकम्

कविवर्य मुनि श्री वीरेन्द्र कुमारजी

छन्द—बसततिलका

भूराकुलाब्जपरिभूषितरूपकाय ।
नेमीपितु परमदीप्तिविधायकाय ।।
साम्यप्रचारकरणेऽतुलतत्पराय ।
सन्नाम राम मुनये च नमो नमस्ते ।।१
श्री हुक्मगच्छपतिरूप सुशोभिताय ।
सम्यक्त्वभाव परिदर्शनबोधकाय ।।
दीप्ति प्रधानगुणगौरव शक्तिदाय ।
सन्नामराम मुनये च नमो नमस्ते ।।२

शोभायमान नवपट्टविशिष्टकाय ।
नानेशपादकमलकज विकोसकाय ।।
नैमल्य भाव धरणे धृतिसयमाय ।
सन्नामराम मुनये च नमो नमस्ते ।।३
यत्गीयते जिनमरादिकभक्ति गीतम् ।
सपीयते मधुर सौम्यरसादिकान्यम्
पापठ्यते निगमतत्त्वसुधादिकल्यम्
सन्नामराममुनये च नमो नमस्ते ।।४
श्रामण्य धर्म धरणे च विवुद्धकाय
सम्यकसुधाप्रचय जीवनदायकाय
आप्राणिमञ्जुल सुधर्म विधानकाय
सन्नामराममुनये च नमो नमस्ते ।।५

छन्द—शिखरिणी

सततशान्तिविधानविधायकम्
परमपूततपोधन धायकम्
विमलशील सुरूपनिचायकम्
सुखद राम मुनि च नमामि मे ।।६
दुरितभाव समूह विहायकम्
चरम तीर्थ जिनेश सुगायकम्
सरल सौम्य गुणादिनिनादकम्
सुखद राम मुनि च नमामि मे ।।७

ΔΔ

चाग सरसब्ज सघ आ अपूरव करे

✵ वि मुनि श्री वीरेन्द्रकुमारजी म

तर्ज—छोडकर सारी दुनियां...... ..
हो युवाचार्य पद पै सुशोभित महा—
भव्य भक्ति अनुपम जगाते दिये ।।
जिन वचन की बहाना है गंगा विमल
हो प्रमुदित आमीरस छक् २ पिये ।।

महिमा मण्डित प्रवर पद उजाला करे ।
करके पावन सभी को उद्भासित करे
खुशबू फले चतुर्दिक् अनेकान्त की
बाग सरसब्ज सचे या अपूरव करे
चांदनी सी है छिटके धर्म भावना
सर्व हित में निरत साधकों के लिये ॥१॥
आपकी देशना कायकारी बने,
कामना ये हमारी प्रभु 'वीर' से,
गौरवान्वित बनें संघ पाकर तुम्हें—
नित सफलता मिले गुरु चरण सेवा से,
हो तपश प्रेत साधक तपस्वी प्रखर
हो प्रशम भाव मन में शमन के लिये ॥२॥

ये उच्च क्रिया के धारी

—कविरत्न श्री गौतम मुनिजी म

[तज : जब तुम्ही चले परदेश]
युवाचाय श्री गुणवान, बड़े पुण्यवान ।
बाल ब्रह्मचारी, ये उच्च क्रिया के धारी ॥टेर॥

- मा गवरा के ये जाये, पिता नेमीचन्दजी हर्षाये ।
  धन देशनोक है, जन्म भूमि श्रेयकारी ॥ये उच्च..
- पढ जैन जवाहर वाणी को अनाथी मुनि की कहानी को।
  फिर उतर गये, वैराग्य रंग में भारी ॥ये उच्च
- आगम का गहरा ज्ञान किया, गुरु आज्ञा का सम्मान किया ।
  ज्योतिष शास्त्र के, ज्ञाता हैं ये भारी ॥ये उच्च....
- दशन का चिंतन नित करते, प्रदर्शन से दूरा रहते ।
  ये अल्पभाषी है, इन्हे सादगी प्यारी ॥ये उच्च
- भक्ति के सुमन चढ़ाते हैं, गौरव गरिमा हम गाते हैं ।
  श्री राम चरण "जी एम" सदा सुखकारी ॥ये उच्च

卐

ओढाई देखो धवल चद्‌दरिया

—म व्याख्यानी श्री कान्तिमुनिजी म

तर्ज—गोरी है कलईयां—

गाये राम की महिमा, ओढाई देखो धवल चद्दरियां
नाना गुरु की मेहरबानियां ॥ध्रुव॥
समता का निर्झर चहु ओर बहता,
जगल में मगल का वाद्य है बजता।
ठाठ ये आला, लगाये देखो शृंगार लाल,
अन्तर दृष्टा की नजरियों ॥१॥
छोटी लकीर को तस्वीर बनाई।
गुणो से सजा के पूजन तदबीर बनाई,
हो दीप्त दिवाकर, बने भव सोम्य सुधाकर।
खिल रही जन मन कलियां ॥२॥
गरिमा बढाये सघ की यही भावना है,
बढे भव्य सुषमा गुरु की यही कामना है।
'नानेश' के पद पर चाद से बढे शिखर पर,
फैले 'कान्ति' तेरी गाम नगरिया ॥३॥

राम तुम्हारो आसरो

राम तुम्हारो आसरो, राम तुम्हारो ज्ञान।
राम तुम्हारो भजन मुख, राम तुम्हारो ध्यान ॥
राम तुम्हारो ध्यान, राम तुम सिर पर राजो।
आगे पीछे राम, दशो दिश रामहि गाजो ॥
रामचरण इक राम बिन, मन माने नहिं आन।
राम तुम्हारो आसरो, राम तुम्हारो ज्ञान ॥

विश्व क्षितिज पर चमकता रहे

—विदुषी साध्वी श्री चांदकवरजी

सघ ही मुझे पाकर, मेरे भाग्य अभिराम है
तेरे ही चरणों मे, मेरे शत-शत प्रणाम है ॥

आपकी कृपा और आशीष,
हमे सदा मिलती रहे,
आपके कुशल नेतृत्व में,
जिन शासन निखरता रहे ॥
अपने उज्ज्वल गौरव व वृद्धि समृद्धि द्वारा ।
विश्व क्षितिज पर चमकता रहे ॥
आपकी आज्ञा पालन करते हुए हम
आत्म निरीक्षण करते हुए गन्तव्य तक पहुचने
मे सफल होवे ।
आदर्श भाव की धार
प्रतिपल बढती रहे,
चरण मझार
हो गुण रूप सभी प्राणिगण
पा तेरा अनुपम मनुहार ॥
राम राम सम हो बने
लिये सौम्य सस्कार
तव पद मे विकसे सदा
ले आदर्श गुणाधिक प्यार ।

राम राज्य स्वीकार हैं ।

—विदुषी साध्वी श्री प्रेमलताजी म.

तर्ज —खडी नीम के नीचे""

चाहते हो गर भव्यो तुम सब जीवन का उत्थान रे ।
समर्पणा हो एक आण पे प्राण हमारा प्राण रे ॥टेर॥
छोड दिया जब सब कुछ शरणे चिन्तन का अवकाश कहाँ ।
बढे निरन्तर चरण हमारे होवेंगे आदेश जहाँ ॥
शुद्ध समकित का यही मात्र निशान रे ॥१॥
वीर प्रभु के शासन के आचार्य देव ही अधिकारी ।
पूर्वाचार्यों से भी जिनको प्राप्त हुई प्रज्ञा भारी ॥

स्वेच्छाचारी को न मिलता इस शासन में स्थान रे ।।२।।
ध्यान समीक्षण देख देख भी दर्शाते अपनी भक्ति ।
निवेदना भी क्या करेगी उनकी अनूठी है शक्ति ।।
हम तो मात्र हैं उनकी किरणें, वे है बुद्धि निधान रे ।।३।।
दूरी है केवल तन की मन हनुमत सम चरणार है ।
अविचाय है नानेश आशा राम राज्य स्वीकार है ।।
"इन्द्र" कहे सच्ची समपणा गुरुवर का सम्मान रे ।।४।।

दीप सम जलो तुम

—महासती श्री निरजना श्री जी म सा

तर्ज—धीरे धीरे प्यार को बढ़ाना है—

युवाचार्य श्री के गुणगाना है, चरणो झुक जाना है ।
नानेश पट्टधर श्री राम गु जाना है, चरणों मे झुक जाना है ।।टेर।।
प्रभुवीर की कीर्ति, हुक्कम संघ की दीप्ति
तुम नानेश चरणो का सिंचित कमल
शासन की ये शक्ति अनुशासन की हो कृति
साधना की हो प्रखर ज्योतिमय किरणऽऽऽऽऽऽ
पाये पाये गुरुवर का खजाना है ।।१।। चरणो में—
हर जुबा पे भक्ति हो, आस्था में अनुरक्ति हो
हो समपणा का शुचितन विमल चरण
दीप सम जलो तुम, सूर्य सम दीपो तुम
निर्वाण तारयाए की ओर बढ़े चरणऽऽऽऽऽऽ
जीवन आदर्शों पे चढाना है ।।२।। चरणों में—
खुशियां है छाई, उमंगे भर आई
चमका चमका भूरा वश का ये नूर
धन्य है गवरा जननी
देशाणा की वो धरती माघ शुक्ला बारस की दीक्षा है मशहूरऽऽऽ
'इन्द्र' कहे श्री सघ को सुहाना है ।।३।। चरणो मे

मुख मण्डल रवि सम चमके है

—वि साध्वी मंजुबालाजी म. सा

तर्ज —दिल दिवाना ।

जूनागढ़ मे युवाचार्य जो पद पाया
जय जयकार करके सब जन हर्षाया ।।टेर।।

देशनोक मे जन्म आपका, गवरा कुल उजियारा
यौवनवय में आते ही, अपना दूर किया अन्धियारा ।
संयम सौरभ से, मानस है सरसाया ।।१।।

त्याग तपस्या करने की ज्योति दिल में है छाई ।
मुख मंडल रवि सम चमके है, आभा भी सुखदाई ।
दिव्य ज्योति से चमक रही है ये काया ।।२।।

हुक्म संघ के अष्टम पट्टधर ने कैसा रत्न खोजा
मञ्जुमानस से इस जग मे, सौम्य बीज को बोजा ।
गुरु चरणो मे अपना जीवन तपाया ।।३।।

चारों तीरथ तव शरणे रहेंगे ।

विदुषी साध्वी रंजना श्री जी म सा.

तर्ज—तुम्ही हो माता पिता

हुक्म शासन की शान बढ़ाओ
युवाचार्य संघ खूब दिपाओ ।।टेर।।

सुरभित बगिया की सौरभ पाकर ।
नानेश आज्ञा से जीवन सजाकर ।।
मुनि प्रवर पर मिल जय गाओ ।।
युवाचार्य ""

दिशाएं अपनी दशा बदल दे ।
सर्वत्र निर्मल कीरत फैला दे ।।
श्रम शील पीढी को नव मग दिखाओ ।।
युवाचार्य "

चारों तीरथ तव शरणे रहेंगे ।
एक ही लक्ष्य में चरण बढ़ेंगे ।।

श्री साधुमार्गी संघ सरसाओ ।।
युवाचार्य ......
स्वर्णिम छटा दिव्य होवेगी "रजन" ।
होवे तव गुण से कम प्रभंजन ।।
'इन्द्र' श्री सघ को सरस बनाओ ।।
युवाचार्य

★

छा जाओ इस अवनितल पर

—विदुषी साध्वी श्री प्रवीणा श्री जी

चढते रहो बढते रहो तुम, नानेश के इशारो पर ।
दीपक से मशाल बने तुम, नानेश के अरमानों पर ।।
यही हार्दिक भावना मेरी, छाजाओ
इस अवनितल पर, हर जीव की धडकन बन कर ।।

शिव साधक अनुपम पा, मन मोद मनाते हैं

—वि साध्वी पकज श्री जी

तज —ए मेरे दिले

युवाचाय प्रवर गुणतम
तव कीतन गाते हैं
श्रद्धा के भावो को, चरणों मे चढ़ाते हैं ।।टेर।।
चोदस के शुभ दिन पर,
उतरे गुणकारी है
गवरा मां के दीपक
शिवधन शुभकारी है
भूरा कुल के नदन, परिजन मन भाते हैं ।।१।।
मति दशन तप निधि को
पूरण अपनाया है ।
गुरुवर की सेवा से
चरितामृत पाया है

शिव साधक अनुपम पा मन मोद मनाते है
आदश गुणो की हम—
माला भी सजाये है
सती "चाद" चरण सेवी, जन गुण अपनाये हैं ॥३॥

आदर्श गुणों की आभा

वि साध्वी गुण सुन्दरी जी

हुक्म सघ के अधिनायक
की नित जय जय है
द्वन्द्व भाव परिहारक की—
करते विनय है ॥
धन्य भाग्य पाये तुमसे—
हम युवराज सलौने
तेरे सद्‌भावो से सद्‌गुण—
बीज हैं बोने ॥
सदा सदा जय ध्वजा रहे
लहराती सुखकर
"आदर्श–गुणो" की आभा से
समुदित हो दिनकर ॥
परम पूज्य गुण कीर्तन
हम क्या कर सकते हैं ?
राम नाम से दीप
अपूरव जग सकते हैं ॥

सुस्वागत हम करते तुम्हारा

वि साध्वी श्री मधुबाला जी

तर्ज —इन्हीं लोगों ने
देवा बधाई—२ मिल सारा
युवाचार्य जी प्यारा (म्हारा)

(१) 'हुक्म' गच्छ का भाग्य सवाया ।
'नाना' गुरु ने नव दीप जलाया ।।
लाल से लाल यढ पाया

(२) मा 'गवरा' का प्राणो से प्यारा ।
पितु 'नेमी' का राज दुलारा ।।
'राम रतन हितकारा

(३) 'देशाणे' का नाम दिपाया ।
'बीकाणे' मे पदवी पाया ।।
'भूरा' वंश उजियारा

(४) सुस्वागत हम करते तुम्हारा ।
जय विजय का गू जे नारा ।।
जब तक 'चांद' सितारा

यशगान गुजित हो दिग् दिगन्त में

विदुषी साध्वी श्री सुयमणि

वन्दन हो अभिनन्दन हो
चमको महको हुक्म गगन ।
नानेश सिद्धान्त की अनुपम ज्योति
फलाओ पूर्ण हो के मगन ।।
निखार परख गुरु प्रभा ने
प्रदान किया श्री संघ रत्न ।
ज्ञान क्रिया अध्यात्म कृपा पा
महकाया अन्तर जीवन ।।
चमके ऐसे महा मनीषो
हम पायेनित मक्खन ।
नानेश गरिमा संघ महिमा
प्रसराओ श्रमण संस्कृति चमन ।।
यश गान गु जित हो दिग् दिगन्त मे
पाये हम अनुपम किरण ।

अध्यात्म शक्ति समता रस पी
करले "सूर्य" ये कर्म शमन ।।
नवजीवन के नव मोड पर
अभिसिंचित हो अनुपम सुमन ।
अध्यात्म सौरभ से सुरभित हो हम
मुक्ति पथ को करें वरण ।।

आई सघ में सुरगी बहार

△ विदुषी साध्वी श्री गरिमा श्री जी

तज—पिया का घर प्यारा
छाई दिल में है खुशिया अपार
प्रभु की आशा प्यारी लगी
आई संघ मे-२ सुरगी बहार-गुरु
धन्य घडी धन्य भाग्य सवाया ।
शासन पति का शुभ सदेशा पाया ।।
मिला सघ-२ को भव्य उपहार
एक शासक एक रूपता का शासन ।
एक आज्ञा शिक्षा दीक्षाए विचरण ।।
होवे एक-२ अनुशासन से प्यार —
बढे कदम हम सबके निष्ठा से ।
लेवे शपथ यह हार्दिकता से ।।
बाजे समता २ सगठन की सितार ..
हु शि उ चौ श्री जग नाना ।
'राम' चमकना भानु समाना
चमको 'चाद' २ से युग-२ हजार ....

श्रद्धा सुमन चढाए

△ साध्वी श्री स्वर्ण ज्योति जी म सा

तर्ज —जो आनन्द मगल चावो रे ... ...

प्रकटे भू पर सुखकारी रे गवरा मा के नन्द (टेर)
भूरा वश दुलारे नेमी कुल है तारे ।
जाये बार-२ वलिहारी रे
है फाल्गुन वद दिन प्यारा, छाया जग में दिव्य उजारा
दे जो कर्म दलिक परिहारी रे
है सघ के दीप निराले, भक्तों के तारण हारे ।
जो दूर करे अधियारी रे ....
शुभ युवाचार्य पद पाए, श्रद्धा सुमन चढ़ाये ।
दो सरदार को पार उतारी रे ...

—●—

गवरा मां के नयन सितारे नेमी कुल के चन्दन है ।
युवाचाय श्री के चरणों में कोटि-कोटि अभिनन्दन है ।

राम सुखकार द्वार आई—

साध्वी श्री विपुल विजेता

आज अभिनव अर्चना थी,
मधुरतम यह भेंट लाई ।
चारू चरणो में समाश्रय
प्राप्त हो मनुहार लाई ।
राम सुखकार द्वार आई
हो सदा माधुर्यमय,
चल चादनी सी स्वच्छता भी ।
और उसमें कुमुद वनचर,
कान्त नीरजनामयी भी ।
शुच मनुत्तम शरण की,

सौरभ सदा प्रति द्वार छाई ।
राम सुखकार द्वार आई ..
दिवस के आरम्भ औ—
अवसान में भी विहँसती सी ।
दीप्तिमत सुदीप्त छवि सी,
क्या कोई कल विलसती सी ।
एक शोभावन्त प्रतिमा,
मम हृदय मे ही समाई ।
राम सुखकार द्वार आई......

मगल दिवस पर मगल कामना

विद्या साध्वी श्री नूतन श्रीजी

जब तक गगा पतित पावनी ।
सुमनो में सुगन्ध मतवाली ।।
पथ आलोकित रहे आपका ।
यह शुभकामना है हमारी ।।१।।
चरणों में तेरे करू समर्पण ।
सासें इस जीवन की सारी ।।
श्रद्धा भक्ति में रमकर के ।
बन जाऊ में सबसे न्यारी ।।२।।
नाना महर से नाना के सम युगों २ तक चमको तुम ।
दिव्य साधना श्रेष्ठ सम्पदा यश-सौरभ से महको तुम ।।
काम्य कामना सदा हमारी चरण कमल मे अर्पित है ।
पाए लक्ष्य जो सोचा हमने दो आशीष हम सबको तुम ।३।

हर पल-हर क्षण कृपा बनी रहे देव

△ वि साध्वी श्री समर्पिता श्रीजी

मेरे नये जीवन मे
नये सस्कार भरते रहे।

हर पल हर क्षण
सहयोग आपका मिलता रहे ।।
निर्मल निश्चल मुनि प्रवर
संघ के दिव्य प्रदीप ।
तुम्म संघ मे छा गये
ज्यू यमुना पर नीप ।।
प्रतिपल समर्पित हम हैं ।
यही भावना देव
अहर्निश गुण रूप से
बढे सतत स्वयमेव ।।

"युवाचार्य" गुरुवर के गुण गीत गाते

—वि साध्वी श्री सकिता श्रीजी म सा

तज—बहुत प्यार करते हैं—
संघ गणनायक को करते नमन
खिला दो हमारा उजड़ा चमन ।।टेर।।
गवरा के आंगन में जीवन संवारा ।
नेमी जनक के हो राज दुलारा ।
तेरे सौम्य पथ पे ही पावन गमन ।।१।।
दीप्ति उजागर है कीनी गुणकर ।
सयम की सुषमा को देते प्रभाकर ।
करना हमें भक्ति धन से रमण ।।२।।
सेवाधर्म धन से जीवन सजाया ।
अप्रमत भावों का दीप जगाया ।
अद्भुत गुणों के हो धारक सघन ।।३।।
युवाचार्य गुरुवर के गुण गीत गाते ।
श्रद्धा के सुमनों को हृदय से चढ़ाते ।
दृश्य देख अनुपम मन होता मगन ।।४।।
नूतन आयाम समता का अब दिखाना ।

सरदार भवजल से पार लगाना ।
विजय ध्वजा लहरे भव्य गगन ॥५॥

□
६□

नवीन भानु

● वि साध्वी जागृति श्री जी

नवीन भानु,
प्रभात पर
नव जागृति छाई
मेरी हृदय से दिव्य २ बधाई

□□
▽

तन मन सर्व समर्पण करती

—वि साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी

मंगल कामना की बेला मे,
तन मन सव समर्पण करती ।
शतायु हो युवराज हमारे,
ऐसे भाव सुमन धरती ॥
महागणि नाना की छवि में,
शत शत रंग हमे मिलते हैं ।
नाना-राम की युगल शरण में,
साधना पुष्प सदा खिलते हैं ॥
है अन्तर मन की अरमान प्रभो !
कैसी भी हो विकट घडी ।
वरद् हस्त अगर सिर पर रहे,
तो मंजिल एकदम निकट पडी ॥

जयपुर

विधायक, बीकानेर शहर

हार्दिक शुभकामना

आशा है परम श्रद्धेय युवाचार्यजी के नेतृत्व मे अखिल भारत-वर्षीय साधुमार्गी जैन संघ उत्तरोतर प्रगति के पथ पर पयारूढ़ होगा ।

विशेषांक के सफल प्रकाशन की मंगल कामना सहित हार्दिक शुभकामनाए स्वीकार करियेगा ।

३ मई, ९२

बी डी कल्ला

जयपुर

उपाध्यक्ष,
राज विधान सभा

अ शा पत्र सं ३६४७

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा द्वारा श्री रामलाल जी म सा को अपना उत्तराधिकारी घोषित करने पर "श्रमणोपासक" का "युवाचाय विशेषांक" प्रकाशित किया जा रहा है ।

जैन आचाय गुरुओं की एक विशिष्ट परम्परा रही है और आत्म कल्याण के साथ-साथ समाज एवं जन-जन के हिताय उनके द्वारा किए गए कार्यों से ही जैनधम/सम्प्रदाय का देश में अपना विशिष्ट स्थान है । युवाचार्य श्रीजी महाराज भी अपने गुरु के अनुरूप ही राष्ट्र, धर्म और समाज की उन्नति में योगदान करते रहेंगे ।

विशेषाक के सफल प्रकाशन की कामना ।

अप्रैल ३०, १९९२

हीरासिंह चौहान

जयपुर

राज्य मत्री,
विधि एव न्याय, गृह, वित्त,
आबकारी एव करारोपण विभाग

अ शा पत्र स ७२०/रा म /न्याय/९२

परम श्रद्धेय चारित्र चक्रवर्ती, धम दिवाकर आचाय श्री नानालाल जी म सा द्वारा ओजस्वी, तेजस्वी, मनस्वी सत रत्न श्री रामलाल जी महाराज सा को युवाचाय के रूप मे मनोनीत करने बाबत पत्र हेतु बहुत २ धन्यवाद । आप बहुत भाग्यशाली हैं कि आपको महान् तपस्वी सन्तो का समागम प्राप्त हो रहा है ।

कृपया पूज्य आचार्य श्री एव युवाचाय म सा के चरणो में मेरी वन्दना अर्ज करें ।

२७ अप्रल १९९२ शातिलाल चपलोत

निर्णय पर नाज है

जैसा आचाय श्रीजी हैं वैसे ही मुझे युवाचाय श्रीजी प्रतीत होते हैं । आचाय श्री की तरह युवाचाय श्रीजी मे भी समता विशेष तया प्रतीत होती है । लगता यह समता सरिता एक दिन सागर का रूप ले लेगी । युवाचाय श्री की मोहनी मूरत की छटा कुछ अलग ही है।

युवाचार्य श्री का भविष्य काफी उज्ज्वल है । क्योंकि आचाय श्री का चन्द समय का सहवास भी चमत्कारिक साबित होता है तो अनवरत सहवास करने वाले युवाचाय श्री का जीवन चमत्कारी क्यों नहीं होगा ? आचाय श्री के निणय पर हमे काफी नाज है ।

—हुक्मीचन्द मूथा

अध्यक्ष—
अ भा राष्ट्रीय एकता निर्माण कमेटी
तमिलनाडु प्रदेश, कोयम्बटूर

हार्दिक बधाई–संदेश

श्री राममुनिजी को युवाचाय पद पर आसीन करने के उप लक्ष्य मे मेरी ओर से हार्दिक बधाई स्वीकार करें। आपके निर्देशन व आपकी देखरेख मे संघ उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर हो, यह प्रभु से प्रार्थना है।

एक बार पुन आप सबको शत शत प्रणाम।

बीकानेर — डॉ हेमचन्द्र सक्सेना
दिनाक ४ मार्च ९२ आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
स पटेल आयुर्विज्ञान महाविद्यालय
बीकानेर

सही समय पर सही चुनाव

सही समय पर सही चुनाव कर आपश्री ने संघ को चिन्ता मुक्त किया है व भावी आचार्य को अपने हाथों प्रशिक्षित कर तैयार करने का जो निर्णय लिया है वह सर्वथा संघ हित मे है। सभी इस बात से अत्यधिक प्रसन्न हैं।

हमे युवाचार्य श्री से बहुत आशायें हैं। वे आपश्री के नेतृत्व मे संघ व्यवस्था में निष्णात बन कर भविष्य मे संघ को बेजोड़ नेतृत्व प्रदान करेंगे व मित्ति मे सव्व भूएसु, के घोष को ध्यान में रखकर जैन समाज को जोड़ने की प्रक्रिया मे प्रवृत्त होंगे ऐसी अपेक्षा है।

श्रमणोपासक युवाचाय विशेषांक प्रकाशित करने जा रहा है एक शांत और समर्पित व्यक्तित्व जिसे भविष्य मे संघ का नायक बनना है, उनके सम्बन्ध मे लोगो को विस्तृत जानकारी हो। यह अपेक्षित भी है। युवाचार्य शांतमूर्ति, सेवाभावी व समर्पित व्यक्तित्व के धनी है।

मुझे पूर्ण आशा है कि शासन की बागडोर उनके हाथों सुर क्षित रहेगी।

—जसराज चोपड़ा
राजस्थान हाई कोर्ट, जोधपुर

ध्रुवतारे सी पृथक् पहचान

'बीकानेर के इतिहास मे युवाचाय-घोषणा एव चादर प्रदान दिवस स्वर्णाक्षरो मे लिखा जायगा। भ महावीर के ८२ वें पाट को सुशोभित करने वाले युवाचाय श्री जी श्रमण सस्कृति की सुरक्षा हेतु एक कदम आगे ही रहेंगे। विश्वास है, इनका निर्लिप्त जीवन शासन की सेवा एव प्रभावना दिन दूनी रात चौगुनी करते हुए उत्तरदायित्व को भलीभांति निभायगा।

हमारे परिवार की मगलकामना है कि आप ध्रुव तारे की तरह अपनी अलग पहचान बनाएं।

—डॉ निर्मल जैन
एम एस (अस्थि)

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
डिपाटमेन्ट ऑफ आर्थो—सजरी
एस एन मेडिकल कॉलेज एव
महात्मा गांधी अस्पताल, जोधपुर

बीकानेर धर्मनगरी बना

आचाय श्री ने बीकानेर मे ऐतिहासिक कार्य कर इसे पावन ही नहीं बनाया, धमनगरी बना दिया है। युवाचाय श्री पूर्वाचायों की ज्ञान लब्धि आपश्री से प्राप्त करेंगे ही तथा अपनी महत्वपूण भूमिका से भ महावीर के शासन में नक्षत्र की भांति चमकते रहेंगे। गांधी परिवार अपनी शुभ कामनाए अर्पित करते हुए हष की अनुभूति कर रहा है।

—डॉ हरि कृष्ण गांधी

कनिष्ठ विशेषज्ञ मेडिसिन
सेटेलाइट अस्पताल, बीकानेर

इस चयन से संघ कर्मशील होगा

मुनि श्री रामलालजी म सा को युवाचार्य पद पर विभूषित करने पर आचार्य श्री जी एवं संघ को कोटिश साधुवाद एवं अभिनन्दन ज्ञात हो । इस चयन से संघ सुदृढ़ होकर के कर्मशील होगा, ऐसी आशा है ।

प्राणाचार्य, आयुर्वेदाचार्य आयुर्वेदरत्न —वैद्य ओंकारलाल ज
साहित्य रत्न एवं कृषि रत्न मण्डफिया (चित्तौड़गढ़

सहस्त्र शुभ कामना

श्रद्धेय श्री राममुनिजी म सा को युवाचार्य घोषित किया यह परम प्रसन्नता की बात है । आशा करता हूं युवाचार्य श्री के कुशल नेतृत्व में चतुर्विध संघ निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा ।

युवाचार्य श्री को सहस्त्र शुभ कामना,
संघ के उत्तरोत्तर प्रगति की भावना ॥

गंगापुर (भीलवाड़ा) —डॉ बाबूलाल संघवी
एम बी बी एस

संसद सदस्य, नई दिल्ली

संदेश

युवाचार्य पदोत्सव मंगलमय व सफल हो । यही मेरी शुभ कामना है ।

धन्यवाद !

—गुमानमल लोढ़ा

जगत को सही जीवन जीने की प्रेरणा दे

युवाचाय श्री रामलालजी म अत्यत सरल एवं सादगी प्रिय सन्त रत्न हैं। उन्होने गुरु सेवा कर अपने जीवन को काफी ऊचा उठाया है।

गुरु की कृपा से उन्हे महत्त्वपूण पद 'युवाचाय' का जो मिला है आशा करता हू कि वे इस पद के अनुरूप काय करते हुए भगवान महावीर के सिद्धान्तो का प्रचार प्रसार करेंगे एव जगत को सही जीवन जीने की प्रेरणा देंगे।

मेरी एव मेहता परिवार की बधाई। शत शत वन्दन।

जयपुर —डॉ मानक मेहता
अस्थि रोग विशेषज्ञ

卐

मानव समाज को प्रकाश प्रदान करे

मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा को जैन शासन के सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित करके आचाय श्री नानेश ने योग्य काय किया है। मुनिजी वस्तुत इस पद के अधिकारी थे।

मुनिजी का जीवन त्याग तप से ओतप्रोत है। अपने ज्ञान, अनुभव एव आत्म चिन्तन से वे मानव समाज को प्रकाश प्रदान करें एव अपने जीवन को समुज्जवल बनाए।

अनन्त अनन्त शुभकामनाए वन्दन।

बीकानेर —डॉ जी सी जैन
पी बी एम हॉस्पीटल, आई स्पेशलिस्ट

धर्म एव परम्परा को अक्षुण्ण रखने हेतु चयन योग्य हुआ

जैनाचाय पूज्य प्रवर श्री नानालालजी म इस युग के महान सत हैं। जैन धम के मूल स्वरूप को सुरक्षित रखने हेतु वे सदा प्रयत्नशील रहते हैं। सतत् साधना में लीन रहना एव अपने शिष्य समुदाय को साधना में गतिशील बनाए रखना आप अपना परम कत्तव्य समझते हैं।

मुझे आचाय श्री की सन्निधि का सेवा का बहुत लाभ मिला है। विशाल शिष्य समुदाय से भी गहरा परिचय हुआ है। इस आधार पर मैं यह कह सकता हू कि आचार्य श्री ने धर्म एव अपनी परम्परा को अक्षुण्ण रखने हेतु श्रद्धेय राममुनि का उत्तराधिकारी के रूप में चयन सवथा योग्य किया है। योग्य चयन हेतु आचाय श्री को वन्दन एवं उन्नत जीवन की मगल-कामना के साथ युवाचायजी का अभिनन्दन।

एम बी बी एस —डॉ किशनलाल जैन
एस एम ओ, वरिष्ठ चिकित्साधिकारी,
प्रभारी रा चिकित्सालय, गगाशहर (बीकानेर)

परम श्रद्धेय आचाय श्री नानालालजी महाराज के चिकित्सा प्रसग में १० जनवरी, १९९२ को श्री बालाजी में मुनि श्री रामलाल जी के दशन हुए।

आचाय श्री का नोखा प्रवास स्वास्थ्य के कारण अपेक्षा से अधिक रहा है, उसी दौरान मुनिश्री से बराबर सम्पर्क रहा। आचार्य श्री स्वास्थ्य सुधार होते ही बीकानेर की तरफ विहार करने को तत्पर हुए परन्तु पैदल विहार सभव नहीं लगा। जब यह बात मुनिश्री को बताई तो उत्साहित होकर बोले—बो चिन्ता नहीं करें, हम गुरुदेव को झोली में सानन्द विहार करा सकेंगे।

मुनिश्री के विनयी, सेवाभावी, सघ एव सघपति के प्रति निष्ठा एवं समर्पण भाव देखने का सौभाग्य मिला।

—डॉ प्रेमसुख मरोठी
नोखा—३३४८०३

श्रद्धोद्‌गार, शुभाभीप्साए, वर्द्धापनाए

—डॉ छगनलाल शास्त्री

परम पूज्य, महामहिम, जै श्वे साधुमार्गी आम्नाय के पावन प्रकाश स्तम्भ, आचार्य-प्रवर पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म सा के धर्मसघ द्वारा भगवान महावीर की अहिंसा, अनेकान्त एव सयम प्रधान सास्कृतिक परम्परा का जो दिव्य उद्योत होता रहा है, आज भी अविकल रूप में हो रहा है, वह नि सन्देह भारत के आध्यात्मिक उत्कर्षमय इतिहास का वह स्वर्णिम पृष्ठ है, जो कदापि धूमिल नहीं होगा ।

इसी परम्परा मे सौम्यता, ऋजुता, मृदुता एव प्रशान्त भाव के दिव्य सवाहक आचार्यवर पूज्य श्रीलालजी म सा, "अध्यात्म-शान्ति" के अग्रदूत, महान ज्योतिधर स्वनामधन्य आचार्यवर श्री पूज्य जवाहिरलालजी म सा, दिव्य ओजस्विता तथा सात्विकता के महान् उद्‌वाहक आचार्यप्रवर पूज्य श्री गणेशीलालजी म सा हुए, जो श्रमण भगवान महावीर के ज्योतिर्मय शासन को उत्तरोत्तर उद्दीप्त, प्रदीप्त करते रहे।

आज इस गौरवमयी विरासत का धर्मपाल प्रतिबोधक, समता दर्शन के प्रणेता, समीक्षण योग के समुद्‌बोधक महामहिम आचार्य प्रवर पूज्य श्री नानालालजी म सा सम्यक् सवहन करते हुए, जन-जन को आत्म दर्शन के पावन सन्देश से आप्यायित करते हुए प्रभु महावीर की विश्वमैत्री, समता एवं विश्वात्सल्यमय आध्यात्मिक देन को अधिकाधिक उजागर करते हुए धर्म जागरण का महान् कार्य कर रहे हैं ।

इस परम गौरवशील विरासत का भावी उत्तरदायित्व सम्हालने हेतु परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा ने समादरणीय मुनिवर्य श्री रामलालजी म सा को जो अपना उत्तराधिकारी युवाचार्य पदघोषित किया है, यह सर्वथा स्तवनीय एव अभिनन्दनीय हैं । इस महनीय प्रसग पर परमाराध्य आचार्य प्रवर की सेवा मे विनयाभिनत प्रणयन तथा युवाचार्य वर को हार्दिक वर्द्धापन समर्पित करते हुए अपरिसीम आनन्द का अनुभव होता है ।

मुनिवर श्री रामलालजी म सा एक प्रखर विद्वान, साधनाशील, मनस्वी, उज्ज्वल चारित्र्य के धनी, व्यवस्था कुशल, एक सुयोग्य, परम विनीत, तप पूत अनगार हैं । अपने श्रद्धास्पद गुरुवर्य के श्री

चरणों में रहते हुए वे अपने आपको सर्वथा गुण निष्पन्न बनाने की दिशा में सदैव यत्नशील रहे हैं। वे अपने परमाराध्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त इस गौरवमय उत्तरदायित्व का अत्यन्त सफलता के साथ निर्वहण करेंगे, अध्यात्म अहिंसा, अनुकम्पा, और संयम विभूषित श्रमण संस्कृति को उत्तरोत्तर उद्दीप्त करते रहेंगे, ऐसी आशा है।

कोटी-कोटी मंगल-कामनाएं, वर्द्धापनाएं एवं शुभाभीप्साएं।

व्याख्यान वाचस्पति
प्राच्य विद्याचार्य, काव्यतीर्थ–विद्यामहोदधि
कैवल्यधाम-सरदारशहर

आचार्य श्री की मनीषा का अखण्ड दीप युवाचार्य श्री के रोम-रोम को आलोकित रखेगा।

—डॉ नेमीचन्द जैन

शास्त्रज्ञ मुनिश्रेष्ठ श्री रामलालजी म सा के युवाचार्य घोषित किये जाने पर उन्हें राशि राशि साधुवाद दीजिए।

मुझे विश्वास है कि वे पूज्य आचार्य श्री के सम्यक् उत्तराधिकारी सिद्ध होंगे। इतिहास के ऐसे मोड पर जहां पग पग पर हिंसा ने अपने मजबूत पांव जमा लिये है, उन्हें अहिंसा की पुन प्रतिष्ठा के लिए काफी संघर्ष करना पड़ेगा। स्वयं जैन समाज भी अपने अस्तित्व का युद्ध जूझ रहा है उसमें भी कई विकृतियां आ गई हैं। जीने की जो पद्धति भगवान महावीर ने प्रवर्तित की थी, उसमें हिंसा, झूठ, चोरी, परिग्रह कुशील आदि के लिए कोई हाशिया नहीं था किन्तु आज इन पांच लुटेरो ने हमारा सर्वस्व अपहृत कर लिया है। ऐसे मर्मान्तक क्षणों में हमे अपने आध्यात्मिक नेतृत्व पर ही भरोसा रखना होगा।

मुझे विश्वास है कि पूज्य आचार्य श्री की मनीषा का अखण्ड दीप मुनिवर रामलालजी के रोम-रोम को आलोकित रखेगा और वे अत्यधिक सफलतापूर्वक उनके धर्मपाल अभियान और समीक्षण ध्यान की उज्ज्वल परम्पराओं को अग्रसर कर सकेंगे। मैं साधुमार्गी जैन संघ

कसे हिमालय की तरह ऊचा उठे और अखिल मानवता का मस्तक उसके कृतित्व से कैसे गौरवान्वित हो इस सबकी प्रतीक्षा करता रहूंगा। मैं आशान्वित हूं कि युवाचार्य श्री के सुयोग्य माग दशन मे आचार्य श्री की जन्म स्थली विश्व विख्यात "शाकाहारपुरम्" का रूप लेगी और वहा से शाकाहार/अहिंसा की किरणें प्रस्फुटित होकर पूरे विश्व को आलोकित करेंगी। उन्हें मेरे अनन्य प्रणाम कहिये।

परम पूज्य आचार्य श्री तक मेरे विनम्र प्रणाम पहुचाइये।

—६५ पत्रकार कॉलोनी, कनाडिया माग
इन्दौर (म प्र)

युगाचार्य युवाचार्य

—प श्री श्यामसुन्दरा चार्य

अनादि निधन सनातन श्रमण सस्कृति के परम श्रद्धेय आचाय, समीक्षण ध्यानयोगी, समता विभूति शान्त, दान्त समाहित श्री नानालालजी म सा के अन्यतम पट्ट शिष्य श्री रामलालजी म से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आपकी गम्भीरता, शालीनता, मितभाषिता, सज्जनता आदि गुणो से मैं बडा प्रभावित हुआ।

दया, दाक्षिण्य, औदाय सौशिल्य देवी गुण गण आपको उत्तराधिकार के रूप मे प्राप्त हैं। अत आप वस्तुत युवाचाय के साथ ही युगाचार्य भी कहे जा सकते हैं। आपके त्याग वैराग्य, संयम, नियम पूर्ण जीवन से चतुर्विध जैन धर्म सघ निश्चित ही पल्लवित तथा पुष्पित होगा, इस आशसा के साथ मैं आपकी शतायु की कामना करता हूं।

वन्दन करता अभिनन्दन,
चरणों मे सतत् समर्पण।
गगा प्रवाहसम निशिदिन,
मुखरित हो सारा जीवन।

व्याकरणाचाय, साहित्याचाय, दशनाचार्य, शिक्षाशास्त्री,
बीकानेर (राज)

आचार्य श्री द्वारा प्रवर्तित धर्म प्रभावना के काय यथावत सम्पादित होते रहेंगे।

—महामहोपाध्याय डॉ दामोदर शास्त्री

यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि परमश्रद्धेय चारित्र चूडामणि, समीक्षण ध्यान योगी, धर्मपाल प्रतिबोधक आचाय प्रवर श्री १००८ श्री नानालालजी म सा ने तरूण तपस्वी विद्वत् मूर्द्धन्य, आगमपारंगत मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा को अपना भावी उत्तराधिकारी-युवाचार्य रूप मे नामांकित किया है। आचार्य श्री द्वारा प्रवर्तित समस्त धर्म प्रभावना के कार्य यथावत् इन उत्तराधिकारी द्वारा सम्पादित होते रहेंगे—ऐसा विश्वास है।

—व्याकरणाचाय, सवदशनाचाय
जैन दर्शनाचार्य एम ए विद्यावारिधि

'सेयर्करिय सेय्वार पेरियर'

—डॉ इन्द्रराज बद

यह सात्विक हर्ष का विषय है कि परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा ने अपने विशाल तीर्थ संघ की बागडोर अपने विद्वान् सुशिष्य श्री रामलालजी म सा के हाथों में सौंपने की ऐतिहासिक घोषणा कर दी है। आचाय श्री के छत्रछाया में एक बार फिर पूर्ण रूप से अभ्यर्पित प्रशिक्षित होकर युवाचार्य श्री इस महान दायित्व का निर्वाह विनम्रता, विद्वत्ता और विलक्षणता पूवक करेंगे, यह हमारी शुभ आशा है। संत तिरुवल्लुवर के अनुसार श्रेष्ठ ही श्रेष्ठ कार्यों का निर्धारण संपादन करते हैं—'सेयर्करिय सेय्वार पेरियर।' विशेषाक हेतु हार्दिक बधाई।

मागर कोयल (तमिलनाडु)

म्हारी कुख उजाले

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री नानालालजी म सा ने जो भार श्री रामलालजी म सा को दिया है वो पूज्य गुरुदेव री किरपा सू ही पार लागसी ।

म्हारे अन्तर रो आशीश है श्री रामलालजी म सा गुरुदेव रो नाम दिपावे और म्हारी कुख ने उजाले ।

देशनोक

—गवरां देवी भूरा

(युवाचाय श्री जी की ससार पक्षीय मातु श्री जी)

म्हाने घणी घणी खुशी है

भ्राता रे दीक्षा देने के पहले मैं आ नही सोचतो हो कि सयम पथ पर जाकर इतनी जल्दी इस पद पर पहुंच जासी । पूज्य गुरुदेव ने उनकी सयम साधना को अच्छी तरह परख कर अपने उत्तराधिकारी के रूप मे युवाचार्य पद श्री रामलालजी म सा को दिया ।

म्हाने घणी घणी खुशी है । इससे म्हारे समझ मे आवे कि कोई भी दीक्षा लेवे तो दीक्षा दिलाने मे सहयोग देना चाहिए ।

देशनोक

—मागीलाल भूरा

(युवाचार्य श्री के ससार पक्षीय एक मात्र ज्येष्ठ भ्राता)

आगम मर्मज्ञ युवाचार्य श्री रामलालजी म सा

—लालचन्द्र नाहटा 'तरुण'

स्थानकवासी जैन समाज मे पूज्य स्व श्री आचार्य श्री हुकमीचन्दजी म सा के सम्प्रदाय का स्थान विशेष गौरवशाली रहा है। हुकम सम्प्रदाय के सभी आचार्यों ने उत्तरोत्तर शासन के गौरव को प्रदीप्त किया। वे सभी अष्टाचार्य एक से बढ़कर एक प्रतापी हुए। पूज्य स्व श्री श्रीलालजी म सा के शासन से इस सम्प्रदाय के उत्कर्ष का जो स्वर्णिम अध्याय प्रारभ हुआ, वह अनिर्वचनीय है। हम सबके सौभाग्य से वर्तमान शासनेश आचार्य श्री नानेश ने अपने दिव्य व्यक्तित्व से जिनशासन की महान् सेवा की है। ओजस्वी, तेजस्वी, प्रभावशाली और आदर्श आचार्य श्री १००८ श्री नानालालजी म सा में आदर्श आचार्य के सभी ३६ गुणों का समावेश है। आपके पावन जीवन की सत् सन्निधि से समाज जीवन मे समता का अमृत रस परिसचरित हो रहा है और व्यक्ति एवं समाज जीवन मे रूपान्तरण के अलौकिक दृश्य मूर्तिमन्त हो रहे हैं।

आपकी अमृतमयी वाणी अन्तर हृदय से प्रस्फुटित और स्वानुभूति से परिपुष्ट है। अत आपके प्रवचन हृदयग्राही और प्रभावशाली होते हैं। आपके लोकोत्तर व्यक्तित्व ने समग्र स्थानकवासी जैन समाज मे नव जागरण का प्रेरक शखनाद किया है और आपश्री ने अनेकानेक आध्यात्मिक कीर्तिमानो की स्थापना की है। आपके हाथ से जितनी दीक्षाए हुई हैं उतनी सम्पूर्ण स्थानकवासी समाज के किसी एक आचार्य के हाथो आज तक नहीं हुई हैं। आपश्री ने केवल मात्र दीक्षा देकर ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री नहीं मानी अपितु दीक्षा के उपरात शिक्षा और विकास का उत्तम प्रबन्ध करके अपने आज्ञानुवर्ती श्रमण श्रमणी वर्ग को सुयोग्य बनाकर, अनुशासन को बीज रूप में स्थापित करके और उनकी प्रतिभाओं को निखार कर समाज जीवन की अप्रतिम श्री वृद्धि की है। परिणाम स्वरूप आपके सभी शिष्य योग्य और विद्वान् हैं। स्थविर प्रमुख श्री शांतिमुनिजी, श्री विजयमुनिजी, श्री प्रेममुनिजी, श्री ज्ञानमुनिजी, श्री पारसमुनिजी और शासन प्रभावक श्री धर्मेशमुनिजी आदि सभी हुकमवश के गौरव है। आचार्य श्री नानेश के श्री चरणों की सेवा करके कंकर शंकर बन जाते हैं। गुरुदेव धन्य है।

इन उज्ज्वल मणियों, इन ज्योतिपुंज रत्नदीपों में से पूज्य चरण आचार्य-प्रवर श्री नानेश आगम मर्मज्ञ, विद्वद्वर्य, मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा को युवाचार्य घोषित किया है। यह घोषणा करके आचार्य प्रवर ने समाज के महान् हित की साधना की है। हम आचार्य प्रवर के इस उपकार हेतु अनन्त हृदय से आभारी हैं।

युवाचार्य श्री रामलालजी म सा से यद्यपि मेरा परिचय दीर्घकालिक नहीं है किन्तु प्रथम दर्शन में ही आपश्री के महनीय व्यक्तित्व ने मुझे जिस प्रकार प्रभावित किया, वह अविस्मरणीय है। अशोक नगर, उदयपुर में मैंने आपश्री के प्रथम दर्शन किए थे और उस समय सहसा मेरे मन में कवि की निम्न पंक्तियां कौंध गई थी—दूरेपि श्रुत्वा भवदीय कीर्ति, कर्णौच तृप्तो न च चक्षुणी में तयोर्विवाद परिहर्तुकाम समागतो हं तव दर्शनार्थी। हे परम श्रद्धेय! दूर कानों से आपका नाम तो सुना था किन्तु जो कुछ सुना था, उस पर नेत्रों को विश्वास नहीं हो रहा था, क्योंकि उन्होंने आपके दर्शन नहीं किए थे। आज आपके दर्शन प्राप्त कर मैं आह्लादित हूं। जैसा मैंने सुना था, उससे भी सुन्दर रूप में आपको देखकर मेरे श्रोत्र और नेत्र का विवाद समाप्त हो गया।

युवाचार्य श्री राममुनिजी के भव्य-दिव्य और आकर्षक व्यक्तित्व तथा उनकी ओजस्वी, तेजस्वी आकृति, उनकी सतत मधुर मुस्कान और सदा प्रसन्न आनन एवं उनकी वाणी का माधुर्य शासन की श्री वृद्धि करेंगे ऐसा मेरा निश्चित मत है।

शासन नायक परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर की इंगियागार सम्पन्न वृत्ति से, अत्यन्त समर्पित भाव से अहर्निश सेवा, ज्ञानचर्चा में विनय पूर्वक महत्त्वपूर्ण योगदान, परम्परा और आगम के प्रति पूर्ण सम्मान के साथ साथ नये युग की नई विधाओं, कलाओं और कल्पनाओं का समीचीन समन्वय आपकी प्रमुख और विलक्षण विशेषताएं हैं। मुमुक्षु भव्य जन तारण हार परम पावनी जिनवाणी के आप रहस्य ज्ञाता हैं।

युवाचार्य श्री राममुनिजी मर्यादा और परम्परा के समर्थ अनुपालक, निष्काम कर्मयोगी और द्रष्टा हैं। वर्धमान की संयम साधना और बुद्ध की करुणा से आपका मानस आप्लावित है। मानव सेवा और बन्धुत्व का सन्देश आप सदैव सुनाते रहते हैं। आप मानव संस्कृति

की अनुभूति हेतु सद्भावन समर्पित हैं ।

अत जैनाचार्य परमपूज्य श्री नानालालजी म सा द्वारा आपश्री का युवाचाय के रूप मे चयन समग्र मानव जाति और प्राणी-मात्र के लिए मगलमय है । श्री हुकम सघ की बागडोर आपके हाथ मे आने से हम सब हर्षित हैं ।

गुरुचरणों मे रहकर आपने श्रुतशास्त्र और आगम का गहन अध्ययन किया है तथा तीव्र मेधा शक्ति के संयोग से आपने अध्ययन मे दक्षता प्राप्त की है । इसी ज्ञान के आधार से श्रमण संस्कृति में चिरकाल से चली आ रही जिज्ञासा तथा समाधान की परम्परा का आप कुशलता से निर्वाह कर रहे हैं । स्वयं प्रभु महावीर ने जिनानु जनो के अगणित प्रश्नों का सम्यक् समाधान दिया था और हुकम वश के प्रतापी आचार्यों ने तीर्थंकर देव की उस अनथक समाधान वृत्ति का सुन्दर शैली में बखूबी निर्वहन किया है ।

कुछ कालपूर्व श्वेताम्बर, मूर्तिपूजक समाज के धुरंधर विद्वान श्री न्याय विजयजी ने अपने पाडित्य का भरपूर प्रयोग करते हुए स्था नकवासी समाज के समक्ष कुछ जटिल प्रश्न रखे थे तब ज्योतिधर श्री जवाहराचार्यजी ने उन सब प्रश्नों का सस्कृत में समाधान प्रस्तुत कर समाज को चमत्कृत कर दिया । उन प्रश्नों के माध्यम से उन युगदृष्टा आचार्य ने सप्तभगी, न्याय से प्रत्यभिज्ञान प्रामाण्य, कारक लक्षण, लेश्याओ की कर्म निष्पदता आदि के विषय मे शास्त्रीय समा धान प्रदान किए थे । स्व आचाय देव श्री जवाहरलालजी म सा ने केकडी शास्त्रार्थ के प्रसंग पर मेरे पूज्य पिता श्री धनराजजी को जो सटीक मार्ग दशन प्रदान किया, वह चिरस्मरणीय है ।

इसी प्रकार तत्कालीन युवाचार्य श्री गणेशीलालजी म सा जब सन् १९३९ मे केकडी पधारे और जब उनसे श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समाज की ओर से श्रुतज्ञान का प्रमाणत्व और (अप्रमाण्य (सवतोग्राह्य है व परतो ग्राह्य है, सम्यग्दशन के सब सन्निकृष्ट–विप्रकृष्ट कारण, बहिरंग कारणो के सबंध में तथा अन्य अनेकानेक प्रश्न पूछे गए तो गुरुदेव ने समस्त जिज्ञासाओं का सम्यक् सतोषप्रद समाधान किया था ।

इस प्रकार की प्रश्नोत्तरी प्रणाली के विषय में अपने परिवार मे विकसित जिज्ञासा और स्वाध्याय के प्रति मेरी बाल्यकाल से रही रुचि के कारण मेरे मन मे उत्पन्न होने वाली जिज्ञासाओ को मैं सकलित करता गया । इस प्रकार मेरे पास ३२ जिज्ञासाओ एकत्र हो गई । अन्तरहृदय मे इन जिज्ञासाओं के समाधान की प्यास उत्तरोत्तर बढ़ती गई और मैंने अनेक स्थानो पर इन्हें प्रेषित किया। मात्र कुछ स्थानों से २४ प्रश्नो के उत्तर प्राप्त हुए । उनसे भी समाधान नहीं हुआ । श्रुतधर पं प्रकाशमुनिजी म सा एवं श्रीमज्जैनाचाय श्री नानालालजी म सा की ओर से उनके सुशिष्य मुनिप्रवर श्री रामलालजी म सा ने सम्पूर्ण समाधान प्रेषित किए । पूज्य आचार्य भगवन्त के चरणो मे बैठकर शास्त्रज्ञ श्री रामलालजी म सा ने जो ज्ञान प्राप्त किया है, उसका प्रत्यक्ष प्रमाण इन जिज्ञासाओ के समाधान में दृष्टिगोचर होता है । इन समाधानो मे स्थान-स्थान पर शास्त्र की आत्मा जिस प्रकार मुखर हुई है, वह युवाचार्य श्री जी की महान् प्रतिभा की मुख बोलती सत्यकथा है । आपश्री द्वारा प्रदत्त समाधानो की कुछ बानगी देखिये—

प्रश्न—श्री उत्तराध्ययन सूत्र के २९ वें अध्ययन मे ५ वें प्रश्न के उत्तर मे भगवान ने फरमाया है कि आलोचना करने से जीव स्त्रीवेद और नपुसक वेद का बध नही करता और कदाचित उनका बध पहले हो चुका है तो उनकी निजरा हो सकती है क्या ?

(i) वेद का बंध पड़ने के बाद उनकी निजरा हो सकती क्या ?

(ii) यदि हो सकती है तो श्री मल्लि भगवती (श्रेणिक, कृष्ण) के निर्जरा क्यों नही हुई ?

(iii) अनुत्तर विमान मे आराधक जाते हैं—विराधक नही । श्रीमल्लि भगवती ने महाबल के भव मे निजरा की इसलिए अनुत्तर विमान मे गई । आलोचना करने के बावजूद श्रीमल्लि भगवती के निर्जरा क्यों नहीं ?

उत्तर—शास्त्रीय सन्दभ के इन प्रश्नो का समाधान करते हुए शास्त्रज्ञ मुनिप्रवर श्री रामलालजी म सा ने फरमाया कि—सम्यक्त्व पराक्रम अध्ययन के पाचवें सूत्र मे आलोचना करने वाला मुख्य

रूप से माया निदान और मिथ्यादर्शन शल्य जो अनन्त संसार के बंधक हैं का उद्धरण करता है अर्थात् अनन्त संसार बन्धन के तीनों हेतुओं को नष्ट कर देता है। उक्त तीनों हेतुओं के नष्ट हो जाने से आलोचना करने वाला सरल हृदयी हो जाता है। सरल हृदयी व्यक्ति के भी वह बन्ध नहीं करता—यह भाव दर्शाया गया है।

(१) वेद का बंध हो जाने के पश्चात् उसकी उदीरणा आदि के द्वारा निर्जरा संभावित है। कर्मग्रन्थ (दूसरा) में उदीरणा योग्य १२२ कर्म प्रकृतियां स्वीकार्य हैं।

(२) मल्लिनाथ भगवती का वर्णन ज्ञाता धर्म कथांग सूत्र में उपलब्ध है, उसमें उनके स्त्रीवेद का बंध होना नहीं कहा है, अपितु स्त्री आंगोपांग नाम कर्म का बंध किया था, यथा "तएणं से महब्बले अणगारे इमेण कारणेण इत्थिणाम् गोयम् कम्म णिव्वत्तेसु"—इस मूल पाठ में स्त्रीनाम गोत्र कर्म का बंध कहा है जो कि *आंगोपांग नाम* कर्म अन्तर्गत है।

पूज्य श्री घासीलालजी म. सा. ने इसकी टीका इस प्रकार की है—'इत्थिणाम गोय ' स्त्री नाम गोत्रं, यस्य कर्मण उदयात् स्त्रीभाव स्त्रीत्व प्राप्यते तत स्त्रीनाम कर्म तथा गोत्रं जाति कुल निर्णतक कर्म अनयो समाहार। "स्त्री नाम गोत्र कर्म········" इसमें स्पष्ट कहा गया है कि जिस कर्म से स्त्रीत्व प्राप्त हो। स्त्री का शरीर आंगोपांग नाम कर्म से प्राप्त होता है। वेद का उदय तो एक ही शरीर में भिन्न भिन्न समय में भिन्न भिन्न हो सकता है। पुरुष शरीर में स्त्रीवेद और स्त्री शरीर में पुरुष वेद का उदय आगमन सम्मत है।

यद्यपि टीकाकारों ने मिथ्यात्व एवं सास्वादन गुणस्थान प्राप्ति का भी उल्लेख किया है किन्तु यह संगत प्रतीत नहीं होता क्योंकि यदि महाबल अणगार के इस आचरण से मिथ्यात्व या सास्वादन गुणस्थान की प्राप्ति हुई तो उसकी निवृत्ति कब हुई उसका कोई खुलासा नहीं है। तीर्थंकर नाम कर्म के बंध का उल्लेख है जो कि *सम्यक्त्व आराधक सापेक्ष* है। अतः महाबल अणगार (*मल्लि भगवती का पूर्वभविक* जीव) को मिथ्यात्वादि प्राप्ति संभव नहीं लगती अपितु स्त्रीनाम गोत्र कर्म का तात्पर्य स्त्री आंगोपांग होना आगमानुकूल प्रतीत होता है।

श्रेणिक और कृष्ण के नरकायु का बन्ध हो चुका था। नरक में नपुसक वेद का उदय भवस्वभावी है। अत स्वभावी होने से उस कर्म प्रकृति का वहा उदय अवश्यभावी होने से निजरा होने का प्रसंग नहीं रहा।

(३) महाबल की अवस्था मे जब स्त्री वेद का बन्ध ही आगम सम्मत नही लगता तो उसके निर्जरा के प्रश्न को अवकाश ही कहा रहता है।

मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा द्वारा प्रदत्त समाधान का विश्लेषण करिये। श्वेताम्बर जैन समाज की पुरातन मान्यता के अनुसार वेद का बध निकाचित होने से अथवा निर्जरा एकदेश होने से श्री मल्लि भगवती के स्त्री वेद का उदय रहा जबकि आगम ममज्ञ श्री रामलालजी म सा वेद के बन्ध को ही स्वीकार नही कर रहे हैं और स्त्री शरीर की प्राप्ति नाम कर्म के उदय से बताते हैं न कि वेदोदय से।

युवाचार्य श्री जी की उक्त उद्भावना मौलिक है और अपनी इस मौलिक उदभावना की पुष्टि वे आगम प्रमाणो से करते हैं। इस प्रकार आपश्री ने विद्वानो और विचारको के लिए चिन्तन के नए द्वार अनावृत्त किए हैं। चिन्तन के क्षत्र मे आपश्री ने अभिनव आयाम प्रस्तुत किए हैं।

मेरे बत्तीस प्रश्नो के उत्तर मे वत्त मान युवाचाय श्री ने अनेक मौलिक विचार दिए हैं। पूज्य आचाय भगवत एव परमागम रहस्य-ज्ञाता श्री राम मुनिजी म सा द्वारा आगमिक जिज्ञासाओ के समाधानों को गहराई से इन दिनो देखा। देखकर मैं चमत्कृत हो गया। कुछ समाधान तो प्रचलित धारणाओ से हटकर भी इतने युक्तियुक्त और प्रमाण पुरस्सर हैं कि देखकर स्थानीय विद्वान भी दग रह गये हैं। पूज्य गुरुदेव को कितना परिश्रम करना पडा होगा, इसकी कल्पना ही दुष्कर है। तथापि केवल मात्र परिश्रम ही काफी नहीं है, उसके साथ-साथ तीव्र मेधाशक्ति, अवधारणा शक्ति, स्मरण शक्ति एव स्वय का तलस्पर्शी अध्ययन आवश्यक है। इन सबकी आपके यहा एक साथ उपस्थिति समस्त विश्व के लिए गौरव का विषय है। वह गुरुद्वारा "शक्ति सम्पत्ति" के प्राचीन सिद्धान्त का प्रत्यक्ष और अति विरल दृष्टान्त है।

वस्तुत यह सब अनुभव करके लगता है कि आचार्य श्री का चयन निर्णय अत्यन्त दूरदर्शितापूर्ण सशक्त और प्राणवान निर्णय है। पूज्य गुरुदेव के युवाचार्य चयन का यह निर्णय हुकम वंश के गौरव के अनुरूप तथा समग्र मानव जाति के कल्याण का ऐतिहासिक फैसला है। आचार्य प्रवर के चयन से एक उपयुक्त व्यक्ति को उसकी योग्यता के अनुरूप सही पद मिला है, जिसके वे वास्तविक अधिकारी हैं।

हम सभी को दृढ़ विश्वास है कि युवाचार्य श्री रामलालजी म सा के सुयोग्य नेतृत्व मे सघ एव समाज का सर्वांगीण विकास होगा। हमे गुरुदेव के इस युगान्तरकारी निर्णय पर गर्व है।

मुझे यह प्रकट करते हुए अपार हर्ष भी होता है कि आज से लगभग डेढ़ वर्ष पूर्व जब मेरी आगमिक जिज्ञासाओं का विद्वान मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा ने समाधान किया था, उसी समय मुझे अनुमान हो गया था कि युवाचार्य पद पर आप ही विराजेंगे। मैंने अपने अनुमान को लिखित व मौखिक रूप से बता भी दिया था, आज उस अनुमान के सत्य सिद्ध होने पर मेरे हर्ष का पारावार नहीं है।

इस पावन घोषणा हेतु गुरुदेव के प्रति साधुवाद और कोटि कोटि वन्दन तथा युवाचार्य श्री जी का हार्दिक अभिनन्दन।

द्वारा—श्री जुहारमलजी दीपचन्दजी नाहटा
केकड़ी जिला अजमेर (राज)

सर्वतोभावेन समर्पित

• हम युवाचार्य श्री का हार्दिक अभिनन्दन एवं अभिवन्दन करते हैं तथा विश्वास दिलाते हैं कि सघ के व्यापक हित दी गई जिम्मेदारी को सशक्त करने मे सदैव सर्वतोभावेन समर्पित रहेंगे।

उपाध्यक्ष —सुगनमल बोरा
श्री अ भा साधु जैन संघ, इन्दौर

हम गौरवान्वित हैं

० ऐतिहासिक राजप्रासाद (जूनागढ दुग) के प्रागण मे सम्पन्न चादर प्रदान दिवस की निराली, अभूतपूर्व एव अविस्मरणीय छटा देख सघ का प्रत्येक सदस्य गद् गद्, आनन्दित एव गौरवान्वित है ।

हमारा सघ पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म सा के समय से ही गुरुआम आज्ञा सतत श्रद्धावनेत रूप से मानता आया है एव एकछत्र सगठित रहा है और आगे भी तथैव हृदय से अनुसरण करता रहेगा ।

गुरुदेव का निणय जन-जन के द्वारा अभिनन्दनीय है । अपने अतिशय ज्ञान बल से, अन्तर साक्षी से जिनशासन की सत्ता जिन सुयोग्य हाथो मे सौंपी है, हमें देखकर आनन्दानुभूति होना स्वाभाविक है । युवाचाय श्री जी को बधाई देते हुए अपेक्षा रखते हैं कि वे भी पूर्वाचार्यों का अनुकरण करते हुए श्री सघ को दिव्यदान से लाभान्वित करेंगे ।

सघ के प्रतिपाल वन्दनीय भावी कर्णधार वस्तुत बधाई के पात्र हैं क्योकि अपने पुरुषार्थ से पूज्य गुरुदेव के हृदय मे स्थान बनाकर आराधक से आराध्य, पूजक से पूज्य तथा उपासक से उपास्य बनने का सौभाग्य प्राप्त कर लिया । शुभ कामना है कि युवाचार्य जी साधक से सिद्ध बनने के पूर्व अपनी विशेष क्रियान्विति से हमें बार बार बधाई देने का मौका दें ।

भवरलाल बडेर (उपाध्यक्ष)

केशरीचन्द सेठिया (सहमंत्री)

जतनलाल डागा (उपाध्यक्ष)

प्रकाशचन्द बाठिया (उपमत्री)

माणकचन्द भारी (कोषाध्यक्ष)

(श्री साधुमार्गी जैन बीकानेर श्रावक सघ)

हमें गौरव है

० आचार्य भगवन् द्वारा गहन चिन्तन, मनन से अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति का हमें गौरव है।

मदनलाल नवायत	धूलचन्द फुदाल
अध्यक्ष	अध्यक्ष
श्री साधुमार्गी जैन संघ, भीण्डर	श्री सा जैन संघ, कानोड़

अनिर्वचनीय हर्ष

० उद्घोषणा एवं चादर समारोह के लिए सम्पूर्ण संघ में अपूर्व हर्ष हुआ। इसे अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता।

अध्यक्ष —भंवरलाल चोपड़ा
श्री जैन श्वे स्था संघ, बाड़मेर

संघ अबाध गति से आगे बढ़े

आचार्य भगवन द्वारा तत्क्षण व विचक्षण घोषणा पर श्री संघ, जयनगर साधुवाद के साथ साथ हार्दिक शुभ कामनाएं अर्पित करता है एवं आशा रखता है कि यह चतुर्विध संघ दिन दूना रात चौगुना अबाध गति से आगे बढ़ता रहे।

मन्त्री —शांतिलाल रांका
श्री साधुमार्गी जन संघ, जयनगर

हार्दिक उपकार

० अपने-उत्तराधिकारी का चयन कर गुरुदेव ने साधुमार्गी संघ पर हार्दिक उपकार किया है। असीम प्रसन्नता है। समता युवा संघ पूर्ववत् श्रद्धावान बना रहेगा।

मन्त्री —शांतिलाल कोठारी
समता युवा संघ, चिकारडा

सघ का अहोभाग्य

० संघ का अहोभाग्य है कि आचाय प्रवर ने महत्ती कृपा कर युवाचाय पद का भार ऐसे संत रत्न को सौंपा है, जो वत्तमान 'जाहो-जलाली' को निरन्तर प्रवहमान व वृद्धिगत रखेंगे। युवा वग मे अपार प्रसन्नता है। हार्दिक स्वागत व समथन करते हुए विश्वास दिलाते हैं कि आचाय श्री व युवाचार्य श्री का जो भी आदेश होगा, शत प्रतिशत पालन किया जायगा।

सहमंत्री —वीरेन्द्रसिंह लोढ़ा
ी अ भा सा जैन सघ उदयपुर

अतीव हर्षानुभूति

० आचार्य भगवन द्वारा श्री राम मुनिजी को युवाचाय घोषित रने के समाचार से संघ को अतीव हर्षानुभूति हो रही है। स्थानीय घ अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हुए जिनेश्वर देव से प्राथना रता है कि अ भा सा जैन सघ नवीन उपलब्धियो सहित उत्तरो-र शासन की वृद्धि करे।

मंत्री —सम्पतराज बुरड़
। साधुमार्गी जैन सघ, भीलवाड़ा

पूर्ण विश्वास व्यक्त

० समाचार पाते ही नगर मे हर्ष एवं प्रसन्नता का यातावरण बन गया। बेंगलोर श्री सघ युवाचार्य श्री जी मे पूण विश्वास व्यक्त करते हुए अपनी मंगल कामना प्रेषित करता है।

श्री साधुमार्गी जैन सघ —सोहनलाल सिपानी
बेंगलोर अध्यक्ष

चमकते सितारे

० आचार्य भगवन् ने अपने दिव्य ज्ञान से, अन्तरात्मा का निर्णय लेकर भावी शासन नायक का जो चयन किया है—महत्वपूर्ण है एवं जैन जगत के इतिहास में चिर स्थाई रहेगा।

शास्त्रज्ञ, आगम मनीषी, तरुण तपस्वी, आचार क्रान्ति के दृढ़ पक्षधर, तर्क शक्ति के धारक, रहस्यज्ञाता मुनि प्रवर के युवाचार्य चयन पर समग्र भारत में प्रसन्नता एवं प्रमोद का वातावरण है। आप समाज के चमकते सितारे हैं। यही मंगल कामना है कि आप तेजस्वी, यशस्वी, वर्चस्वी बनकर समाज को देदिप्यमान करते रहें।

मंत्री	—महेन्द्र मिन्नी

श्री साधु जै श्रा संघ, गंगाशहर-भीनासर

आज्ञा का अनुमोदन करते हैं

० श्री संघ युवाचार्य श्री जी की घोषणा एवं चादर समर्पण का हृदय से स्वागत एवं अभिनन्दन करता है। गुरुदेव की सभी आज्ञाओं का अनुमोदन करते हुए उन्हें सफल बनाने का विश्वास दिलाता है। वन्दन!

मंत्री	—शान्तिलाल पीप

श्री साधुमार्गी जैन संघ, कानोड़

नवम् पट्टधर को सविधि वन्दना

० प्रसन्नता की अभिव्यक्ति अवर्णनीय है। इस निर्णय की व्यक्तिगत रूप से, परिवार व संस्था की ओर से अनुमोदना। नवीन उत्तराधिकारी एवं नवम् पट्टधर को सविधि वंदना करते हुए आशीर्वाद की मंगल कामना।

सलाहकार	—कपूर कोठारी एवं परिवार

अ. भा. समता बालक मण्डली	रतलाम

अखण्ड सौभाग्य के प्रतीक

० हुक्म परम्परा के मुख्य उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए आचार्य प्रवर ने चतुर्विध संघ अनुशास्ता के रूप में पंचाचार व श्रमण समाचारी रत्नत्रय आराधना के योग्यतम शिष्य को नवम् पट्टधर रूप पद स्थापित किया है। यह गौरवशाली श्रमण परम्परा का महत्वपूर्ण पृष्ठ है। युवाचार्य श्री जी संघ निष्ठा का जीवन्त बोध, धर्म स्नेह की गहन अनुभूति व तत्व अन्वेषणा की गहराईयों को प्राप्त करें। यह चयन सदैव चतुर्विध संघ के अखण्ड सौभाग्य का प्रतीक बन गया है। अनन्त शुभ कामनाएं।

कानोड़ (राज) —सोहनलाल लूणिया

बहु प्रतीक्षित निर्णय का हृदय से स्वागत

० नवम पट्टधर, तरुण तपस्वी वि शास्त्रज्ञ श्री राम मुनिजी को घोषित कर समस्त श्रीसंघ पर महान उपकार किया है। आचार्य श्री के इस समयानुकूल, बहुप्रतीक्षित एवं क्रान्तिकारी निर्णय का हृदय से स्वागत आभार एवं कृतज्ञता व्यक्त करते हुए सदैव की भांति पूर्ण निष्ठा एवं अनुमोदन ज्ञापित करते हैं।

अध्यक्ष —सागरमल चपलोत
मेवाड़ क्षेत्रीय संघ, निम्बाहेड़ा

योग्य गुरु के योग्य शिष्य

० यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि पूज्य आचार्य श्री नानालालजी म सा ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में मुनि श्री रामलाल जी महाराज को युवाचार्य घोषित किया है।

युवाचार्य श्री जी योग्य गुरु के योग्य शिष्य हैं। कृपा कर युवाचार्य श्री जी को मेरी मंगल भावनाएं और वन्दना निवेदित करावें।

प्रधानमन्त्री —चन्दनमल "चांद"
भारत जैन महामण्डल, बम्बई—२

चमकते सितारे

० आचार्य भगवन् ने अपने दिव्य ज्ञान से, अन्तरात्मा का निर्णय लेकर भावी शासन नायक का जो चयन किया है—महत्वपूर्ण है एव जैन जगत के इतिहास मे चिर स्थाई रहेगा।

शास्त्रज्ञ, आगम मनीषी तरुण तपस्वी, आचार क्रान्ति के दृढ पक्षधर तर्क शक्ति के धारक, रहस्यज्ञाता मुनि प्रवर के युवाचार्य चयन पर समग्र भारत मे प्रसन्नता एव प्रमोद का वातावरण है। आप समाज के चमकते सितारे हैं। यही मगल कामना है कि आप तेजस्वी, यशस्वी, वर्चस्वी बनकर समाज को देदिप्यमान करते रहें।

मत्री —महेन्द्र मिन्नी
श्री साधु जै श्रा संघ, गगाशहर-भीनासर

आज्ञा का अनुमोदन करते हैं

० श्री सघ युवाचार्य श्री जी की घोषणा एव चादर समर्पण का हृदय से स्वागत एव अभिनन्दन करता है। गुरुदेव की सभी आज्ञाओं का अनुमोदन करते हुए उन्हें सफल बनाने का विश्वास दिलाता है। वन्दन !

मत्री —शान्तिलाल धींग
श्री साधुमार्गी जैन सघ, कानोड

नवम् पट्टधर को सविधि वन्दना

० प्रसन्नता की अभिव्यक्ति अवर्णनीय है। इस निर्णय की व्यक्तिगत रूप से, परिवार व संस्था की ओर से अनुमोदना। नवीन उत्तराधिकारी एव नवम् पट्टधर को सविधि वंदना करते हुए आशीर्वाद की मगल कामना।

सलाहकार —कपूर कोठारी एव परिवार
अ भा समता बालक मण्डली रतलाम

अखण्ड सौभाग्य के प्रतीक

० हुक्म परम्परा के मुख्य उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए आचार्य प्रवर ने चतुर्विध संघ अनुशास्ता के रूप मे पंचाचार व श्रमण समाचारी रत्नत्रय आराधना के योग्यतम शिष्य को नवम् पट्टधर रूप पद स्थापित किया है । यह गौरवशाली श्रमण परम्परा का महत्वपूर्ण पृष्ठ है । युवाचार्य श्री जी सघ निष्ठा का जीवन्त बोध, धर्म स्नेह की गहन अनुभूति व तत्व अन्वेषणा की गहराईयो को प्राप्त करें । यह चयन संदर्भ चतुर्विध सघ के अखण्ड सौभाग्य का प्रतीक बन गया है । अनन्त शुभ कामनाएं ।

देशनोक (राज) —सोहनलाल लूणिया

बहु प्रतीक्षित निर्णय का हृदय से स्वागत

० नवम पट्टधर, तरुण तपस्वी वि शास्त्रज्ञ श्री राम मुनिजी को घोषित कर समस्त श्रीसघ पर महान उपकार किया है । आचार्य श्री के इस समयानुकूल, बहुप्रतीक्षित एव क्रान्तिकारी निर्णय का हृदय से स्वागत आभार एवं कृतज्ञता व्यक्त करते हुए सदैव की भांति पूर्ण निष्ठा एव अनुमोदन ज्ञापित करते हैं ।

अध्यक्ष —सागरमल चपलोत

मेवाड़ क्षेत्रीय सघ, निम्बाहेड़ा

योग्य गुरु के योग्य शिष्य

० यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि पूज्य आचार्य श्री नानालालजी म सा ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में मुनि श्री रामलाल जी महाराज को युवाचार्य घोषित किया है ।

युवाचार्य श्री जी योग्य गुरु के योग्य शिष्य हैं । कृपा कर युवाचार्य श्री जी को मेरी मंगल भावनाएं और वन्दना निवेदित करावें ।

—चन्दनमल "चांद"

प्रधानमन्त्री

भारत जैन महामण्डल, बम्बई—२

दूरदर्शिता का दर्पण

० गुरुदेव ने समस्त श्रद्धालुओ को गद्-गद् कर दिया है। वस्तुत हीरे की परख तो जौहरी ही करते हैं परन्तु उनके मुह से इसका मूल्य जानना हर खरीददार की अभिलाषा होती है। इसे गुरुदेव ने जन-जन को जता दिया है। आपने अपनी विशाल दूरदर्शिता का दर्पण दिया है।

श्री अ भा साधुमार्गी जन महिला समिति की शुभेच्छा सद् गुरु के चरणो में सर्मपित है।

मत्री —रत्ना ओस्तवाल

श्री अ भा सा जैन महिला समिति
राजनादगाव

साहसिक निर्णय

० गुरुदेव ने एक साहसिक, ऐतिहासिक एवं गरिमापूर्ण निर्णय लेकर सघ के चारो तीर्थों को जिस वात्सल्य भाव से एक सूत्र में पिरोया है महान उपलब्धि है। सरदारशहर संघ के सभी सदस्य इस सुखद निर्णय की अपनी अन्तरात्मा से प्रशसा किये बिना नहीं रह सकते। गुरुदेव के प्रति आत्म समर्पण की भावना आगे भी निरन्तर अबाध गति से प्रवहमान रहेगी।

पूर्ण विश्वास है कि जिस प्रकार गुरुदेव ने महावीर स्वामी के शासन से लेकर हुक्म सघ के सात पाटो के नाम गौरवान्वित किये हैं युवाचार्य श्री भी अपने तेज तपोबल से नवें पाट को सुशोभित करते हुए पूर्ववर्ती आचार्यों के नाम दीपायेंगे। आप उनके पद चिह्नों पर चलकर अपनी गरिमा अक्षुण्ण रखते हुए अपनी विशिष्ट छाप अंकित करेंगे। आपके प्रति प्रदर्शित चारो तीर्थों की आस्था को अक्षुण्ण रखेंगे।

श्री साधुमार्गी जैन सघ, सरदारशहर —सम्पतमल बरडिया

नव आयामों के साथ प्रगति करे

० युवाचार्य श्री के सानिध्य मे यह संघ उत्तरोत्तर वृद्धि करे व नव आयामों के साथ निरन्तर प्रगति करे। वे शासन को खूब चमकावें—महकावें। प्रभु महावीर व पूर्वाचार्यों की जाहोजलाली करें। शुभ कामना।

—सुरेश पामेचा
अध्यक्ष
समता युवा सघ
पिपल्या मडी (म प्र)

चतुर्विध सघ को अबाध गति से आगे बढाये

० ब्यावर सघ को अपार प्रसन्नता है। हम पूर्ण विश्वास दिलाते हैं कि पूर्ण निष्ठा एव आत्मीयता पूर्वक युवाचार्य श्री जी म सा को एव संघ को निरन्तर आगे बढ़ाने में प्रयत्नशील होते हुए हार्दिक सहयोग करते रहेगे। युवाचाय श्री जी म सा अपने ज्ञान, दर्शन, चारित्र की उत्तरोत्तर उन्नति करते हुए निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति की सुरक्षापूर्वक चतुर्विध सघ को अबाध गति से आगे बढाने मे पूर्ण सफल हो यही शुभ कामना है।

—मोहनलाल श्री श्रीमाल
ब्यावर (राज)

इस चयन से बहुत प्रसन्न हैं

० हम सब आचाय प्रवर के इस चयन से बहुत प्रसन्न हैं। श्री रामलालजी म सा युवाचाय पद के पूर्ण योग्य सिद्ध होंगे तथा अपने गुरु के चरण सानिध्य मे रहकर जैन धम, साहित्य एवं संस्कृति के प्रचार प्रसार मे अपने आपको समर्पित रखेंगे। मैं उनके मगलमय एवं पावन जीवन की हार्दिक कामना करता हू।

—डॉ कस्तूरचन्द कासलीवाल
निदेशक
जैन इतिहास प्रकाशन सस्थान, जयपुर

निर्णय से अवर्णनीय प्रसन्नता

० आचार्य भगवन के निर्णय से अवर्णनीय प्रसन्नता है। आचार्य श्री की आज्ञा सर्वतोभावेन पालन करने हेतु दृढ़ संकल्पबद्ध हैं। उदयपुर संघ के समस्त स्वधर्मी बन्धु एवं बहिनें युवाचार्य श्री का अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। शासनदेव से प्रार्थना है कि आप शासन में चार चाँद लगा इस हुक्म संघ को निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर करते रहें।

—करणसिंह सिसोदिया
मंत्री
श्री वर्ध साधु स्था जैन श्रा संघ

उदयपुर (राज)

●△

संघ को प्रगति की ओर ले जावें

० यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आचार्य प्रवर पूज्य श्री नानालालजी म सा ने मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा को अपना उत्तराधिकारी युवाचार्य नियुक्त किया है। मुनि श्री इस दायित्व का निर्वाह कर संघ को ज्ञान साधना और धर्म साधना के क्षेत्र में प्रगति की ओर ले जावें, यही शुभ भावना है।

—प्रो सागरमल जैन
निदेशक
पूज्य सोहनलाल स्मारक पार्श्वनाथ शोधपीठ,
वाराणसी–५

शुभ घोषणा

शुभ घोषणा के शुभ समाचारों से सकल साधुमार्गी जैन श्रावक संघ में प्रसन्नता परिव्याप्त हो गई। पूज्य गुरुदेव, युवाचार्य श्री, संघ संरक्षक के दिशा दर्शन में संघ अधिकाधिक प्रगति पथ पर अग्रसर होता रहे व आध्यात्मिक जीवन से अनुप्राणित होता रहे।

बड़ी सादड़ी —श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ के सदस्य

✠ श्री रामलाल जी म सा को युवाचार्य पद पर चयन हेतु शुभ-कामनाए एव वन्दना ।

जितेन्द्र कुमार देवेन्द्र कुमार सेठिया
विराटनगर श्रीसघ

✠ हार्दिक शुभकामनाए एव बधाई ।

—मदनलाल जैन
शाखा सयोजक

भदेसर

नवमे पट्टधर नव आयाम प्रदान करे

आचार्य भगवन ने श्रीराम मुनिजी को चयनित कर समाज को अत्यन्त योग्य युवाचार्य दिया है । सम्पूर्ण सघ मे इस समाचार से असीम हर्ष है । वीर प्रभु नवम् पट्टधर आचार्य को फलने-फूलने में नव आयाम प्रदान करें ।

—शान्तिलाल मारू
मत्री—श्री साधुमार्गी जैन सघ

सरवानिया

निर्विघ्न पद सभाले

घोषणा से प्रसन्नता हुई । ईश्वर आचाय भगवन को दीर्घायु बनावे एव युवाचार्य श्रीजी को निर्विघ्न पद सम्हालने कीशक्ति प्रदान करें।

—पन्नालाल कोटडिया
स्था जैन श्रावक सघ

मुढीपार (खैरागढ)

युवा नेतृत्व बहुमुखी प्रगति

हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए सघ आशान्वित है कि युवा नेतृत्व में जिनशासन की बहुमुखी प्रगति होगी तथा भविष्य में चतुर्विध सघ अधिक उन्नति की ओर अग्रसर होगा ।

—निम्बाहेडा सघ के सदस्य

५ माच ९२

शासन की शोभा वृद्धि को प्राप्त हो

चादर महोत्सव के शुभावसर पर वन्दन, अभिनन्दन के साथ समारोह की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाए ।

पू आचार्य श्री एवं युवाचार्य श्री के नेतृत्व में जिनशासन की शोभा उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त हो, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

—फतहचन्द बाफना
अध्यक्ष, श्री व स्था जैन सघ

भोपाल

महत्वपूर्ण—चयन

तरूण तपस्वी, शास्त्रज्ञ, शुद्धाचार के पक्षधर, विद्वद्वय एवं होनहार युवाचार्य को पाकर कौन प्रसन्नता का अनुभव नहीं करेगा ? गौरवान्वित है श्री साधुमार्गी जैन सघ इस महत्वपूण चयन पर। युवाचार्य श्री देश-विदेश मे चतुर्दिक अपनी ख्याति फैलाते रहें—इसी शुभ एव मंगल कामना के साथ ।

—सूरजमल जैन (मीणा)
अध्यक्ष
श्री साधुमार्गी जैन संघ

उखलाना (टोक)

भावी पूज्य । पूर्ण समर्थ

मद्रास श्री सघ तथा नक्शा बाजार का श्रीसंघ अति आनन्दानुभूति करता है । आशा है हमारे युवाचार्य एव भावी पूज्य श्री रामलाल जी म सा अपने शुद्ध व उदार विचारों से जनमानस को पवित्र बनाते हुए भ महावीर का शासन दीपाने में अपने पूज्य आचार्यों एव नानेशाचार्य की तरह ही समर्थ होंगे ।

मद्रास (नक्शा बाजार सघ) —मांगीलाल धोका
७ मार्च ९२

अन्तरात्मा की साक्षी से निर्णय

आचार्य भगवन ने अपनी दीर्घ दृष्टि से चिन्तन मनन कर अन्तरात्मा की साक्षी से निर्णय लेकर मुनि प्रवर श्रीजी को युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया है । इस समाचार से गगाशहर भीनासर सघ के आबाल वृद्ध वर्गों मे प्रसन्नता की लहर परिव्याप्त हो गई ।

चतुर्विध सघ इनके गुणो आगम बल, दृढ आचार, परम पुरुषार्थ, सेवानिष्ठता, शास्त्रज्ञता आदि-से प्रभावित है । श्रीसघ उनकी आज्ञा को आपकी ही आज्ञा मानकर उनके निर्देशानुसार चलने हेतु सहर्ष कृत सकल्प है । आप चतुर्विध सघ को निरन्तर गतिशील बनाते हुए आत्मीयता प्रदान करते रहे यही आकाक्षा है । उनके नेतृत्व मे दिनो दिन शासन वृद्धिगत होवे की मगलकामना करते हैं ।

—बालचन्द सेठिया

गगाशहर-भीनासर अध्यक्ष, श्री साधुमार्गी जैन श्रावक सघ

भावी गौरवमय शासनेश

परम शात, दान्त, गभीर, परम श्रद्धेय श्री रामलाल जी म सा की युवाचार्य पद-घोषणा से परम प्रसन्नता है । पूरा विश्वास है कि सघ के आशानुरूप कार्य करते हुए भ महावीर के शासन को गौरवमय बनायेंगे ।

श्री साधुमार्गी जैन श्रा सघ, —कन्हैयालाल बोरदिया
रायपुर (भीलवाडा)

मरूधरा की पावन भूमि-बीकानेर का परम सौभाग्य है कि विशाल चतुर्विध सघ के सम्मुख अपना उत्तराधिकार व सघ का हुक्मेश शासन के नवम् पट्ट हेतु श्री रामलालजी म सा को सौंपा, जो तपोमूर्ति, विद्वान एव शास्त्रज्ञ हैं । युवाचार्य श्रीजी से यही कामना है कि निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति की सम्यक् रक्षा करते हुए शासन की शोभा बढ़ायें । ब्यावर श्रीसघ पर वरदहस्त एव कृपा दृष्टि सदैव बनी रहे ।

ब्यावर —श्री जैन मित्र मडल, ब्यावर के सदस्यगण
७ मार्च ९२

दूरदर्शिता पूर्ण निर्णय

आचाय भगवन द्वारा लिया गया यह निर्णय संघ एव शासन हित मे दूरदर्शिता पूर्ण एवं समयानुकूल है। एतदर्थ आचाय देव का हार्दिक अभिवन्दन कर विश्वास दिलाते हैं कि हमारा सघ एव सभी सदस्य प्रसन्नता का अनुभव करते हैं तथा पूण आस्था व्यक्त करते हैं।

अध्यक्ष —सुशील नागोरी
समता युवा सघ,
नवाबगज, निम्बाहेडा (राज)

अपार प्रसन्नता

आचाय भगवन द्वारा शास्त्रज्ञ मुनि प्रवर को युवाचाय घोषित करने के समाचार से रतलाम श्री सघ को अपार प्रसन्नता हुई है। हार्दिक अनुमोदन।

श्री साधुमार्गी जैन सघ, —रखबचन्द कटारिया
रतलाम

सघ को नवीन गरिमा प्रदान करेंगे

समाचार जानकर अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं। पं रत्न श्री रामलाल जी म सा धीर, गभीर और शास्त्रज्ञ होने के साथ ही अनुशासन प्रिय हैं इसमे कोई दो राय नहीं हो सकती। निश्चय ही वे सघ को नवीन गरिमा प्रदान करेंगे। मैं अपनी ओर से, हमारे परिवार की ओर से और श्री अ भा साधुमार्गी जैन महिला समिति की सभी सदस्याओं की ओर से इस निणय के प्रति प्रसन्नता व्यक्त करते हुए हार्दिक अनुमोदना करती हू। विश्वास दिलाती हूं कि समिति की सभी सदस्याए आपकी आशा और भावना के अनुरूप सघ हित में सदव कार्य करती रहेंगी।

अध्यक्षा —शान्ता देवी मेहता
श्री अ भा साधु जैन महिला समिति

सच्चा संघनायक राम

साधुमार्गी जैन संघ के लिए बड़े गौरव का विषय है कि हमें एक सच्चा संघनायक राम के रूप मे मिला है जो अंधकार रूपी मिथ्यात्व को दूर करके समाज को अपने ज्ञानोदय से प्रकाशमान कर नयी राह दिखाएंगे। छात्रावास के समस्त छात्रों की तरफ से भी शत-शत वन्दन।

रहावास (राणावास) —लालचन्द गुगलिया

रोम-रोम हर्षित हो उठा

युवाचार्य श्री की घोषणा एक योग्य निर्णय है। निर्णय से रोम रोम हर्षित हो उठा, सारे समाज मे हर्ष की लहर व्याप्त हो गई। निर्णय को शिरोधार्य करते हुए प्रतिज्ञा करते हैं कि आपके आदेशों का पूर्णत पालन करते रहेंगे। शत शत वन्दन।

क उपाध्यक्ष, —छगनलाल पटवा
पूल बाजार, जावरा

सेवा मे हर समय तैयार

युवाचार्य श्री को बहुत बधाईया। सभी पूर्वाचार्यों की तरह हमारे परिवार पर स्नेहदृष्टि रखावें। सरदारशहर संघ आपकी सेवामें हर समय तैयार है।

सरदारशहर (राज) —चन्दन जैन

निरन्तर आगे बढे

अति प्रसन्नता व्यक्त करते हैं एवं शुभकामना करते हैं कि आप निरन्तर आगे बढते रहें।

श्रीसंघ, नाई (उदयपुर) —भैरुलाल कोठारी

जोहरी एव रत्न को नमन

कंकर के ढेर में रत्न की खोज करना आसान काम है, परन्तु रत्नों के ढेर मे से किसी विशिष्ट रत्न को खोज निकालना दुरूह काय है । समता विभूति पारखी आचाय ने रत्नो के ढेर म से विशिष्ट रत्न की खोज कर दुरूह कार्य सम्पन्न किया है ।

इस शुभ वेला मे जोहरी एव रत्न को नमन तथा सहस्र-सहस्र शुभकामनाए ।

बीकानेर —वीरचन्द सेठिया

अनमोल रत्न

आचाय श्री ने बिना पूर्व सूचना अथवा निश्चित कायक्रम के युवाचार्य पद की घोषणा कर वर्तमान भौतिकवादी युग में समाज को एक बार फिर आध्यात्मिक पथ की ओर ले जाने का प्रयास किया है। संघ व समाज को ऐसे महापुरुषो पर नाज है । सच्चे जोहरी की भांति युवाचाय रूप मे जिस रत्न को परखा है—अनुपम, अनुकरणीय एवं प्रशसनीय है । समता बालक मण्डली की ओर से अनुमोदन करता हू।

युवाचार्य श्री वतमान शासनेश के कर्तृत्व को और गतिशीलता प्रदान करें । सघ व समाज नित नवीन विकास-आयाम प्राप्त कर आध्यात्मिक पथ की ओर बढ़े । शुभकामना ! सादर वन्दना !!

अध्यक्ष —गुलाब चोपड़ा
अ भा समता बालक मण्डली
बम्बई

अभिनन्दन

समता युवा सघ की ओर से शुभकामनाए समर्पित । हम अनुशासनबद्ध शासन निष्ठता का विश्वास दिलाते हैं । अभिनन्दन !

शाखा सयोजक, चिखरदा —पन्नालाल सोढ़ा

वर्चस्व वर्धमान रहे

युवाचार्य पदाभिषेक दिवस पर युवाचाय श्री जी को मेरी एव परिवार की भावभीनी वन्दना एव हार्दिक बधाईया दशो दिशा में आपका वचस्व वर्धमान रहे ।

अमरावती (महाराष्ट्र) —प्रकाशचन्द कोठारी

❋

महत्त यात्रा में सफल हो

हुक्म सघ के मुक्ताहार में
चमकते हुए माणिक्य,
युवाचार्य प्रवर श्री राम मुनिजी म सा
की सेवामे श्रद्धापूवक वन्दन एव
अभिनन्दन ..

आपका सयमी जीवन यशस्विता वचस्विता के साथ सदैव चिरस्मरणीय रहे । आपकी यह सयम यात्रा अप्रतिहत रूप से गतिशील रहे । आपके मन मे, तन में, चिन्तन में, चेतन मे समाधि भाव की निरन्तर वृद्धि होती रहे यही भावना ।

आप अणु से विराट,
बिन्दु से सिन्धु,
कण से मण
साकार से निराकार
सापेक्ष से निरपेक्ष
सयोग से अयोग
की महत्त यात्रा में सफल हो
इसी शुभेच्छा के साथ .. ...

पूना —विजय ने पटवा

❋

प्राप्त करके भी आप में कभी अहंकार की भावना नहीं हुई वास्त विकता तो यह है कि आपका जीवन संयम प्रधान तथा कर्त्तव्य प्रधान जीवन ही रहा है आचार्य के अन्तरंग भावो को जानने की आपकी पकडविल क्षण रही है। आगमिक धारणाओ के प्रति आपकी समर्पण भावना भी अत्यन्त प्रशसनीय है, आचार्य श्री आपकी इन भावनाओं से बडे प्रभा वित हैं। इसमे किंचितमात्र की अतिशयोक्ति नहीं है। हमारे आचार्य प्रवर भी दूरदर्शी व मननशील तथा चिन्तनशील है। वर्षों के परीक्षण, चिन्तन तथा मनन के पश्चात् आप जैसे सुयोग्य तथा नैसर्गिक प्रतिभा के धनी आपको युवाचार्य पद जैसा गुरुतर भार सौंपा है, तो आप भी परम श्रद्धेय आचार्य श्री के अनन्त शुभाशिर्वादों को प्राप्त करते हुए तथा हम सब चतुर्विध सघ और खासकर श्रावक श्राविका वर्ग की अनन्त सद् भावनाओं से अवश्य ही इस भार को आसानी से वहन कर सकेंगे। सस्कृत के एक कवि के शब्दो में —

कीटोऽपि सुमनस्सगात आरोहति सतां शिर ।
अश्मादपि यापि देवत्व महद्भिस्सु प्रतिष्ठित ॥

वैसे तो आप मनस्वी है आप ओजस्वी है आप तेजस्वी हैं लेकिन यदि इसमें किसी प्रकार की न्यूनता रही तो आपके गुरु आचार्य श्री के तेज दिव्य शक्ति दिव्य प्रभाव स्वत: आपमें प्रकट हो जावेगा और आप भी आचार्य श्री की भांति ही जैन जगत के एक देदीप्यमान नक्षत्र के रूप मे अपनी गरिमा तथा ख्याति प्राप्त कर गौरवान्वित होंगे और शासन की निरन्तर सेवा करते हुए हम सबकी आशाओं और अपेक्षाओं की पूर्ति करेंगे, ऐसी शासन देव से प्रार्थना है।

आप शतायु हों, ज्ञान दर्शन व चारित्र की अनुपम आराधना करते हुए सघ व समाज को प्रशस्त मार्ग दर्शन करें, यही वीतराग-प्रभु से विनम्र प्रार्थना।

योग्य चयन

श्रद्धास्पद आचार्य श्री नानालालजी म सा ने पूज्य मुनिराज श्री रामलाल जी म सा को युवाचार्य पद प्रदान के साथ अपना उत्तराधिकार सौंपकर एक महती आवश्यकता की पूर्ति की है।

मेरे आदरणीय पिता ख्याति प्राप्त राजवैद्य श्री भंवरलालजी सुराणा पूज्य युवाचार्य श्री के गुणो का जब वर्णन/स्मरण करते तो गद गद् हो जाते। पूज्य युवाचार्य प्रवर से मैं निकट से परिचित हूँ। श्रद्धेय गुरुदेव के निदान प्रसग से और घनिष्ठ सम्पर्क हो गया। मुझे उनके जीवन में अनेक गुणो का सगम साक्षात् देखने का अवसर मिला है। आदर्श क्षमाशीलता, विनम्रता, सेवा परायणता, सजगता, सयम निष्ठता विद्वत्ता आदि ऐसे गुण उनके जीवन मे हैं जो जनसाधारण को तो क्या आचार्य श्री को भी आकर्षित किये बिना नहीं रह सके। इन्हीं गुणो के आधार पर ही आचार्य श्री ने आपको युवाचार्य पद पर आरूढ़ किया है।

मेरी मनोकामना है कि आप मे ये गुण और अधिक प्रवर्धमान हों और शासन के भार को वहन करते हुए स्व पर कल्याण मे निरत रहे। डॉक्टर होने के नाते मैं यह भी कामना करता हूँ कि आप सदा स्वस्थ रहे।

—डॉ सुन्दरलाल सुराना
ए बी एम एस (एम टी)

नोखा

सघ के सिरमोड

शान्त गम्भीर एव नम्र आत्म साधक युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा का व्यक्तित्व अनूठा है। संयम साधना एव गुरु भक्ति के बल के कारण लघुवय मे आप सघ के सिरमोड बन गये हैं।

आप आचार्य श्री की तरह ही जैन जगत के एक नक्षत्र के रूप में गौरव एव ख्याति प्राप्त कर समाज को दिशा प्रदान करेंगे। शत शत वन्दन, अभिनन्दन।

—प्रो सतीश मेहता

श्री जैन पी जी कॉलेज
बीकानेर

अभिव्यक्ति हेतु शब्द सामर्थ्य नहीं

आचार्य भगवन ने देशकाल भाव दृष्टिगत रख सघ हेतु जो नई व्यवस्था दी है तदर्थ हम आभारी हैं। शासनदेव से प्रार्थना है कि अनुशास्ता द्वारा प्रदत्त समीचीन व्यवस्था सम्पूर्ण चतुर्विध संघ के उत्कर्ष में सहायक हो। हमारा सघ गौरवोत्तर सीमाओं को पार करें।

हृय के इन क्षणो मे अधिक अभिव्यक्ति शब्दो में समर्वित नहीं।

जयपुर —पीरदान पारख

५ मार्च ९२ पूर्व मंत्री, श्री अ भा सा जैन संघ

युग-मांग की पूर्ति हुई

युवाचार्य श्री का चयन युग माग की पूर्ति एव विशाल सघ की सुव्यवस्था हेतु अनिवार्य था, जो युग द्रष्टा आचार्य श्री ने समय पर किया है। क्रियानिष्ठ, तपोनिष्ठ, शान्त एव गम्भीर प्रकृति के सन्त श्री युवाचार्य श्री हुक्म परम्परा को सुरक्षित रखने मे जहा सक्षम हैं वहां इसे और अधिक विकसित करने में भी सफल सिद्ध होंगे।

आचार्य श्री द्वारा प्रदत्त दायित्व निभाते हुए युगों युगो तक समाज को, मानव मात्र को सम्यग् दिशा दर्शन देते रहें, यही शुभेच्छा है।

गगाशहर (बीकानेर) —शशि छाजेड़ 'प्रतिभा'

ठोस निर्णय। सराहनीय निर्णय

युवाचार्य श्री जी का जीवन महकता चन्दन है! संयम ही जिनकी सांस और धड़कन है। युवाचार्य महोत्सव के अवसर पर अन्तर मन से शतश अभिनन्दन।

हकीकत में दृढ़ता के धनी दीर्घ अनुभवी, आचार्य भगवन ने अपनी पैनी दृष्टि से जो ठोस निर्णय लिया वह सराहनीय ही नहीं, अति सराहनीय है।

वेद परिवार का अभिनन्दन! शत शत वन्दन!!

ईरोड —आर पुखराज बेद

गौरव की श्री वृद्धि करे

प्रसन्नता की बात है कि मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म सा को 'युवाचाय' पद प्रदान किया गया है। मेरे ससारपक्षीय "मामा" होने के कारण मुझे अतिरिक्त प्रसन्नता है।

आचाय भगवन् की दृष्टि कुछ अलौकिक ही है। उन्होंने मुनि प्रवर को जिस योग्य समझा है, वे उससे भी अधिक योग्यतर योग्यतम निकलें एवं विशाल गच्छ-संघ के गुरुतर भार को कुशलता से वहन करते हुए सघ, समाज, माता पिता, गुरु, भूरा कुल एव जिनशासन के गौरव की श्री वृद्धि करें यही शुभाशा है।

नोखा (बीकानेर) —चन्द्रकला बोथरा

△
△△

अपार प्रसन्नता

हमारे युवाचार्य श्री जी एक अलौकिक महापुरुष के चरणो में रहकर वीर बने हैं।

जिनके जीवन में त्याग-तपस्या का सरोवर लहरा रहा है। ऐसे महान् पुरुष को नाना ने 'नाना' प्रकार से परख कर युवाचार्य पद पर विठाया है, जिसकी हमे अपार प्रसन्नता है। अनन्त अनन्त शुभकामनाएं हैं।

बालोतरा — पुखराज चौपडा

—❀—

कोहिनूर हीरा

आचार्य भगवन प्रदत्त कोहिनूर हीरा प्राप्त कर चतुर्विध सघ अति आनन्द की अनुभूति कर रहा है। मेरा मन हर्ष से सराबोर है।

युवाचार्य श्रीजी के नेतृत्व मे सघ उत्तरोत्तर विकासशील होकर उन्नति करता रहे। आप यशस्वी, तेजस्वी एव वचस्वी बनकर सघ को चमकावें, महकावें तथा दीप्तिमान कर अपनी छटा चतुर्दिक फैलावें—यही मगलकामना है।

बीकानेर —भवरलाल बडेर
ज्ञानचन्द, सुरेन्द्र, वीरेन्द्र बडेर

महत्वपूर्ण चयन

गुरु भक्ति, समपण, सेवानिष्ठता, विवेक, सयम के प्रति जागरूकता, अप्रमत्त भावना, तपोनिष्ठता, परम पुरुषाय, निणय कौशल, तार्किक मनीषा आदि गुणो से अलकृत युवाचाय श्री का चयन जिनशासन के लिए महत्वपूर्ण है । मंगल कामना है कि आप अपने ज्ञान, विवेक और आगमिक धरातल से उत्तरदायित्व का कुशलतापूवक निवहन करेंगे । सघ की अभिवृद्धि करें, इसे देदीप्यमान करें ।

उखलाना —रतनलाल जन

उच्चादर्शो को मूर्त करें

युवाचार्य श्री दीर्घायु हों एवं आचार्य श्री के उच्चादर्शों को यथाथ रूप मे अंगीकृत कर अजर-अमर बन जाए । शुभकामनाएं ।

गुरुदेव के चरणो में—

मम्मो नमोस्तुवि महामाये, श्री पीठे सुर पूजितै ।

श्वेत वस्त्र रजोहरण हस्ते, गुरु नानेश नमोस्तुते ॥

पो मरतडी —देवेन्द्रसिह र

वाया-मावली (राज)

चिराग बनकर रोशनी प्रदान करेंगे

श्रीकाणे में आचाय श्री ने ऐतिहासिक कार्य किया है कि महावीर के शासन में एक कडी और सयुक्त कर हमे लाभान्वित कि है । युवाचार्य श्री इस सघ को विशिष्ट सेवाए प्रदान कर इसे अं विकसित करेंगे तथा सघ/शासन के चिराग बनकर रोशनी प्रदान क रहेंगे ।

बीकानेर —गोरधनलाल सोलकी एव परिव

सोने मे सुगन्ध

आचार्य प्रवर की घोषणा उत्तम एव आदर्श है। युवाचार्य श्री 'यथा नाम तथा गुण' राम राज्य करेंगे एव सोने मे सुगन्ध सिद्ध होंगे। शत शत बार स्वागत।

चिकारडा —गेहरीलाल जैन

महामन्त्री,

आसावरा माता अहिंसा प्रचार समिति

दृढ सयमाचार का आदर्श प्रस्तुत करें

मगल कामना हैं कि पूर्वाचार्यों की लब्धि प्राप्त युवाचार्य श्री जी जिनशासन की सेवा करते हुए दृढ़ सयमाचार का आदर्श प्रस्तुत करें। चतुर्विध सघ को आत्मीय वात्सल्य प्रदान करते हुए अपने आत्मबल से इसके प्रिय बने रहे।

बीकानेर —सुदरलाल सौरभकुमार सुखानी

सामयिक निर्णय

आचार्य भगवान का सामयिक निर्णय चतुर्विध सघ के बहुमुखी विकास एव भावी की सुरक्षा का कवच सिद्ध होगा। सघ सदस्यो के लिए पूज्य गुरुदेव की निरन्तर चिन्तन आधारित नवनीत रूप घोषणाए आह्लादकारी हैं।

युवाचार्य श्री, सरक्षक मुनिवय व परामर्श मण्डल के प्रेरणा- ...त्कृष्ट सयम साधना, विद्वता व श्रमण सस्कृति के प्रति सजगता की अभिवृद्धि सुनिश्चित है। इनके समर्पित जीवन की अभ्युदय व गतिशील बने रहने मे सहायक सिद्ध होगी। ...गौरवान्वित अनुभव करते हुए सर्वतोभावेन प्रसन्नता ...।

—धनराज बेताला

निर्णय : प्रखर अनुभव के आधार पर

आचार्य प्रवर ने गहन सूझबूझ एव दीर्घकाल के प्रखर अनुभव के आधार पर चतुर्विध सघ के सर्वतोमुखी विकास हेतु लिये गये निर्णय की तहे दिल से अनुमोदना करते हैं।

हमारा सघ यह प्रतिज्ञा करता है कि युवाचार्य श्री १००८ श्री रामलाल जी म सा सघ हित मे जो भी आदेश निर्देश देंगे, उसका अन्त करण पूर्वक पूर्ण श्रद्धा और भक्ति के साथ पालन करने में अपना गौरव समझेगा।

युवाचार्य श्रीजी के शासन काल मे चतुर्विध सघ बहुमुखी आध्यात्मिक विकास करे, रत्नत्रय की अभिवृद्धि करे। जिनशासन उन्नति के शिखर पर आरूढ हो और शान्ति-सुख का साम्राज्य स्थापित हो यही शुभ एव मगलकामना है।

मदेसर श्री साधुमार्गी जैन श्रा संघ

अध्यक्ष मीठालाल जैन मत्री-हरकलाल जैन शाखा सयो -मदनलाल जैन

एव समस्त श्रावक गण

—✲✲✲—

कुशल जौहरी की परख

यथा नाम तथा गुण सत-रत्न की परख कुशल जौहरी ही कर सकता है। जो कठोर व निस्पृह साधना, निष्ठा, गुरु भक्ति, समर्पण, लगन समन्वित व्यक्तित्व के धनी हैं। भारत के भविकों का मस्तक उन चरणों मे सदा झुकता है जो सयम रूपी तपस्या के धनी, सदाचार रूपी वित्त के अटल स्वामी तथा लोक कल्याण के लिए सर्वस्व के त्यागी हैं। आप अह से कोसों दूर रहे हैं, आचार्य श्री के विचारो व भावनाओं को बिना कुछ कहे समझने में समर्थ हैं तथा सेवामें अपना सानी नहीं रखते। सहज ही स्वर फूट पडता है—

हु मि उ चो श्री ज ग ना रा,
अमर रहे यह संघ हमारा।
नाना राम हारा,
युवाचार्य है ा।

ब्यावर — म

गुरु सेवा का सुफल

समाचार पढ़कर अपार हर्ष हुआ । 'हुक्म परम्परा के युवाचाय पदालकृत होना आपकी सत्रह वर्षों की निरन्तर तप सयम साधना एवं गुरु सेवा का ही फल है । इस शुभावसर पर गोयल परिवार की ओर से बधाई ! बधाई !! बधाई !!!

द्वारा-श्री मोहनलाल जैन
३२२८/२ सेक्टर ४०-डी
चण्डीगढ़

—दीपक कुमार (गोयल)
(प्रपौत्र श्री पुष्प मुनिजी)

卐

विचक्षण–देन

परम श्रद्धेय चारित्र चक्रवर्ती, समता दर्शन प्रणेता, प्रातः स्मरणीय आचार्य-प्रवर द्वारा युवाचाय पद की घोषणा एव चादर प्रदान दिवस के रूप मे दो स्वर्णिम अवसर प्राप्त कर बीकानेर धन्य हो गया। धरती धन्य हो गई । ऐतिहासिक दुग मे आयोजित समारोह म महावीर के समोशरण जैसा प्रतीत हो रहा था । चारो ओर वातावरण मे उल्लास दशनीय था । जो प्रत्यक्षत देख पाया उसके लिए स्मरणीय बन गया ।

आचार्य भगवन ने सघ को बडी सूझबूझ के साथ यह विचक्षण देन दी है ।

मद्रास

—तोलाराम मिन्नी

निर्णय का अभिनन्दन

आचार्य श्री नानेश के निणय का अभिनन्दन,
युवाचार्य श्री राम मुनि को शत शत वन्दन ।
बढ़ निरन्तर स्नेह, एकता अरू अनुशासन,
रहे महकता सतत साधना से यह उपवन ॥

सम्बोरा (उदयपुर)

—दिलीप धींग

युवाचार्य श्री जिनशासन को दीपावें

जिनशासन की प्रभावना हेतु गुरुदेव ने योग्य निर्णय लिया है। मनावर श्री संघ की तरफ से व मेरी ओर से हार्दिक शुभ अभिनन्दन करते हुए शासन देव से प्रार्थना है कि पूर्व आचार्य भगवन्तों के अनुगामी रहते हुए युवाचार्य श्री जिनशासन को दीपावें।

मनावर —सौभाग्यमल जैन

पात्रता में खरा उतरा

अपने आत्म विश्वास, गुरु भक्ति, सेवा, लगन, कर्त्तव्यनिष्ठा, शान्तचित एवं गुरु सानिध्य पाकर अटूट विश्वास का प्रतीक, तपस्वी एवं मनस्वी आज उत्तराधिकार पात्रता में खरा उतरा है। गुरुदेव की आन्तरिक भावना, अर्न्तदृष्टि एवं दिव्य परख को कितना सराहा जाय! पूरा विश्वास है कि आप समता को साकार रूप देने हेतु संकल्पित रहेंगे। 'तिन्नाणं तारयाणं' कहते हुए शत शत नमन है।

रामपुरिया कॉलेज, बीकानेर —प्रो रतनलाल जैन

अत्यन्त प्रमोद

अत्यन्त प्रमोद हुआ। पूरा विश्वास है आचार्य श्री एवं युवाचार्य श्री की नेश्राय में जैन संघ की जाहो जलाली में निरन्तर वृद्धि होगी।

चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट —शांतिलाल खाब्या
भोपाल

असीम प्रसन्नता

शास्त्रज्ञ मुनि प्रवर को युवाचार्य पद से विभूषित किया गया, असीम प्रसन्नता का विषय है।

दोंडाइचा मदनलाल पन्नालाल जैन

अन्तर आत्मा की पहचान

दिव्य दृष्टा के रूप में आचार्य श्री ने श्री राम मुनि को चयनित किया यह एक आदर्श है। आपकी अन्तर आत्मा की पहचान से सकल सघ हर्ष एव आनन्द विभोर है।

मुगेली —सौभाग्यमल कोटडिया

देशाणे का लाल बना सघ का भाल

देशाणे के लाल ने कर दिया निहाल। समस्त नागरिकों के हृदय में प्रसन्नता तथा आनन्द की सीमा नही है। मगल कामना है कि शासन की उत्कृष्ट सेवा करते रहें।

देशनोक (राज) — धूडचन्द बुच्चा

उत्तरोतर वृद्धि करे

आशा है श्रद्धेय युवाचाय श्री जी पूज्य आचार्य श्री के सान्निध्य में शासन सचालन सुचारू रूप से करेंगे और पू आचाय श्री द्वारा स्थापित सघ की मान मर्यादा व प्रतिष्ठा में उत्तरोतर वृद्धि करेंगे।

जोधपुर (राज) —उगमराज खींवसरा
—मांगीचन्द भडारी, उगमराज मेहता

मन्थन

थैली मे है अमृत कलश।

देशनोक (राज) —जयन्त भूरा
—सरला, सरिता, जया, अभिषेक, खुशबू, अरिहन्त भूरा

करते चरणों मे वन्दन है

आज हवाएं मचल मचल कर
करती आपका अभिनन्दन है ।
नभ के नक्षत्र चमक चमक कर
करते चरणो में वन्दन है ।

युवाचार्य का निर्णय महत्त्वपूर्ण एव शासन के अनुरूप है । युवाचार्य श्री सघ गरिमा में आये दिन निखार लाते रहें, इन्हीं शुभ भावो के साथ-वन्दन अभिनन्दन करती हुई—

तुम एक गुल हो,
तुम्हारे जलवे हजार है ।
तुम एक साज हो,
तुम्हारे नगमें हजार है ॥
खिले सुमन सद्‌गुणों के प्रतिपल ।
मानस सौरभ लिये विशाल ॥
मान सरोवर पर नित आते ।
पाते मौक्तिक दिव्य मराल ॥

जदिया (विहार) —मुमुक्षु सुमन भूरा

स्वय मे गौरवपूर्ण

० गुरुदेव का समयानुकूल सही निर्णय स्वागत योग्य है । जिनकी तप, ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान आदि मे एक अद्‌भुत चिन्तन शैली है और जो आकर्षक व्यक्तित्व, ओजपूर्ण चेहरा, समतापूर्ण दृष्टि कोण, सरलता विद्वता की प्रतिमूर्ति, तपोमणि, ज्ञानमूर्ति हैं उनके युवाचार्य/उत्तराधिकारी बनना स्वय मे गौरवपूर्ण है ।

आचार्य श्री के आशानुकूल उनके मिशन में सफल हों ।

वन्दना के साथ शुभ कामनाएं स्वीकार करें ।

मेहता पाटी, उदयपुर —महेन्द्र कुमार मलवाया

आचार दृढता के प्रतीक

० युवाचाय श्री जी से मेरा वैराग्यकाल से ही सम्पक वना हुआ है आपके दीक्षा प्रयास में संयुक्त होने का भी मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

ज्ञानी, घ्यानी, परम तपस्वी, सेवानिष्ठ श स्त्रज्ञ, ज्योतिषज्ञ, आचार दृढ़ता के प्रतीक सयम साधना में व्यस्त युवाचार्य श्री जी पर विश्वास है कि वे जिनशासन की भव्य प्रभावना करेंगे। निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति अक्षुण्ण रहेगी और हुक्म सघ की अभिवृद्धि होगी।

मेरी और सुखानी परिवार की मंगल कामना है कि युवाचाय श्री इस उत्तरदायित्व को उत्तरोत्तर गतिशील बनाते हुए धम की प्रभावना करेंगे।

बीकानेर —भवरलाल जयचवलाल सुखाणी
एव समस्त सुखानी परिवार

सोनियोग्राफी

० आचाय श्री चिन्तन मनन के महासागर है। परख दृष्टि की अपेक्षा 'सोनियोग्राफी' है। युवाचाय का चयन वस्तुत आपकी परख दृष्टि का उदाहरण है। द्वय महापुरुषो को व दन के साथ—

श्रो राजस्थान के सुरगे गुलाव।
चरणो मे समर्पित है भावो का शैलाव॥

अहमदाबाद —पारसमल बागमार

सामयिक कदम

० युवाचाय पद की घोषणा कर आचाय श्री ने सघ हित में एक साहसिक कदम उठाया है। कलकत्ता स्थानकवासी समाज मे आनद व उत्साह की लहर जागृत हुई है एवं सघ के प्रति निष्ठा की भावना वलवती हुई है।

कलकत्ता —रिखबदास भसाली

एक कदम आगे

० श्रमण संस्कृति के इतिहास में चादर प्रदान समारोह स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। हमें विश्वास है कि युवाचार्य श्री चतुर्विध संघ की सांगोपांग प्रगति में एक कदम आगे रहेंगे। आपका निस्पृह एवं निर्लिप्त जीवन शासन की सेवा दिन दूनी रात चौगुनी करता रहेगा।

फतेचन्द डागा   धूड़चन्द डागा   आसकरण डागा
एवं समस्त डागा परिवार
गंगाशहर (बीकानेर)

बहुमूल्य परख

० आचार्य श्री की परख बहुमूल्य सिद्ध होगी। हम यह विश्वास दिलाते हैं कि युवाचार्य श्री की प्रत्येक आज्ञा को शिरोधार्य कर अपना कर्तव्य पालन करेंगे।

ताल (रतलाम) —मणिप्रभा पोतलिया

शब्दातीत हर्ष

० सेठिया धार्मिक भवन में युवाचार्य पद की घोषणा इतिहास का अपूर्व पृष्ठ बन गया। श्रोताओं द्वारा हर्ष हर्ष की जयध्वनि के साथ व्यक्त अनुमोदना से हुए हृदय वातावरण का वर्णन शब्दातीत है। युवाचार्य श्री शास्त्रों के गहन रहस्यों को सरल, सरस भाषा में प्रस्तुत करने की क्षमता रखते हैं तो सभी को साथ लेकर चलने की कला भी आप में है।

युवाचार्य श्री का फरमाना सत्य है कि पू. गुरुदेव ने संघ का गुरुतर दायित्व सौंपते हुए इन्हें ५५ स्थविर भगवंतों की गोद में बठाया है। आपको मन की शान्ति, वात्सल्य से पारस जैसा ज्ञान, निर्मल प्रेम एवं विजय का मार्ग मिलता रहेगा।

बीकानेर —सुशील बच्छावत

चतुर्विध सघ के प्रिय बने रहेंगे

० युवाचार्य श्री चतुर्विध सघ की प्रभावना करते हुए उत्तरदायित्व का भलीभांति निर्वाह करेंगे एव चतुर्विध सघ के प्रिय बने रहेंगे। यही शुभ भावना है।

बीकानेर

—इन्द्रादेवी सुखानी
अध्यक्ष
श्री साधुमार्गी जैन श्राविका सघ

प्रमोद ही प्रमोद

० पावन प्रज्ञापुंज, सत्य साधना निकुंज, आगम ज्ञान की अगाध निधि, सयम सेवा के तपोदधि युवाचार्य श्री के चयन से निखिल शासन धन्य धन्य हो गया है।

तप त्याग की चमकती मशाल हो तुम,
उज्ज्वल निर्मल सौम्य शशि से भाल हो तुम।
सुस्वागत है तेरा, ओ शासन के देवता,
दिग दिगन्त मे उडती यश गुलाल हो तुम ॥१॥

मौलिकता से सारा रगा हुआ काज है,
सत्य सयम साधना जीवन का साज है।
आध्यात्मिकता से ओत प्रोत युवाचाय प्रवर,
देख २ हो रहा मुझे अतीव नाज है ॥२॥

फैलेगा निनाद समता का कण कण,
गूंजेगा जयनाद दुनिया में हर क्षण।
विचक्षण विभा से मिला है संघ को,
भावी का भव्यतम नायक विलक्षण ॥३॥

शुभ कामना है कि आप त्याग साधना के पुनीत लक्ष्य हेतु शीघ्र प्रगति पथ में अग्रसर हो।

गगाशहर (बीकानेर) —बं सुनीता डागा, बी ए

धिन दे रामा धिन्न

देशाणो करनल कृपा, विश्व माय विख्यात ।
सती मत उपज अठे, जस री जोत जगात ।।१।।
करणी री किरपा रही, भूराकुल भरपूर ।
जिण कुल रामो जनमियो, निरमल झलके नूर ।।२।।
सुतज अमोलख रो सुणो, नामी नेमीचन्द ।
जिणरे रामो जनमियो, उण दिन हुयो अणद ।।३।।
माचलियो कानू कहू, धिन गवरा रा छीव ।
जिणरी कूख ज जनमियो, उत्तम राम अतीव ।।४।।
भ्रात जेष्ठ जिण रो भले, लाखो मागीलाल ।
वैरागी गृहस्थी बण्यो, करै शील प्रतिपाल ।।५।।
लगन राम रे उर लगी, मुगती री मन मांय ।
जोग लियो तज भोग जग, जिन गुरु शरणे जाय ।।६।।
उत्तम शिष अपणावियो, गुरु नाना दे ज्ञान ।
केवल मुगती कारणै, धरै निरजन ध्यान ।।७।।
पद युवा आचाय रो, पायो राम प्रवीण ।
जिण कारण जग मायने, बाजे जस री वीण ।।८।।
आचलियाणी रै उदर, उपज्यो राम रतन ।
तात भूराकुल तारियो (तनै) धिन दे रामा धिन्न ।।९।।
गावे मगल नार नर हरख हिये में होत ।
देशणोक जग मे दिपै, जस रामे री होत ।।१०।।
तप साध सन तापकर, साधक सयम सग ।
पायो जीव उधारवा, (तनै) रंग रै रामा रंग ।।११।।

देशनोक —सोहनदान चारण

कोटिश बधाईयां

० इस शुभवसर पर हमारे परिवार की ओर से कोटिश बधाईयां, शुभ कामनाएं, वंदन व हार्दिक अभिनन्दन ।

निसाई —सुभाष चोरड़ा

हार्दिक प्रसन्नता

○ प रत्न श्रद्धेय राम मुनिजी म सा को युवाचार्य घोषित किया है जानकर संस्थान परिवार मे हार्दिक प्रसन्नता व्याप्त हो गई है। चादर दिवस के उपलक्ष्य मे हार्दिक शुभकामनाए एव श्रीचरणो में वन्दन।

—डॉ सुभाष कोठारी
प्रभारी एव शोध अधिकारी
आगम, अहिंसा, समता एव प्राकृत सस्थान

उदयपुर

शान्त दान्त गम्भीर

○ पूज्य आचार्य श्री जी ने अपनी सूझबूझ एव दूरदर्शिता से आप श्री को सर्व दृष्टि से सुयोग्य, निष्ठावान, अनुशासन प्रिय शान्त दान्त गम्भीर, शास्त्रज्ञ एव समन्वय प्रतीक पाकर ही इस पद पर सुशोभित कर महान उत्तरदायित्व सौंपा है। हमारी ओर से शत शत वन्दन सहित हार्दिक बधाई स्वीकारें। पूर्ण विश्वास है कि पूज्य गुरुदेव के सानिध्य एवं मार्गदर्शन मे अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए सघ शिरोमणि पद को गौरवान्वित कर रत्नत्रय की उत्तरोतर अभिवृद्धि सहित आत्म विकास की ओर निरन्तर अग्रसर रहकर समाज को चरमोत्कर्ष पर पहुचाने का दिशा बोध प्रदान करेंगे। बधाई स्वीकारें।

नीमच सिटी —नाहरसिंह राठौड

सम्पूर्ण मेवाड मे हर्ष की लहर

○ मुझे ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मेवाड में हर्ष की लहर परिव्याप्त हो गई। युवाचार्य चादर महोत्सव के पावन प्रसग पर हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

—गणेशलाल सहलोत
समता प्रचार सघ

चित्तौडगढ

पूर्वाचार्यो के आदर्श को जन-जन मे प्रगट करें

० युवाचार्य श्री जी की मेधाशक्ति प्रखर हैं। आपश्री ने असीम तल्लीनता सहित गहन अध्ययन किया है एवं सयम समर्पित, सजग, क्रियाशील बनकर सेवा साधना में रत रहते हैं।

यही शुभ कामना है कि आपश्री हुक्म सघ, नानेश शासन की यशकीर्ति दिग्दिगन्त फैलाते हुए पूर्वाचार्यों के आदर्शों को जन-जन में प्रकट करें।

सुवासरा मण्डी —मेहता परिवार

शब्दातीत अनुभूति

० शातमूर्ति एव समर्पित श्री राम मुनिजी म सा को पादर प्रदान कर आचार्य भगवन् ने महत्ती कृपा की है। हमें अपार हर्ष एवं आनन्द की अनुभूति हो रही है। एतदर्थ शब्द नहीं हैं। बधाई दें। आभार मानें या उपकार। आचार्य श्री का निर्णय सर्वोपरि है। हम सब उनके आदेश पर नतमस्तक हैं।

संयोजक, विनियोजन मडल —केशरीचन्द सेठिया
(श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ) मद्रास

नानेश की गरिमा को प्रवर्धमान करें

मगल समाचार कर्ण गोचर होते ही हृदय हर्ष विभोर हो गया।

आचार्य श्री ने अपनी दिव्य दीर्घ दृष्टि से मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा को युवाचार्य पद प्रदान किया। युवाचार्य श्री प्रभु महावीर के उज्ज्वल शासन के सवाहक बन हुक्म गच्छाधिपति आचार्य श्री नानेश की गरिमा को प्रवर्धमान करें।

अभिनन्दन ! अभिनन्दन !! अभिनन्दन !!!
शत शत वन्दन ! शत शत वन्दन !!

भिलाई —वैरागपती समता जन

सगठन-क्षमता एव सयम-साधना के प्रतीक सत रत्न

० शास्त्रज्ञ, सगठन क्षमता के धनी एवं कठोर सयम साधना के पक्षधर ऐसे महान, तपस्वी युवा सत रत्न श्री राम मुनि का युवाचार्य हेतु चयन के लिए पू आचार्य भगवन् को हमारी ओर से कोटिशः धन्यवाद एव युवाचार्य श्री जी को हार्दिक बधाई ।

साचरोद —झमकलाल चौरडिया (बरखेडा)

शासन की शोभा बढावे

० जिस योग्यता को परख कर आचार्य श्री जी ने अपना उत्तराधिकार प्रदान किया, उसी योग्यता मे दिन दूना रात चौगुना निखार लाते हुए इस महान् गुरुतर भार को अच्छी तरह से वहन करते हुए शासन की शोभा बढावें ऐसी शुभ कामना ।

पाली —शान्तिलाल सिघवी

卐

अनिर्वचनीय प्रसन्नता

(बुजुर्ग परिजन की अपेक्षाए)

० शत-२ वन्दन । आपको शासन की बहुत बडी जिम्मेदारी दी गई है । जिनेश्वर देव से प्रार्थना है कि आपका यश भी, गुरुदेव की भाति, दिन-ब-दिन वृद्धि को प्राप्त हो । मधुर एव सतुलित भाषा में आपका व्याख्यान सुनकर अनिवचनीय प्रसन्नता हुई है । यही शुभेच्छा है कि आपकी वक्तृत्व कला चिर नवीन आयाम पाए । पूरा विश्वास है कि सन्त सतियो से मधुर-व्यवहार, विचार-विमश करते हुए अनुशासनवद्ध गति देते हुए चतुर्विध सघ को प्रगति पथ मे अग्रसर करेंगे ।

देशनोक – दीपचन्द भूरा

पूव अध्यक्ष श्री अ भा सा जैन सघ

प्रखर व्यक्तित्व । कांटो का ताज

(युवाचार्य श्री जी को सम्बोधित वन्दन-पत्र)

० आचार्य प्रवर की सामयिक उद्घोषणा से समाज में हर्षोल्लास एवं निश्चितता की भावना जागृत हुई है। समाज का एक अदना सेवक होने के नाते मैं भी इस निर्णय को पूर्ण निष्ठा और विवेक के साथ स्वीकार करता हूं।

आप जैसे प्रखर व्यक्तित्व का धनी ही यह कांटों का ताज पहनने में समर्थ हैं। आशा है पूर्वाचार्यों के पद चिह्नों पर चलकर तथा वर्तमान आचार्य प्रवर से मार्गदर्शन प्राप्त कर आप चतुर्विध संघ को गति प्रदान करने मे प्रेरक भूमिका का निर्वाह करेंगे। आज के भौतिक साधनो का विचार तरगो पर अत्यधिक प्रभाव पडता रहता है फलस्वरूप स्वस्थ चिंतन का प्राय अभाव प्रतीत होता है। वर्तमान युवा पीढ़ी मे जोश है लेकिन नैतिक जागरण पूर्ण रूप से विकसित नही है। मैं चाहूगा कि आज की युवा पीढ़ी को दिशा निर्देश दें। पूरा विश्वास है कि आप द्वारा समाज का प्रत्येक वर्ग लाभान्वित होगा एव सम्यक् ज्ञान, दर्शन और चारित्र की अभिवृद्धि कर अपना, परिवार एवं समाज का दायित्व प्रामाणिकता से निर्वाह करने का प्रयास करेगा।

पावन चरणो मे सविधि वन्दना !

कलकत्ता —रिखबदास भंसाली

कोहिनूर हीरा

अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि आध्यात्मिक आलोक—पुञ्ज, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने मूल्यवान कोहिनूर हीरे को परख लिया। सर्वांगीण ज्ञाननिधि, चारित्रिक सम्पन्नता एव निस्पृही रत्नत्रय को भावी शासन नायक चयनित कर लक्षाधिक हृदयों की मनोकामनाए मूर्त कर दी है। तपोमय जीवन एवं विवेक पूर्ण कार्य-प्रणाली आपकी निजी विशेषताए हैं। ऐसे युवाचार्य श्री जी को कोटिशः वन्दन।

मेड़ती (अजमेर) —लद्दूलाल जैन

हुकम शासन की गरिमा बढाये

• समता विभूति आचार्य भगवन् ने दीर्घ दृष्टि से मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा को युवाचार्य पद प्रदान किया। मंगल कामना है कि आप हुक्म शासन की गरिमा बढायें। हार्दिक अभिनंदन! शतशः वंदन।

भिलाई

झंवरलाल पुगलिया

सहयोग का विश्वास

• कृपया शास्त्रज्ञ, विद्वद्वर्य, युवाचार्य श्री जी के चरणों में सविधि वंदना अर्ज करावें। श्री संघ नगरी की ओर से युवाचार्य पद प्राप्ति एवं चादर प्रदान हेतु हार्दिक बधाई देकर सहयोग का विश्वास दिलायें। संघ को इस चयन से अपार हर्ष है।

नगरी (मन्दसौर)

—किशोरकुमार जैन
मंत्री सा जैन संघ

विराट व्यक्तित्व

• आचार्य भगवन् ने ऐसे महान मुनिराज को चतुर्विध संघ के भावी शासन नायक रूप मे विराट व्यक्तित्व प्रदान किया है। इस निर्णय को मैं हृदय से स्वीकार करते हुए सत्कार एवं सम्मान करता हूँ।

भीनासर

—बालचन्द सेठिया

मुक्त कंठ से प्रशंसा

• आचार्य भगवन की घोषणा का इस क्षेत्र के सब सदस्यों ने अनुमोदन किया व चतुर्विध संघ की व्यवस्था हेतु लिये गये महत्वपूर्ण निर्णय की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

मनावर

—सौभाग्यमल जैन, उपाध्यक्ष
श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ

समग्र समाज में प्रसन्नता

० जो सम्मान आपको मिला, इसके आप वास्तव में योग्य हैं। मुझ ही नही, समग्र समाज मे इसकी प्रसन्नता है।
प्रेम केबल्स प्रा लि, पीपलियाकलां —आर के सिंघवी

हार्दिक शुभकामनाए

कोटिशः वन्दन ! आपश्री के इस मगलमय शुभ पदासीन होने पर हमारी हार्दिक शुभकामनाए बधाई स्वरूप स्वीकृत करें।
ब्यावर —शकुन एव पकज जैन (दुधेड़िया)

●—●—●

कोटिश वन्दन

युवाचार्य पद महोत्सव पर हार्दिक शुभकामनायें एव कोटिश वन्दन। यही मगल कामना है कि आपश्री साधुमार्गी परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखें एव अपने गुणो से इसे विकसित एव सुशोभित करें।
उदयपुर —जीवनसिंह कोठारी एव परिवार

हार्दिक अभिनन्दन

युवाचार्य श्री का हार्दिक अभिनन्दन एवं यशस्वी, तेजस्वी दीर्घायु जीवन हेतु शुभकामनाए। आचार्य श्री जी के दीर्घायु होने की मगल कामना है।
ब्यावर —कालूराम नाहर

●—●—●

हार्दिक शुभकामना

शासन मुनि प्रवर श्री राममुनिजी म सा को परम श्रद्धेय शासनाधीश द्वारा अपने उत्तराधिकारी रूप में घोषित करने व चादर प्रदान करने के उपलक्ष्य में हार्दिक शुभकामाना।
ब्यावर —लालचन्द मुणोत

नित्य नये सोपान कायम करें

इस शुभावसर पर यही मनोकामना है कि पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री नानेश दीर्घायु हो एवं उनके नेतृत्व मे युवाचार्य प्रवर दिन दूनी रात चौगुनी जिन शासन की वृद्धि मे नित्य नये सोपान कायम करें।

भादसोडा (चित्तौडगढ) —नरेन्द्र खेरोदिया

आखे पवित्र हो गई

७ मार्च का गौरव गरिमापूर्ण, महिमा मण्डित चादर महोत्सव देखकर हमारी आखें पवित्र हो गई। जीवन मे प्रथम बार ऐसा महोत्सव दृष्टिगोचर कर जीवन धन्य हो गया। हार्दिक बधाई।

पीपल्या मडी —सुरेश पामेचा
अध्यक्ष, समता युवा मच

शासन सूर्य के समान चमकता रहे

० संघ का उत्तरदायित्व श्री राममुनिजी को सौंपने की घोषणा से प्रसन्नता है। विश्वास है कि प्रतिभाशाली, तेजस्वी, कठोर सयमी एवं दृढ धर्मा आचार्य रूप मे इन्हे पाकर यह सम्प्रदाय अधिकाधिक विकास करेगा। दीघदृष्टा एव पारखी आचाय भगवन की परख निश्चित ही बहुमूल्य है। आपश्री के अनुयायी विश्वास दिलाते हैं कि युवाचाय श्री की प्रत्येक आज्ञा को शिरोधार्य कर अपना कतव्य पालन करेंगे।

शासनदेव से प्राथना है कि आप स्वस्थ रहें, दीर्घायु हों और दीघकाल तक आपका शासन सूय के समान चमकता रहे।

रतलाम —पी सी चोपडा
पूर्व अध्यक्ष, श्री अ भा सा जैन सघ

सुविचारित क्रांतिकारी मार्ग

चिर प्रतीक्षित घोषणा से चिन्ता व्यथा का अन्त हुआ है और श्रद्धालु श्रावकों की अभिलाषाए पूर्ण होने से अत्यन्त हर्षानुभूति हुई है। आचार्य प्रवर ने युवाचार्य पद की घोषणा तथा संरक्षक सहित स्थविर मुनिराजों की घोषणा कर एक सुविचारित क्रांतिकारी मार्ग अपनाया है। पूर्ण विश्वास है कि आचार्य भगवन ने शासन मे जो अभूतपूर्व क्रान्तिकारी कीर्तिमान बनाए हैं उन्हें युवाचार्य श्री जी म सा उत्तरोत्तर आगे बढाने में पूर्णतया सफल होंगे और इस गौरवशाली सम्प्रदाय को सम्मान पूर्वक गति प्रदान करते रहेंगे।

शत शत वन्दन।

भीलवाडा —कन्हैयालाल मूलावत

समता का साम्राज्य फैलेगा

आचार्य श्री ने महान मगल एव शुभ कार्य कर सघ व समाज की महिमा व गौरव बढ़ाया है जो स्वयं में ऐतिहासिक है। निस्सदह सघ की चहुंमुखी प्रगति होगी व समता का साम्राज्य फैलेगा।

कृपया हमारी हार्दिक बधाईया व शुभकामनाए स्वीकार करावें।

भीलवाडा —लाबुलाल सिराणी

ढेर सारी बधाईयां

० आचार्य भगवन् के चरणों में शत शत वन्दन एवं युवाचार्य श्री के चरणो में हार्दिक वन्दन, अभिवन्दन। अपनी ओर से ढेर सारी बधाईयां। यही कामना है कि हमारा जीवन भी प्रशस्त मार्ग में अग्रसर हो उन्नत बने ऐसी शिक्षा का दान/वरदान दीजिएगा।

बीकानेर —प्रभा बुच्चा

ΔΔ

योग्य युवाचार्य

० घोषणा समाचार से हृदय में खुशी का पार नहीं रहा। प रत्न, धीर-वीर गम्भीर मूर्ति १००८ श्री राम मुनिजी म सा जैसे योग्य युवाचार्य को पाकर कौन अपने को धन्य नहीं समझेगा। चादर महोत्सव की कल्पना से हृदय विभोर हो जाता है। स्वय की ओर से एव कोटा सघ तथा कोटा के समस्त धर्मप्रेमी भाई-बहिनों की ओर से हार्दिक स्वागत।

—मोहनलाल भटेवरा
(समस्त कोटा सघ की ओर से)

दिव्य दृष्टि का प्रतिफल

० चादर महोत्सव के समाचार मिलते ही हर्ष एव प्रसन्नता की लहर छा गई। यह आचार्य श्री की दिव्य दृष्टि का ही प्रतिफल है कि तरुण तपस्वी आत्मार्थी साधक मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा को युवाचाय पद प्रदान किया गया।

युवाचार्य श्री का हार्दिक भावाभिनन्दन।

भिलाई —दीपक बाफना

हार्दिक बधाई

० आचार्य भगवन् को कोटिशः धन्यवाद एव युवाचार्य प्रवर को हार्दिक बधाई। सुखद चादर महोत्सव हेतु शुभकामनाएं।

—सुरेन्द्र कुमार मेहता
मन्दसौर (शहर) (श्री साधुमार्गी जैन सघ)

नानेश वृक्ष फले फूले

० युवाचाय श्री के शासन में यह नानेश वृक्ष फले-फूले, नव पल्लवन हो, सृजन हो यही शुभाकाक्षा है। वन्दन।

कलकत्ता

—सुशद्, तरुण, रीता कोचर

वही आस्था सदा रहेगी

० हमारी जो आस्था आचार्य भगवन में है वही युवाचार्य श्री में है एवं सदा रहेगी। निर्णय का हार्दिक अनुमोदन। पूर्ण विश्वास है युवाचार्य श्री के शासन मे जैन धर्म, साधुमार्गी संघ एवं आचार्य श्री नानेश का नाम सूर्य चन्द्रमा की भांति चमकेगा, रोशन होगा।

भीलवाड़ा —भगवतीलाल सेठिया एवं समस्त परिवार

निर्णय को शिरोधार्य कर प्रसन्नता

० नवम् पाट के लिए तरुण तपस्वी, आचार सम्पन्न, वचन एवं वाचना सम्पदा के धनी, गूढ़ शास्त्रज्ञ मुनि प्रवर के चयन हेतु हार्दिक शुभ कामना। निर्णय को प्रसन्नता पूर्वक शिरोधार्य कर अत्यन्त हर्ष का अनुभव करते हैं।

—सागरमल चंडालया

चित्तौड़गढ़ समता भवन निर्माण समिति

नवम पाट भव्यता व ऊंचाईयां प्राप्त करेगा

० युवाचार्य श्री से विशेष निवेदन है कि आचार्य श्री द्वारा उपदिष्ट मानव कल्याणकारी योजना को उपयुक्त रूप से प्रतिष्ठित कराने की कृपा करावें। समय बतायगा कि नवम पाट अधिक भव्यता व ऊंचाईयां प्राप्त करेगा। निर्णय की अनुमोदना।

—मगनलाल मेहता

रतलाम शान्ता मेहता

आदेश की पालना हेतु सदैव तत्पर

० हम आचार्य भगवन् के आदेश की पालना हेतु सदैव तत्पर रहेंगे व हार्दिक स्वागत करते हैं। तहेदिल से वन्द[illegible]

सोभाग[illegible]

स्वप्न साकार हुआ

० एक वर्ष पूव देखा स्वप्न साकार हुआ। चौधरी परिवार की ओर से हार्दिक बधाई। असीम अनुभूत आनन्द को व्यक्त करने हेतु शब्द नहीं मिल पा रहे हैं।

पुन हृदय की गहराईयो के साथ ढेरो बधाईया।

मन्दसौर —शिवसिंह चौधरी

०००

युवाचार्य की खोज पर शुभ कामना

० गुरुदेव को शासन के नए युवाचार्य की खोज पर शुभ-कामनाए।

—अशोक सुराना

रायपुर (छत्तीसगढ समाग के क्षेत्रीय सयोजक, श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ)

००

चरण कमलों के प्रति समर्पित रहेंगे

० पूज्य गुरुदेव ने मुनि प्रवर श्री रामलालजी म सा को युवाचार्य घोषित किया, यह जानकर अति हर्ष हुआ। पूज्य श्री राम-लालजी म सा प्रखर विद्वान, चिन्तक एवं शास्त्रज्ञ तो है ही, साथ ही गुरु व श्री सघ के प्रति निष्ठावान, समर्पित विनयशील और सरल स्वभावी हैं। इस युग मे किसी एक ही व्यक्ति में ये सब गुण मिलने मुश्किल है।

मैं पूर्ण आस्था एव विश्वास के साथ कह सकता हू कि पूज्य श्री राम मुनिजी म को युवाचार्य पद पर घोषित करके आचाय श्री ने समस्त जैन सघ पर महान उपकार किया है।

पूरी श्रद्धा के साथ निवेदन कर रहा हू कि आचार्य श्री की तरह युवाचाय के चरण कमलों के प्रति सदैव श्रद्धावान, जागरूक और समर्पित रहेंगे। वन्दन

—जिनेन्द्र कुमार जैन

अहमदाबाद (सम्पादक यग लीडर दनिक जैन समाज दैनिक)

सघ सरक्षक घोषित करने पर बीकानेर सघ गौरवान्वित है

घायमातृ पद विभूषित श्री इन्द्रचन्दजी म सा जिन्हें बीकानेर सघ के श्रावक-श्राविका 'इन्द्र भगवन्' के नाम से सबोधित करते हैं। अपने हृदय सम्राट को आप द्वारा चतुर्विध सघ का संरक्षक घोषित करने पर जहा असीम प्रसन्नता का आभास करता है वहा अपने को गौरवान्वित भी महसूस करता है कि हमारे यहा विराजित भगवन् को बहुत बडा सम्मान प्राप्त हुआ है। दि ७ माच ९२ की प्रात कालीन वसन्ती वेला, २ माच की अपेक्षा अधिक सुखद आभास करा रही थी, जब ऐतिहासिक राजमहल जूनागढ़ दुर्ग में आप श्री जी द्वारा सन्त रत्न श्री रामलालजी म सा को युवाचार्य पद की चादर प्रदान की गई। उपस्थित विशाल जनमेदिनी के साथ-२ बीकानेर सघ का प्रत्येक सदस्य उस निराली छटा को देखकर गद्गद् एव आनन्दित हो रहा था।

हम सभी पदाधिकारी एवं सघ का प्रत्येक सदस्य आप श्री जी को विश्वास दिलाते हैं कि हमारा सघ पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म सा के समय से ही गुरुआम आज्ञा सतत श्रद्धावनत रूप से मानता आ रहा है तथा एक छत्र रूप मे संगठित रहा है। हम आगे भी एक छत्र रूप मे सगठित रह कर गुरु आज्ञा को इन्द्र भगवन् के शब्दों मे "होगा प्रभु का जिधर इशारा, उधर बढ़ेगा कदम हमारा" का नारा हृदय से अनुसरण करते रहेंगे।

—श्री साधुमार्गी जैन बीकानेर श्रावक सघ

००

परम श्रद्धेय चारित्र चूडामणि आ प्रवर १००८श्री नानालालजी म सा आदि ठाणा के चरणों मे शत शत वदन!

आज दिन जब यह सुना कि श्री राम मुनिजी को युवाचार्य पद सुशोभित किया गया है। सुनकर सघ को अति प्रसन्नता हुई कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में श्री राम मुनि यह दायित्व बहुत ही अच्छी तरह निभायेंगे। श्री संघ छोटी सादड़ी इस निर्णय का अनुमोदन करता है तथा विश्वास दिलाता है कि हम सब सदैव समर्पित रहते हुए आज्ञाओं का पालन करेंगे।

इसी आशा व मगल कामना के साथ।

श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ
छोटी सादड़ी (राज)

—अमृतलाल नाहर
मंत्री

तार द्वारा प्राप्त बधाई सन्देशः—

बधाई

- सम्पतराज अनिल कुमार कडावत, रामपुरा (मन्दसौर)
- मेघराज प्रकाशचन्द कडावत, " "
- रामप्रकाश अजित कडावत, " "
- शान्तिलाल प्रकाशचन्द सुराणा, " "
- रायपुर स्थानकवासी सघ,
- मणिलाल घोटा, रतलाम

समारोह की सफलता हेतु शुभकामना एव हार्दिक बधाई

- आर प्रेमराज सोमावत, मद्रास
- जम्बू कुमार मूथा, वेंगलोर
- गोकुलचन्द सिपानी, चिकमगलूर
- स्थानवासी जैन सघ, नन्दूरवार
- तरूण जैन साप्ताहिक, जोधपुर
- महन्द्र वाठिया, बाडमेर
- सा जैन सघ, सवाई माधोपुर

आपको प्रदत्त सम्मान पर हार्दिक बधाई

- वालचन्द रांका, तडियार पेट, मद्रास
- समता भवन, तंडियार पेट, मद्रास
- रखबचन्द कटारिया, रतलाम
- घीसुलाल कोठारी, तडियार पेट, मद्रास
- अशोक पिरोदिया, रतलाम
- पूनमचन्द, रतलाम
- उगमराज मेहता, जोधपुर

☼ श्री दक्षिण भारतीय साधुमार्गी जन समता युवा संघ,
मैलापुर-मद्रास

☼ मांगीलाल घोका, मद्रास

☼ आचाय श्री नानेश जी द्वारा श्री राममुनि जी को युवाचार्य चयनित करने पर हार्दिक बधाई एव शुभकामनाए ।
—मिट्ठालाल घोका, मद्रास

☼ आध्यात्मिक क्षेत्र मे समता के वातावरण मे आपके नेतृत्व के विकास के साथ साथ ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप मे उत्तरोत्तर वृद्धि की कामना करते हैं । —देवराजसिंह सुराना, रायपुर

☼ आचार्य श्री नानेश के निर्णय का स्वागत एवं अभिनन्दन।
—कन्हैयालाल पोखरना (भूपाल सागर) नानेशनगर दांता

☼ युवाचाय पद के लिए श्री राम मुनिजी को हार्दिक बधाई ।
—हरकलाल सरूपरिया, चित्तौडगढ़

☼ युवाचार्य श्री राम मुनि के चरणो मे शत शत नमन ।
— राजेन्द्र सुराना, रायपुर

☼ पूज्य श्री राम मुनि के युवाचाय बनने की खुशी में दुग श्रीसंघ की ओर से हार्दिक बधाई । —शकरलाल/पृथ्वीराज पारख
अध्यक्ष/मंत्री, ओसवाल पचायत, दुग

☼ अनन्त श्री विभूषित १००८ पूज्याचाय श्री नानेश गुरु को एवं पूज्य श्री राम मुनिजी को युवाचाय पद प्राप्ति के हार्दिकोत्सव पर कोटिश: वन्दन नमन ।

कलकत्ता —माणकचन्द रामपुरिया
(अध्यक्ष, श्री सा जैन श्रावक संघ, बीकानेर)

☼ विद्वान सत राम मुनिजी के युवाचाय पद ग्रहन करने पर मेरा सादर नमन ।

ब्यावर —चम्पालाल जन (विधायक)
(पूर्व उपाध्यक्ष, श्री अ भा सा जैन संघ)

☼ उत्सव के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

अहमदाबाद —सूरजमल रमेशचन्द्र कोरडिया

☆ युवाचार्य पद पर विराजमान श्रद्धेय रामलालजी महाराज साहब का सविनय अभिनन्दन एवं मंगल कामना।

—नेमीचन्द मुनोत
जैन श्वे. स्था. जैन संघ, विराटनगर

☆☆
☆☆

युवाचार्य पद के लिए श्री राम मुनिजी को हार्दिक बधाई

☆ साधुमार्गी जैन संघ, चित्तौड़गढ़

☆ सिरेमल देशलहरा, दुर्ग

☆ श्री राम मुनिजी म. सा. को युवाचार्य बनाने की घोषणा से अपार हर्ष।

—श्रीसंघ, टोंक

☆ वन्दन, अभिनन्दन —प्रकाशचन्द्र सूर्या, उज्जैन

☆ युवाचार्य श्री राम मुनिजी के चादर महोत्सव पर अनेकों साधुवाद।

मुंगेली —सौभाग्यमल कोटड़िया

☆ हार्दिक बधाई

☆ आर. सुगनचन्द जी धोका, मैलापुर-मद्रास

☆ साधुमार्गी जैन संघ, भीम

☆ सागरमल मोहनलाल चोरड़िया, मैलापुर मद्रास

☆ प्रेमचन्द बोथरा, मैलापुर-मद्रास

☆ बहुत-बहुत शुभकामनाएं व हार्दिक वन्दन नमस्कार।

—प्रेमलता, इन्दौर

☆ हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

भदेसर —सदनलाल जन
शाखा-संयोजक

☆ श्री रामलाल जी म. सा. को युवाचार्य पद पर चयन हेतु शुभकामनाएं एवं वन्दना।

विराटनगर —जितेन्द्र कुमार, देवेन्द्र कुमार सेठिया

☼ आचार्य श्रीजी को वन्दना, युवाचार्य श्री जी की घोषणा पर हार्दिक बधाई—

☼ समता युवा संघ, ब्यावर
☼ जवरीलाल श्री श्रीमाल, ब्यावर
☼ मोहनलाल नरेश कुमार श्री श्रीमाल, ब्यावर
☼ धनराज कोठारी, अध्यक्ष ब्यावर
☼ मानकचन्द मूथा, ब्यावर
☼ सरदारमल खीचा, ब्यावर
☼ माणकचन्द बोहरा, ब्यावर
☼ उत्तम लोढ़ा, ब्यावर

☼ हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हुई। मंगल कामनाए।
सुशील कुमार बोथरा, दिल्ली-६

☼ पूज्य गुरुदेव के निर्णय पर संघ की आस्था। युवाचार्य पदारोहण पर बधाईयाँ। —कमकलाल टप बदनावर

☼ युवाचार्य पद प्रदान करने की खुशी पर हार्दिक शुभकामनाए —दीपक कापना, धमतरी

☼ आचार्य-प्रवर को शत शत वन्दन एव अभिनन्दन, युवाचार्य पट्ट महोत्सव पर हार्दिक अभिनन्दन। —धीलाल कावड़िया, अजमेर

☼ Vandana Acharya Shree Great Pleasure Announcement for Yuvacharya Ram Muniji
Deogarh —CHANDANMAL JAIN

☼ Hearty Congratulation on appointment Yuvacharya Shree Pray Vandana Pujya Acharya Shree & Yuvacharaya Shree Wishing function great success
Madras —MUTHA Family

☼ Pray Vandana to gurudev Whole Sardarshahar Sangh highly Jubilant over timely judicious rational and dignified decision of Acharya shree Hearty Congratulations
Sardarshahar —SAMPAT LAL BARDIA

☼ Wishing the function great success
Madras —ABEERCHAND GALDA

☼ Yuvacharya declaration Ramlal ji Maharaj Hearty Congratulations loyalty affirmation Vandana Acharya shree
—Kanhaiyalal Bhura and Sadhumargi Sangh
Coochbehar

।। युवाचार्य-प्रशस्ति ।।

—आचार्य चन्द्रमौलि

नावेश सद्गुरु समर्पितशान्ति रूपे ।
भव्येमहाघ महनीय पदे स्थितन्तम् ।।
रामाभिधानमहित सहित गुणौघै ।
सर्वातिशायिसुकृत मुनिमानतोऽहम् ।।१।।

सर्वं विहाय भवजीवन वस्तुजातम् ।
नावेशमेव शरण वरणीयमीष्टम् ।।
ऊरीकृतो जिन निदिष्टपथो विशिष्ट ।
सर्वातिशायिसुकृत मुनिमानतोऽहम् ।।२।।

मायाप्रपञ्च रहित यमनप्रधानम् ।
भव्य महाव्रत समाश्रयणंकवीरम् ।।
सरक्षक श्रमण धर्मपरम्पराणाम् ।
सर्वातिशायिसुकृत मुनिमानतोऽहम् ।।३।।

शास्त्राथतत्त्व परिशीलनबद्धकक्षम् ।
सद्धैर्यधमधरणं कृतजीवरक्षम् ।।
ध्यात ध्रुव परिगत परमात्मतत्त्वम् ।
सर्वातिशायिसुकृत मुनिमानतोऽहम् ।।४।।

सद्बोधिदान निरत शुभकमदक्षम् ।
रक्ष्य कृत भुवनशोषितसर्वसत्त्वम् ।
त्यक्त च सर्वजगता निखिल ममत्वम् ।
सर्वातिशायिसुकृत मुनिमानतोऽहम् ।।५।।

यज्जीवन भुवि जिनेश्वरपादपद्मे ।
लग्न निरावृतिमय सतत प्रसन्नम् ।।
आचायकल्पमखिल मधुरं मनोज्ञम् ।
सर्वातिशायिसुकृतं मुनिमानतोऽहम् ।।६।।

श्रीमद्गुरुप्रवर सच्चरणारविन्दे ।
श्रद्धानमाशु महिता विपुलाच निष्ठा ।।
सेवासुधा परिगता विविधा मयेन ।
सर्वातिशायिसुकृतं मुनिमानतोऽहम् ।।७।।

पूर्वार्जितो विविध पुण्यचयो विभाति ।
लब्ध यतो भुवन भास्करतुल्य तेजः ।।
आसन्नमेव विपुल परमात्मरूपम् ।।
सर्वातिशायिसुकृत मुनिमानतोऽहम् ।।८।।

युवाचार्यपद लब्ध रामेण मुनिना नवम् ।
तस्माशसाकृताहृया कविना चन्द्रमौलिना ।।

—नव्यव्याकरणाचार्य कवितार्किक चक्रवर्ती
—भूतपूर्व प्राचार्य, संस्कृत विद्यापीठ बीकानेर
आनन्द भवन, बीकानेर (राज)

❉

"मन वडो हरपायो है"

△ श्री श्याम लाल बया

हमने सुना दो मार्च को, युवाचार्य पद दिया आपको ।
धर्म ध्यान को रखा ध्यान मे, मन वडो हरपायो है ।।
"राम मुनि" यथा याम, लेवे भगवन्त नाम ।
चातुर्मास का रखे ध्यान, युवाचार्य पद पायो है ।।
धन्य हुआ देशनोक, और हुआ परलोक ।
और हुए माता पिता, ऐसो नन्दन जायो है ।।
राम यान रहे पास, मन जो छह आकाश ।
गिरवां रो ससरो नहीं, नावेश रो मन भायो है ।।

—भीण्डर (उदयपुर)

✻

राजस्थानी दूहा

णमोकार महामन्त्र रा दूहा

△ डॉ नरेन्द्र भानावत

(१)
करम क्लेश सब दूर वै, जपिया नित नवकार ।
मन री गाठा सब खुलै, निगमागम रो सार ॥

(२)
"अरिहंताण' जो जपै, रहै न अरि जग माय ।
राग द्वेष पै विजय वै, आतम बल प्रगटाय ॥

(३)
"सिद्धाण" सू सिद्ध वै मन रा सोच्या काज ।
दु ख री सगली जड कटै, निराबाध सुख राज ॥

(४)
"आयरियाणं" जो जपै, मन वच-करम विशुद्ध ।
तप सजम री पालना, पाप वृत्ति अवरूद्ध ॥

(५)
"उवज्झायाणं" जो जपै, मिटै भरम नै भेद ।
ज्ञान जोत प्रगटे विमल, कटै करम री कैद ॥

(६)
सब "साधु" नै नमन सू, वधै विनय वैराग ।
विष-विकार व्यापै नहीं, रू-रू प्रेम पराग ॥

(७)
पच परमेष्ठि देव-गुरु, सब मगल रा मूल ।
नमन कर्या नित भाव सू, सकट कटै समूल ॥

(८)
णमोकार जो नत जपै, बणै सुख स्वाधीन ।
ज्ञान-चरित, विश्वास, तप, देवै शक्ति नवीन ॥

(९)
णमोकार री गूज सू, भाजै भय आतंक ।
अलगा अलगा सब जुडै, मानव-मानव एक ॥

नमोकार गीत

● श्री सुरेन्द्र दुबे

है महामन्त्र यह नमोकार जपलो प्यारे।
अपने मन का अहंकार तजलो प्यारे॥
काम, क्रोध, मद, लोभ मोह अपने दुश्मन,
खा जाते हैं, ये सब, तन मन धन जीवन।
इनको जिनने मारा वे अरिहन्त हुए,
अरिहन्तो को नमस्कार करलो प्यारे।
है महामन्त्र

जिन्होंने पाया, जिया और भी जाना है,
इस जीवन का गूढ़ तत्त्व पहचाना है।
जिनने पाया परम सत्य वे सिद्ध हुये,
सब सिद्धों को नमस्कार करलो प्यारे।
है महामन्त्र —

जो जाना वह व्यक्त आचरण से होता,
व्यवहार ज्ञान सब मुक्त आवरण से होता।
आचार ज्ञान से उपजा तो आचार्य बने,
आचार्यों को नमस्कार करलो प्यारे।
है महामन्त्र— —

जो जाने वह जिये वही बतलाये भी,
समझ न पाये, उसे और समझाये भी।
दें जो भी उपदेश वे उपाध्याय हुए,
उपाध्यायो को नमस्कार करलो प्यारे।
है महामन्त्र — —

साधु बन साधना में, मगन हुए हैं जो भी।
वन्दनीय हैं हमें हमेशा वो-वो भी।
पाया सरल स्वभाव तो साधु कहलाये,
सब सन्तो को नमस्कार करलो प्यारे।
है महामन्त्र — —

—ब्यावर (राज)

आपको अभिनन्दन है हमारा

△ शशिकर

(१)

हर पल जो अहंकार का प्रतिकार रहे हैं।
सुखी कैसे हो मानव बस विचार कर रहे हैं॥
समता का सन्देश जिन्होंने जन-जन को दिया,
धन्य हैं वे जो नानेश वाणी का प्रचार कर रहे हैं॥

(२)

आचार्य नानेश की घोषणा से जन-मन हिल गया।
अन्तर सुमन हर एक का रोचक खिल गया॥
सोचते थे सभी कि कौन युवाचार्य होगा अब,
घोषणा सुनकर मरुथल को मन चाहा मिल गया॥

(३)

मुनि श्री रामलालजी शास्त्रों के अद्भुत ज्ञाता हैं।
सुन लेता वाणी जो भी वह मोद बहुत पाता है॥
तप त्याग की अनोखी घूंटी मिली है गुरु से,
युवाचार्य पद इन्हें छू ऊंचा ही हो जाता है॥

(४)

मुनि श्री रामलालजी आडम्बर से बहुत दूर हैं।
शास्त्रों के पठन एवं मनन में रहते नित चूर हैं॥
जीवन का ध्येय है समता के भाव को फैलाना,
ज्ञान रश्मियां आपके अन्तर में भरपूर हैं॥

(५)

आपके युवाचार्य बनने पर वन्दन है हमारा॥
मन मरुस्थल आपको पा नन्दन है हमारा॥
धन्य है नानेश को जो हीरे को परख लिया,
शुभ वेला में कोटि कोटि अभिनन्दन है हमारा॥

—कवि कुटीर, बिजय नगर (अजमेर)-३०५६२४

卐

वन्दन–अभिनन्दन मुनि राम

☆ सीता पारीक

निर्भय होकर महावीर के, पथ पर पांव बढ़ाने वाले।
समता भाव संजोकर पल-पल, ज्ञान ज्योति प्रकटाने वाले॥
चाहे सुबह हो चाहे शाम।
नित तुमको कोटि-कोटि प्रणाम॥

झूठी माया झूठी काया, जान के बन्धन तोड़ दिया।
सत्य अहिंसा दया धर्म के, पथ पर मन को मोड़ दिया॥
महाविभूति समता योगी, श्री नाना का सान्निध्य मिला।
महक उठा जीवन का उपवन, मन में पावन सुमन खिला॥
जागे हैं तुमसे घर-घर ग्राम।
नित तुमको कोटि-कोटि प्रणाम॥

जैसे राम ने गुरु की आज्ञा, पाकर शिव धनु तोड़ा था।
महासती सीता ने अपने, निज जीवन को जोड़ा था॥
तुमने भी गुरु आज्ञा पाकर हर एक बन्धन काटा है।
ज्ञान रश्मियां फैलाकर, स्नेह विश्व में बांटा है॥
युवाचार्य बन गये मुनि राम।
नित तुमको कोटि-कोटि प्रणाम॥

जैनाचार्य महामुनि नाना, मोद बहुत ही पाते हैं।
युवाचार्य पद देकर तुमको, फूले नहीं समाते हैं॥
महामुनि श्री रामलाल जी, नमन आपको बारम्बार।
यही भावना है मेरी कि समता का हो नित्य प्रचार॥
वन्दन अभिनन्दन मुनि राम।
नित तुमको कोटि-कोटि प्रणाम॥

'आराधना' मेवड़ी रोड, विजयनगर-अजमेर (राज) पिन-३०५६२४

जय जय नाना जय जय राम

लटका राजस्थानी

युगों-युगों तक जिनकी वाणी, दिग्दिगन्त तक गूंजेगी,
वाद्य बजेंगे भावों के नित, जनता जिनको पूजेगी ।
चारों ओर अहिंसा का, विजय घोष करना होगा,
यह वाणी है नाना गुरु की, समता सबमें भरना होगा ।
मुख पर दिव्य तेज को लेकर, ज्ञान रश्मियां देवें वाले,
निश दिन भव सागर के अन्दर, सबकी नैया खेने वाले ।
श्रीमन्तों के शीश आपके, चरणों में झुक जाते हैं,
राम आपकी दिव्य शक्ति से, स्वयं दशानन रूक जाते हैं ।
मन में मानवता को लेकर, मीलों पैदल आप चले,
लाभ और हानि ना सोची, तम के कारण सदा जले ।
लगन आप में एक रही बस, गुरु की सेवा करना है,
जीवन तो नश्वर है साथी, पांव संभल कर धरना है ।
महावीर का पथ है पावन, यही सत्य का वाहक है,
हाहाकार भरा जो जग में, सोचो कितना दाहक है ।
राग द्वेष को तजकर मानव, सुखी यहां हो जायेगा,
जब तक खुद को ना जानेगा, लक्ष्य नहीं छू पायेगा ।
कीचड़ में जब पांव सने तो, क्यों चेहरे को धोते हो,
जबरन ज्वाला में कूदे तो, अब बोलो क्यों रोते हो ?
यह जीवन धन्य बनालो बन्धु, समता को अपनाओ रे,
हो जाओगे तुम निर्भय, जय श्रमण धर्म की गाओ रे ।

जय जय नाना, जय जय राम ।
समता भाव लगे अभिराम ।।

—'आराधना' केकड़ी रोड, विजयनगर (अजमेर राज) पि-३०५६२४

नवें पाट पर अब नये ""

● श्री कमलचन्द ललिया

संघ नायक नाना गुरु
समता के अवतार ।
हुक्म संघ में शोभते
जन मन के आधार ।।१।।
समता दर्शन है परम
श्री गुरुवर की देन ।
साम्य भाव में छा रहे"
सात्विक गुरु के वैन ।।२।।
नवें पाट पर अब नये
आये हैं युवराज ।
राम मुनि गुणिवर प्रवर
प्रमुदित सकल समाज ।।३।।
गुण ग्राही पावन सरल
नहीं अहम् का भाव ।
राम मुनि साधक महा"
तारें भव निधि नाव ।।४।।
जिनके क्रिया कलाप से
विकसे सब जलजात ।
आगम निगम प्रभाव का
जागे नवल प्रभात ।।५।।
रामराज्य की कल्पना
करती है साकार ।
"कमल" कहे चमके सदा
दिनकर सम गुणाकार ।।६।।

बीकानेर (राज.)

"राम चरण मे शत शत वन्दन"

वैराग्यवती–प्रतिभा बोकड़िया

॥ चौपाई ॥

हु मि उ चौ श्री ज ग ना रा ।
उदित हुआ है भानू प्यारा ॥
शिव सुख के हैं ये अधिकारी ।
सकल सघ है चरण पुजारी ॥
उदय उदय होवेगी पूजा ।
जय श्री राम जगत मे गू जा ॥
चौथे आरे सम करणी है ।
भव जल की अनुपम तरणी है ॥
श्री सम्पन्न पट्टधर प्यारे ।
नाना गुरु के सबल सहारे ॥
जन जन के मन आप विराजे ।
नव निधि युक्त नवम् पट्ट छाजे ॥
गण मे ऊ चा नाम तुम्हारा ।
उससे ऊ चा काम तुम्हारा ॥
नाना गुण से हैं ये मण्डित ।
जैनागम के पूरे पण्डित ॥
राम है गवरा देवी नन्दन ।
राम चरण में शत-शत वन्दन ॥

—उदयपुर (राज)

स्वीकारो मेरा वन्दन-अभिनन्दन !

श्री प्रेमचंद रांका 'बकमक'

हुए धन्य आपसा सुत पाकर, मात पिता जो,
अमर हो गया वह घर ग्राम आपको पाकर जो।
गुरु की एक नजर में ही आप आ गए,
होना था उद्धार आप मन चाहे गुरु पा गए ॥

आपके नाम के आगे लगा राम,
धन्य धन्य जन जगत की शान।
शास्त्रज्ञ अति विद्वान, त्याग की मूर्ति,
फैल रही चहु ओर आज आपकी कीर्ति ॥

आप तप मे नाना गुरु के कंठहार,
सरस्वती आगम ज्ञान ले कंठ विराजी।
आप हैं सच मे संत महा विद्वान,
तप त्यागी गुण की धारा चरण ढुलाती ॥

सांसारिक सुखों का कर त्याग,
स्व जीवन धन्य जिसने किया।
तप के चढ़ते गए सोपान आप,
महासतों में पाया स्थान सभी ने सम्मान दिया ॥

आप सचमुच मे संयम पथ पग बढ़ा रहे,
ज्ञान का पी पीयूष जीवन का पावन लक्ष्य बना रहे।
कर नित ग्रन्थों का पान जीवन सफल बना रहे,
नाना भगवा का नाम, आप खूब दीपा रहे ॥

हे युवाचार्यजी ! स्वीकारो मेरा वन्दन-अभिनन्दन।
भाव भरे पावन शब्द कलश, ढुलाता अभिनन्दन।
पाया है नाम रामलाल सम चन्दन,
भक्ति से माला गोती, भेंट चरणों में, अभिनन्दन ॥

—गुमानपुरा भीलवाड़ा

युवाचार्य तुम्हारी जय होवे

☀ भवरलाल सेठिया

तर्ज—महावीर तुम्हारे चरणो मे श्रद्धा के

अखिल हिन्द जिनशासन के युवाचाय तुम्हारी जय होवे ।
'श्री रामलाल" सरदार गुणो युवाचाय तुम्हारी जय होवे ।।टेर।।

माता 'गवरा' के जाए हो, अरु 'नेमचन्द' मन भाए हो ।
'भुरा' कुल के उजियारे तुम, युवाचाय तुम्हारी ।।१।।

श्री नाना पूज्य के पट्टधारी सेवाभावी, आज्ञाकारी ।
हितकारी अरु अति प्रियकारी, युवाचार्य तुम्हारी ।।२।।

समतादर्शी अरु सुखकारी, भक्तो के दुःख भंजनहारी ।
जिनशासन को चमकाना तुम, युवाचाय तुम्हारी ।।३।।

कम शत्रु तुम्हे तपाए गे, 'सोने' जिम बहुत कसाएगे ।
निज गहरा रग दिखाना तुम, युवाचाय तुम्हारी ।।४।।

"नाना-शिक्षाएं दिल धरना, जीवन को अति उत्तम करना" ।
'श्री हुक्म सघ' दीपाना तुम, युवाचाय तुम्हारी ।।५।।

जैसी कृपा गुरुओ की रही, वैसी ही रहे तुम्हारी भी ।
'बीकाणे' को ना विसराना युवाचाय तुम्हारी ।।६।।

—पवनपुरी बीकानेर

☀☀☀

चादर दिवस रग लाया है

卐 जया रांका

बीकाणे के नर नारी मे हर्ष छाया है ।
तीज का चादर दिवस रग लाया है ।।
होय आज का दिवस सदा याद रहेगा ।

इतिहास के पन्नो में नया राम जुड़ेगा ॥
प्यारी भाषा से प्यारा आदेश
चतुर्विध संघ निभायेगा आदेश । बीकाणे
उज्ज्वल, निमल ये श्वेत चादर
धारण कराये हैं, नाना गुरुवर
होय उज्ज्वल, निमल ये धवल चादर
चार चांद लगायेंगे राम मुनिवर । बीकाणे
वाणी का है झरना बहता गुणो की ये खान
महावीर की याद दिलाये, पूज्यवर का दीदार
होय 'राममुनि' चमकेंगे भानू समान
'नानेश' का राम बनेगा जिनशासन की शान । बीकाणे ।

—गोलछा मोहल्ला, बीकानेर

卐

आचार्य श्री नानेश को समर्पित

दो मुक्तक

रचयिता—सुरेन्द्र कुमार नाहटा

(१)

पांचो इन्द्रियों का सयम ही मुनि की पहचान है,
मन, वचन, काय गुप्ति ही असली शान है ।
आत्म दमन के लिये जरूरी है वासना पर विजय,
समीक्षण ध्यान साधना मे रत मुनि ही महान् है ॥

(२)

सयममय जीवन ही जीवन का सार है,
तप का आचरण ही जीवन का निखार है ।
समीक्षण साधना से ही मिलेगी परम शान्ति,
सयमम का अनुशीलन ही जीवन का शृगार है ॥

—सरदारशहर

नमन

✠ आशा जैन

नमन नानेश को
मन से तन से
भाव के, सिन्धु से
गुरुवर नानेश को ।
समता सिद्धान्त
समीक्षण ध्यान
प्रणम्य है गुरुता
महिमा महान् ।
परम्परा विशाल
धर्म का ज्ञान
मुझ पामर का
करो कल्याण ।

—छोटी कसरावद
प. निमाड (म प्र)

णमोक्कार : एकता का प्रतीक

● श्री दिलीप धींग

एकता का है प्रतीक, शब्द अक्षर सटीक,
णमोक्कार महामन्त्र अनादि अनन्त है ।
उपकारी है अनन्त ज्ञानी श्री अरिहन्त,
पूर्ण शुद्ध बुद्ध मुक्त सिद्ध भगवन्त है ।
संघ नायक आचार्य, ज्ञानदाता उपाध्याय,
महाव्रती निस्पृही निर्ग्रन्थ सन्त है ।
'दिलीप' बनो निर्विकार, जपो ध्याओ नवकार,
पंच-परमेष्ठी को वन्दन अनन्त है ।

—बम्बोरा-३१३७०६ (उदयपुर

शुभकामना सन्देश

बीकानेर की गौरवशाली, सारस्वत धरा पर जिनशासन प्रद्योतक, धर्मपाल प्रतिबोधक परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म सा द्वारा युवाचार्य चादर प्रदान समारोह के आयोजन की घोषणा से इस धर्म समृद्ध धरा के गौरव में एक स्वर्णिम पृष्ठ और जुड़ गया है।

जिनशासन की आचार्य परम्परा में युवाचार्य घोषणा का विशेष महत्त्व है। समता विभूति आचार्य श्री नानेश द्वारा इस महत्त्वपूर्ण घोषणा के लिए बीकानेर की थार मरुभूमि का चयन और फिर चादर प्रदान के लिए भी बीकानेर को ही सुअवसर प्रदान करने की महती अनुकम्पा यहां के सांस्कृतिक आध्यात्मिक इतिहास की एक धरोहर बन गई है।

मैं इस पावन अवसर पर आचार्य श्री नानेश के प्रति आभार व्यक्त करते हुए युवाचार्य विद्वद्वर्य, तरुण तपस्वी श्री राम मुनिजी म सा के प्रति स्वयं की तथा राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी की ओर से हार्दिक शुभकामना अर्पित करता हूं।

जानकीनारायण श्रीमाली, सचिव
राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं
संस्कृति अकादमी, बीकानेर

●

मन में खुशियां हैं

युवाचार्य श्री रामलालजी म गुरु के आज्ञाकारी हैं। सयाभावी हैं। युवाचार्य पद प्राप्ति पर मन में खुशियां हैं।

कलकत्ता —गुलाबचन्द बच्छावत

शास्त्रज्ञ पूज्य युवाचार्य श्री रामलालजी म सा की जय

जन्म	दीक्षा	मुनिप्रवर	युवाचार्य
देशनोक	देशनोक	चित्तौड़	बीकानेर
सं २००९	सं २०३१	सं २०४७	सं २०४८
चैत्र शुक्ला १४	माघ शुक्ला १२	आसोज शुक्ला २	फाल्गुन शुक्ला ३
गुरुवार	रविवार	शनिवार	शनिवार
१६ अप्रेल १९५२	२३ फर १९७५	२२ सित ११९०	७ मार्च १९९२

युवाचार्य विशेषांक

दीक्षा से पूर्व

का

जीवन परिचय

चित्रों में

चतुर्थ-खण्ड

वीतराग पथ के पथिक का परिवेश

दीक्षा के सत् संकल्प से उत्पन्न सात्विक गौरव से प्रदीप्त सस्मित आनन
संकल्प से ओत प्रोत श्री रामलाल जी अपनी मातुश्री और परिवार के

प्रमुदित परिजन एक दुर्लभ क्षण